सचित्र व्यंग विनोद

सचित्र व्यंग विनोद

(असंख्य चुटकुले, अगणित कार्टून)

लेखक

अरुण, एम. ए.

(उत्तरप्रदेशीय सरकार द्वारा पुरस्कृत पुस्तक
'सचित्र गृह विनोद' के लेखक)

१९५५

आत्माराम एण्ड संस

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

काश्मीरी गेट

दिल्ली-६

प्रकाशक
रामलाल पुरी, संचालक
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

लेखक की रचनायें

मौलिक

अमृत और विष
मृत्यु में जीवन
सचित्र गृह विनोद
सचित्र व्यंग विनोद
सचित्र बाल विनोद
आदम का बेटा
साहित्य में सत्य तथा तथ्य
रेलगाड़ी के डिब्बे
महापुरुषों के संस्मरण
जय काश्मीर
गप्पों का खज़ाना
हास्यार्थ कोष
आदमी, जंगल और झील
सिन्धु की घाटी में
मनुष्य कैसे पैदा हुआ
भूत भाग गया
हँसो बच्चो
नया मनुष्य
बाल आदर्श
शऊर की बातें
सेवा मार्ग
बाल शिक्षा

अनूदित

मैक्सिम गोर्की की कहानियाँ
ऐन्टन चेखोव की कहानियाँ
आस्कर वाइल्ड की कहानियाँ

मुद्रक
मदन मोहन
निष्काम प्रेस
मेरठ

चित्रकार
योगेन्द्रकुमार 'लल्ला'

परिचायक

व्यंग विनोद क्या है

एक सुन्दरी ने मुस्कराकर पूछा— हास्य क्या है ?

मैंने उत्तर दिया— हास्य एक प्राकृतिक देन है। वह प्रेम के समान स्वतः उत्पन्न होता है। पर जबकि प्रेम दो वस्तुओं के आकर्षण में उत्पन्न होता है, हास्य दो वस्तुओं के विकर्षण की उत्पत्ति है।

उत्तर से वह लजा गई।

हास्य बच्चे से लेकर वृद्ध तक को मुक्त रूप से आता है। और यह बच्चे के भोले विनोद से लेकर राजनीति के तीखे व्यंग तक नाना रूप धारण करता है।

व्यंग विनोद हर स्थान पर होता है, झोंपड़ी से लेकर महल तक, क्योंकि जीवन स्वयं व्यंग विनोद का भण्डार है। यदि तीक्ष्ण दृष्टि से विश्लेषण किया जाय तो जीवन में हर समय के विकर्षण और उनके उत्पादित व्यंग विनोद दिखाई देंगे।

परसों की बात है, मेरे घर एक मेहमान आये थे। मेरे छोटे बच्चे को बुलाकर उन्होंने कहा— बेटा, तुम बहुत चुपचाप रहते हो। उसने उत्तर दिया— 'अम्मी ने मुझे आठ आने देने को कहा है यदि मैं आपकी तिरछी नाक और गंजे सिर पर कुछ न कहूँ'

सबसे सुन्दर विनोद के जन्मदाता बच्चे होते हैं। उनका विनोद भोलेपन से भरपूर होता है। उसमें वक्रोक्ति नहीं होती। तभी वह अधिक आनन्द प्रदान करता है।

जैसे जैसे जीवन परिपक्व होता जाता है, वैसे वैसे विनोद में व्यंग और वक्रोक्ति की मात्रा बढती जाती है। कभी कभी तो मात्रा इतनी बढ़ जाती है कि वह हँसी लाने के बजाय चोट पहुँचाती है।

पढ़े लिखों के कुछ व्यंग विनोद इतने सूक्ष्म होते हैं कि साधारण मनुष्य के एक बार तो समझ में भी नहीं आते, किन्तु समझने पर उनमें आनन्द भी उतना ही अधिक आता है।

व्यंग विनोद के कई रूप हैं— भोलापन, विनोद, शरारत, रसिकता ठिठोली, चातुरी, हास्योक्ति, व्यंग, व्याजोक्ति, वक्रोक्ति, तुरत-उत्तर, प्रत्युत्तर।

प्रत्युत्तर का एक सुन्दर उदाहरण यह है— एक बार एक जज ने किसी एडवोकेट को चुप करने के लिये कहा— "तुम अपने केस की दलीलें देने के बजाय गधे की तरह क्यों रेंकते हो ?"

प्रत्युत्तर मिला— "यौर ऑनर, मैंने सोचा कि मुझे वह भाषा बोलनी चाहिये जिसे माननीय अदालत समझती हो।"

हास्योक्ति में गांधी जी की उक्ति 'हिमालय गलती' और 'आगे की तारीख का चैक' कौन भूल सकता है।

इन सब व्यंग विनोदों को अन्य प्रकार से दो भागों में बाँट सकते हैं— मौखिक और लिखित। मौखिक का अर्थ है जो व्यक्तियों की बातचीत से उत्पन्न होता है। उदाहरण के रूप में—

शान्ति— तुम्हें मेरे पिता को गालियाँ देते हुए शर्म नहीं आती।

श्याम कुमार— तुम्हें पता है जब मैंने उनसे कहा कि मै तुम्हारे बिना जीवित न रह सकूँगा तो वे बोले तुम्हारे लिये लकड़ियाँ मै मोल लेकर रख लेता हूँ।

लिखित का अर्थ इस वसीयत को पढ़ने से साफ हो जायगा।

'अपनी पत्नी को, मै उसका प्रेमी छोड़ता हूँ और यह ज्ञान कि मैं मूर्ख नहीं था जैसा वह समझती थी।

'अपने पुत्र को, मैं जीविका कमाने का आनन्द प्रदान करता हूँ क्योंकि पिछले पैंतीस वर्ष से वह सोचता था यह आनन्द मैं लूट रहा था।

'अपनी पुत्री को, मैं बीस हज़ार डॉलर दिये जाता हूँ क्योंकि उसके पति ने जीवन में केवल एक व्यापार किया, जो था उससे विवाह करना।

'अपने नौकर को, मैं अपने कपड़े छोड़ रहा हूँ जिन्हें पिछले दस साल से वह चुरा चुरा कर पहन रहा है।

'अपने ड्राइवर को, मैं अपनी कारें देता हूँ जिन्हें उसने बिल्कुल बरबाद कर दिया है, इस भरोसे पर कि वह अपना काम पूरा कर सन्तुष्ट हो सके।

'और, अन्त में, अपने साझी को, मै यह सलाह छोड़े जाता हूँ कि यदि उसे लाभ की आशा करनी है तो अपने साथ किसी अन्य व्यक्ति को ले ले।'

व्यंग विनोद के लाभ

यह पुस्तक दो प्रकार से लाभदायक है। व्यंग विनोद हमारे भार को हल्का करता है। वह हमें चिन्ताओं, दुःखों, क्लेशों से मुक्ति दिलाता है और उन सबको हास्य के सागर में डुबा डालता है। कैसा ही अवसर हो, कैसी ही परिस्थिति हो, व्यंग विनोद को पढ़कर मनुष्य के मुख पर हँसी बिखरे बिना नहीं रहेगी। मनुष्य इन्हें पढ़कर समय समय पर आनन्द और प्रसन्नता प्राप्त करता है।

दूसरे, प्रतिदिन के सामाजिक, राजनैतिक, नागरिक, व्यवसायिक जीवन में एक

व्यावहारिक कोष की, व्यंग विनोद के भण्डार की आवश्यकता पड़ती है। जीवन में इनका उपयोग करने से व्यक्ति जान पहचान बढ़ाता है; सर्वप्रिय बन जाता है, अपने उद्देश्य को प्राप्त करता है। वह समाज का प्रिय बन जाता है। सभा, बैठक, दावत, आयोजन आदि में वह रत्न के समान चमकता है।

व्यंग विनोद कब सुनाने चाहियें

यह कोई नियम नहीं है कि बातचीत या भाषण में विनोद सुनाने आवश्यक हैं। इन्हें सुनाना भी प्राकृतिक होता है। एक बहुत सुन्दर वक्ता था। जिस विषय पर बोलता, अपना प्रभाव श्रोताओं पर डाल देता। उसके कुछ मित्रों ने उसे सुझाया कि यदि वह भाषण में कुछ चुटकुले भी सुनाने लगे तो सोने में सुहागा मिल जायगा। उन्होंने उसे कुछ सुन्दर चुटकुले याद भी करा दिये। अगले भाषण में वह उन्हें पटापट लगातार सुना गया। सारी जनता क्षुब्ध हो उठी और उसकी बहुत भद्द उड़ी।

व्यंग विनोद सुनाने का अभ्यास आपको घर से आरम्भ करना चाहिये। घर वाले आपके सच्चे हमदर्द होते हैं। आपकी किसी गलती पर निरुत्साहित करने के स्थान पर आपको बढ़ावा देंगे। फिर धीरे धीरे प्रतिदिन की बातचीत में आप इनका प्रयोग करने लगें।

भाषण करते समय आप एक विशेष बात का ध्यान रखें। आरम्भ में व्यंग विनोद न सुनायें। इसके कई कारण हैं। हर सभा में कुछ व्यक्ति देरी से आते हैं। फिर आरम्भ में आपसी बातचीत पूरी तरह से शान्त नहीं होती। तीसरे आरम्भ में उसका आनन्द लेकर आपका भाषण नीरस लगने लगेगा। यह मानता हूँ कि शुरू में सुनाने का रिवाज बन गया है, पर है यह गलत। आप निश्चय जानिये कि भाषण के प्रथम पचास शब्द कोई जनता नहीं सुन पाती।

आपको तो भाषण में बीच बीच में व्यंग विनोद सुनाने चाहियें। विपरीतता में वे अधिक चमकेंगे और दूसरों को प्रभावित करेंगे।

एक बात यह भी ध्यान रखनी चाहिये कि बहुत अधिक हँसी के चुटकुलों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। उनसे विषयान्तर हो जाता है और आपके किये कराये परिश्रम पर पानी फिर जाता है। जिस विषय पर आप ज़ोर दे रहे हैं वह हँसी की बाढ़ में लुप्त हो जाता है।

फिर चुटकुलों को छाँटते समय उनकी उपयुक्तता का ध्यान रखिये। बात किसी अन्य विषय की हो रही हो और आप चुटकुला किसी अन्य विषय पर सुना दें तो आप मूर्ख बन जायेंगे। पिछले दिनों रोटरी क्लब में एक वक्ता आये।

वह अपना भाषण लिखकर लाये थे जिसमें बीच बीच में उन्होंने चुटकुले जोड़ रखे थे। चुटकुले अच्छे थे पर पूर्वापर सम्बन्धित नहीं थे। उनका व्याख्यान सुनते सुनते हँसने के स्थान पर हम सब उन पर मुस्करा रहे थे और तरस खा रहे थे। चुटकुले सुन्दर हों तथा अपने स्थान पर उपयुक्त जँचें, इसकी आवश्यकता है।

प्रयत्न यह कीजिये कि भाषण या बातचीत किसी व्यंग विनोद पर समाप्त हो। अन्त में सबको हँसाने पर प्रभाव अधिक देर तक बना रहता है।

व्यंग विनोद कैसे सुनाने चाहियें

वही व्यंग विनोद सुनाने चाहियें जो आपको बहुत हास्यपूर्ण लगे हैं। क्योंकि वे आपको सर्वश्रेष्ठ लगे हैं, इसलिये स्वभावतया आप उन्हें सुन्दर रूप से सुनायेंगे और वे आपको सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रकट करेंगे। आपके सुनाने में जादू होगा जो श्रोता या श्रोताओं के सिर पर चढ़कर बोलेगा। स्वयं को न जँचने वाला चुटकुला ढीले मन से सुनाया जायगा और उसका प्रभाव भी ढीला ही रहेगा।

सुनाते समय आपको विभिन्न बोलियाँ बोलनी आ सकें तो बहुत सुन्दर है। मान लीजिये आपके चुटकुले में कोई देहाती है तो उसके वाक्य आप देहाती बोली में ही सुनायें। कोई बंगाली है तो उसमें बंगाली जैसी हिन्दी बोलें। यह चुटकुले में चार चाँद लगा देता है।

यह भी ध्यान रखने योग्य बात है कि अधिकतर सुनाये जाने वाले चुटकुले को आप बातचीत में न लायें। आपस की बातचीत में यह आपका प्रतिदिन का अनुभव होगा कि बहुधा सुनाया जाने वाला चुटकुला आरम्भ करते ही साथी कुछ तिरछा मुख बनाकर कह देता है, 'हाँ हाँ सुन रखा है ······।' यही हाल भाषणों में होता है। ऐसा चुटकुला सुनकर श्रोताओं में विरोध उत्पन्न होता है, 'क्या यह हमें मूर्ख समझता है कि हमने यह चुटकुला भी नहीं सुन रखा है?'

गन्दे और तीखे चुटकुले कभी नहीं सुनाने चाहियें। इनसे आपका व्यक्तित्व नीचे गिरता है।

चुटकुलों को अपने विशेष उद्देश्य के अनुकूल बनाना चाहिये। चुटकुलों को यह कहकर नहीं प्रारम्भ करना चाहिये— 'मुझे याद आया', 'आज सवेरे ही किसी ने सुनाया है', 'अमुक पुस्तक में इसका बड़ा सुन्दर उदाहरण है'। चुटकुलों को शब्द प्रति शब्द पुस्तक से नहीं सुनाना चाहिये। उसे समय के अनुसार बनाना चाहिये। आप बच्चों के बारे में भाषण दे रहे हैं तो चुटकुला बच्चा— ······, शिक्षिका— ······, बच्चा— ······ कहकर न सुनायें (पृष्ठ ५०) बल्कि इस तरह सुनायें— कल मेरा छोटा लड़का स्कूल गया तो बहन जी ने उससे परसों न आने का कारण पूछा। उसने बताया कि उसके घर बड़ा प्यारा नन्हा बच्चा

आया है। घर चलकर देखने का आग्रह करने पर बहन जी ने कहा— 'हाँ बेटा, चलेंगे। अपनी माँ को अच्छा तो होने दो।' इस पर मुन्नू बोला— 'बहन जी, डर की कोई बात नहीं। यह बीमारी लगनी नहीं है।'

अधिकतर चुटकुले अपने साथ हुई घटनाओं के रूप मे सुनाओ। व्यक्तिगत सम्पर्क से वे अधिक सुन्दर बन जाते हैं। पर चुटकुलों में नायक स्वयं कभी न बनिये। सबमें अपना मूर्ख बनते दिखायें। दूसरों को मूर्ख बनते देख सारी दुनिया हँसती है, पर अपना मूर्ख बनते समय नहीं हँसती।

जो चुटकुला दो व्यक्तियों के मध्य है उसे दो स्वरों में ही सुनाने का अभ्यास करना चाहिये। इसके लिये आवाज़ धीमी और तेज़ कर काम चलाया जा सकता है। या नाक से बोलिये या कोई विशेष बोली ले लीजिये। यह भी कर सकते हैं कि एक कथन मुख एक ओर करके कहें और दूसरा मुख पलट कर। सुनाते समय कुछ अभिनय भी होना चाहिये। मान लीजिये खाँस कर कोई व्यक्ति कह रहा है तो आप भी खाँसिये।

चुटकुला सुनाने के बाद कुछ क्षण रुकिये। मित्रों या श्रोताओं को हँसने का समय दीजिये। यदि फटाफट बोले चले गये तो आपका उद्देश्य निष्फल हो जायगा।

व्यंग विनोद की विशेषतायें

व्यंग विनोद कई प्रकार के होते है पर उनमें तीन का नियम अत्यन्त आवश्यक है। तीन का नियम क्या है? पहला कथन या पहला वाक्य या पहले कुछ शब्द बिल्कुल सीधे सादे, घटना को बतलाते हों। दूसरा कथन, वाक्य या शब्द घटना का और विकास करते हों। तीसरा कथन, वाक्य या शब्द ऐसे हों जो चुटकुले को चरम स्थिति में पहुँचा दे। हमारी उत्सुकता चरम सीमा पर पहुँच कर खिलखिलाहट में परिणत हो जाये।

कुछ चुटकुले ऐसे हैं जिनमे इस नियम का पालन नही किया जा सकता, जैसे हास्योक्ति। फिर भी अधिकतर व्यंग विनोद इस नियम का पालन करने पर सुन्दर बनते है। इस नियम का दूसरा अर्थ यह है कि आपका चुटकुला आवश्यकता से अधिक लम्बा न हो। आरम्भ किसी ऐसे वाक्य से हो जिससे अन्त का पता न लगे।

चुटकुला ऐसा हो जिसे सुनाकर आप स्वयं फिर आनन्दित हो उठें। आपके मुख से सुनाते समय उत्साह टपके जिससे अन्य व्यक्ति भी अनुप्राणित हो उठें।

कुछ 'ना'

अपने चुटकुले पर उत्साह दिखाइये पर स्वयं कभी न हँसिये।

सुनाये गये चुटकुले को कितना भी आग्रह किये जाने पर दुबारा न सुनाइये।

दो चुटकुलों को एक साथ कभी न सुनाइये।

प्रयत्न यह करिये कि सर्वदा आप नया चुटकुला सुनायें। कुछ दिन बाद भी चुटकुला न दोहरायें।

सार

यह पुस्तक दो प्रकार से लाभदायक है। इसे पढ़कर व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में हो, आनन्दित हो उठता है। दूसरे, यह अपने जीवन में समय समय पर प्रयोग करने के लिये व्यक्ति का सहायक कोष है। सुनाने के लिये यह आवश्यक है कि आपका मन सुनाने का इच्छुक हो। वही सुनाइये जो आपको सबसे अधिक हास्यपूर्ण लगे हों। हर अवसर के लिये चुटकुले मनोयोगपूर्वक छाँटिये। उनको पूर्ण रूप से हृदयंगम करिये। यह निश्चय कर लीजिये कि आपको उन्हें कब और कैसे सुनाना है। व्यंग विनोद को भूमिका के साथ न आरम्भ कीजिये बल्कि अपनी बातों में गूँथ दीजिये। इस तरह सुनाइये कि नीरस न होते हुए आप उत्सुकता को चरम सीमा पर पहुँचा सकें।

यह पुस्तक एक साहित्यिक खेल के रूप में भी काम आ सकती है। तीन चार मित्र मिलकर कुछ पृष्ठों के चुटकुलों को उनके विभिन्न रूपों, भोलापन, विनोद, व्यंग आदि में विभाजित करें।

इस पुस्तक को लिखने में सहायता के लिये मैं मित्र श्रीकृष्ण जी का हृदय से आभारी हूँ।

अरुण

क्रम

सचित्र व्यंग विनोद

शिशु

पेटू पांडे— बेटा, जानते हो जो कुछ मैं खा रहा हूँ सब तुम्हारे बाप को स्वर्ग में मिल जायगा ?

सोहन— तब तो अम्मा मुझे पैसे दो, मैं बाजार से पंडित जी को दो तोला अफीम ला दूँ। पिता जी को अफीम का बड़ा शौक था। उन्हें वह स्वर्ग में कहाँ मिलती होगी ?

*
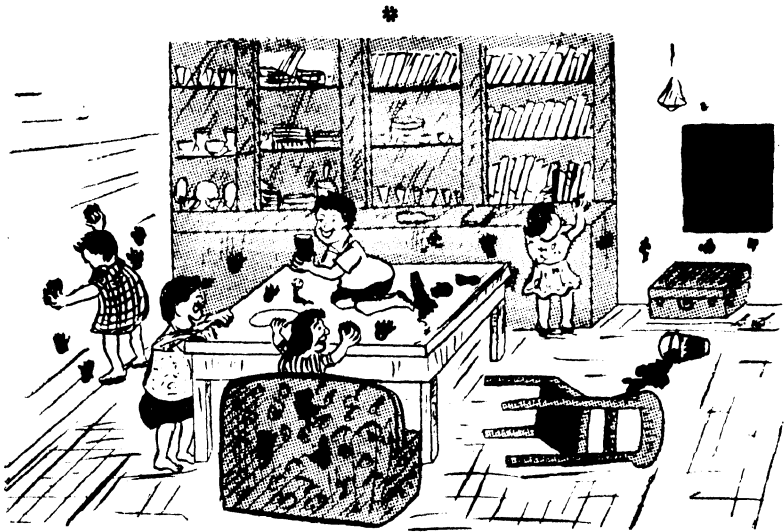
'तुम्हारा फर्श साफ है अम्मा !'

*

पुत्र— क्यों पिता जी, क्या बाबा जी भी आपको मारते थे ?

पिता— हाँ, बेटा।

पुत्र— और बाबा जी के पिता जी बाबा जी को मारते थे ?

पिता— हाँ।

पुत्र— तो आप मेरी सहायता से यह पैतृक क्रमागत जंगलीपन बन्द कर सकते हैं।

पिता— मेरा फौण्टेनपेन कैसे ख़राब हो गया।

बालक— ख़राब हो गया। कौन कहता है ? मैं तो अभी इससे इतनी देर तख्ती पर लिखता रहा। खूब चल रहा था।

*

मुन्न— पापा, आप कहाँ पैदा हुए थे ?

पिता जी— इलाहाबाद में।

मुन्न— और अम्मा कहाँ पैदा हुई थीं ?

पिता जी— वह जयपुर में।

मुन्नू— और मैं कहाँ पैदा हुआ था ?

पिता— बेटा, देहली में।

मुन्न— तो पापा, हम तीनों एक साथ कैसे मिल गये ?

*

'लो बेटा, यह सलाद खा लो। यह तुम्हारे दाँतों को मज़बूत करेगा।'

'अम्मा, यह सब दादी को क्यों नहीं खिलाती ? उन्हें इसकी बहुत ज़रूरत है।'

*

शशि— अम्मा, तुम उस गुलदस्ते को जानती हो न, जिसे तुम बता रही थीं कि वह पीढ़ी दर पीढ़ी हमारे यहाँ चला आ रहा है ?

माँ— हाँ, बेटा।

शशि— माँ, वह गुलदस्ता इस पीढ़ी से टूट गया है।

*

छोटा बच्चा— (भगवान से प्रार्थना करता हुआ) हे भगवान, मेहरबानी करके विटामिन पालक के साग तथा सलाद के स्थान पर मिठाइयों तथा नमकीन में भर दो।

*

अलका— देखो पिता जी, मैं एक बात बताऊँ, अम्मा से मत कहना। मुझे ऐसा लगता है कि उन्हें बच्चे पालने बिल्कुल नहीं आते।

पिता जी— पर बेटी, तुम्हें ऐसा क्योंकर लगा ?

अलका— बात यह है कि रोज़ाना जब मेरी आँखों में बिल्कुल नींद नहीं होती तब वे मुझे ज़बरदस्ती सुलाती है। और जब मैं नींद में होती हूँ तब वे मुझे जगा देती हैं।

*

बाप— बेटा, बिना कुछ खाये पिये पानी नहीं पीना चाहिये ।

बेटा— पिताजी, अभी दस मिनट हुए तो मैंने आप से थप्पड़ खाया था ।

*

"अरे, मेरे दाँत कौन ले गया ?"

सन्तोष की माँ के बालक होने वाला था। उसने सन्तोष की ओर स्नेह से देखते हुए पूछा— बतलाओ बेटा, तुम बहन लोगे या भैया ?

सन्तोष दुविधा में पड़ गया। कुछ देर सोचने के बाद वह बोला— मां, यदि कुछ फर्क न पड़ता हो तो मैं तो एक कुत्ते का पिल्ला लूंगा।

*

माँ— (शरारती बेटे से) बेटा, अच्छे बच्चे बनो और आ···आ···आ··· आ करो ताकि डाक्टर साहब तुम्हारे मुंह में से अपनी उंगली निकाल लें।

*

'अम्मा, देखो तो कितनी बड़ी चुहिया कूद रही है।'

'बेटा, कहाँ ? दिखाओ तो।'

'आप नहीं देख सकेंगी।'

'क्यों ? दिखाओ तो सही।'

'पेट में ! और कहां होगी ?'

*

बब्बू— तुम्हारे घर पर जो नया बच्चा आया है वह इतना शोर क्यों मचाता है ?

टुन्नू— वह इतना अधिक तो नहीं चिल्लाता ········· और यदि चिल्लाता भी हो तो क्या बात है ? यदि तुम्हारे सारे दांत झड़ जायें, सारे बाल उड़ जायें तथा टांग इतनी कमज़ोर हो जायें कि तुम उन पर खड़े भी न हो सको तो मेरा विचार है कि तुम भी रोने लगोगे।

*

'रामो, मैंने सुना है कि तुम्हारे यहां एक नया बच्चा आया है।' पड़ौसी ने पूछा।

'मुझे तो वह नया नहीं लगता है,' रामो ने सोचते हुए उत्तर दिया। 'उसके रोने से तो पता चलता है कि वह बड़ा अनुभवी है।'

*

अतिथि ने छोटी शान्ति से पूछा— मैंने सुना है कि तुम्हारा छोटा भाई बहुत रोता है।

शान्ति ने उत्तर दिया— तो आप उससे क्या आशा रखते हैं ? वह अभी इतना छोटा है कि तंग किये जाने पर गाली देना नहीं जानता।

*

रमा की माँ अस्पताल गई हुई थी। वहां पर उनके बच्चा पैदा हुआ।

रमा अपने छोटे भाई को देखने गई। घूमती फिरती वह बगल वाले कमरे में चली गई जहाँ एक स्त्री पड़ी थी। उस स्त्री के पैर की हड्डी टूटी थी।

रमा बोली— कहिये, आप कितने दिनों से यहाँ हैं?

स्त्री ने उत्तर दिया— लगभग एक माह से।

रमा— मुझे अपना बच्चा देखने दो।

स्त्री— बच्चा! कैसा बच्चा?

रमा— ओहो! आप बड़ी सुस्त हैं। मेरी अम्मा को तो यहाँ रहते केवल दो दिन हुए हैं और उनके बच्चा हो भी गया है।

*

बच्ची राधा को यह खबर मिली कि उसके पड़ौस में चाची के एक नया बच्चा आया है। वह खड़ी खड़ी बहुत देर तक सोचती रही। फिर उसने अपनी अम्मा से पूछा— क्यों अम्मा, चाची अपने पुराने बच्चे का क्या करेंगी?

*

प्रभात अपने छोटे भाई की ओर देख रहा था जो खाट पर पड़ा चिल्ला रहा था।

'क्यों अम्मा, यह कहां से आया है?'

'बेटा, इसे आकाश में से भगवान ने भेजा है।'

'हाँ, ठीक है अम्मा! इसके रोने से नाराज़ होकर भगवान ने इसे नीचे फेंक दिया होगा।'

*

कम्मो— हमारे घर एक नया बच्चा आया है।

उमा— लड़का है या लड़की?

कम्मो— मैं यह कैसे बता सकती हूँ। माँ ने उसे अभी तक कपड़े ही नहीं पहनाये हैं।

*

'तुम्हारे छोटे भाई का क्या नाम है?'

'मैं नहीं जानता, क्योंकि उसका कहा एक भी शब्द अभी तक हमारी समझ में नहीं आता।'

*

'क्या तुम्हारे बच्चे को बोलना आ गया है?'

'किसे? मेरे बच्चे को? हे भगवान! उसे तो अब हम चुप रहना सिखला रहे हैं।'

*

बिल्लू— मैंने सुना है कि मेरी बहन के बच्चा हुआ है।

बिट्टू— अच्छा, यह तो बताओ तुम मामा बने या मामी।

*

'चाचाजी, आपने जो काठ का घोड़ा लाकर दिया उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।'

'बेटा, इसमें धन्यवाद देने की क्या बात है?'

'चाचाजी, यही तो मैं सोच रहा था, पर अम्मा ने कहा था।'

*

'आज तक कभी तुम्हारे हँसते हँसते आँसू भी निकले हैं?'

'वह तो आज ही हुआ है।'

'ऐसी क्या हँसी की बात थी?'

'बात यह हुई कि पिता जी का पैर रपट गया। मैं हँसने लगा। बस तुम स्वयं सोच सकते हो। पल भर बाद मैं रो रहा था।'

*

आत्माराम— मैं रात में बहुत डरावने स्वप्न देखा करता हूँ।

छोटेलाल— तो मत देखा करो।

आत्माराम— किस प्रकार न देखा करूँ?

छोटेलाल— आँखें बन्द कर लिया करो।

*

माँ— आलोक, तेरे सिर पर यह गूमड़ा कैसे उठा? क्यों फिर किसी से लड़ा था?

आलोक— नहीं माँ, मैं किसी से नहीं लड़ा।

माँ— तो फिर यह चोट कैसे लगी?

आलोक— यह लड़ाई का नतीजा नहीं है। मेरे साथ एक दुर्घटना हो गई।

माँ— (घबराकर) दुर्घटना!

आलोक— हाँ माँ! मैं विकास के ऊपर बैठा हुआ था और मुझे उसके पैर पकड़ना ध्यान नहीं रहा।

*

शीला बहुत शैतान थी। एक दिन उसकी माँ ने तंग आकर झिड़कते हुए कहा— शीला, शैतानी कम किया कर। देख, एक बात बताती हूँ। यदि तू शैतानी कम करेगी तो तेरे बच्चे भी कम शैतान होंगे।

शीला— माँ, तुमने अपनी पोल खोल दी।

*

माता— जब तुम्हारे पिता सीढ़ी पर से नीचे गिर पड़े तो उन्होंने क्या कहा!

कैलाश— अम्मा, उनकी दी हुई गालियाँ तो छोड़ दूँ?

माता— हाँ बेटा।

कैलाश— तो अम्मा, उन्होंने कुछ नहीं कहा।

*

'बेटा, तुम्हें कुत्ते की पूंछ पकड़ कर नहीं खींचनी चाहिये।"
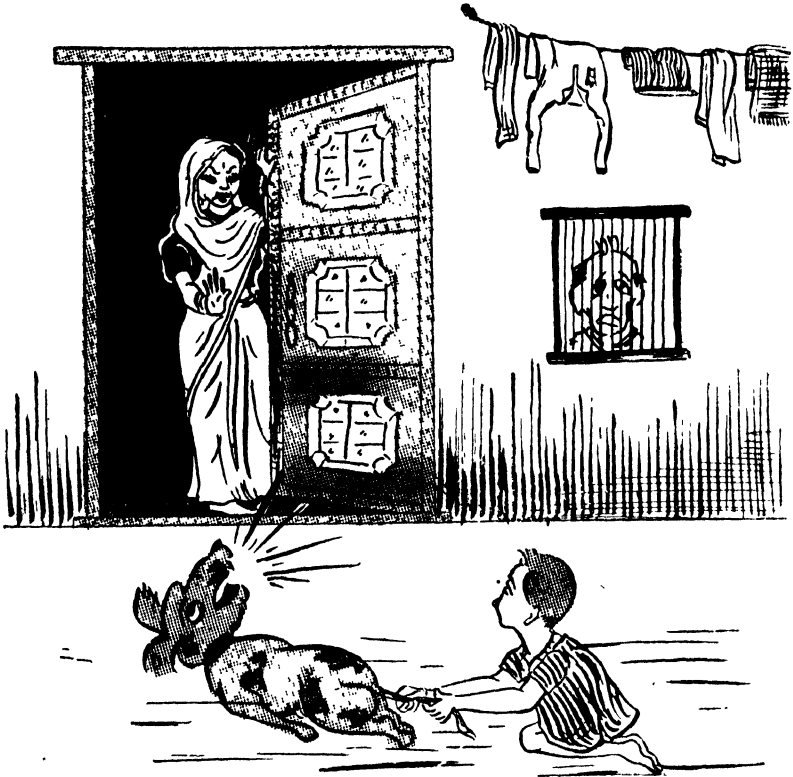
'माता जी, मैंने तो उसकी पूंछ केवल पकड़ रखी है, खींच तो वह खुद रहा है।'

पड़ौसी— शशांक, तुम्हारी बहन के चोट कैसे लग गई ? कोई चिन्ता की बात तो नहीं है ?

शशांक— कुछ नहीं। उसमें और मुझमें होड़ लगी थी कि कमरे की खिड़की पर कौन अधिक झुकता है। और इस होड़ में वह जीत गई।

*

अम्मा— हेनरी, तुम्हारी सालगिरह पर एक सुन्दर केक लाऊँगी और उस पर छोटी छोटी पाँच मोमबत्तियाँ जलाऊँगी। फिर सबको दावत देंगे।

हेनरी— ममी, इसके बजाय तुम पाँच केक और एक मोमबत्ती लाओ तो बड़ा अच्छा हो।

*

विनोद— माँ, बाहर जो आदमी खड़ा हुआ चिल्ला रहा है क्या उसके लिये मुझे एक आना दे दोगी ?

अम्मा— हाँ हाँ, बेटा, लो इकन्नी। पर यह तो बताओ कि वह क्यों चिल्ला रहा है।

विनोद— अम्मा, वह चिल्ला रहा है 'लैमजूस की गोली एक आने की पाँच।'

*

एक चार साल की छोटी बच्ची रोती रोती अपनी अम्मा के पास आई। उसकी शिकायत यह थी— माँ, तुमने फ्राक के सारे बटन पीछे लगा दिये जब कि मेरी आंखें सामने हैं।

*

'ममी, तुम आया के समान सुन्दर नहीं हो।'

'क्यों बेटी ?'

'इसलिये कि हमें पार्क में घूमते घूमते लगभग एक घण्टा हो गया है फिर भी किसी आदमी ने आकर तुम्हें चूमा नहीं।'

*

अतिथि— तुम्हारा बच्चा बड़ा शान्त और सीधा मालूम पड़ता है।

अम्मा— ओहो ! तो बस अब तूफान आने वाला है।

*

दादी— (रोते बच्चे को चुप कराने के लिये) बेटा, तुझे मेले में ले चलेंगे। वहाँ तू चक्कर के घोड़े पर बैठियो।

बच्चा— (मचल कर) वह तो मुझे पता ही है कि सब काम तुम अपना जी बहलाने को करोगी।

*

राम— और भगवान, मेरी तुम्हारे से हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि श्याम के हाथ में कुछ कर दो जिससे वह मुझे मार न सके। तुम्हें याद है न, यही प्रार्थना मैंने तुम से कल की थी।

*

'माँ, बारिश क्यों होती है ?'

'बेटा, बारिश होने से हमें बहुत लाभ हैं। सब अन्न इसी से पैदा होता है।'

'अम्मा, तो बारिश पक्के फर्शों पर क्यों पड़ती है ?'

*

एक दयालु वृद्ध मनुष्य घूमने जा रहे थे। उन्होंने एक छोटे बच्चे को एक मकान की सामने की सीढ़ियों पर उचक उचक कर घंटी तक पहुंचने का असफल प्रयत्न करते देखा। वह बच्चा अपने पंजों के बल खड़ा हो गया तथा उसने ऊंचा कूदना चाहा पर वह उस घण्टी तक नही पहुंच पाया।

वृद्ध को दया आई। उन्होंने सीढ़ी पर चढ़ कर घण्टी बजा दी और बच्चे से कहा— कहो, भाई, अब तो खुश हो।

बच्चा बोला— मैं नहीं जानता कि आप क्या करेंगे, लेकिन मैं तो अब सौ गज़ की दौड़ लगाने वाला हूं।

*

'रम्मो, मैं चाहती हूँ कि मेरा पूरा एक दिन बिना तुम्हें धमकाये या मारे बीते।'

'ठीक है माँ, यही मैं भी चाहती हूँ।'

*

बाप अपने बेटे के लालचीपन पर क्रोधित होकर गुर्राया— पेसी, तू सुअर का बच्चा है। जानता है सुअर का बच्चा किसे कहते हैं।

लड़का घबराकर बोला— जी पिता जी, जानता हूँ। वह सूअर का बेटा होता है।

*

माँ बच्चे को झिड़कते हुए— शशि, देखो तुम अपने आप चीजें मत उठाया करो। क्या तुम्हारे ज़बान नहीं है।

बेटा— है तो माँ, लेकिन मेरा हाथ उससे अधिक लम्बा है।

*

माँ— बेटा, तुम्हें यह गन्दा शब्द कहना किसने सिखलाया ?

बेटा— पिताजी ने, माँ।

माँ— क्या कहा!

बेटा— हाँ माँ, तुम्हें ध्यान होगा जब पिछले दिनों पिता जी कमरे में फिसल कर गिर पड़े थे।

*

माँ अपनी बेटी से जो अपनी सहेली के घर से दावत खा कर लौटी है— क्यों बेटी, मुझे आशा है कि जैसा मैंने तुम्हें सिखाया था कोई चीज़ पूछे जाने पर तुमने 'नहीं' कह दिया होगा।

बेटी— हाँ माँ, जब खाते खाते मुझे आधा घण्टा हो गया तो उन्होंने पूछना शुरू किया, 'क्या तुमने काफी नहीं खा लिया है?' 'अधिक खाने से तुम्हारी तबीयत तो ख़राब नहीं हो जायगी?' और मैंने सबका जवाब दिया 'नहीं'।

*

आनन्द— (मोहन से) मां ने पूछा है कि दूध पर से मलाई कौन खा गया?

मोहन— बिल्ली खा गई होगी।

आनन्द— तो फिर बिल्ली दूध किस के लिए छोड़ गई?

*

पिता— मुन्ना, तुम पंखे से हवा करो जब तक कि हम सो जायें। फिर तुम्हें एक पैसा देंगे।

मुन्ना पंखा करने लगा और पिता जी थोड़ी ही देर में सो गये। मुन्ने ने झट उन्हें हिलाकर जगाया और बोला— देखिये आप सो गए, अब लाइये पैसा।

*

पिता— मोहन, तुमने नन्हें को क्यों मारा?

मोहन— यह मेरी बात का उत्तर नहीं देता था।

पिता— वह बोल ही नहीं सकता।

मोहन— तो उसने कह क्यों नहीं दिया कि उसे बोलना नही आता।

*

पड़ौसी— मुन्ना, कहाँ भागे जा रहे हो?

मुन्ना— जी, आग लगी है, उसे देखने।

पड़ौसी— आग कहाँ लगी है?

मुन्ना— जी, आपके गैरेज में।

*

हमारे पड़ौसी की छोटी लड़की के पास दुनिया की सब कठिनाइयों का हल मौजद होता है। कल वह अपने घर आये एक सज्जन से पूछ रही थी— आप बार बार खांसते क्यों हैं ?

'मुझे काफी दिनों से खांसी जुकाम है।'

'क्यों, अभी तक अच्छा नहीं हुआ ?'

'नहीं।'

'ओह ! इससे अच्छा तो आपको निमोनिया हो जाता ! तब हम अपने डाक्टर से आपको ठीक करा देते। उसने अभी भाभी का निमोनिया ठीक कर दिया है।'

*

"यह पानी कहाँ से आ रहा है ?"

*

एक बार मेरी माता जी के गले में दर्द हो रहा था। तभी मेरा चार वर्ष

का लड़का रमेश घूमता फिरता वहाँ आ पहुंचा और पूछने लगा— दादी जी, आपके कहाँ दर्द हो रहा है ? पैर में ? लाओ मैं दबा दूं।

मना करने पर वह फिर बोला— तो क्या सिर में दर्द है ? लाओ दबाऊं।

यह बताने पर कि गले में दर्द है, वह कहने लगा— तो पहले क्यों नहीं बताया ? लाओ गला दबा दूँ।

*

छोटी मंजु अपने हाथ में एक टूटी हुई गुड़िया लिये रो रही थी। उसकी माँ ने पूछा, "क्यों रो रही है मुन्नी ?"

मंजु ने रोते रोते जबाव दिया "रानी ने मेरी गुड़िया तोड़ दी।"

"कैसे ?" माँ ने पूछा।

"मैं ने गुड़िया उसके सिर पर मारी थी।"

*

माँ रोटी बना रही थी कि छोटी मुन्नी रोटी मांगने लगी। माँ बोली— अभी नहीं, हम लोगों के साथ खाना।

इस पर मुन्नी ने कहा— अच्छा, माँ। तब तक एक कहानी सुनाऊं ?

माँ मन ही मन खुश हो कर बोली— हाँ, बेटी।

वह कहानी सुनाने लगी— मेरी माँ की तरह एक माँ थी। उसके कई बच्चे थे। एक मेरी तरह की लड़की थी। उसका नाम मुन्नी था। एक दिन मुन्नी रोटी माँग रही थी। उसे बड़ी ज़ोर से भूख लगी थी। पर उसकी माँ ने मना कर दिया। तभी क्या हुआ ? माँ के पीछे रखी रोटी बन्दर ले गया। मुन्नी की माँ चिल्लाने लगी, 'हाय भगवान, यदि एक रोटी मैं मुन्नी को दे देती तो सब रोटियां बच जातीं। अब से मैं मुन्नी को मना नहीं करूंगी।'

*

माँ ने अपने छोटे बच्चे को उंगली पर पट्टी बांधते देख कर पूछा— क्या हुआ मुन्नू ?

'उंगली में हथौड़ी लग गई, अम्माँ।'

'पर मैं ने तेरे रोने की आवाज़ तो सुनी नहीं।'

'हाँ, मैं समझा था कि तुम घर पर नहीं हो।'

*

घर में मेहमान आये हुये थे।

'अम्मा, चवन्नी दे दो।' करुणा ने अपनी माँ से कहा।

माँ ने मुस्कराते हुये चवन्नी दे दी।

'माँ, इस बार मेहमानों के चले जाने पर मैं चवन्नी तुम्हें नहीं लौटाऊँगी,' करुणा ने ज़ोर से कहा।

*

हम सब रेडियो सुन रहे थे। पास में हेमन्त खड़ा था। वह कहने लगा— पापा यह कौन गा रहा है ?

मैं ने कहा— मुकेश गा रहा है, बेटा।

इससे कुछ दिनों बाद रेडियो खराब हो गया। मैं अपने मित्र कैलाश को बुला लाया। उसने ज्योंही रेडियो का पिछला ढक्कन पेंच खोल कर निकाला, त्यों ही एक झींगुर उस में से निकल कर भागा। हेमन्त भी वहीं खड़ा था। एकदम बोल उठा— 'देखो पापा, मुकेश भागा।'

*

नन्हीं अनीता भगवान से प्रार्थना कर रही थी : "हे भगवान, खूब बारिश बरसाओ, ताकि खूब अनाज पैदा हो।"

अनीता की माँ ने भी उसकी प्रार्थना सुन ली। वह बोली, "अनीता, तुम बहुत अच्छी हो। तुम्हें सारे देश का ख्याल रहता है।"

"नहीं माँ," अनीता ने उत्तर दिया, 'मैं तो भगवान को बहका रही थी। बारिश तो इसलिये चाहिये कि मैं सड़क के पानी में काग़ज़ की नाव बनाकर तैरा सकूँ।"

*

माँ— देखो स्टीफन, जंगली मत बनो। मैं कहती हूँ, मेरी सहेली को एक चुम्बन दो।

स्टीफन— नहीं, यह बड़ी शैतान हैं। मेरे चुम्बन करने पर यह मेरे भी चांटा मार देंगी जैसे इन्होंने पिताजी के मारा था।

*

नन्हा— माँ, शीला बहन तो अंधेरे में भी देख सकती हैं।

माँ— कैसे पता ?

नन्हा— कल रात को जब वह स्वदेशकुमार के साथ ड्राइंग रूम में बैठी थीं तो मैंने उन्हें कहते सुना— 'क्यों जी, आज आप शेव करके नहीं आये ?'

*

छोटी लड़की सबसे कह रही थी कि उसके घर एक छोटा बच्चा आया है।

एक बोला— यह बहुत अच्छा हुआ। पर यह तो बताओ कि क्या वह ठहरने जा रहा है ?

उत्तर था— मैं तो ऐसा ही सोचती हूँ, क्योंकि उसने अपने सब कपड़े उतार दिये हैं।

*

कमला— मेरे विचार से नीचे कुछ मेहमान आये हुये हैं।

विमला— तुम्हें कैसे पता ?

कमला— मैंने अभी अम्मा को पिता जी की मजाक पर हँसते सुना है।

*

नर्स— दिवाली के उपहार में अखिल तुम्हें एक बच्चा मिला है।

अखिल— तो यह समाचार सबसे पहले मैं माँ को सुनाऊँगा।

*

फ्रैंक अपने माता पिता के साथ नये मकान में चला आया था। पुराने मकान में उसकी माँ ने अपनी सहेली को ठहरा दिया था जिनके यहाँ वह बहुधा जाया करता था।

एक दिन जब वह पहले घर में गया तो वहाँ नये उत्पन्न हुए बच्चे के साथ खेलन में उसे बड़ा आनन्द आया। लौटते हुए वह कहने लगा— अम्मा, यह कैसी बेवकूफी हुई कि हम उस मकान से चले आये, नहीं तो वह बच्चा हमारे यहाँ पैदा होता।

*

'मैंने सुना है तुम्हारे एक बहन आई है ?'

बच्चे ने उत्तर दिया, 'हाँ।'

'क्या वह तुम्हें पसन्द नहीं ?'

'मैं चाहता हूँ कि वह एक लड़का होती जिसके साथ मैं कंचे खेलता, गुल्ली डंडा पीटता, पतंग उड़ाता।'

'तो उसे किसी भाई के साथ बदल लो।'

'नहीं' अब तो बहुत देर हो गई है। उसको इस्तेमाल करते हमें चार दिन हो चुके हैं।

*

पिता— (समाचार सुनने की प्रतीक्षा में) क्यों नर्स, पैदा होने वाला उस्तरा इस्तेमाल करेगा या लिपस्टिक ?

*

माँ- बेबी तो बड़ा होकर नीलाम करने वाला बनेगा ।

पिता— तुम्हें कैसे पता ?
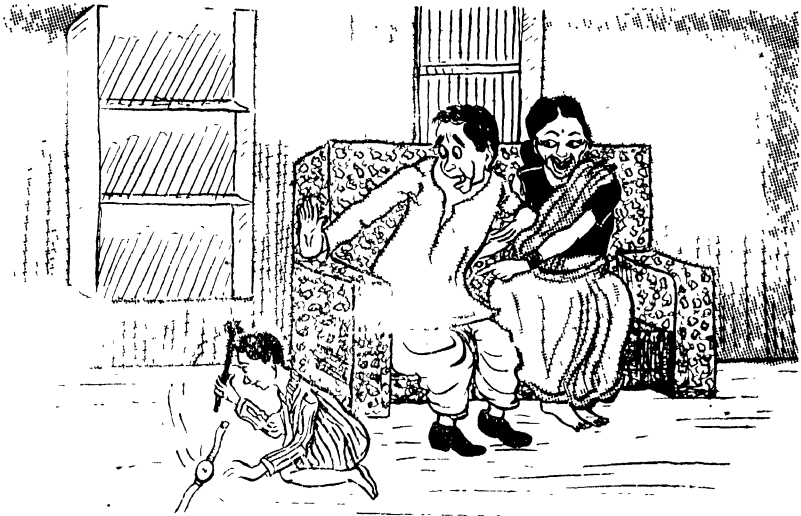
माँ— क्योंकि वह तुम्हारी घड़ी हथौड़ी के नीचे रख चुका है ।

*

रमा की माता की नई ब्लाउज़ सिल कर आई । रमा को वह बहुत पसन्द आई और वह उसे पहनने को अपनी माँ के सिर पड़ गई ।

उसकी माँ ने समझाया— नहीं बेटी, आज नहीं, यह तो मैंने उस दिन के लिये सिलवाई है जब हमारे घर भले आदमी आयेंगे ।

रमा— अम्मा, कम से कम एक दिन तो हमें पिता जी को भी चाहे झूठे से ही भले आदमियों में गिन लेना चाहिये ।

*

बच्चा— जल्दी चलिये, मेरे पिताजी की एक आदमी से लड़ाई हो रही है।

पुलिसमैन— तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया ?

बच्चा— बात यह है पहले पिताजी ऊपर थे, अब वे नीचे आ गये हैं ।

*

'ओ अम्मा, सड़क से इतनी बड़ी बस गई है जिसमें एक पूरा का पूरा घर समा सकता है !'

'रमेश, तू बात को कितनी बढ़ा चढ़ा कर बोलता है ! मैं तुझसे चालिस लाख बार कह चुकी हूँ कि यह तेरी बड़ी गन्दी आदत है ।'

*

माँ ने बच्चे को मारा और वह मेज़ के नीचे छिप गया। पिता कमरे में कुछ ढूंढने आए तो झुक कर देखा। बच्चा बोला, "क्या आप भी छिपने के लिए आ रहे हैं? क्या आपको भी माँ ने मारा है?"

*

बेटा— पिताजी, मुझे ढोल ला दीजिए।

पिता— ढोल तो ला दूँगा, पर ऐसे समय बजाना जब मैं कुछ काम न कर रहा हूँ।

बेटा— अच्छी बात है, जब आप सोते होंगे उसी समय मैं ढोल बजाऊंगा।

*

एक बड़ा सा कुत्ता एक छोटे बच्चे के मुह और हाथ को चाटने लगा। बच्चा डर के मारे चीख उठा। इस पर उसकी मां बाहर निकल आई।

"क्या हुआ?" वह बोली, "कुत्ते ने काटा तो नही?"

"नहीं, अभी तो चख रहा था।" बच्चे ने भोलेपन से उत्तर दिया।

*

विवाह संस्कार हो रहा था, पास ही बैठी हुई एक छोटी बच्ची ने वधू से कहा, "मैं तो समझती थी कि तुम बहुत थक गई होगी और तुम्हारा दम फूल रहा होगा।"

"क्यों?" वधू ने आश्चर्य से पूछा।

छोटी बच्ची ने वर की ओर इशारा करते हुए कहा, "कोई कह रहा था कि शादी से पहले तुम इनके पीछे भागी भागी फिरती थी।"

*

चाची ने नन्हीं मुन्नी से पूछा— तू क्यों रो रही है, मुन्नी?

मुन्नी— क्योंकि राम को दिवाली की छुट्टियां मिली हैं और मुझे नहीं मिलीं।

चाची— भला, तुझे क्यों नहीं मिलीं?

मुन्नी ने सिसक कर कहा— क्योंकि मैं अभी स्कूल जाने लायक नहीं हुई हूँ?

*

नीला की माँ चींटों से तंग आकर कह रही थी— न जाने चीनी के डिब्बे को मैं और कहाँ रखूँ; जहां भी रखती हूँ, चींटे अन्दर घुस आते हैं।

नीला— माता जी डिब्बे पर लगे लेबिल को उतार दो। उस पर तो

चीनी लिखा है। जब लेबिल ही नही रहेगा तो देखें चीटे कैसे जान सकते है कि चीनी किधर है।

❀

डाक्टर ने प्रसूतिका कक्ष से निकलकर चार वर्षीय बालक से कहा— "खुश हो जाओ बेटे, तुम्हारे खेलने को भाई आया है।"

बालक भागने लगा तो डाक्टर ने रोक कर पूछा— "भागे कहाँ जा रहे हो ?"

"माँ से कहने। वे सुनेंगी तो बहुत खुश होंगी।"

*

रमेश के बाबा जी रमेश को बता रहे थे कि भगवान हमारे तुम्हारे सब के पिता है।

इस पर रमेश ने पूछा— क्या आपके और पिताजी के भी ?

बाबा जी ने जवाब दिया— हाँ बेटा, हमारे, तुम्हारे, सब के। तुम्हारे पिता के भी, और मेरे भी।

रमेश फौरन बोल उठा— तब तो आप और पिता जी हमारे भाई साहब हुए।

*

पाँच वर्षीय दिनेश एक दिन अपने पिता जी के पास आ बैठा और उनसे पूछने लगा— पिता जी, बतलाइए ये गाल मुँह पर क्यों होते है ?

जब तक कि वे सोच समझकर उसके सवाल का उत्तर देते, दिनेश फिर बोल उठा— अच्छा, मै बताता हूँ। गाल इसलिए होते हैं कि खाना खाते समय हमारे मुँह का खाना इधर उधर न गिर जाए।

*

"अम्माँ, मरने के बाद मैं स्वर्ग जाऊंगी ?"

"हाँ, बेटी।"

"छोटा काका भी मर के स्वर्ग जाएगा ?"

"हाँ, बेटी।"

"पिता जी भी ?"

"हाँ।"

"तुम भी।"

"हाँ।"

लेकिन नीरा को इतने प्रश्न पूछ कर ही शान्ति नहीं हुई थी। उसने

पड़ौसियों के नौकर श्याम से लेकर घर के कुत्ते बिल्ली के बारे में भी पूछ डाला। वे सभी स्वर्ग जा रहे थे। अंत में उसके प्रश्नों का उत्तर देते देते माँ थक गई।

"और, अम्माँ, दूध वाले की गाय भी स्वर्ग जाएगी?"

"नहीं," उकताकर माँ ने कहा।

"तो, माँ, हमें दूध लेने के लिए स्वर्ग से नरक जाना पड़ा करेगा।"

*

"माँ!" छोटा लड़का बोला, "तुमने अशोक को बड़े गिलास में दूध दिया है।"

"बेटा, वह तुम से बड़ा भी तो है।"

"ऊँहूँ, यों तो वह हमेशा ही मुझसे बड़ा रहेगा।"

*

बिजली की गड़गड़ाहट से डरकर नन्हे प्रभात ने अपना मुँह लिहाफ में छिपाते हुए कहा— "दादा, आप बड़े आदमी नहीं हैं।"

"क्यों?" दादा ने पूछा।

"आपने मुझ से झूठ बोला कि बादलों में पानी होता है। अगर बादलों में पानी होता तो बिजली की आग बुझ न जाती? बड़े आदमी कहीं झूठ बोलते हैं!"

*

नीरजा का परिवार मेरठ छोड़ कर दिल्ली में बसने के लिए जा रहा था। जाने से एक रात पहले नीरजा ने प्रार्थना की—

"भगवान, हम सब की रक्षा करना— पिताजी की, अम्मा की, भैया की और मेरी भी। और हे भगवान, मैं तुम से आख़िरी बार प्रार्थना कर रही हूँ— तुम तो मेरठ में ही रहोगे। कल सुबह हम दिल्ली चले जाएँगे।"

*

घर में केवल एक केला बचा था। वह भी मंजु की निगाह से न बच सका। उसने माँ से वह केला भी माँग ही तो लिया। जब माँ ने मंजु का केला दे दिया तो दादी बोली, "घर में इतने केले आए, हमें तो एक सूंघने को भी न मिला।"

थोड़ी देर तो मंजु कुछ सोचती रही। फिर बोली, "लो दादी, इसे सूंघ लो, फिर वापिस कर देना।"

*

पिता अपनी छः वर्ष की पुत्री शीला से कुटुम्ब में एक नये प्राणी के आने के बारे में बात कर रहे थे।

पिता— "क्यों शीला, इस बार तुम क्या चाहती हो— भाई या बहन ?"

शीला— बहन ।

पिता— लेकिन तुम्हारे एक छोटी बहन तो पहले ही है ।

शीला— तो क्या हुआ, मुझे तो बहन ही चाहिये ।

पिता— लेकिन इतनी सारी बहनों का क्या करोगी ?

शीला (बिगड़ कर)— अच्छा, बाबा, तो फिर जो तुम्हारी मरज़ी हो वही ले आओ ।

*

जिस गाड़ी से बुआ को आना था, उससे वह नहीं आई । कुछ देर बाद उनका तार आया— गाड़ी छूट गई, कल फिर इसी समय चलूंगी ।

तार सुनकर नन्ही रेणु रो पड़ी । माँ ने रोने की वजह पूछी तो वह बोली— अगर कल भी बुआ जी उसी समय पर चलीं तो गाड़ी फिर छूट जायगी ।

*

चार पाँच वर्ष का एक लड़का थाने में पहुँच कर वहाँ खोये हुए माल का हिसाब रखने वाले अधिकारी से बोला—

"आज सुबह कोई माँ तो खोई हुई नहीं आई ?"

*

बेटी— माँ, मोती बहुत पाजी कुत्ता है । देखो न, अभी अभी मेरी नई गुड़िया चबा गया है ।

माँ— वाक़ई यह शैतान है, बेटी । अच्छा मैं उसे सज़ा दूंगी ।

बेटी— मैंने उसे सज़ा दे दी, माँ । तुमने उसके पीने के लिये जो दूध रक्खा था, वह मैं पी आई ।

*

लक्ष्मी नाम की एक पाँच बरस की लड़की कागज़ पर कुछ लिख रही थी । यह देखकर उसकी माँ ने पूछा— "यह क्या कर रही है ?"

लक्ष्मी— "भैया को चिट्ठी लिख रही हूँ ।"

माँ— "तू तो कुछ पढ़ी ही नहीं, चिट्ठी कैसे लिखेगी ?"

लक्ष्मी— "तो भैया भी तो नहीं पढ़ सकता ।"

*

एक छोटा बच्चा अपनी माँ से एक पैसा माँग रहा था । जब पैसा न मिला तो वह अपनी माँ से बोला— "अम्माँ, तुम यदि मुझे पैसा न दोगी तो मैं उस

लड़के के पास चला जाऊँगा जिसको चेचक निकली है और मुझे भी लग जायगी।''

❀

बड़े भाई रमेश के कालिज की परीक्षा में अच्छे नम्बर आये थे। माता-पिता उसकी बहुत बड़ाई कर रहे थे और उसे साइकिल इनाम में देने को कह रहे थे। छोटे भाई सुरेश को बहुत खीज लगी। बोला, 'मेरे भी गणित में सबसे अधिक नम्बर आये हैं।'

पिता हँसकर बोले, 'मुझे नहीं पता था कि शिक्षा भवन में चार साल के बच्चे को गणित पढ़ाते हैं। अच्छा बताओ, एक और एक कितने होते हैं ?'

'अभी हम इस सबक तक नहीं पहुँचे हैं।'

❀

घर में नौकर छुट्टी पर था। पत्नी को घर का सारा काम करना पड़ा। पति ने छोटे बेटे को सुलाने का काम अपने सिर ले लिया। पत्नी रसोई में बैठी बर्तन माँज रही थी। पति और बेटे को सोने के कमरे में गये एक घण्टा बीत चुका था। तभी बेटा रसोई में घुसा और फुसफुसा कर बोला, 'आखिर पिता जी गहरी नींद सो ही गये।'

❀

इला के पीछे कमल गुस्से में भरकर भाग रहा था। इला के पिताजी ने देख लिया। वे गरजे, 'क्यों कमल, इला के पीछे क्यों भाग रहा है ?'

'आपकी इला ने मेरे बड़ी ज़ोर से चुटकी भरली।'

'क्यों इला ? चुटकी क्यों भरी ?'

'पिताजी, जिससे यह मेरे पीछे भाग कर खेले।'

❀

सहेली— तुम्हारा बच्चा तो अब तकड़ा हो गया है।

माँ— (झुझलाकर) हाँ, सवेरे तीन बजे से वह घर को सिर पर उठाये रखता है।

❀

'देखो बच्चे ! एक भले बालक को उस स्त्री से क्या कहना चाहिये जो अपना सामान उठाकर लाने के लिये उसे एक अधन्ना दे।'

'मैं बहुत भला हूँ, तभी कुछ नहीं कह रहा।'

❀

बच्चे

लड़का— माँ, क्या तुम पहले सर्कस में थीं ?

माँ— नहीं तो।
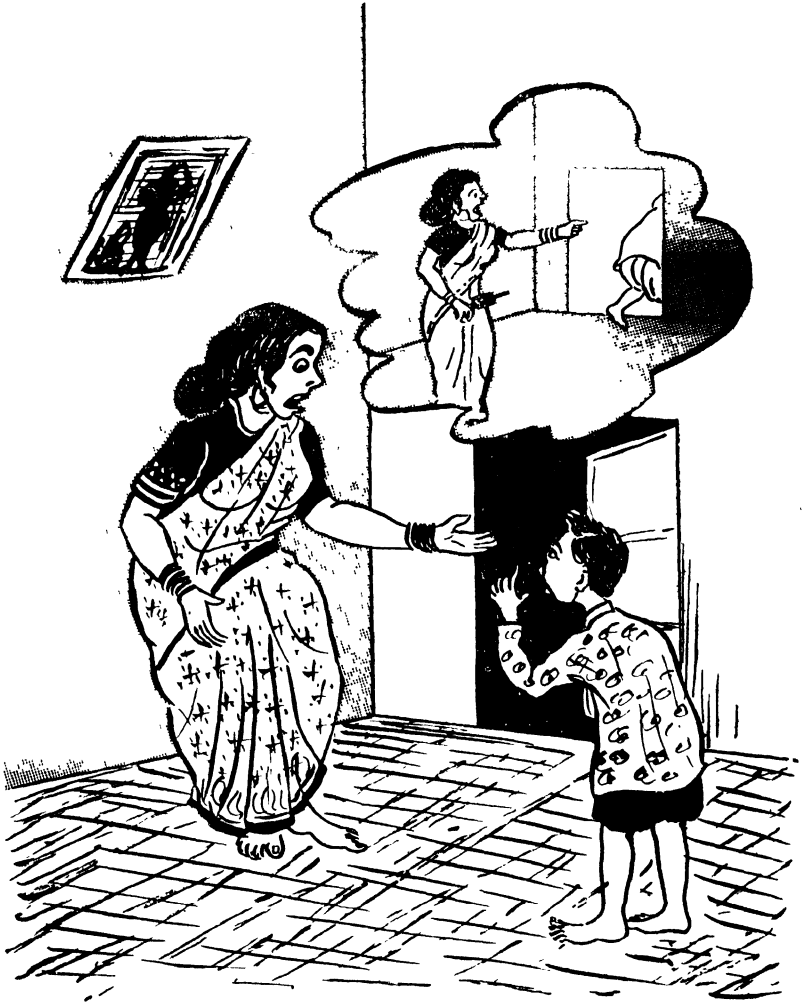
लड़का — तब फिर पड़ौसी ऐसा क्यों कहते हैं कि तुम पिता जी को उंगलियों पर नचाती हो ?

❀

एक स्त्री अपने बेटे की चतुराई दूसरे लोगों पर जाहिर करना चाहती थी। एक दिन उसने अपने बेटे का वैज्ञानिक ज्ञान दिखाने के लिये कुछ मित्रों के सामने उससे पूछा— बेटा, जब पतीली के ढक्कन में से भाप निकलने लगती है तो उसका क्या मतलब होता है ?

बेटे ने फौरन जवाब दिया— माँ, इसका मतलब होता है कि आप पिताजी के नाम का कोई लिफाफा खोलने वाली हैं।

❀

चाचा— बेटा, तुम क्यों रो रहे हो ?

बेटा (रोते रोते)— आप मुझे आठ आने दें तो बताऊँ ....

चाचा— अच्छी बात है। यह लो आठ आने। अब बताओ।

बेटा— मैं आठ आने के लिये रो रहा था।

*

पिता (पुत्र से)— मैंने तुमसे कितनी बार मना किया कि शरारती लड़कों के साथ मत खेला करो।

पुत्र— पिताजी मैं क्या करूँ ? अच्छे बच्चों के बाप, अपने बच्चों के साथ मुझे नहीं खेलने देते।

❀

मुन्नू को उसके दोस्त ने खाने पर बुलाया। दोस्त की माँ ने पूछा— मुन्नू, कुछ और लो। बहुत थोड़ा खाया तुम ने ?

मुन्नू— धन्यवाद चाची, पेट बिल्कुल भर गया है।

चाची— तो लो, यह कुछ मेवा और मिठाई जेब में रख लो। रास्ते में खा लेना।

मुन्नू— धन्यवाद चाची, मेरी दोनों जेबें भी पूरी भर गई हैं।

❀

'रामू तुमने यह फूलदान मुन्ने के सिर पर मार कर क्यों तोड़ा ?'

'क्षमा करिये पिता जी, मेरा इरादा फूलदान तोड़ने का बिल्कुल नहीं था, सारी ग़लती मुन्ने के सिर की है।'

*

पुत्र (अपने पिता से)— 'पिता जी, आज मैं भी गाय दुहूँगा।'

पिता— 'नहीं बेटा, अभी तुम छोटे हो।'

पुत्र— 'तो पिताजी मैं बछिया दुह लूं।'

*

सुशीला— (अपने अलबम में लगे हुए एक चित्र की ओर इशारा करके) देखो पुष्पा, यह चिड़िया का चित्र मैंने खींचा है।

पुष्पा— (आश्चर्य से) चिड़िया का? मगर इसमें तो मुझे छोटी सी दुम भर दिखाई दे रही है।

सुशीला— हाँ .... यह चिड़िया छत की मुँडेर पर बैठी हुई थी। मैंने सोचा यह कैमरे की क्लिक सुन कर उड़ जायगी, इसलिए मैं कैमरे की आवाज दबाने को खांस पड़ी। पर वह बेवकूफ मेरी खाँसी सुन कर भी उड़ गई, और यह दुम भर रह गई।

*

अम्मा ने श्याम को दो इकन्नियां दीं— एक राम के लिये और एक उसके लिये। श्याम खेलने बाहर गया। कुछ देर बाद अन्दर आकर बोला, 'मां खेलते समय मेरी जेब से राम की इकन्नी गिर गई।'

'वाह, तुझे कैसे मालूम कि राम की ही इकन्नी गिरी है?'

अपनी जेब से एक इकन्नी निकाल कर दिखाते हुए वह झटपट बोला, 'मेरी तो यह रही मां।'

*

मां— (अशोक से) देखो बेटा, तुम्हारे पिता सुबह से शाम तक दफ्तर में कितना काम करते हें, लेकिन तुम ज़रा भी घर का काम नहीं करते।

अशोक— लेकिन मां पिता जी को तो पैसे मिलते हैं, मुझे कब मिलते हैं।

*

मोहन— मेरा मन वर्षा में नहाने को करता है पर डाक्टर ने कपड़े उतारने को मना किया है।

सोहन— तो कपड़े पहने नहा लो।

मोहन— कपड़े जो गीले हो जायंगे।

सोहन— छतरी लगा कर नहा लो।

*

माँ— बेटा, ऐसा काम मत करना जिससे गाली खानी पड़े।

बेटा— अच्छा अम्मा, कल से पढ़ने नहीं जाऊँगा।

माँ— क्यों बेटा?

बेटा— स्कूल में मास्टरों की गाली खानी पड़ती हैं।

*

महेश— 'पिता जी अब से किसी पर दया नहीं करूँगा।'

पिता— 'क्यों?'

महेश— 'पिता जी, आज किसी लड़के ने मास्टर जी की कुर्सी पर स्याही डाल दी। जब वे बैठने लगे तो मैंने उनके कपड़े खराब होने के डर से कुर्सी हटा ली। बस, वे गिर पड़े और इस पर उन्होंने मुझे बहुत पीटा।'

*

रामू ने श्यामू से पूछा— क्यों जी, यदि तुम्हें कोई दस हज़ार रुपये दे तो सब से पहले तुम क्या करोगे?

श्यामू— सबसे पहले मैं उन्हे गिनूंगा।

*

आठ वर्षीय राम की आंख सूजी हुई देखकर उसकी मां ने उससे पूछा, 'क्यों रामू, आज फिर किसी से लड़ बैठा?'

राम— मां मैं एक छोटे लड़के को बड़े लड़के से पिटने से रोक रहा था और ······

माँ— यह तो अच्छा काम किया तूने। वह छोटा लड़का कौन था?

राम— मां, मैं।

*

नर्स— क्या तुम्हें अपनी छोटी बहन पसन्द नहीं रमेश।

रमेश— यदि बहन की जगह भाई होता तो अच्छा था क्योंकि मेरे दोस्त दिनेश के यहाँ भी छोटी बहन हुई है। वह कहेगा कि मैं उसकी ही नकल कर रहा हूँ।

*

अजनबी— तुम्हारे छोटे भाई की क्या अवस्था है?

इला— वह इसी साल का मॉडल है।

*

जगदीश से जो सवाल पूछे जाते थे उनका जबाब वह हमेशा अपनी बुद्धि लड़ा कर दिया करता था। एक दिन उसके चाचा ने उससे पूछा, "क्यों जगदीश, यदि तुम्हारे कान काट दिये जायें तो क्या हो?"

जगदीश ने फौरन उत्तर दिया, "मैं देख नहीं सकूंगा।"

चाचा को इस उत्तर की आशा नहीं थी। उन्होंने फिर कहा, "जगदीश, अक्ल लगाओ। मैंने कान कहा है, आंख नहीं। यदि तुम्हारे कान काट दिये जायें तो क्या हो?"

जगदीश ने दृढ़ता से अपना उत्तर दुहरा दिया। चाचा क्रोध में लाल पीले हो उठे, "क्यों बे गधे, कान कटने से दीखना कैसे बन्द हो जायगा ?"

"इसलिये कि कान न रहने से मेरा टोप आँखों पर गिर पड़ेगा और मैं देख नहीं सकूंगा।" जगदीश ने समझाया।

*

माँ ने बाग़ से जामुन तोड़ कर लाने को कहा था !

*

दो छोटे बच्चे अपनी माँ से किसी बात की आज्ञा लेना चाहते थे। परन्तु वे

पूछने में झिझक रहे थे क्योंकि उन्हें पूरी आशा थी कि मां मना कर देगी। आखिर उन्होंने पूछने का निर्णय किया।

'तू पूछ ले।' बिल्लू ने छोटे भाई से कहा।

'नहीं, तू पूछ।'

'अरे जा भी पूछ आ।' बिल्लू बोला।

'नहीं, नहीं, तू पूछ! तेरी उनसे मेरे से अधिक दिन की जान पहचान है।'

*

एक कसाई बकरे को बूचड़खाने ले जा रहा था। बकरा भय से चिल्ला रहा था।

एक लड़का— यह इतना क्यों चिल्ला रहा है?

दूसरा लडका— उसे बूचड़खाने ले जाया जा रहा है। वहाँ इसका सिर काटा जायगा।

पहला लड़का— बस, यह इतनी छोटी सी बात पर रोता है। मैंने तो सोचा था कि यह स्कूल जा रहा है।

*

क्रोध में भर कर पड़ौसिन ने कहा— तुम्हारे बच्चे ने ईंट मार कर मेरी खिड़की का शीशा तोड़ दिया है।

मां अनुनय से बोली— वह ईंट कहाँ है बहन? मेहरबानी कर उसे मुझे दे दो। हम ने सोच रखा है कि अपने बच्चे की छोटी मोटी शैतानियों की सब स्मृतियाँ अपने पास रखें।

*

रमेश— मेरे पिता जी एक हाथ से मोटर रोक लेते हैं।

उमेश— तब तो तुम्हारे पिता जी पहलवान हैं।

रमेश— पहलवान! नहीं, वह तो पुलिस के सिपाही हैं।

*

दो लड़कियां जिनकी आयु लगभग ग्यारह ग्यारह वर्ष थी अपनी दादी के साथ वोट डालने गईं। जब बैलट पेपर देने वाले ने दादी को बैलट पेपर दिया तो एक लड़की बोली, 'हम को भी बैलट पेपर दीजिये। हम भी वोट डालेंगे।'

'अभी तुम छोटी हो। २१ वर्ष से कम आयु वाले वोट नहीं डालते।' बैलट पेपर देने वाले ने कहा।

इस पर लड़की बोली, 'अच्छा हम दोनों को एक ही बैलट पेपर दे दीजिये। हम दोनों मिल कर एक वोट डाल देंगी।'

*
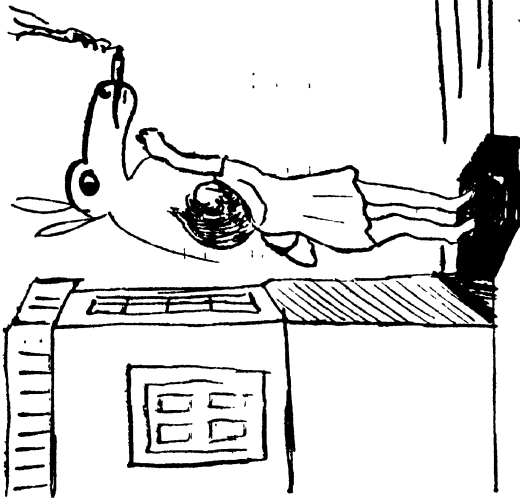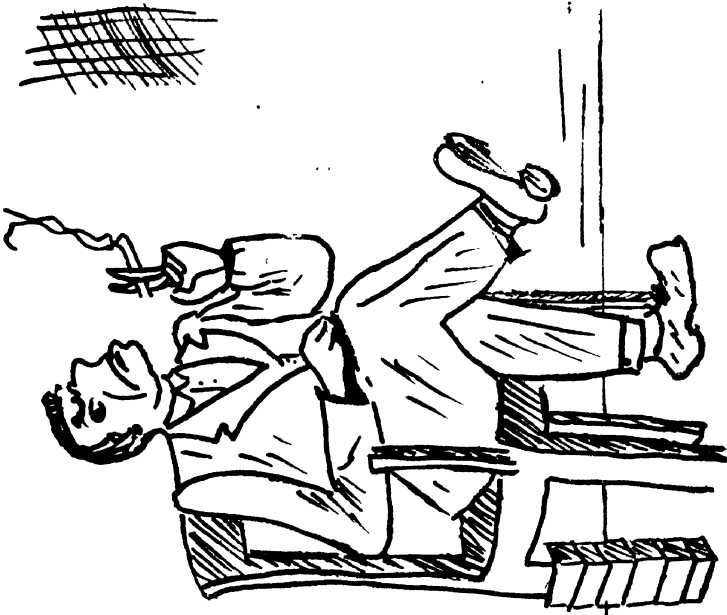
पिता--- "क्यों बेटा, हाथी व घोड़े में क्या फर्क है ?"

बेटा--- "जी, घोड़े के पीछे पूंछ रहती है और हाथी के आगे ।"

*

रमेश--- पिता जी, वह क्या चीज़ होती है जिसका रंग हरा और पीला होता है, जो हवा में उड़ती तथा गाती भी है ।

पिता -- मैंने तो आज तक ऐसी कोई चीज़ सुनी नही । तुमने इसे कहाँ सुना ?

रमेश -- पिताजी, यह पहेली मैंने ही बनाई है । इसका हल मै अभी तक सोच नहीं पाया हूँ ।

*

'पिताजी, मुझे एक पैसा दे दीजिये ।'

'बेटा, अब तुम इतने बड़े हो गये हो । अब तुम्हें पैसा मांगने की आदत छोड देनी चाहिये ।'

'अच्छा पिताजी, तो आप मुझे एक रुपया दे दीजिए ।'

*

मोहन— तुम क्या समझते हो, मैं किसी हालत में कल्लू से कमज़ोर हूँ ? कल की लड़ाई में यदि मेरे दोनों हाथ नहीं पकड़ लिये गये होते तो मैं उसे मार डालता ।

रम्मू- किसने पकड़ लिये तुम्हारे हाथ ?

मोहन— उसी बुज़दिल कल्लू ने ।

*

रमेश बहुत शैतान लड़का था । एक दिन उसके पिता ने तंग आकर उसे कुछ सीख देने की सोची । उन्होंने उसे बुला कर कहा— देखो रमेश, हर समय की शैतानी ठीक नहीं होती है । यह तो सोचो कि यदि कल मैं मर जाऊँ तो तुम कहाँ होगे ।

रमेश— पिताजी, सोचना तो यह है कि आप कहाँ होंगे ।

*

पिता ने अपने तेज़ बेटे से पूछा— क्यों, क्या बात हुई ?

बेटा— कुछ नहीं, आपकी पत्नी से मेरी लड़ाई हो गई है ।

*

शैल ने कहा— माँ मुझे एक टाफी और दे दो ।

माँ— नहीं शैल, मैं तुम्हें तीन टाफी तो दे चुकी हूँ। उन्हें हाथ में क्यों ले रखा है? पहले उन्हें खालो फिर और दूँगी।

शैल मचल उठी— बस अम्मा, एक और दे दो।

अम्मा— अच्छा, बस यह आखिरी है।

शैल ने पिता की नकल करके कहा— तुममें यही तो कमी है कि बच्चों की हठ पूरी करके उनकी आदत बिगाड़ती हो।

*

अम्मा— क्यों मोहन, सोहन क्यों रो रहा है?

मोहन— अम्मा, मैं अपनी मिठाई खा रहा हूँ तो रो रहा है।

अम्मा— उसकी मिठाई निमट गई क्या?

मोहन— हाँ अम्मा, जब मैं उसकी खा रहा था तब भी रो रहा था।

*

बालक— क्यों जी, अगली गाड़ी किस समय आयगी?

स्टेशन मास्टर— (बिगड़ कर) सौ बार कह दिया कि अगली गाड़ी पांच बज कर पचपन मिनट पर आयगी। पता नहीं, फिर क्यों मेरी जान खाये चला जा रहा है!

बालक— क्योंकि बाबा बोलते समय तुम्हारी हिलती हुई दाढ़ी मुझे बहुत अच्छी लगती है।

*

एक छोटे नगर में एक डाक्टर रहता था। उसके दो लड़कियाँ थीं, जो पूरे नगर में सबसे सुन्दर बालिका मानी जाती थीं। एक दिन वह दोनों घूमने जा रही थीं। राह में दो बालक मिले। एक तो उसी नगर का रहने वाला था दूसरा बाहर से आया था। बाहर वाले लड़के ने दूसरे से पूछा— क्यों यार, ये लड़कियाँ कौन हैं?

दूसरे ने उत्तर दिया— यह हमारे नगर के डाक्टर की लड़कियाँ हैं। तुमने देखा वह कितना स्वार्थी है। सारा बढ़िया माल उठा कर अपने पास रख लिया है।

*

छोटे बच्चे ने अम्मा से कहा— अम्मा, बड़ा होकर मैं आर्यसमाजी बनना चाहता हूँ।

अम्मा— हाँ बेटा, अवश्य बनना। पर यह तो बताओ कि तुम्हें इस बात का ध्यान कैसे आया।

बच्चा— अम्मा, बात यह है कि चुपचाप बैठकर सुनते रहने से मुझे खड़े होकर शोर मचाना अच्छा लगता है।

*

विकास— पिता जी, मास्टर जी कह रहे थे कि हम दूसरों की सहायता के लिये पैदा होते हैं।

पिता— ठीक कह रहे थे बेटा।

विकास— तो पिताजी दूसरे किस लिये पैदा होते हैं ?

*

पिताजी बरामदे में बैठे हुए अखबार पढ़ रहे थे, जब उनका छोटा बेटा बाहर से आकर उन्हें एक सुन्दर चाकू दिखाने लगा। उसने बताया कि वह चाकू उसे सड़क पर पड़ा मिला है।

पिताजी को यह चिन्ता हुई कि कहीं बेटा किसी का चाकू चुरा तो नहीं लाया। उन्होंने पूछा— तुम्हें ठीक पता है कि यह चाकू खोया हुआ है।

बेटे ने उत्तर दिया— हां पिता जी, मेरे सामने ही एक आदमी इसे ढूंढ रहा था। मैं सच कह रहा हूँ।

*

जब आइसक्रीम दुबारा पूछी जाने लगी तो रमेश ने बड़े सभ्य तरीक़े से मना कर दिया। लेकिन उसकी शक़ल से पता लग रहा था कि वह अभी और आइस-क्रीम खाना चाहता है। आखिर बहुत कहने पर उसने और आइसक्रीम लेली। चाची ने कहा— बेटा, इसे भी अपना घर समझा करो। तकल्लुफ करने की क्या आवश्यकता है ?

रमेश— बात यह थी चाची, कि घर से चलते समय मां ने यह कह दिया था कि कोई चीज़ दुबारा लाई जाये तो उसे मना कर देना। उन्हें क्या पता था कि आप पहली बार इतना ज़रा ज़रा सा परोसेंगी।

*

पिता— अलका, तुम नीचे डाइनिंग रूम में क्या कर रही थीं ?

अलका— पिताजी, नीचे मैं और विकास मां-बाप खेल खेल रहे थे।

पिताजी— क्यों बेटे, यह खेल कैसे खेला जाता है ? हमें भी बताओ।

अलका— पिताजी, विकास मेज़ के एक सिरे पर बैठ गया और मैं उसके दूसरे सिरे पर खड़ी हो गई। विकास बिगड़ कर बोला, 'यह खाना खाने लायक़ है !' मैंने कहा, 'बस, यही खाना मैं बनाना जानती हूं। नहीं तो इससे अच्छा

बनाने वाली को ब्याह लाते ।' विकास बोला 'नालायक, बकवास करती है ।' और मैं कमरे से उठकर आपके पास ऊपर चली आई ।

*

माँ ने जिन आदमियों को पार्टी में बुलाया था उनमें से एक आदमी की नाक युद्ध में कट गई थी । पार्टी से पहले माँ ने बच्चे को अच्छी तरह समझाया कि वह उन सज्जन की नाक के बारे में कुछ न कहे ।

पार्टी आरम्भ हुई। सब काम आनन्द से निमट रहा था पर बच्चा कुछ चिन्तित नज़र आ रहा था। वह बार बार कुछ देख रहा था। अन्त में उससे न रहा गया— "अम्मा, तुमने कहा था कि इनकी नाक के बारे में कुछ कहना नहीं । पर इनके तो नाक है ही नहीं।"

*

अम्मा— देखो, बेटा, चींटियों से सबक लो । वह हर समय काम करती रहती है । वे बेकार समय बरबाद नहीं करतीं ।

बेटा— ओह अम्मा, तुम यह कैसे कहती हो ? मैं तो जब भी पिकनिक पर जाता हूँ हमेशा पहले से उन्हें वहाँ पाता हूँ ।

*

पादरी— भूले हुए पाप क्या होते हैं ?

लड़का— भूले हुए पाप वह होते है जिन्हे हमें करना चाहिये और करते नहीं।

*

दयालु पड़ौसी— देखो बेटा, जब तुम अमरूद खाओ तो तुम्हें कीड़ों का ख्याल रखना चाहिये।

लड़का— जब मैं अमरूद खाता हूं तो कीड़ों को अपना ख्याल अपने आप रखना चाहिये।

*

माँ— लल्लू, अरे तुम रसोईघर में हो ? मुझे तुम्हें इस समय यहाँ देखकर बड़ा ताज्जुब हो रहा है।

लल्लू— अरे, माँ मैं तो समझा कि तुम कहीं बाहर गई हो। मुझे ताज्जुब है कि तुम यहाँ कैसे पहुँच गईं।

*

पिता— बेटा सुरेश, धूप में क्यों लेटे हो ?

सुरेश— पिताजी, पसीना सुखा रहा हूँ।

*

एक छोटा लड़का नाली पर खड़ा इसलिये रो रहा था कि उसकी एक दुअन्नी नाली में गिर गई थी।

एक सज्जन उधर से गुज़रे तो लड़के से रोने का कारण पूछा। मालूम होने पर उन्होंने उसे एक दुअन्नी दी। परन्तु वह फिर रोता रहा।

दयालु सज्जन ने कहा— 'अब क्या बात है ?'

'जब मेरे पिता जी को सारा हाल मालूम होगा तब वह मुझे मारेंगे कि मैंने आपसे यह क्यों नहीं कहा कि नाली में एक रुपया गिर गया है।'

*

मोहन की माँ ने मोहन से कहा— 'बेटा, जा पान ले आ।'

मोहन ने उत्तर दिया— 'माँ जापान तो बहुत दूर है।'

*

वीणा— अम्मा, राम तो नीले थे न ?

अम्मा— हाँ बेटी।

वीणा— तो आप हरे राम, हरे राम क्यों कहती हैं।

*

रवि अपने से बड़ी उमर के बालकों के साथ खेला करता था। छोटा होने के कारण वह हरएक से पिट जाता था। एक दिन रवि के पापा उसे समझाते हुए बोले— "देखो बेटा, मार खा घर आकर बैठ जाना डरपोकों का काम है। जो तुम्हे एक थप्पड़ लगाये तो तुम उसे दो लगाओ, जो घूंसा मारे तो तुम उसके दो जमाओ।"

कुछ दिन बाद रवि के पिताजी ने घर के बाहर झाँक कर देखा तो हैरान रह गये। रवि के हाथ में एक लोहे की छड़ी थी जिससे वह पड़ौसी के बालक को मारने की कोशिश कर रहा था। रवि के पापा एकदम चिल्ला उठे — बेटा, मेरा मतलब यह हरगिज़ नहीं था कि तुम पड़ौसियों को लोहे की छड़ी से पीटो। इससे तो उसके चोट लगेगी। फिर उसे डाक्टर के पास जाना पड़ेगा।

रवि ने शान्त स्वर में कहा— यही तो मैं चाहता हूँ कि वह किसी तरह डाक्टर के पास जाये। उसे बहुत ज़ोर से खांसी हो रही है।

*

सहयोग

*

रघुवीर — तुम चाट खाते समय दौने को क्यों चाटने लगते हो ?

रमेश — क्योंकि इसका नाम ही चाट है।

*

श्यामू— "जवाहर, क्या तुम बता सकते हो कि मोटे आदमी क्यों स्वभाव में अच्छे होते हैं ?"

जवाहर— "क्योंकि वे न तो लड़ सकते हैं, और न दौड़ ही सकते हैं।"

*

माँ— "रो क्यों रहे हो डब्बू ?"

डब्बू — "सोहन ने मुझे मारा !"

माँ— "कहाँ है सोहन ?"

डब्बू— "उसकी माँ उसे अभी अभी अस्पताल ले गई हैं।"

*

"चाचा," दशवर्षीय श्यामा ने अखबार पढ़ते हुए अपने चाचा का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, "क्या आप जानते है कि एक बच्चे का वज़न जिसे हथिनी का दूध पिलाया गया था दो ही सप्ताह में बीस पौण्ड बढ़ गया ?"

"बेवकूफ ! नामुमकिन !" चाचा ने उसकी बात काटते हुए पूछा— "किसका बच्चा था वह ?"

"हथिनी का।" श्यामा ने बडी सरलता से उत्तर दिया।

*

राम और श्याम लड़ रहे थे। राम गुर्रा कर बोला— मैं मारते मारते तेरा हुलिया बैरंग कर दूँगा।

श्याम चिंघाड़ा— वाह, बैरंग कैसे कर देगा ? मैं टिकट लेकर उस पर लगा लूंगा।

*

मेरा छोटा भाई जिसकी अवस्था सात वर्ष है हमारे पास बैठा था। बड़े भैया देहली से आये थे। और दिसम्बर मास के भूकम्प की बात चल रही थी। मैंने उनसे पूछा, "भैया, यह भूकम्प आया किधर से था ?"

भैया बोले— "सुना है कि पाकिस्तान की तरफ से आया था।"

कुकू बोल उठा— "तो मिलिटरी बैठी क्या कर रही थी ? उसने क्यों नहीं रोका ?"

*

"दाँत निकलवा आये ?" माँ ने अपने बेटे से पूछा।

"हाँ," बेटे ने उत्तर दिया। "डाक्टर ने कहा था कि यदि मैं रोऊँगा तो दाँत निकलवाने की फीस चार रुपये होगी, और यदि चुप रहूँगा तो दो रुपये।"

"तो तुम रोए नहीं ?" माँ ने पूछा।

"रोता कैसे ? तुमने तो कुल दो ही रुपये दिये थे मुझे।"

*

'अम्मा, क्या यह अजीब नहीं है कि सोलोमान इतना बडा बादशाह था फिर भी उसके पास अपना बिस्तरा नहीं था।'

'तुम ऐसा किस आधार पर कह रहे हो ?'

'क्योंकि बाइबिल में लिखा है— सोलोमान अपने पितरों के साथ सोया।'

*

मां— अमर, यह घड़ा क्यों तोड़ा ?
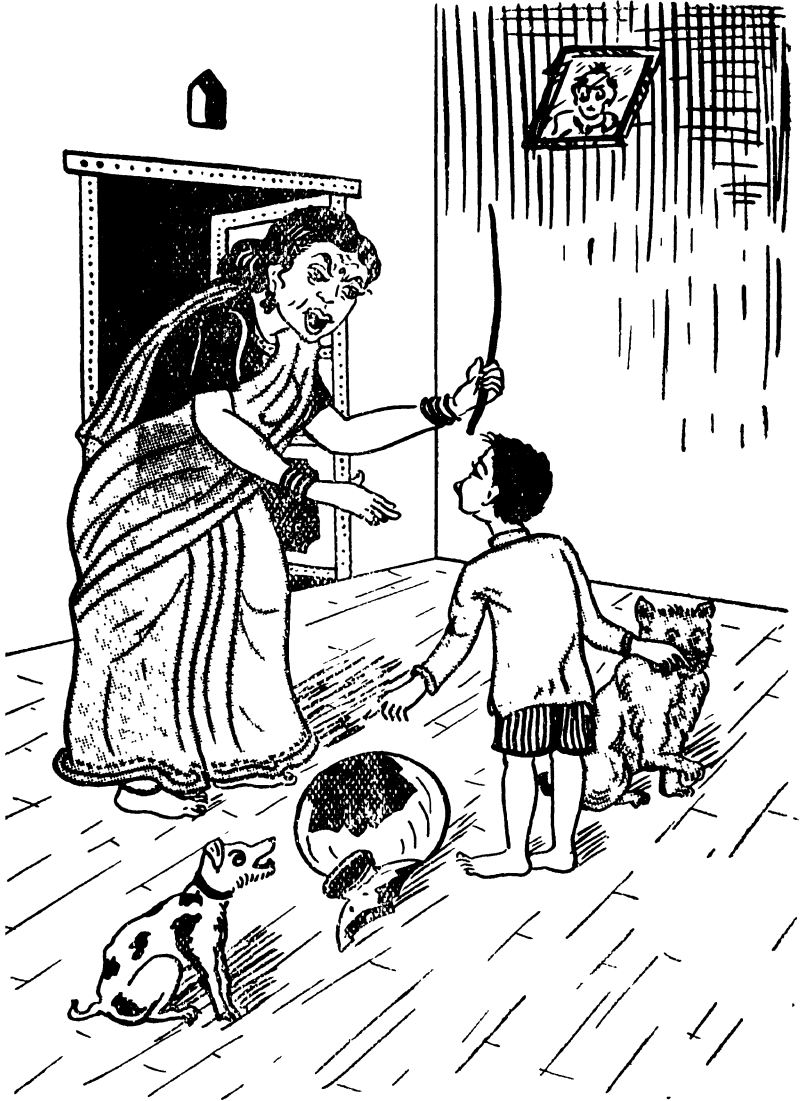
अमर— यह खब रही! दो जनों के होते हुए भी नाम मेरा ही लगता है।

*

सज्जन— क्या तुम्हारी घड़ी समय बतलाती है ?

तेज़ लड़का—नही श्रीमान्, आपको उसमें देखना पड़ता है।

*

विली— पापा, यदि मैं जुड़वां होता तो तुम मेरे भाई को भी केला लकर देते।

पापा— अवश्य मेरे बेटे।

विली— तो पापा क्योंकि मैंने अपने को एक में करके आपका इतना व्यय बचा दिया है सो इसका यह मतलब नहीं कि आप मुझे एक केले की हानि पहुँचायें।

*

सड़क पर चलते एक आदमी ने देखा कि उसके पड़ौसी का लड़का सूजी हुई आँख लिये जा रहा है। उसने बच्चे के सिर पर अपना हाथ रखा और कहा— भगवान करे आज से पीछे तुम न लड़ो ही और न अपनी आँखें सुजाओ।

लड़का तिनक कर बोला— हाँ हाँ, ये बातें अपने लड़के से कहना जिसकी मैंने दोनों आँखें सुजा दी हैं।

*

'क्या पापा ही पहले व्यक्ति थे जिनके द्वारा तुम्हारे सामने विवाह का सबसे पहले प्रस्ताव रखा गया था ?'

'हाँ, लेकिन तुमने क्यों पूछा ?'

'मैं यह सोच रही थी कि यदि तुम थोड़ी देर दुकानदारी करती तो अच्छा रहता।'

*

बच्चा— (अपने पिता के आफिस को टेलीफोन करते हुए) हलो, उधर से कौन बोल रहा है ?

पिता— (अपने बेटे की आवाज़ पहचान कर) दुनिया का सबसे अक्लमन्द आदमी।

बच्चा- मुझे माफ करें, मै ग़लत नम्बर लगा गया।

*

एक बच्चा— मै और मेरे पिता दुनिया की प्रत्येक चीज़ जानते हैं।

दूसरा बच्चा— अच्छा तो बताओ, यूरोप कहाँ है ?

सवाल कठिन था पर पहले ने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया— यह उन सवालों में से है जिनका उत्तर मेरे पिताजी जानते हैं।

*

रमेश को सदैव अपने बड़े भाई के पुराने कपड़े पहनने को मिलते थे, एक

दिन जब माँ उसे उसके बड़े भाई का पुराना कोट पहनने को दे रही थी तो वह खीज कर बोला, "अम्मां, क्या मेरी शादी भी भैया की पुरानी बीवी से होगी?"

*

हलवाई की दुकान पर ग्राहकों की भीड़ लगी थी। एक छोटा बच्चा आकर बोला, "मेरी माँ ने मिठाई मंगाई है, ठीक वैसी ही जैसी तुमने पिछले हफ़्ते दी थी। उन्होंने कहा है ठीक वैसी ही होनी चाहिए।"

इस पर हलवाई बड़ा प्रसन्न हुआ और अपने ग्राहकों से कहने लगा, "अच्छी चीज़ की क़द्र होती ही है, तभी लोग दुबारा मेरी दुकान पर आते हैं। लो अभी लो, बच्चे।'

बच्चे ने एक बार और टोकना उचित समझा, "मिठाई पिछली बार जैसी ही हो। हमारे यहाँ कुछ मेहमान आए हैं, अम्मां नहीं चाहती कि वे फिर हमारे यहाँ आएँ।"

*

माँ— राकेश, तुमने कीचड़ में गिरकर नई पतलून ख़राब कर ली है।

राकेश— अगर मुझे मालूम होता तो पतलून उतार कर गिरता, मां।

*

विनोद - पिता जी, रात मैंने स्वप्न में देखा कि आपने मुझे एक सुन्दर फाउन्टेन पैन दिया है और माता जी ने पचास रुपए।

पिता — बेटा, स्वप्न तो उलटे होते है।

विनोद — तो आप मुझे रुपये दे रहे हैं और माता जी पैन।

*

माँ ने घोषणा की कि वह हर शनिवार को घर के उस व्यक्ति को इनाम दिया करेगी जो सब से अधिक आज्ञाकारी निकलेगा।

"माँ, यह तो ठीक नहीं रहेगा।" सब बच्चे एक साथ बोल उठे। "इस तरह तो हर बार पिता जी को ही इनाम मिलेगा।"

*

कमला पहले दिन स्कूल से लौटी तो उसकी माँ ने पूछा कि स्कल में क्या पढ़ाई हुई। कमला ने कहा, "कुछ ख़ास नहीं पढ़ाया, माँ। कल फिर जाना पड़ेगा।"

*

पढ़ाई में कमज़ोर होने पर मोहन पर बहुत डाट पड़ी। आख़िर उसने डरते-डरते अपने पिता से पूछा— "पिता जी, मुझ में कैसी कमी है— ख़ानदानी या

किसी ग्रौर तरह की ?"

*

"मुझे मोहन का यह कहना ग्रच्छा नहीं लगता कि प्रत्येक परिवार में एक बेवक़ूफ बच्चा ज़रूर होता है ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मोहन को ग्रच्छी तरह मालूम है कि मै ग्रपने माँ-बाप का इकलौता बच्चा हूँ ।"

*

माँ— "पड़ौस में जो बच्चे रहते हैं, उनके न माँ है, न पिता, ग्रौर न तुम्हारी बुग्रा की तरह कोई बुग्रा है । क्या तुम उन्हे कुछ देना नहीं चाहते ?"

बेटा— "तो हम उन्हें ग्रपनी बुग्रा दे देंगे— हमारी जान बचेगी ।"

*

खाना खाते वक्त सुधीर के पिता बोले, "हमेशा डकार ग्राने पर खाना बद कर देना चाहिए ।"

सुधीर पास ही बैठा था, पूछ बैठा— "ग्रौर क्यों पिता जी, ग्रगर डकार ग्राए ही नहीं तो खाते रहना चाहिए ?"

*

कमला— "माँ, ग्राज स्कूल में एक लड़की फिसल कर गिर पड़ी ग्रौर सिवाय मेरे ग्रौर सब उसकी हँसी उड़ाने लगीं ।"

माँ ने प्रसन्न होकर कमला को चूम लिया, "मेरी बिटिया कितनी ग्रच्छी है ! भला, तू क्यों नहीं हँसी, कमला ?"

कमला— "क्योंकि मै ही तो गिरी थी ।"

*

रामू गाँव में सब से बेवकूफ लड़का माना जाता था ग्रौर गाँव वाले उसे हमेशा बनाने में लगे रहते थे । उनका सब से बड़ा मनोरंजन इसमें होता था कि वे रामू को एक ग्रधन्ना ग्रौर एक धेला दिखाते ग्रौर कहते इनमें से कोई ले लो, ग्रौर रामू हमेशा धेला ले लेता ।

एक बार एक बाहर का व्यक्ति भी यह तमाशा देख रहा था । उसने रामू से पूछा— "ग्ररे भई, तुम ग्रधन्ना क्यों नहीं लेते ? क्या वह शक्ल में धेले से छोटा लगता है, इसलिए ?"

"नहीं," रामू ने उत्तर दिया । "ग्रगर मैं ग्रधन्ना उठाने लगूं तो वे मुझे धेला भी देना बन्द कर देंगे ।"

*

"जब मैं अपने दादा की तलवार देखता हूँ तो मेरी इच्छा होती है कि मैं भी युद्ध में जाऊँ।"

"तो फिर जाते क्यों नहीं?"

"उनकी बनी हुई लकड़ी की टांग देखते ही मेरा जोश ठंडा पड़ जाता है।"

*

"रामू बेटा, यह ख़त लो। डाकख़ाने से दो आने के टिकट लेकर इस पर लगा देना और ख़त को बम्बे में डाल देना।"

रामू जब लौट आया तो पिता ने पूछा— "डाल आया ख़त?"

"हाँ, पिता जी, और दुअन्नी भी बचा ली। बहुत से लोग बम्बे में ख़त डाल रहे थे। मैंने भी लोगों की आँख बचा कर बिना टिकट लगाये ही ख़त छोड दिया।"

*

आलोक अपने बाबूजी के साथ काशी जा रहा था। रेल में समय काटने के लिये बाबूजी आलोक को जादू का तमाशा दिखाने लगे। वे बार बार आलोक की टोपी खिड़की से बाहर फेंकते नज़र आते थे (पर उसे फेंकते नहीं थे) और सीटी बजा कर जादू के ज़ोर से फिर बुला लेते थे। तीन चार बार आलोक ने

यह देखा तो वह बड़ा खुश हुआ और एकाएक बाबूजी की टोपी को बाहर फेंकते हुए बोला— "बाबूजी, इसे भी सीटी बजा कर जादू के ज़ोर से बुला दो।"

*

पिता— तुमने मुझसे कहा था कि तुम शैतानी नहीं करोगे?

पुत्र— जी, पिताजी।

पिता— और मैंने भी तुमसे कहा था न कि तुम शैतानी करोगे तो मैं तुम्हें पीटूंगा ?

पुत्र— लेकिन पिताजी, मैंने अपना वचन तोड़ दिया; तो आप भी अपना वचन तोड़ दीजिए।

*

एक रोज़ किसी बात के सिलसिले में माँ ने नन्हें किशोर से पूछा— "अक्ल बड़ी कि भैंस ?"

वह बोला, "भैंस !"

"कैसे ?"

"भैंस के अन्दर भी अक्ल होती है, इसलिए अक्ल छोटी हुई और भैंस बड़ी।"

*

अरविन्द— माँ, क्या चन्द्रमा में सचमुच आदमी रहते हैं ?

माँ— हो सकता है, बेटा।

अरविन्द— तब तो वहाँ अर्द्धचन्द्र के दिनों में बहुत भीड़ हो जाती होगी।

*

कुप्पू बड़बड़ा रहा था— "जी हाँ, हमारे घर में भेदभाव कहाँ होता है ! मैं अगर नाख़ून भी मुँह में रखता हूँ, तो मुँह पर एक करारा तमाचा पड़ता है, लेकिन छोटा मुन्नू अपना सारा पाँव भी मुँह में ठूँस लेता है, तो सब लोग देखकर प्रसन्नता से फूल उठते हैं।"

*

भाई बहन खेल रहे थे।

भाई ने कहा, "आओ हम रेडियो का खेल खेलें।"

"अच्छी बात है कहानी मैं कहूँगी।"

"नहीं, कहानी मैं कहूँगा, तुम अनाउंसर बनो।"

कुछ देर तक लड़की गम्भीरतापूर्वक सोचती रही। "अच्छी बात है" वह यकायक बोली। "यह ऑल इण्डिया रेडियो, दिल्ली है। हमारा आज का कार्य-क्रम समाप्त होता है। जय हिन्द !"

*

माँ अपनी सबसे छोटी दो लड़कियों को घर वालों के फोटो दिखा रही थी। उसमें उसके विवाह का ग्रुप भी था। जब वह एक एक को दिखा कर बता चुकी

कि कौन कौन हैं, तो सबसे छोटी लड़की बोली, "लेकिन, माँ, जब तुम्हारा विवाह हुआ था, तब हम कहाँ थीं?"

इससे पहले कि माँ कुछ उत्तर दे, बड़ी लड़की बोल पड़ी, "वाह, तुम्हें तो मालूम होना चाहिए। मेरे ख्याल में हम उस समय भी आज की तरह घर का काम कर रही होंगी।"

*

छोटे श्यामू के लिए किसी बन्दरगाह को देखने का यह पहला मौक़ा था।

एक छोटी नाव एक बड़े जहाज़ को खींचकर समुद्र में ले जा रही थी। एकाएक छोटी नाव ने सीटी दी।

"अहा-हा, देखो," श्यामू बोला, "बड़े जहाज़ ने छोटे जहाज की पूंछ पकड़ ली है और अब उसे रुला रहा है।"

*

छः वर्ष की रीता बैंक में पहुँची, और बैंक के मैनेजर से मिलने की इच्छा प्रकट की। एक क्लर्क ने बड़ी नम्रतापूर्वक उसको मैनेजर के कमरे में पहुँचा दिया। वहाँ पहुँचकर वह बड़े ध्यानपूर्वक बोली, "हमें बालिका-क्लब के लिए चन्दा चाहिए; क्या आप कुछ देने की कृपा करेंगे?"

बैंक के मैनेजर ने मुस्कराकर मेज पर एक पाँच रुपए का नोट और एक चवन्नी रख दी और कहा कि इन दोनों में से कोई भी उठा लो।

लड़की ने चवन्नी उठाई और कहा, "मेरी माँ ने मुझे यही सिखाया है कि हमेशा कम से कम लो। (नोट उठाते हुए) ताकि यह चवन्नी खो न जाए, मैं यह कागज इसको लपेटने के लिए ले रही हूँ।"

*

पुत्र— "माँ, तुमसे एक बात पूछता हूँ।"

माँ— "पूछ न बेटा!"

पुत्र— "जब मैं पैदा नहीं हुआ था, तब तो तुमने मुझे कभी देखा ही नहीं था?"

माँ— "नहीं।"

पुत्र— "तो फिर पीछे मुझे पहचाना कैसे?

*

बड़ा भाई (हाथ में छड़ी लेकर)— क्यों रे, तुझे मैं क्यों मारता हूँ, जानता है?

छोटा भाई (रोते रोते)— हाँ, मैं बच्चा हूँ इसलिये। कल रात को पड़ौस

का जुम्मन जब लाठी लेकर दौड़ा था, तब तो तुम भीतर घुस गये थे।

*

पिता ने पूछा— "बेटा, यह किताब तुमने कहाँ तक पढ़ी है ?"

लड़का— "जहाँ तक मैली है।"

*

पिता— "मैंने तुमसे कई सवाल किये, लेकिन तुमने किसी का उत्तर ठीक नहीं दिया। अच्छा, अब तुम्हीं मुझसे कोई सवाल करो।"

बच्चा— "और यदि तुम भी ठीक जवाब न दे सके तो?"

पिता— "तो मैं तुम्हें एक खिलौना दूँगा।'

बच्चा— "अच्छा, मेरा यही सवाल है कि आज मेरा जन्मदिन है, इसकी खुशी में मुझे कौन सा खिलौना मिलेगा?"

पिता चुप हो रहे।

*

माँ— क्यों रे लल्लू, तू आज स्कूल क्यों नहीं गया?

लल्ल— तुम्हीं तो कहती थीं कि मेरे चले जाने पर तुम मुझे याद किया करती हो।

*

नागेश— पिता जी, क्या आपको चश्मा लगाने पर छोटी वस्तु भी बड़ी दिखाई देती है ?

पिता— हाँ, चश्मा लगाने का केवल यही मतलब है कि छोटी वस्तु बड़ी दिखाई दे।

नागेश— तब, पिता जी, जिस समय आप मुझे खाने के लिये कुछ दिया करें, उस समय चश्मा उतार कर अलग रख दिया करें।

*

बाप— तो अब तुम समझ गए कि राजा और राष्ट्रपति में क्या अन्तर होता है?

बेटा— हाँ, पिताजी। राजा तो अपने बाप का बेटा होता है और राष्ट्रपति नहीं।

*

शांति एक विवाह में गई। वहां उसे खाने के लिए बहुत से रसगुल्ले मिले। वह बड़ी प्रसन्न थी।"

"यह विवाह तो बड़ी मज़ेदार बात है। मैं भी कई बार विवाह करूँगी।

और, हाँ अम्मी, तुम भी विवाह क्यों नहीं करतीं, ताकि मुझे और बहुत से रसगुल्ले मिलें।"

❀

सुन्दर रोता हुआ आया और अपनी माँ से चिपट गया। माँ ने पूछा, "क्या हुआ बेटा?"

"पापा बाहर से आ रहे थे। अचानक ही उनका पैर एक छिलके पर जा पड़ा और वे रपट गए।"

"तो इसमें रोने की क्या बात है? मैं वहाँ होती तो हँसती।"

"मैं भी तो हँसा था।"

❀

माँ ने बेटे को पैसे देकर दियासलाई की डिबिया लाने को भेजा—"देख, अच्छी लाना। सीली न ले आना, जो जले ही न।"

राम ने लौट कर डिबिया माँ को पकड़ा दी। खोलकर देखा तो उसमें एक

भी तीली नहीं थी।

"क्यों रे, यह कैसी डिब्बी लाया है जिसमें एक भी तीली नहीं।"

राम— "तुमने ही तो कहा था कि सीली न हो, सो मैंने लेते समय एक एक सलाई जलाकर देख ली थी कि जलती है या नहीं।"

*

बेनी— माँ, जो कल सुन्दर दर्पण खरीदा था, उसे तोड़ देने पर क्या सजा मिलेगी, यह तुमने बताया था। याद है?

माँ— हाँ-हाँ, जो उसे तोड़ डालेगा, पत्थर से उसकी खोपड़ी हम तोड़ देंगे।

बेनी— तो पत्थर लेकर चलो, चाचा ने उसे तोड़ डाला है। मुझे मारने को डंडा उठाया तो अचानक उसमें जा लगा।

*

"रामू," उसके पिता ने चिल्ला कर कहा, "अभी तुम अपने छोटे भाई को गाली दे रहे थे। मैं तुमसे कितनी बार कह चुका हूँ कि घर में मेरे सिवा और कोई गाली नहीं दे सकता। फिर तुमने गाली क्यों दी?"

रामू बोला, "पिताजी मुझे मालूम नहीं था कि आप यहाँ मौजूद हैं। बब्बू ने मेरी गाड़ी तोड़ दी थी। मैंने सोचा कि उसे तुरन्त ही गालियों की आवश्यकता है।"

*

पिता— क्यों बेटा, तुम स्कूल में कैसे चल रहे हो?

पुत्र— पिताजी, यह सवाल गलत है। मैं आपसे कब पूछता हूं कि आप आफिस में कैसे चल रहे हैं?

*

पिता— क्यों, पुष्कर, मेरे कोट में क्या देख रहे हो?

"कुछ नहीं, पिताजी! मेरा एक रुपया खो गया है, उसे ढूंढ रहा रहा हूँ," पुष्कर ने जल्दी से जवाब दिया।

*

एक लड़के ने चाय की केटली गिराकर फोड़ दी। जब उसकी माँ उससे नाराज होने लगी, तो लड़का बोला— "क्या हुआ माँ, यदि मैंने उस एक बरतन का फोड़ दिया। समझ लो, तुम्ही ने उसे किसी झगड़े के सिलसिले में पिता जी की तरफ़ फेंककर मारा है।"

विद्यार्थी

कुसुम— तुम्हारी यह बुरी आदत पड़ गई है कि तुम हर किसी को गधा कहते हो।

भरतसिह— बहन जी, यह आपसे किस गधे ने कहा ?

*

अध्यापक— हमीद, तुम्हें शर्म आनी चाहिये। जब मैं तुम्हारी आयु का था मैं तब सारे वायसरायों के नाम उँगलियों पर गिना सकता था।

हमीद— मास्टर साहब, उन दिनों वायसराय भी तो केवल तीन चार हुए थे।

*

आलोक— पिताजी, गुस्सा करना और मारना-पीटना बुरी बात है न ?
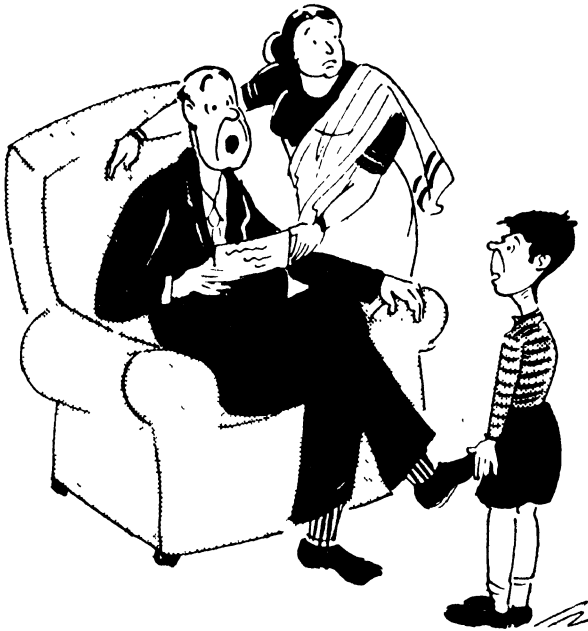
पिता— हाँ, बहुत बुरी बात है।

बेटा— तो यह लीजिए, मास्टर जी ने आपके नाम एक चिट्ठी दी है।

*

अध्यापक— राम, इस वाक्य में क्या गलती है, एक घोड़ा और एक गाय चर रहा है।

राम— मास्टर जी, हमेशा स्त्रियों को पहले कहना चाहिये ।

*

एक बाल-मनोवैज्ञानिक एक कक्षा में जाकर वहाँ के लड़कों का अध्ययन कर रहा था। उसने उस कक्षा के अध्यापक से कहा— तुम बिलकुल ग़लत तरीक़े से पढ़ाते हो । बच्चे तुम्हारी बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते हैं, यह मैं अभी साबित कर के दिखाता हूँ।

फिर उसने एक लड़के से कोई अंक बोलने को कहा । लड़के ने ३५ कहा। आपने चाक उठा कर ब्लैक बोर्ड पर ५३ लिख दिया। इसी तरह दूसरे से पूछा। उसने २९ बताया। आपने ९२ लिख दिया। ऐसे ही ४८ के लिये ८४ लिख कर उसने विजय भावना से अध्यापक की ओर देखा। तभी एक बारीक सी आवाज़ सुनाई पड़ी— ३३, देखें अब आप क्या लिखते है।

*

शिक्षक— मैं तुझे दण्ड नहीं दूँगा। कारण मेरे पास कोई प्रमाण नही कि तूने बाग से अमरूद चुराये हैं।

विद्यार्थी— धन्यवाद मास्टर जी। क्या मैं अब अमरूद खा सकता हूँ ?

*

मेरे ताऊ जी का एक आठ साल का लड़का है। ताऊ जी हर किसी के सामने अपनी पत्नी का विवरण वाइफ कह कर करते हैं। वह लड़का अपनी मां को बीबी जी कहकर पुकारता है। पर अंग्रेज़ी से अनभिज्ञ होने से वह समझता है कि बीबी जी को ही अंग्रेजी में वाइफ कहते हैं।

एक दिन वह स्कूल में देर से पहुँचा। मास्टर जी ताऊ जी के जानने वाले थे। उन्होंने पूछा, "क्यों रमेश, आज देर से कैसे आये ?"

रमेश बोला— मास्टर जी, आज वाइफ बाज़ार चली गई थी। इससे खाने में देर होगई।

*

पुत्र— पिताजी, आप मुझे शाबाशी दीजिए। मैंने आपका बहुत लाभ कर दिया है।

पिता— कैसे ?

पुत्र— आपको इस साल मेरे लिए नई किताबें नहीं ख़रीदनी पड़ेंगी। मैं पुरानी किताबों से ही काम चला लूँगा।

*

"तो तुम्हारा मास्टर तुमसे खुश है ?"

"हाँ, पिता जी !"

"मगर तुमने कैसे जाना यह ?"

"कल ही वह मुझसे कह रहे थे कि अगर स्कूल के सब विद्यार्थी मुझ जैसे हो जायें तो उन्हें अगले दिन ही स्कूल बन्द करना पड जाए। इससे साबित होता है कि मैं कितना बुद्धिमान हूँ।"

*

प्रकाश की पेंसिल खोगई थी। एक दिन उसने अपनी जैसी ही एक पेंसिल अपने एक सहपाठी पर देखी। उसने कहा, "लाओ जी, मेरी पेंसिल।"

सहपाठी ने कहा, "कैसी पेंसिल ? यह तो मेरी पेंसिल है।"

जब झगड़ा बढ़ा, तो मुक़दमा मास्टर जी के सामने पेश हुआ। मास्टर जी ने प्रकाश से पूछा, "क्यों जी, तुम इसे अपनी पेंसिल कैसे बताते हो ?"

"मेरी पेंसिल भी बिलकुल ऐसी ही थी," प्रकाश ने जवाब दिया।

"तो उससे क्या हुआ ?" मास्टर जी ने कहा, "क्या एक ही तरह की कई पेंसिलें नहीं हो सकतीं। देखो, बिलकुल ऐसी ही एक पेंसिल मेरे पास भी है।"

और मास्टर जी ने सचमुच ही अपनी जेब से बिलकुल वैसी ही एक पेंसिल निकाल कर दिखला दी।

प्रकाश ने कहा, "होगी और ज़रूर होगी, मास्टर जी! मेरी पहले भी ऐसी ऐसी कई पेंसिलें खो चुकी हैं।"

*

छोटा रमेश स्कूल से रोता हुआ घर आया। माँ ने पूछा, "क्या बात है ? रोता क्यों है ?"

हिचकियाँ लेता हुआ वह कहने लगा, "मेरे मास्टर जी आप तो किताब हाथ में लेकर पढ़ाते हैं और हम मुँहज़बानी न सुनायें तो पीटते हैं।"

*

पिता— तुम्हें स्कूल में क्यों इतनी देर रोके रखा ?

बेटा— क्योंकि मैं नहीं जानता था कि तक्षशिला कहाँ है।

पिता —खैर, आगे से ध्यान रखा करो कि तुम्हारी चीज़ें कहां पड़ी रहती हैं।

*

बाप— तुम कहते हो कि इस साल तुमने खूब मेहनत की थी, फिर कैसे फेल हो गये ?

लड़का— क्या करूँ, मास्टर ने इस साल भी इम्तिहान में वही सवाल पूछे

जो पारसाल पूछे थे।

*

पिता— तुम्हारे दरजे में सबसे सुस्त कौन है ?

पुत्र— सुस्त से आपका मतलब ?

पिता— यानी जब सब लड़के पढ़ते हों, तब वह चुपचाप बैठा रहता हो।

पुत्र— मास्टर साहब।

*

पिता— क्यों रामू, तू पहले तो अच्छे नम्बर लाता था, अब शून्य पाता है। यह क्या बात है ?

पुत्र— इसमें मास्टर साहब की ही ग़लती है। जो लड़का पहले मेरे पास बैठता था, अब मास्टर साहब उसे दूसरी जगह बैठाने लगे हैं।

*

अध्यापक— भालू के शरीर पर ऊनी कोट होता है। क्या वह उसे उतार सकता है ?

एक शिष्य— जी नहीं, कभी नहीं।

'क्यों नहीं ?'

'क्योंकि उसके कोट के बटन कहां हैं, यह सिर्फ ईश्वर ही जानता है।'

*

शिक्षक ने बोर्ड पर अंग्रेजी में लिखा HNO_3 और तब कक्षा में बैठे लड़कों की ओर देखकर बोले, 'यह किस चीज़ का नाम है ? श्याम तुम बताओ।'

श्याम (सिर खुजलाते हुए)— यह चीज़······· अरे, बिल्कुल मेरी ज़बान पर है······

शिक्षक— (शीघ्रतापूर्वक) थूक दो, फौरन थूक दो। जीभ जल जायगी। यह शोरे का तेज़ाब है।

*

गुरुजी— चुन्नू, चीन और चांद में से कौन यहाँ से अधिक दूर है ?

चुन्नू— चीन।

गुरुजी— किस कारण तुम ऐसा कह रहे हो ?

चुन्नू— क्योंकि चाँद तो हम यहाँ से देख सकते हैं किन्तु चीन हमें दिखाई नहीं देता।

*

स्कूल में दो विद्यार्थी बहुत शैतान थे तथा कभी समय पर काम नहीं कर

के लाते थे। इस कारण एक दिन मास्टर जी ने स्कूल छूटने पर उन दोनों को रोककर पाँच सौ बार अपना अपना नाम लिखने को कहा। करीब पन्द्रह मिनट बाद उनमें से एक बड़े गुस्से में रोता हुआ बोला, "यह तो बिल्कुल अन्याय है मास्टर जी। उसका नाम तो केवल हरि है और मेरा है हरबन्सलाल भटनागर।"

*

राम— 'मास्टर जी, सोना कहाँ से निकलता है?'

मास्टरजी— 'कानों से।'

राम— 'अब समझा, तभी आप हमारे कान खींचते हैं।'

*

मास्टरजी ने लड़कों को सवाल दिये। एक लड़का सवाल नहीं कर रहा था और अपने पीछे एक चूहे को बिल में घुसता देख रहा था। जब सब लड़के सवाल कर चुके तो मास्टर जी ने उस लड़के से पूछा, 'क्या ख़तम हो गया?'
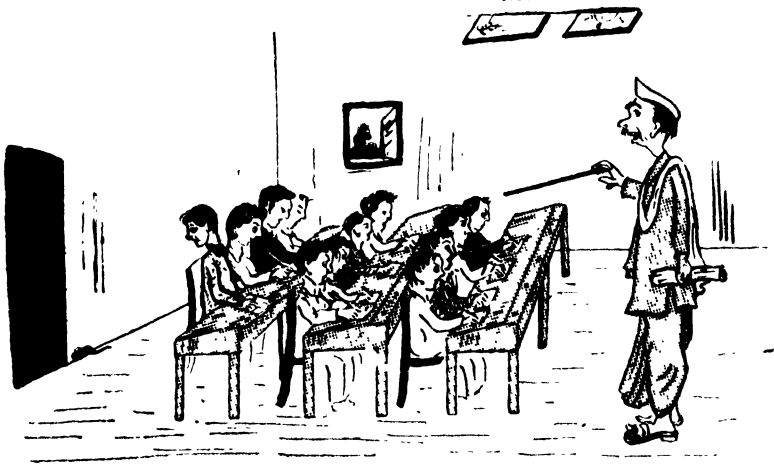
उसने तुरन्त उत्तर दिया, 'जी नहीं, अभी पूंछ बाक़ी है।'

*

मास्टर जी— बड़ा बुद्धू है तू। पता है जब वाशिंगटन तेरी आयु के थे तब सर्वेयर नियुक्त किये गये थे।

शिष्य— और मास्टरजी, वे जब आपकी आयु के थे तब अमेरिका के प्रेज़िडेण्ट बन गये थे।

*

बाबा— बेटा, तुम्हारे स्कूल में पिछले साल सबसे प्रसिद्ध लड़का कौन था?

गप्पू— पिछले साल तो, बाबा, लल्लू ने बाजी मार ली। उसके खसरे ने पूरे स्कूल में खसरा कर दिया था और हर तरफ उसी का नाम सुनाई देता था।

परीक्षा के समय फुटबाल मैच पर लेख लिखवाया गया। एक छोटे लड़के को छोड़कर सब विद्यार्थी लिखने में तल्लीन थे। जब समय बिल्कुल समाप्ति पर आ गया तो उसने एक लाइन लिखी—"वर्षा; खेल नहीं हुआ।"— और कापी बन्द करके शिक्षक को दे दी।

*

अध्यापक— रमेश, आज पाठशाला में देर से क्यों आये?

रमेश— रात गर्मी बहुत थी। रास्ता फैलकर लम्बा हो गया

अध्यापक— रास्ता भी कहीं फैलता है?

रमेश— आपने ही कहा था कि गर्मी में हरेक चीज फैलती है

*

"टक्कर उसे कहते हैं जब दो वस्तुएँ अचानक आकर मिल जावें। मोहन, क्या तुम टक्कर का कोई उदाहरण दे सकते हो?"

"हाँ गुरुजी, जुड़वां बच्चे।"

*

किंडरगार्टन में पढ़ने वाली एक बच्ची अचम्भे तथा प्रसन्नता से भरी हुई स्कूल पहुँची। उसकी बहनजी ने पूछा— क्यों कुसुम, क्या बात है? [illegible] खुश दिखाई दे रही हो।

कुसुम— हमारे घर पर बड़ा सुन्दर बच्चा आया है, बहनजी। आप भी उसे देखने चलिये, बहनजी।

"हाँ हाँ, कुसुम, मैं अवश्य देखने चलूंगी। पर जरा अपनी अम्मा को अच्छा तो हो जाने दो।"

"बहन जी, डरने की कोई बात नहीं है। यह बीमारी उड़नी नहीं है।"

*

मास्टर— बताओ दो साल से जो तुम मेहनत कर रहे हो उससे तुम्हें अभी तक क्या लाभ हुआ?

लड़का— सब से मुख्य लाभ तो मुझे यह हुआ कि मैं आपके डंडों से बच गया।

*

अध्यापक— अगर सूर्य दिन को न निकले तो क्या नुकसान होगा?

विद्यार्थी— बिजली का खर्च बढ़ जायगा ।

*

मास्टर— जितना ऊपर चढ़ते जाओ ठंड बढ़ती जाती है ।

लड़का— मास्टर जी, तब तो लम्बे आदमी के गर्मी में मज़े रहते होंगे ।

*

सूरज— हे परमात्मा ! इन्दौर को भारत की राजधानी बना दे । ईश्वर ! इन्दौर राजधानी बन जाये ।

कान्ता— सूरज भैया, यह क्या प्रार्थना कर रहे हो ?

सूरज— कान्ता बहन, क्या बताऊँ ! आज मैं भूगोल के परचे में भारत की राजधानी इन्दौर लिख आया हूँ । इसी से यह प्रार्थना करता हूँ ।

शिक्षक— बताओ, यदि किसी की सांस बन्द हो जाय तो तुम क्या करोगे ?

विद्यार्थी— क्या करूंगा ? उसके लिये कफ़न आदि का प्रबन्ध करने में जुट जाऊँगा । हो सकेगा तो श्मशान तक चला जाऊँगा ।

*

अध्यापक— मोहन, ताजमहल किसने बनाया था ?
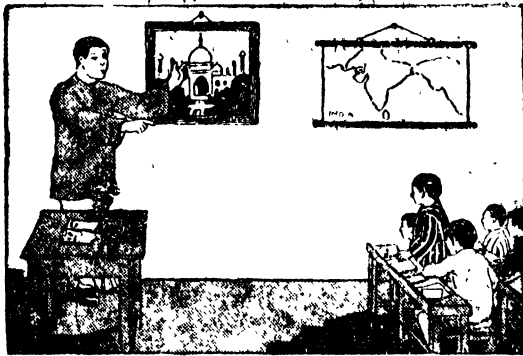
मोहन बग़ल वाले लड़के से बात कर रहा था । वह चौंक कर बोला, 'जी, मैंने नहीं ।'

*

एक पिता अपने पुत्र को उसके प्रधान अध्यापक के पास ले गया और लगा उसकी शिकायत करने । प्रधान अध्यापक ने कहा— आपने अपने लड़के को समझाया नहीं ?

पिता— श्रीमान्, मैंने समझाया तो बहुत, पर यह मेरी सुनता कब है । यह

तो गधा है, गधों की ही बात मानता है। मैं इसलिये इसे आपके पास ले आया हूँ। आप ज़रा इसे समझा दें।

*

परीक्षा भवन में एक विद्यार्थी बहुत समय से हाथ पर हाथ धरे बैठा था। एक मास्टर उसे चुपचाप बैठे देख, सहानुभूति के स्वर में बोला, "क्या तुम्हें किसी प्रश्न ने उलझन में डाल दिया है ?"

लड़के ने निःसंकोच उत्तर दिया, "प्रश्न.........जी, प्रश्न तो मुश्किल नहीं है— मतलब साफ है। हां, उत्तर मुझे उलझन में डाले हुए है।"

*

मास्टर— बताओ, वर्षा से हमें क्या लाभ है ?

लड़का— उस दिन स्कूल की छुट्टी हो जाती है।

*

मास्टर — क्यों मोहन, ओस क्या है ?

मोहन— जब पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगा कर थक जाती है तो जो पसीना आता है वही पसीना ओस होती है।

*

विज्ञान के शिक्षक ने एक रसायन में रुपया डाल दिया, और एक विद्यार्थी से पूछा— क्यों प्रेम, यह रुपया काला पड़ेगा या नहीं ?

प्रेम— जी, नहीं।

शिक्षक — तुमने कैसे जाना ?

प्रेम— मास्टर साहब, यदि घोल में रुपया काला पड़ता तो आप उसे घोल में डालते ही नहीं।

*

मास्टर साहब — क्यों मोहन, पजामा कौनसा वचन है ?

मोहन — ऊपर से एकवचन, नीचे से बहुवचन।

*

अध्यापक — अधिक धूप से पौदे कैसे मुरझा जाते हैं ?

विद्यार्थी — जैसे आपकी बेंत से मेरा चेहरा।

*

एक मास्टर साहब अपना चश्मा भूल आये थे। वह एक लड़के को अपने पीछे खड़ा देखकर बोले — बताओ जी, जहांगीर कब मरा था ?

उत्तर मिला — मैं नहीं जानता।

मास्टर जी ने फिर पूछा— बाबर कहां पैदा हुआ था ?

'मझे यह भी मालूम नहीं'— फिर उत्तर मिला ।

मास्टर साहब बिगड़ खड़े हुए । वह उसे मारने के लिये छड़ी उठाने लगे तब पीछे वाले लड़के ने सहमते हुए कहा— जनाब, मैं विद्यार्थी नहीं, मिस्त्री हूँ । पंखा ठीक करने आया हूँ ।

*

मास्टर ने एक बच्चे का घर का काम देखकर कहा— मेरी समझ में नहीं आता कि एक मनुष्य इतनी सारी ग़लती किस तरह कर सकता है ।

बच्चा अभिमान से बोला— यह एक मनुष्य का काम नहीं है, मास्टर जी ! पिता जी ने इसमें मुझे सहायता दी थी ।

*

पिता जी ने छोटे चुन्नू से पूछा कि सवाल निकालने में क्या वे उसकी मदद करें ।

चुन्नू बोला— नहीं, पिता जी ! इसे ग़लत तो मैं भी निकाल सकता हूँ ।

*

अध्यापक— मान लो राम, तुम अपने निकर की एक जेब में हाथ डालते हो तो उसमें दस आने मिलते हैं । दूसरी जेब में हाथ डालने से तुम्हें आठ आने मिलते हैं । तो बताओ तुम्हारे पास कुल कितने आने हैं ?

राम— यह मेरे निकर में नहीं मिल सकते । किसी और लड़के से सवाल पूछिये ।

*

मां— कमला ! तू सोती क्यों नहीं ? क्या कल सवेरे स्कूल नहीं जाना है ?

कमला— स्कूल जाने की चिन्ता ही तो नहीं सोने दे रही है मां ।

*

शिक्षक— बताओ मोहन, यदि सफेद गाय सफेद रंग का दूध देती है तो काली गाय कैसे रंग का दूध देगी ?

मोहन— काले रंग का ।

*

"मां, आज मास्टर जी ने बब्बू को दस में से एक नम्बर दिया । बब्बू ने एक का पांच बना दिया । उसकी चोरी पकड़ी गई और उसकी खूब पिटाई हुई ।"

"हां बेटा, यह बहुत बुरी बात है । तुम तो कभी इस तरह एक का पांच नहीं बनाते ?"

"नहीं मां, मैं एक का पांच नहीं सिर्फ चार बनाता हूँ, चार आसानी से बन जाता है।"

*

क्लास में सन्नाटा था। आज मास्टरजी ने अजब ही सवाल पूछा था। सभी हैरान थे। प्रश्न था— एक कमरे की लम्बाई दस फीट है, चौड़ाई पांच फीट है, तो मेरी उमर बताओ।

सभी छात्र हैरान थे कि इस सवाल का क्या जवाब होगा। मास्टरजी भी टकटकी लगाये लड़कों की ओर देख रहे थे कि कोई इस प्रश्न का उत्तर दे भी पाता है या नहीं। आखिर एक लड़के ने हाथ खड़ा कर दिया। मास्टरजी ने हैरान होकर उसे जवाब देने को कहा।

लड़के ने खड़े होकर कहा, "मास्टरजी, आपकी उमर बयालिस साल की है।" और सच मास्टरजी की उमर थी भी इतनी ही। मास्टरजी हैरान थे कि उस लड़के ने सही जवाब जाना कैसे।

मास्टरजी ने पूछा— तुम्हारा जवाब तो सही है। लेकिन यह बताओ कि तुमने निकाला कैसे ?

लड़के ने कहा— मास्टरजी, हमारे घर के पास एक आदमी रहता है जो आधा पागल है। उसकी आयु इक्कीस साल की है। आपने आज उससे दुगनी बेवकूफी का सवाल पूछा था, सो मैं भांप गया कि आपकी उमर भी उससे दुगनी ही होगी।

*

पिता— मैंने सुना है कि तुम्हें स्कूल में चार इनाम मिले हैं। क्या यह बात सच है ?

पुत्र— जी हां।

पिता— किस किस बात के ?

पुत्र— एक तो सबसे अच्छी याददाश्त के लिये मिला था। बाक़ी तीन इनाम याद नहीं किस लिये मिले थे।

*

एक विद्यार्थी के परीक्षा में बहुत कम नम्बर आये। इस पर उस विद्यार्थी के पिता ने पूछा कि तुम्हारे इतने कम नम्बर क्यों आये हैं ? विद्यार्थी ने उत्तर दिया— पिता जी जब मेरी बारी आई तो नम्बर ही कम रह गये थे।

*

गुरुजी ऊन का पाठ पढ़ा रहे थे। जब पाठ समाप्त हो गया तो उन्होंने एक लड़के से पूछा— तुम्हारा कोट किस चीज़ का बना है?

विद्यार्थी ने घबरा कर जवाब दिया— पिता जी की पतलून का।

*
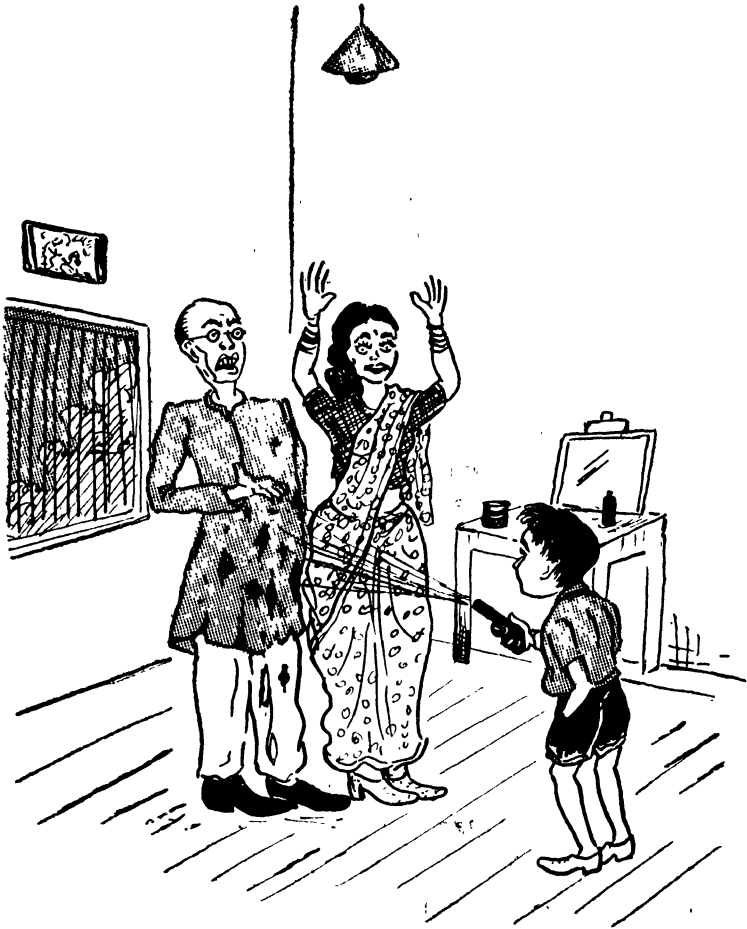
मां (मामा से)— मैंने पहले ही कहा था कि हाथ उठा लीजिये लड़का रसायन पढ़ता है।

*

अध्यापक— क्यों निर्भय, गर्मियों में सबसे अधिक अण्डे कौन देता है?

निर्भय— मास्टर लोग।

अध्यापक— उल्लू, पाजी!

निर्भय— देखिये, मास्टरजी, हर अध्यापक के पास अप्रैल मई में परीक्षा की कॉपियां आती हैं और वे खूब जी खोल कर अण्डे देते हैं।

*

शिक्षक— बताओ स्कूल में आने से पहले तुम किस चीज़ का ध्यान रखते हो।

सब लड़के— जी, छुट्टी का।

*

छात्र— (गणित के अध्यापक से) मास्टरजी, अंग्रेज़ी के अध्यापक तो अंग्रेज़ी में बोलते हैं, परन्तु आप गणित की भाषा में क्यों नहीं बोलते?

अध्यापक— अधिक तीन पांच न कर। लंका में सब बावन गज़ के नहीं होते, फिर भी मैं अंग्रेज़ी के अध्यापक से उन्नीस बीस ही हूँ। अपने को छत्तीस समझता है, यहां से नौ दो ग्यारह हो।

*

"अच्छा, लड़को, बताओ शकुन्तला नाटक किस ने लिखा था?"

क़रीब क़रीब सब लड़के एक साथ बोल उठे, "कालिदास ने।"

"अच्छा," मास्टर जी ने एक लड़के की ओर देखते हुए, जो खामोश रहा था, कहा, "मोहन, तुम कालिदास बनना पसन्द करोगे या राज कपूर?"

"राज कपूर।"

"क्यों?"

"क्योंकि राज कपूर अभी ज़िन्दा है और कालिदास मर चुका है।"

*

अध्यापक— राम, तुम कहां रहते हो?

राम— मास्टर जी, सोहन के साथ।

अध्यापक— लेकिन सोहन कहाँ रहता है?

राम— मेरे पास।

अध्यापक— अहमक़ कहीं का! अच्छा यह बताओ, तुम दोनों कहाँ रहते हो?

राम— एक दूसरे के पास।

*

गुरु— धैर्य से मनुष्य सब कुछ कर सकता है।

चेला— क्या धैर्य से छलनी में पानी रखा जा सकता है?

गुरु— हाँ, क्यों नहीं, यदि पानी के जम जाने तक धैर्य रखा जावे।

*

शिक्षक-- देखो बच्चो, जो पदार्थ ज़मीन से निकलता है वह खनिज पदार्थ कहलाता है। समझे! अच्छा, इस बेंच के लडके उदाहरण देंगे।

पहला लड़का-- मास्टर जी, सोना।

दूसरा-- आलू।

तीसरा— मूली।

चौथा— सीता जी।

*

अध्यापक— बताओ, श्रीकृष्ण इतने बड़े राजनीतिज्ञ क्यों थे?

छात्रा— क्योंकि वे सोलह हज़ार रानियों की राय से कार्य करते थे।

*

अध्यापक-- क्यों प्रभात, रेलगाड़ी के आने के समय रेल का फाटक क्यों बन्द कर दिया जाता है?

प्रभात— इसलिये कि गाड़ी शहर में न घुस जाय।

*

एक दिन श्याम स्कूल देर से पहुंचा। मास्टर साहब ने उससे पूछा— क्यों श्याम, आज देर से कैसे आये?

श्याम-- मास्टरजी, गिर गया था और लग गई थी।

मास्टर साहब-- कहाँ गिर गए थे और क्या लग गई थी, हमें दिखलाओ।

श्याम— मास्टरजी, खाट पर गिर गया था और नींद लग गई थी।

*

अध्यापक— इस सप्ताह में मैं तुम्हें पांच बार दण्ड दे चुका हूँ, बोलो क्या कहते हो।

लड़का— मुझे खुशी है कि आज शनिवार है।

*

अध्यापक— रवि! पानीपत के मैदान में कितने युद्ध हुए?

रवि— तीन, मान्यवर।

अध्यापक— गिनवाओ।

रवि— एक, दो, तीन।

*

प्रभा— छुट्टी किस दिन होनी चाहिए?

बलबीर— जिस दिन पाठ याद न हो।

*

मास्टर— आपका लड़का बड़ा मज़बूत है।

पिता— शायद आपके मारने से मज़बूत हो गया है।

❀

मास्टर-- आपका बेटा बहुत कमज़ोर है।

पिता— लेकिन हमारे यहाँ तो दूध पीने के लिये चार गायें हैं।

*

मास्टर-- इस प्रश्न का उत्तर तो गधा दे सकता है।

विद्यार्थी— बिल्कुल ठीक, इसलिये मैंने स्वयं न देकर आपसे पूछा था।

*

मास्टर साहब ने लड़कों को समझाया था कि सब काम समय पर करना चाहिये।

एक दिन जब मास्टर साहब पढ़ा रहे थे तभी घंटी बज गई। लडकों ने पुस्तकें बन्द करके बस्ते में रख लीं। मास्टर साहब ने पूछा— पुस्तकें बन्द क्यों कर दीं?

लड़कों ने उत्तर दिया— सब काम समय पर करना अच्छा होता है।

*

शिक्षक विद्यार्थियों को गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त की खोज के महत्त्व को बतलाना चाह रहा था।

"सर आइज़क न्यूटन भूमि पर बैठे थे और पेड़ की ओर देख रहे थे। तभी ऊपर से एक सेव टूटकर उनके सिर पर गिरा जिससे उन्होंने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त खोज निकाला। देखा बच्चो, है नहीं आश्चर्यजनक बात? तुम भी ......

कक्षा के तेज़ लड़के पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा। वह बात काटकर बीच में बोल उठा— "हाँ मास्टरजी! और यदि वे कक्षा में बैठकर अपनी पाठ्य-पुस्तकों की ओर देख रहे होते तो कुछ भी नहीं खोज पाते।"

*

शिक्षक— तुम्हारा नाम क्या है बेटा?

विद्यार्थी— अन्नू।

शिक्षक— छी! घर से बाहर अपना प्यार का नाम नहीं बतलाना चाहिये। तुम्हें कहना चाहिये, 'अरुण, श्रीमान्।' (दूसरे विद्यार्थी से) और तुम्हारा नाम क्या है?

विद्यार्थी – मुरुणलाल (मुन्नूलाल) श्रीमान्।

*
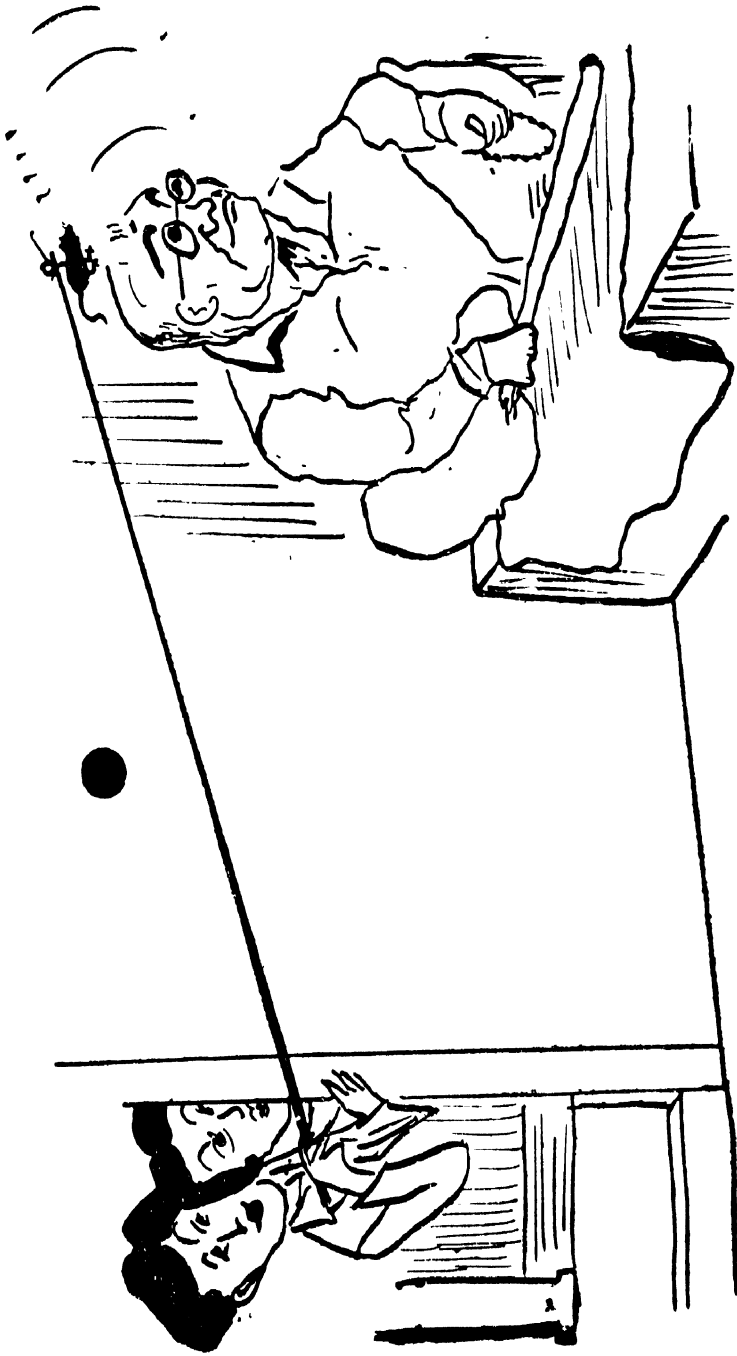
"यह रोज़ रोज़ मेरे सिर पर ही क्यों कूदती है।"

मास्टर साहब समझाते समझाते हार गये, किन्तु लड़के की समझ में यही न आया कि 'बाक़ी' किसे कहते हैं। तब वे बोले-- मान लो, तुम्हारे बापू के पास चार घोड़े हैं। उनमें से दो तुम्हारे चचा ले गये, तो तुम्हारे बापू के पास कितने घोड़े बचे ?

लड़का-- एक भी नहीं।

मास्टर-- यह कैसे ?

लड़का-- क्योंकि मेरे बापू के पास केवल दो घोड़े हैं।

*

मास्टर-- रामू, चालीस और साठ कितने हुए ?

रामू-- अट्ठानबे हुए मास्टर साहब।

मास्टर-- और दो कहाँ उड़ा दिये ?

रामू-- दो फी सदी दलाली काट लेना तो हमारे घर का क़ायदा है।

*

एक पाठशाला की अध्यापिका अपनी क्लास की एक लड़की की शरारतों से तंग आ गई थी। एक दिन वह खीज कर उससे कह उठी— यदि मैं एक सप्ताह के लिये भी तुम्हारी माँ बना दी जाऊँ तो मैं तुम्हें ठीक कर दूँ।

बालिका ने उत्तर में गम्भीरता से कहा— बहुत अच्छा, मैं इस सम्बन्ध की चर्चा अपने पिता जी से करूँगी।

*

मास्टर ने एक छोटी लड़की से पूछा-- अगर तुम्हारे पिता कोई काम तीन घण्टे में पूरा कर सकते हैं और वही काम तुम्हारी माता भी तीन घण्टे में पूरा कर लेती हैं, तो बताओ दोनों मिलकर उस काम को कितनी देर में पूरा कर लेंगे।

लड़की-- तीन घण्टे में।

मास्टर— तुम बड़ी बेवकूफ हो। तीन घण्टे नहीं, डेढ़ घण्टे में।

लड़की— लेकिन, मास्टर जी, मैंने उस डेढ़ घण्टे का भी तो हिसाब लगाया है जो वे दोनों आपस में लड़कर ख़राब कर देंगे।

*

मास्टर-- लड़के कौन से तीन शब्द सबसे ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं ?

विद्यार्थी-- मुझे नहीं मालूम।

मास्टर-- ठीक है, बैठ जाओ।

*

हिसाब के घण्टे में मास्टर ने सवाल बोला-- एक प्रति शत प्रति साल की दर से एक लाख रुपयों पर तुम्हें दो साल में कितना ब्याज मिलेगा?

सवाल सुनकर सब विद्यार्थी उसे हल करने लगे। केवल एक विद्यार्थी खाली बैठा रहा। मास्टर जी ने उससे सवाल न निकालने का कारण पूछा तो वह बोला, "मै एक प्रति शत की दर से रुपया उधार ही न दूँगा।"

*

आशा और उषा ने स्कूल जाना शुरू किया था। एक दिन घण्टे के बीच में आशा मास्टरनी से बोली, "बहन जी, इतनी ज़ोर से मत बोलिए, उषा सो रही है, कहीं जाग न जाए।"

*

एक अध्यापक ने अपनी तनख़ा के रुपए अपने विद्यार्थियों को दिखाते हुए कहा— "देखो बच्चो, मुझे एक महीना काम करने पर बस इतने ही रुपए मिलते हैं।"

एक छोटे बच्चे की समझ में यह बात नही आई, उसने पूछा-- "लेकिन, मास्टर जी, आप काम कहाँ पर करते हैं?"

*

मास्टर-- तुमने आज सुबह अपना मुह तक नहीं धोया। देखो, तुम्हारे मुंह पर लगी जूठन से साफ़ मालूम पड़ता है कि तुमने आज सुबह क्या खाया था।

विद्यार्थी— बताइए क्या खाया था?

मास्टर-- दही।

विद्यार्थी-- वाह, मास्टर जी, दही तो मैने कल सुबह खाया था।

*

चुन्नू की स्कूल में मास्टर से प्रश्न पूछने की बहुत आदत थी। एक दिन मास्टर ने कहा— "चुन्नू, मूर्खों के सभी प्रश्नों का उत्तर बुद्धिमान नहीं दे सकते।"

एक मिनट तक तो चुन्नू चुप रहा, थोड़ी देर बाद वह भोले स्वर में बोला, "तो, मास्टर जी, मैं इम्तिहान में इसीलिए फेल हो गया था क्या?"

*

मास्टर— बताओ मोहन, वह कौन सी ऐसी जगह है जहाँ कुछ भी पैदा नहीं होता?

मोहन— जी, मैं एक ही जगह जानता हूँ और वह है मेरे दादा का गंजा सिर।

*

अध्यापक — आवश्यक वस्तुओं के बिना खुशी खुशी अपना काम निकाल लेना स्वार्थहीनता कहलाता है। इसका एक उदाहरण दो, कुमार।

कुमार — जैसे मैं आवश्यकता होने पर भी बिना नहाए रह जाता हूँ।

❀

मास्टर — सुन्दर, मुझे तुम्हारा इम्तिहान का नतीजा देखकर बड़ी निराशा हुई है। इस बार तो तुम्हें सख़्त मेहनत करनी चाहिए थी। तुम्हारे पिता जी ने तुम्हें प्रथम आने पर साइकिल देने का वायदा किया था। लेकिन तुम बुरे नम्बरों से फेल हुए हो। आखिर तुम करते क्या रहे ?

सुन्दर — साइकिल चलाना सीखता रहा।

❀

मास्टर — कमल, तुम दस मिनट देर से आए हो।

कमल — नहीं, मास्टर जी, पांच मिनट तक तो मैं बाहर खड़ा हुआ देर से आने का बहाना ही सोचता रहा था।

❀

मास्टर जी — अगर कोई दुकानदार कोई चीज दस रुपए चार आने में खरीद कर आठ रुपए तेरह आने में बेच दे तो उसे नफ़ा रहेगा या नुक़सान ?

चुन्नू — रुपयों में तो उसे घाटा रहेगा, लेकिन आनों में फ़ायदा होगा।

❀

मास्टर — सुरेश, नौ और चार कितने होते हैं ?

सुरेश — एक।

मास्टर — कैसे ?

सुरेश — घड़ी में देख लीजिए।

❀

मास्टर — मनोज, बताओ गेहूँ सबसे अधिक कहाँ पाया जाता है ?

मनोज — राशन की दूकान में।

❀

मास्टर — क्यों, महेन्द्र, तुमने अपना पाठ याद किया ?

महेन्द्र — जी, नहीं, मास्टर साहब।

मास्टर — क्यों नहीं याद किया ?

महेन्द्र — आप ही ने तो कहा था कि खेलने के बाद पाठ याद किया करो, इसलिए मैं दिन भर खेलता ही रहा, अब पढ़ूँगा।

❀

अध्यापक— विनोद, चारपाई का क्या अर्थ है ?

विनोद— चार पाइयाँ अथवा एक आने का तीसरा हिस्सा।

❀

मास्टर— बताओ, कपिल, रज़िया बेगम कब मरी थी ?

कपिल— जी, मैं उस समय वहाँ नहीं था।

❀

मास्टर— क्यों, हरि, मरुस्थल किसे कहते हैं ?

हरि— मरने की जगह को, मास्टर साहब।

❀

अध्यापक— अभी से झूठ बोलने लगे।

मोहन— क्यों नहीं, आगे वक़ालत भी तो करनी है।

❀

एक शिक्षक क्लास में 'दया' पर व्याख्यान दे रहे थे।

उन्होंने कहा— मोहन, यदि एक लड़का गधे को पीटता हो और मैं उसे ऐसा करने से रोक दूँ तो मुझ में यह कौन सा गुण समझोगे ?
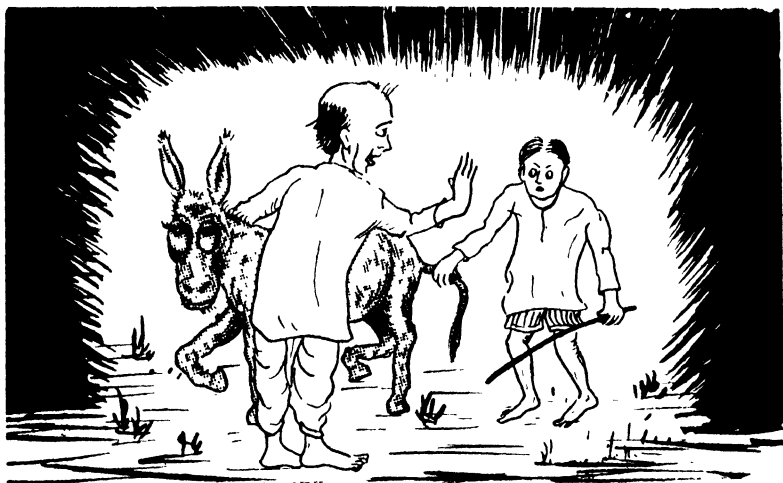
मोहन— भ्रातृ-प्रेम।

❀

मास्टर— बालको, तुमको कोई फिक्र नहीं रहती ?

विद्यार्थी— जी, मुझे हमेशा एक फिक्र लगी रहती है।

मास्टर— कौन सी ?

विद्यार्थी— जी, खेलने की।

*

मास्टर— जब तुम्हारा भाई दस साल का हुआ तो उसने क्या करना शुरु किया ?

लड़का— मास्टर साहब, उसने ग्यारहवें साल में पैर रखा।

*

शिक्षक— गोपाल, ग्रहण कितने प्रकार के होते हैं? इनके बारे में तुम क्या जानते हो ?

गोपाल— ग्रहण तीन प्रकार के होते हैं — सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, पाणि-ग्रहण। इनमें पाणिग्रहण सब से अच्छा होता है, क्योंकि इस अवसर पर खूब मिठाइयाँ खाने को मिलती हैं।

*

मास्टर— राम, तुम्हारे घटाने के सवाल में नौ पाई की कमी है।

राम ने तीन पैसे मेज़ पर रखते हुए कहा— लीजिए, अब तो सवाल ठीक है।

*

एक अध्यापक ने पाठशाला में शिक्षा देते हुए एक विद्यार्थी से पूछा— क्या तुमने शिवाजी का नाम सुना है?

छात्र— जी हां।

अध्यापक— अच्छा, तो यह बतलाओ कि यदि वे आज जीवित होते तो क्या करते ?

छात्र— उनको वृद्धावस्था के कारण पेंशन मिलती होती।

*

मास्टर— बच्चो, तुम्हें मालूम है कि मछली पकड़ने का जाल किस चीज़ का बनाया जाता है?

एक बच्चा— हाँ मास्टरजी, बहुत से छोटे छोटे छेद आपस में रस्सी से बाँध दिए जाते हैं।

*

भूगोल अध्यापक— मथुरा कहाँ है ?

सुन्दर— जी, वह बरतन साफ कर रहा है।

*

हिसाब के अध्यापक क्लास को 'वज़न' का अध्याय समझा रहे थे। उन्होंने

क्लास में पूछा— "बच्चो, यह बताओ कि एक सेर रुई और एक सेर लोहे में से कौनसी चीज़ ज़्यादा भारी होगी?"

सारी क्लास ने एक स्वर से कहा— "लोहा, मास्टर जी।"

इसके बाद मास्टर जी उन्हें यह समझाने में लग गए कि एक सेर रुई और एक सेर लोहे में कोई फ़र्क नहीं होता— दोनों का वजन बराबर होता है। बहुत देर समझाने के बाद बोले— "अब तो तुम सब समझ गए कि दोनों का वज़न बराबर होता है?"

एक लड़का उठकर बोला— "नहीं, जी।"

मास्टर जी ने उसे फिर से समझाया लेकिन फिर भी जब उसे विश्वास न आया तो झुँझला कर बोले, "तुम्हें इस चीज़ का विश्वास मैं किस तरह दिलवा सकता हूँ?"

लड़के ने कहा, "मास्टर जी, आप बाहर खड़े हो जाइए और मैं स्कूल की छत पर जाकर पहले आप के सिर पर एक सेर रुई फेंकूँगा और उसके बाद एक सेर लोहा। मुझे विश्वास है कि एक सेर रुई से आपको चोट नहीं लगेगी। अगर उतने ही लोहे से आपको चोट न लगी तो मैं विश्वास करूँगा कि एक सेर रुई और एक सेर लोहा बराबर होते हैं।"

*

क्लास में अध्यापक 'अध्यवसाय' का अर्थ समझाने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने कहा— "अध्यवसाय क्या है? अध्यवसाय के जरिए आदमी दुर्गम से दुर्गम मार्गों को तय कर सकता है, ऊँची से ऊँची पहाड़ियों को लाँघ लेता है, बड़ी से बड़ी नदियों को पार कर सकता है।"

कुछ क्षण क्लास में शान्ति छाई रही, और फिर हरि ने, जिसका पिता मोटरों का व्यापारी था, कहा— "ऐसी कोई मोटर नहीं है, सर!"

*

मास्टर जी— मोहन, तुम्हारी लिखावट तो प्रति दिन बिगड़ती ही जा रही है।

मोहन— मास्टर जी, अगर मैं साफ़ लिखने लगूँगा, तो फिर आप मेरे हिज्जों में गलती निकालने लगेंगे।

*

अध्यापक— नरेश, हिसाब के परचे में तुम्हें पचास नम्बर देते हुए मुझे बहुत खुशी है।

नरेश— तो, मास्टर जी, पूरे सौ नम्बर दे दीजिए, तब तो आपकी खुशी

दुगनी हो जायगी।

*

परीक्षा के प्रश्नपत्र में एक प्रश्न पूछा गया— किसी भी एक वर्ष में कितना कोयला आयात और निर्यात किया गया लिखो।

एक परीक्षार्थी ने उत्तर लिखा— सन चौदह सौ बानवे में आयात कुछ नहीं, निर्यात कुछ नहीं।

*

मास्टर साहब ने अजीत से पूछा— "क्यों अजीत, तुम्हारे चाचा जी के कितने लड़के हैं ?"

अजीत— "दो।"

मास्टर— "उनके नाम क्या हैं ?"

अजीत— "नीलाम्बर और पीताम्बर।"

मास्टर— "अच्छा, अजीत, यदि मान लो तुम्हारे चाचा जी के दो लड़के और हो जाएँ तो उनके नाम तुम क्या रखोगे ?"

अजीत— "सितम्बर और नवम्बर।"

✿

अध्यापक— किसी ऐसी वस्तु का नाम बताओ जिसका नाम उसके सर्वथा उपयुक्त हो।

छात्र— नारंगी। इस फल का रंग नारंगी, शक्ल नारंगी, स्वाद नारंगी और यह वस्तु वास्तव में उन गुणों से युक्त है जिनकी कि 'नारंगी' नाम से अपेक्षा और आशा की जाती है।

✿

अध्यापक— हाँ, तो तुममें से कौन 'इन्डाइरेक्ट टैक्स' का उदाहरण दे सकता है ?

एक विद्यार्थी— कुत्ते पर लगाया गया टैक्स।

अध्यापक— उसे 'इन्डाइरेक्ट टैक्स' कैसे कह सकते हैं ?

विद्यार्थी— क्योंकि उसे कुत्ते को नहीं देना पड़ता।

*

भूगोल शिक्षक— लड़को, उन हवाओं को क्या कहते हैं जो कभी एक ओर चलती हैं कभी दूसरी ओर ?

एक विद्यार्थी— जी, सांस। ये कभी बाहर की ओर चलते हैं और कभी अन्दर की ओर।

*

गुरुजी (नये विद्यार्थी से)— तुम्हारा नाम क्या है ?

विद्यार्थी— देवीप्रसाद ।

गुरुजी— देखो, जब अपने बड़ों से कुछ बात किया करो तो सदा पहले श्रीमान, जी या महोदय आदि माननीय शब्द कहा करो । इससे कहने वाले की नम्रता जान पड़ती है । समझे ? हाँ, बतलाओ तो तुम्हारा नाम क्या है ?

विद्यार्थी— श्रीमान देवीप्रसाद जी ।

꧁

मास्टर साहब ने लक्ष्मण को चपत जमा कर कहा— "सुअर ! मेरा मुँह देखता है या काम करता है ?"

लक्ष्मण सीधा लड़का था । रोकर बोला— "गुरुजी, जिसने आपका मुँह देखा हो उसने सुअर का मुंह देखा हो ।

*

*
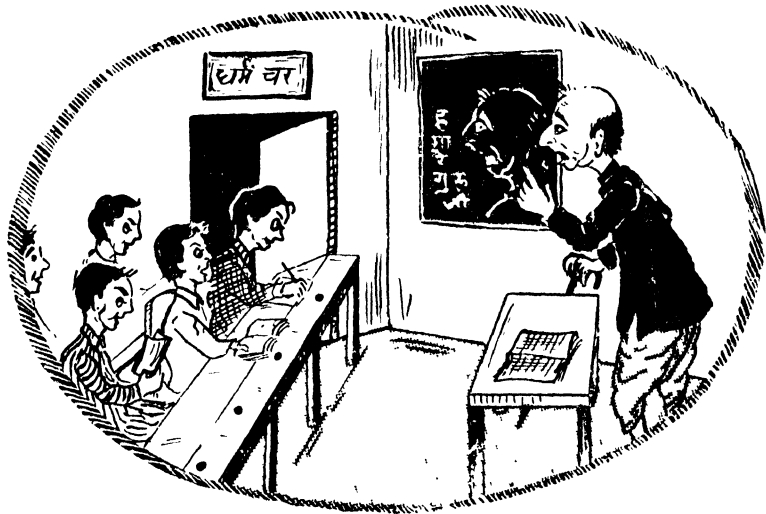
सूरज— मास्टर साहब, फीस ले लीजिये ।

मास्टर— लाओ ।

सूरज— मगर दो आने कम हैं ।

मास्टर— तो कक्षा के किसी विद्यार्थी से लेलो ।

सूरज— कोई नहीं देता ।

मास्टर— अरे, तो क्या सभी तुम्हें बेईमान समझते हैं ?

सूरज— जब आप को ही विश्वास नहीं है तब औरों का तो कहना ही क्या ?

*

सात बरस का गौतम एक दिन स्कूल न जा सका। दूसरे दिन उसके आने पर मास्टर साहब ने उससे पूछा— "तुम कल क्यों नहीं आये थे?"

गौतम ने उत्तर दिया-- "कल मेरी माँ के लड़का हुआ था इसलिये नहीं आ सका।"

इस पर मास्टर साहब ने उससे कुछ न कहा। दो तीन दिन के बाद गौतम फिर स्कूल में न आया। उसने सोच लिया था कि माँ के लड़का हुआ है यह कह देने से मास्टर साहब नाराज़ नहीं होते। दूसरे दिन जब मास्टर साहब ने गौतम से गैरहाज़िरी का कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया— "क्या करूं, गुरुजी, कल फिर अम्मा के लड़का हुआ है।"

*

कक्षा के शान्त वातावरण में किसी लड़के ने बैंच गिरा दी।

मास्टर ने पूछा-- "किसने बैंच गिराई है?"

एक लड़का – "शिव कुमार ने!"

मास्टर-- "शिव कुमार, खड़े हो!"

एक दूसरा लड़का— "जी, शिव कुमार तो आज स्कूल ही नहीं आया।"

*

अध्यापक-- "हीरा लाल, तुमने मेरा दिमाग खराब कर दिया है। कल तुम्हारे पिता जी से मिलूँगा।"

हीरालाल-- "ज़रूर मिलिये मास्टर साहब, मेरे पिता जी डाक्टर हैं।"

*

अध्यापक-- दीपक, दो सर्वनाम बताओ।

दीपक-- कौन ? मैं ?

अध्यापक— ठीक।

*

आगन्तुक— मास्टर साहब, जीवन कहाँ है? मैं उसका पिता हूँ, उससे मिलना चाहता हूँ।

मास्टर— क्या खूब! अभी तो वह आपकी बीमारी के कारण छुट्टी लेकर गया है।

स्नातक-स्नातिकाएँ

'पिता जी, आपको वह घटना याद होगी जब आप कालिज से निकाल दिये गये थे? आपने ही तो मुझे सुनाई थी।'

'हाँ, हाँ।'

'मैं यह सोच रहा हूँ कि "इतिहास अपने को दुहराता है" में कितना अधिक सत्य है।'

❊

खगोल विद्या की कक्षा रात्रि-अध्ययन के लिये मैदान में आई हुई थी।

एक युवती ने ऊपर की ओर इङ्गित कर पूछा, 'प्रोफेसर साहब, उधर देखिये। क्या वह वीनस है?'

'नहीं,' प्रोफेसर ने गम्भीरता से कहा, 'वह तो जुपिटर है।'

'ओह, प्रोफेसर साहब! आपकी आँखें कितनी तेज़ हैं?' युवती ने प्रशंसित नेत्रों से प्रोफेसर की ओर देखते हुए कहा। 'आप इतनी दूर से भी लिंग भेद कर लेते हैं।'

❊

रामू एक नालायक़ लड़का था। एक दिन वह अपने गाँव आकर पिता जी से बोला, 'पिता जी, मेरे पास बिल्कुल पैसे नहीं हैं और प्रोफेसर ने गणित की पुस्तकें कल बता दी हैं। उन्हें नहीं खरीदूँगा तो कक्षा के साथ कैसे चलूँगा?'

'और तुम इतने सारे रुपये लेकर गये थे, उनका क्या किया?'

'वे तो सब ख़र्च हो गये।'

'खैर, मैं तुम्हें कुछ रुपये और दे दूँगा। पर मैंने सुना है कि शहर में एक सरकस तथा एक नाटक कम्पनी आये हुए हैं। इस धन को उन्हें देखने में मत फूंक देना।'

'नहीं, नहीं, पिता जी। उनके लिये पैसे तो मैंने पहले ही बचा रखे है।'

*

हरीश सोच में बैठा था। उसके एक मित्र ने आकर पूछा— "भाई, क्या बात है? क्या सोच रहे हो?"

हरीश बोला— "मेरे पिता के पास से पत्र आया है। उन्होंने लिखा है कि यदि मैं अपनी सब खराब आदतें छोड़ दूं तो वह मुझे पाँच हज़ार रुपया इनाम देंगे। समझ में नहीं आता क्या करूं।"

"अरे करना क्या है," दोस्त बोला, 'पाँच हज़ार मंगवालो।'

"हाँ, यह तो ठीक है," हरीश ने कहा, "लेकिन मैं यह सोच रहा हूँ जब खराब आदतें छोड़ दूंगा तो इतना सारा रुपया खर्च कैसे करूंगा।"

*

एक लड़के को उसके ट्यूटर-प्रोफेसर ने अपने कमरे में बुलाया क्योंकि उसन अर्थशास्त्र के प्रोफेसर को गधा कह दिया था।

ट्यूटर मुस्कराता हुआ बोला— क्यों सत्यप्रकाश, कहीं प्रोफेसर को गधा कहा जाता है? मुझे खेद है, मै इस कारण तुम पर दस रुपये जुर्माना कर रहा हूँ।

लड़का— लेकिन यदि मै एक गधे को प्रोफेसर कहूँ तब तो जुर्माना नहीं होगा?

ट्यूटर-प्रोफेसर— नहीं, बिल्कुल नही।

लड़का— अच्छा, प्रोफेसर।

*

"कालिदास के नाटक भी क्या ग़ज़ब के हे।"

"इसमें सन्देह ही क्या है?"

"शैक्सपीयर का कोई भी नाटक उनका मुक़ाबला नही कर सकता।"

"कभी भी नहीं, किसी हालत में भी नही।"

"तुमने शैक्सपीयर के नाटक पढ़े हैं?"

"नहीं। तुमने कालिदास के नाटक पढ़े हैं?"

"नहीं, केवल नाम सुना है।"

*

क्लास का ग्रुप फोटोग्राफ खिचवाया गया था। और अध्यापक लड़कों को

फुसलाने की कोशिश कर रहा था कि वे फोटो की एक एक प्रति ख़रीद लें।

"जब तुम सब बड़े हो जाओगे तो अपने पुराने साथियों के बारे में सोचना कितना अच्छा लगेगा? यह राजकृष्ण है। अब तो उसके चार बच्चे हो गये हैं। और यह मनोज है, आजकल विलायत में पढ़ रहा है। ......

कमरे के पीछे की तरफ से आवाज आई— "ये प्रोफेसर साहब हैं, बेचारे अब तक तो मर गये होंगे।"

*

प्रोफेसर— तुम मेरी कक्षा में सो नहीं सकते।

विद्यार्थी — सो तो सकता हूँ यदि आप ज़ोर से न बोलें।

*

दो पिता अपने अपने पुत्रों की शिक्षा के विषय में बात कर रहे थे।

"मेरा बेटा तो ऐसे पत्र लिखता है कि मुझे कोश देखने की आवश्यकता पड़ती है।" पहले ने गर्व से कहा।

इस पर दूसरे ने ठंडी सांस ली। "मित्र, तुम बड़े भाग्यशाली हो। मुझे तो अपने पुत्र के पत्र पाकर हमेशा बैंक दौड़ना पड़ता है।"

*

नया अध्यापक था, नये ही सब विद्यार्थी, और अर्थशास्त्र का घंटा। मांग और पूर्ति के नियम समझाते हुए अध्यापक ने पूछा— "कोई उदाहरण दो जहाँ मांग की अपेक्षा पूर्ति अधिक हो।"

एक विद्यार्थी उठा। सहज भाव से बोला, "परेशानी!"

*

कॉलिज में पढ़ने वाले दो लड़कों को घूमते समय अपनी क्लास की एक लड़की मिल गई। एक लड़के ने तो अपना हैट उठाया, लेकिन दूसरे ने मुस्कराकर केवल 'हलो' कहा। कुछ देर बाद पहले लड़के ने दूसरे लड़के से कहा, "क्यों, क्या बात है? क्या तुम नहीं जानते कि लड़कियों से मिलते समय अपना हैट उठा लेना चाहिये। आख़िर वह तुम्हारी मित्र है।"

"हां, मैं तो उसे जानता हूँ। लेकिन मेरे कमरे में रहने वाला साथी उसे नहीं जानता।"

"इसके क्या माने?"

"यही कि यह हैट उस लड़के का है, मेरा नहीं।"

*

एक बार एक इन्टरव्यू में एक लड़की से पूछा गया— एक और एक को तुम किस तरह मिलाओगी कि दो से अधिक बनें।

उचित उत्तर था 'ग्यारह'।

किन्तु लड़की ने तुरन्त उत्तर दिया, "जब पति और पत्नी मिले और बच्चा हुआ तो तीन हो गये।"

*

मेडिकल कॉलिज के एक छात्र को अपना परीक्षा-पत्र बड़ा कठिन लग रहा था। इसमें एक प्रश्न था— "किसी व्यक्ति के अधिकाधिक पसीना निकालने के लिए आप क्या करेंगे?"

छात्र ने कापी में लिखा— "मैं उसे परामर्श दूँगा कि वह इस कॉलिज की परीक्षा में बैठे।"

*

कालिज में पढ़ने वाला एक लड़का गर्मी की छुट्टियों में अपने गाँव गया। उसका पिता किसान था। दूसरे दिन सुबह उसके किसान पिता ने खेत में काम पर जाने से पहले लड़के को हिला कर कहा, "उठो, साढ़े चार बज गये।"

लड़के ने समझा शायद कालिज होस्टल में ही कोई साथी उसे कुछ कह रहा है, इसलिये उसने आंख बिना खोले ही कहा, "सो जाओ, दोस्त! सोने का समय हो गया। कल दिन भर तुम्हें इतना पढ़ना है। साढ़े चार बजे भी न सोओगे?"

बेचारे बाप को क्या पता था कि कालिज के विद्यार्थी सुबह साढ़े चार बजे

उठते नहीं सोते हैं।

*

'क्या मैं ही पहली युवती हूँ जिसका तुमने चुम्बन लिया है?'

'तुम्हारे यह पूछने से लगता है शायद तुम पहले भी मिली हो।'

*

एक प्रोफेसर सहशिक्षा का बहुत कट्टर विरोधी था। वह कहा करता, 'लड़कों को गणित पढ़ाना बिल्कुल असम्भव है यदि कक्षा में एक भी लड़की है।'

किसी ने टोका, 'रहने दो प्रोफेसर, हर जगह अपवाद भी होता है।'

'हो सकता है। पर उसे गणित पढ़ाना ही बेकार है।'

*

परीक्षा की कापियाँ जांचते समय प्रोफेसर ने एक कापी पर लिखा पाया— इस प्रश्न का उत्तर केवल भगवान् जानता है। उसने लिख दिया— भगवान् को १० में से १० अङ्क दिये जाते हैं और तुम्हें शून्य।

*

'कुमारी शान्ता,' विज्ञान के प्रोफेसर ने पूछा, 'क्या तुम बता सकती हो कि किसी को भी पानी में डुबाने पर क्या होता है?'

'अवश्य, क्यों नहीं? खतरे की घण्टी बजती है।'

*

एक साहब अपनी कार से देहली जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक विद्यार्थी दिखाई देने वाले लड़के से पूछा कि देहली कितनी दूर है।

"जिस ओर आप जा रहे हैं, उधर से तो देहली २४,८८७ मील दूर है।

हां, यदि वापिस लौट कर अगले मोड़ पर दाहिने घूम जायें तो पाँच मील है।"

❀

कुछ दिनों से मैं देहली के एक कॉलिज में पढ़ा रहा था। मैं अपने छात्रों में सच्चाई की भावना भली प्रकार भर देना चाहता था। सो मैंने सबसे एक प्रतिज्ञा-पत्र भरने को कहा कि पिछली परीक्षा में न उन्होंने किसी से सहायता ली है और न किसी को दी है। एक युवक ने भर दिया, 'किसी ने मुझे सहायता नहीं दी ; यह ठीक नहीं है। और भगवान् जानता है मैं किसी को सहायता नहीं दे सकता।'

❀

प्रोफेसर ने छात्र से पूछा— 'युवतियाँ स्वाभाविक रूप से युवकों से अधिक सुन्दर होता है', इस वाक्य में क्या ग़लती है ?

छात्र ने उत्तर दिया— इसका ठीक रूप यह है, 'युवतियाँ कृत्रिम रूप से युवकों से अधिक सुन्दर होता है।'

❀

कॉलिज का टूर हो रहा था। प्रोफेसर के साथ लड़के एक रेस्ट्राँ में पहुँचे। वहाँ एक मशीन रखी हुई थी। किसी लड़के ने प्रोफेसर से उस मशीन के बारे में पूछा। प्रोफेसर ने उसे जुआ बताया और लगभग एक घण्टे तक जुआ खेलने की बुराइयों पर लैक्चर दिया। उसने फिर व्यावहारिक रूप बताना शुरू किया— 'देखो, इस छेद से एक आना डाल देते हैं। फिर हैंडिल पकड़कर खींचते हैं। जिसका भाग्य हो उसके पास बाक़ी पड़े सिक्के भी नीचे ढक्कन खुलकर निकल पड़ते हैं अन्यथा उसकी इकन्नी भी चली जाती है। हर बार अपना भाग्य खुलने की आशा में लोग रुपये गंवाते रहते हैं। अब देखो न, मैंने इकन्नी डाली और हैंडिल खींचा।' खन-खन करती हुई लगभग सौ रुपये की रेज़गारी फ़र्श पर बिखर गई।

❀

प्रोफेसर ने अपने छात्र-छात्राओं को कक्षा में देर से आने पर बहुत डाटा। उसने व्यंगपूर्वक कहा, 'यह इतिहास का घण्टा है, शाम की चाय का समय नहीं।'

अगले दिन एक छात्रा २० मिनट लेट आई। प्रोफेसर ने उसे सीट पर बैठ जाने दिया, फिर तीखे स्वर में कहा, 'आप कैसी चाय पियेंगी, बहनजी।'

बहनजी ने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया, 'बिना दूध की, श्रीमान्।'

❀

भूगर्भ-शास्त्र का प्रोफेसर— भूगर्भवेत्ता के लिये १००० साल कुछ भी नहीं होते।

छात्र— हे भगवान! कल ही मुझ से एक भूगर्भवेत्ता १०० रु० थोड़े समय के लिये मांग कर ले गया है।

*

इतिहास के प्रोफेसर ने पूछा, "चन्द्रगुप्त मौर्य बड़ा था या समुद्रगुप्त?"

छात्र ने उत्तर दिया, "यदि हम चन्द्रगुप्त मौर्य और समुद्रगुप्त के गुणों की तुलना करें और अपने से पूछें कि कौन बड़ा था तो हमें हाँ में उत्तर देना पड़ेगा।"

*

प्रोफेसर— तुम अठारहवीं शताब्दी के वैज्ञानिकों के बारे में क्या बता सकती हो?

छात्रा— यही कि सब मर चुके हैं।

*

प्रोफेसर— समान अर्थ वाले शब्दों से क्या लाभ है?

छात्र— यदि एक शब्द के हिज्जे समझ में न आयें तो उसके स्थान पर दूसरा लिख दें।

*

नई पौद

*

छात्र— मेरी समझ में नहीं आता कि मुझे शून्य क्यों मिला ?

प्रोफेसर— समझ में तो मेरी भी नहीं आता। पर क्या करूँ, शून्य से कम अङ्क ही नहीं होता।

*

'यदि प्रिंसिपल ने अपने शब्द वापिस नहीं लिये तो मैं कालिज छोड़ दूंगा।'

'क्यों, ऐसा उसने क्या कह दिया ?'

'उसने मुझे कालिज से निकल जाने को कहा।'

*

'मैं अशोक महान् की तरह प्रसिद्ध हो गया हूँ।'

'कैसे ?'

'मैं इतिहास में चला गया हूँ।'

*

'छात्रो, आज मैं तुम्हें दस मिनट पहले छोड़ रहा हूँ। पर देखो, धीरे धीरे जाना, कहीं बगल वाली कक्षा जग न जाये।'

*

'मैं परीक्षा लेने वाला हूँ। किसी को कोई प्रश्न पूछना हो तो पूछ ले।'

'मैं किस चीज़ की परीक्षा दे रहा हूँ ?'

*

ज्योतिष-शास्त्र के प्रोफेसर ने कहा— मैं कहता हूँ साठ लाख साल में संसार मिट जायगा।

पीछे से एक भयभीत स्वर सुनाई दिया— कितने साल ?

'साठ लाख साल।'

लड़की (बड़ी सान्त्वना पाकर)— मैंने समझा था आठ लाख साल।

*

'इतनी जल्दी कहां भागे जा रहे हो ?'

'मैंने अपनी नई पाठ्यपुस्तक ख़रीदी है। डर यह है कि कालिज पहुँचने से पहले वह कोर्स से न निकल जाये।'

*

छात्रा— हीरा सब से कड़ा पदार्थ होता है क्योंकि वह शीशे तक को काट देता है।

छात्र— शीशा ! मेरी प्रिय बहन, हीरा तो नारी के हृदय तक पर प्रभाव डालने में समर्थ होता है।

*

एक विद्यार्थी कॉलिज से कृषि की डिगरी लेकर एक बाग़ में गया, और बाग़ के बूढ़े माली से बोला, "भई, तुम्हारे तो खेती करने और पेड़ लगाने के ढंग बिल्कुल पुराने और दक़ियानूसी हैं। मुझे तो आश्चर्य होगा यदि तुम्हारे इस सेब के पेड़ में पांच सेर सेब भी लग जायें।"

"आश्चर्य तो मुझे भी होगा," माली बोला, "क्योंकि यह नासपाती का पेड़ है।"

*

प्रोफ़ेसर— मूर्ख इतने प्रश्न पूछता है कि बुद्धिमान उत्तर देते देते थक जाता है।

छात्र— ठीक है सर! यही हाल हमारा परीक्षा में होता है।

*

"उसे परीक्षा में बेईमानी करने के कारण कॉलिज से निकाल दिया गया?"

"कैसे?"

"स्वास्थ्य विज्ञान के दिन वह अपनी पसलियाँ गिनता पकड़ा गया।"

*

युवक— मैं इस सवाल को दस बार निकाल चुका हूँ?

प्रोफेसर— फिर भी ठीक नहीं निकला?

युवक— आप स्वयं दसों उत्तर देख लीजिये।

*

लड़का अपने कमरे के साथी से— तुमने मेरी बरसाती क्यों पहनी?

रूममेट— अपना नया सूट भीगा देखकर क्या तुम्हें खुशी होती?

*

लड़का— रात को मुझे ऐसा विचार आया कि कोई मेरी घड़ी उठाकर लेगया है। मैंने बिजली जलाई और उसे देखा।

साथी— क्या घड़ी चली गई थी?

लड़का— नहीं, चल रही थी।

*

छात्र— रमेश की कमर झुकती चली जा रही है।

छात्रा— क्यों, क्या बहुत पढ़ने लगा है?

छात्र— नहीं, दिक़्क़त यह है कि वह अधिकतर छोटे क़द की युवतियों के साथ घूमता है।

*

भाई— मैं जोन्स को तुम्हें इस तरह चूमते हुए नहीं देख सकता।

बहन— ओह भैया, उसे समय दो, अभी वह नौसिखिया है।

*

"मैंने सुना है कि तुम्हारा लड़का जो कॉलिज में पढ़ता है लेखक बन गया है?'

'हाँ, वह अपने हर पत्र में धन के लिये बहुत सुन्दर लेख लिखता है।'

*

'यह क्या मिसरानी! तुम्हारी रसोई की क्या हालत है? ऐसा लगता है जैसे कोई भूचाल आगया है। इसे ठीक करने में तुम्हें सारा दिन लग जायगा।

तुम कर क्या रही थी?'

'मैं क्या करूं बहूजी? बीबीजी मुझे दिखा रही थीं कि कॉलिज में गृह विज्ञान में आलू पकाना कैसे सिखाया गया है।'

*

बाप भी उसी यूनिवर्सिटी से निकला था और अपने को बहुत बुद्धिमान समझता था। बेटे ने पहला साल समाप्त किया और घर तार भेजा कि वह दूसरे नम्बर पर पास हुआ।

बाप ने चिट्ठी लिखी कि वह द्वितीय क्यों आया, प्रथम क्यों नहीं आया। अवश्य खेलता रहा होगा।

बेटे को बहुत निराशा हुई। खैर, अगले साल उसने और कस कर मेहनत की और इस बार वह प्रथम आया। पुरस्कारों से लदा तथा गर्व से भरा वह अपने घर पहुँचा। आज पिताजी को कितना हर्ष होगा।

जब फल बताया गया तो बाप शान्ति से कुछ मिनट तक अपने बेटे को परखता रहा। फिर कन्धे सिकोड़ कर बोला— 'तुम प्रथम आये हो? ओह, यूनिवर्सिटी का स्टैण्डर्ड कितना नीचा गिर गया है।'

*

वह अपनी सहेली को साड़ी दिखा रही थी। उसके पिता भी वहीं बैठे थे। 'देखा, कितनी सुन्दर साड़ी है। और यह सारी मेहनत एक छोटे से कीड़े की है, हमें कक्षा में पढ़ाया गया है।'

पिता गुर्रा कर बोले, 'और वह कीड़ा मैं हूँ।'

*

जब पुत्री छुट्टियों में घर लौटी तो पिताजी ने घूर कर उसे जांचा और पूछा— तुम कॉलिज में रहकर पहले से मोटी हो गई हो मार्था।

मार्था— हाँ पापा, जिमनास्टिक के लिये कपड़े उतारने पर मेरा वज़न १४२ पौण्ड है।

पिताजी की आँख आश्चर्य से विस्फारित हो गईं। फिर कड़क कर बोले— यह जिम नास्टिक उल्लू का पट्ठा कौन है?

सौन्दर्य, प्रेम, वासना

युवक— क्या आपकी आँखें आपको कष्ट पहुँचाती हैं?

युवती— (अचम्भे में भरकर) नहीं तो, क्यों?

युवक— बड़ा आश्चर्य है। मुझे तो इन्होंने घायल कर दिया है।

*

गुस्सैल बाप— (भौहें चढ़ाकर) मैं तुम्हें बतलाऊँगा कि मेरी बेटी का चुम्बन किस तरह लिया जाता है!

कृष्ण— आपने देर कर दी। यह तो मैं सीख चुका हूँ।

*

नई देहली के एक क्लब में यह वार्तालाप सुना गया:—

'उसका सिर दरवाज़े की मुटिया के समान है।' एक ने कहा।

दूसरे ने पूछा— 'यह कैसे?'

'क्यों? कोई भी युवती उसे घुमा सकती है।'

*

प्रभात— क्या बात है कि युवतियां आपस में चुम्बन करती हैं जब कि पुरुष नहीं करते?

आभा— क्योंकि युवतियों के पास चुम्बन के लिये अधिक अच्छी वस्तु नहीं होती जबकि पुरुषों के पास होती है।

*

'मैं सीधी रमणियों को पसन्द नहीं करता हूँ।'

'तो तुम्हारा मतलब है कि तुम फ्लर्ट यानी कुछ ......'

'नहीं, नहीं; मेरा मतलब बांकी कटावदार से है।'

*

शीला— यदि तुम मेरा बलपूर्वक चुम्बन ले लो तो तुम्हें पता है मैं क्या करूँगी?

रवीन्द्रकुमार— मुझे नहीं पता।

शीला— तो क्या यह जानने के तुम इच्छुक भी नहीं हो?

*

एक देवी जी अपनी नाक के रूप से खुश नहीं थीं और उसमें परिवर्तन कराना चाहती थीं। एक सौन्दर्य-विशेषज्ञ ने उन्हें बतलाया कि वह ३००) में उनकी नाक को मनपसन्द रूप दे देगा।

'३००) ? यह तो बहुत अधिक हैं। कोई कम खर्च का उपाय बताइये।'

'अधिक हैं तो कम खर्च बताता हूँ। अन्धेरे में दौड़कर किसी बिजली के खम्भे से टकरा जाइये।'

*

"मेरी आँखें हिरनी जैसी हैं न ?"

"हाँ।"

"और मेरे दाँत मोतियों जैसे हैं ?"

"हाँ।"

"और मेरे बाल नागिन जैसे हैं ?"

"हाँ।"

"और मेरे होठ अनार की कली जैसे हैं?"

"हाँ।"

"ओह, तुम कितनी अच्छी बातें करते हो!"

*

"उस युवक ने मुझसे कल कहा था कि पूर्णिमा की चान्दनी में मैं बड़ी अलौकिक लग रही हूँ।"

"इसका क्या मतलब?"

"वह तो मुझे मालूम नहीं, लेकिन उसके मुँह पर एक चाँटा ज़रूर रसीद कर दिया— अगर मतलब ख़राब हुआ तो काम आ जाएगा।"

*

युवती— तुमने अगर चूमने की कोशिश की, तो मैं चिल्ला पड़ूंगी।

प्रेमी— तो उससे क्या होगा? यहाँ कोसों तक आदमी का नामनिशान भी नहीं है।

युवती— यह तो मैं जानती हूँ। लेकिन फिर भी मैं अपनी आत्मा को तसल्ली देना चाहती हूँ।

*

"रानी, तुमने मुझे धरती का सबसे सुखी व्यक्ति बना दिया है।"

"बस धरती का? परसों जिस नौजवान से मेरी मुलाकात हुई थी, वह तो सातवें आसमान पर पहुंच गया था।"

*

सामने से एक भयंकर साँड को आते देखकर राधा अपने प्रेमी मोहन से बोली, "जाओ, ज़रा मेरे लिये इसके सामने तो खड़े हो जाओ। तुम तो कहा करते हो कि तुम मेरे लिए मौत का सामना करने को तैयार हो।"

"हाँ, लेकिन अभी यह साँड मरा कहाँ है?"

*

एक टाइपिस्ट लड़की नई भरती हुई टाइपिस्ट से— 'इस दफ्तर में सब टाइपिस्टों को बुढ़ापे में पेंशन देते हैं। और मज़े की बात यह है कि बुढ़ापा भी जल्दी ही आ जाता है।'

*

प्रेमी— रानी, दिन-पर-दिन तुम सुन्दर होती जा रही हो, और आज तो ऐसा जान पड़ता है जैसे कल आ गया हो।

*

लड़की (क्रोध से)— चार लड़कियों से एकदम सगाई! इसका क्या मतलब है?

लड़का (उदासी से)— मुझे नहीं मालूम, शायद कामदेव ने तीर की बजाए दिल पर मशीनगन चलाई है।

*

मोहिनी— कहते हैं चूमने से बीमारी फैल सकती है।

कामिनी— पता नहीं, मुझे तो अब तक ···

मोहिनी— किसी ने चूमा नहीं?

कामिनी— नहीं, मुझे तो अब तक कोई बीमारी हुई नहीं।

*

एक युवक की तनख़ा घटा दी गई थी। उसके कुछ दिन बाद जब वह अपनी प्रेमिका के साथ घूमने गया तो बोला, "प्रिये! तुम जानती हो ········ मुझे तुम पर हमेशा भरोसा रहा है ······· मैं समझता हूँ ······· मेरा मतलब है ······· हूँ ······ बोलो, तुम मुझसे विवाह करोगी?"

चैन की साँस लेकर युवती ने जवाब दिया, "ओह, प्रियतम! मैं तो डर गई थी। मैं समझी थी कि तुम कुछ उधार मांगने वाले हो।"

*

प्रेमिका— आज तुम इतने सुस्त क्यों हो?

प्रेमी— मेरी बीवी, जो डेढ़ महीने से पीहर गई हुई थी, आज वापिस आ गई है।

प्रेमिका— तो फिर क्या हुआ? इसमें सुस्त होने की क्या बात है?

प्रेमी— दिक़्क़त यह है कि मैंने उसे लिख दिया था कि मैं दफ़्तर के बाद घर पर ही रहता हूँ— और आज जो बिजली का बिल आया वह केवल बारह आने का था।

*

प्रेमी अपनी प्रेमिका से बड़े महत्त्व की बात कहने में घबरा रहा था। हिम्मत करके उसने कहना शुरू किया, "हूँ, ··· नीता, ··· मैं यह पूछ रहा था ···· हाँ, ओह, ख़ैर, ··· यह बताओ कि क्या तुम ··· वही, मेरा मतलब यह है कि क्या तुम्हारे पिताजी ··· हाँ ··· क्या वह मेरे ससुर बनना स्वीकार करेंगे?"

*

"प्रिये, मैं यह पत्र धीरे धीरे लिख रहा हूँ, क्योंकि तुम जल्दी जल्दी नहीं पढ़ सकतीं ······।"

*

प्रेमी— भला मुझसे पहले भी कभी किसी ने तुम्हारा चुम्बन लिया है ?

प्रेमिका (जिसकी आदत हकलाने की थी)— हाँ, क ··· क ··· क्योंकि ··· कि ··· म ··· म ··· मै ·· ज ··· जल्दी से म ··· ना न ··· नहीं कर ··· पा ··· पाती ।

*

एक रसिक रोज़ शाम को एक पान वाली की दूकान पर पान खाने जाया करते थे। एक दिन उनके मित्र ने पूछा — "क्यों, यार, जब तुम उस तम्बोलिन पर इतने लट्टू हो, तो उससे शादी क्यों नहीं कर लेते ?"

रसिक महोदय ने जवाब दिया, "मगर मुश्किल तो यह है कि तब पान खाने शाम को कहाँ जाया करेंगे ?"

*

गार्ड— अजी, मिस साहिबा, जल्दी चढ़िए। गाड़ी बस छूटने ही वाली है।

मिस— मगर मैंने अपनी बहन का चुम्बन तो अभी लिया ही नहीं।

गार्ड— कोई परवाह नहीं, आप चढ़िए। उसकी फिक्र मैं कर लूँगा।

*

प्रेमी— तुम्हारे छोटे भाई ने मुझे तुम्हारा मुँह चूमते हुए देख लिया है। बताओ, उसे क्या दे दूँ ताकि वह यह बात किसी से न कहे।
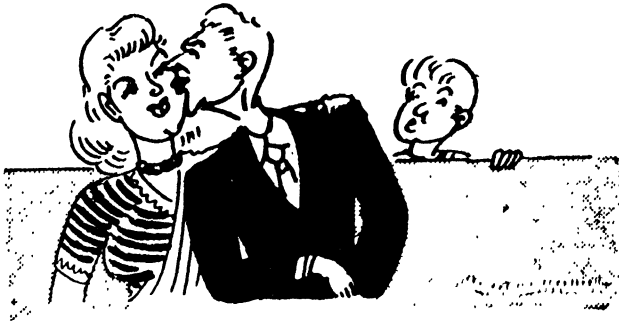
प्रेमिका — वह अमूमन चार पैसे पाया करता है।

*

प्रेमिका— प्यारे ! तुम्हारे दुःखों में साथ देने से मुझे परम सुख होगा।

प्रेमी— मगर प्रिये ! मुझे तो कोई दुःख ही नहीं है।

प्रेमिका— अभी नहीं। जब हमारे साथ तुम्हारी शादी हो जायगी, तब की बात कहती हूँ।

प्रेमी— प्रिये ! जब तक तुम मेरे साथ हो तब तक तुम्हें चोर और लुटेरों का तनिक भी भय न मानना चाहिए। आज मैंने दौड़ में पहला इनाम पाया है। जहाँ ज़रा ख़तरे की बात हुई कि मैं दौड़कर फौरन मदद बुला लाऊँगा।

*

नवयुवक — (एक चंचल नवयुवती से) क्यों, मिस नीरा, अगर मैं तुम्हारा चुम्बन लेना चाहूँ तो सबसे पहले मुझको क्या करना होगा?

मिस नीरा — सबसे पहले तो मुझे क्लोरोफॉर्म सुँघाना होगा।

*

कामिनी— तुमने कैसे जाना कि वीरेन्द्र का दिल बड़ा मुलायम और ममता-पूर्ण है।

कमला— मैंने खुद देखा, उन्होंने अपना दिल निकाल कर मेरे पैरों पर रख दिया।

*

गाड़ी अपनी पूरी रफ़्तार से भागी चली जा रही थी। इसी गाड़ी के डिब्बे में एक सिंधी नौजवान, एक पंजाबी युवक, एक पंजाबी युवती और एक बुढ़िया बैठे हुए थे। एकाएक गाड़ी एक सुरंग में से गुज़री और इस कारण डिब्बे में घटाटोप अन्धकार छा गया। उसी समय चुम्बन और चाँटे की आवाज़ साथ साथ सुनाई पड़ी।

बुढ़िया सोच रही थी— 'कैसी बेवकूफ है यह लड़की! बोलो, ज़रा सी बात के लिए इसने चाँटा मार दिया। हाय राम! इस जोर से! यदि यह युवक यही कुछ मेरे साथ करता, तो मैं तो कभी भी नाराज़ नहीं होती।' और लड़की सोच रही थी— 'कैसा बेवकूफ है यह सिन्धी! मुझ नई कली के होते हुए भी यह पुरानी कली से प्रेम करने चला था। अच्छा हुआ बच्चू के जो चाँटा पड़ा, यदि बुढ़िया की जगह मैं होती तो कभी चाँटा न मारती।' और पंजाबी युवक सोच रहा था— 'इस सिंधी ने युवती के साथ दुर्व्यवहार किया, और उसके पीछे चाँटा मुझे पड़ा। मज़ा तो उसने लिया, जुरमाना मुझे भरना पड़ा।' और सिंधी नवयुवक सोच रहा था— 'क्या बेवक़ूफ बनाया सबको! मैंने अपनी हथेली का चुम्बन लिया और पंजाबी युवक को चाँटा मारा। वाह, वाह!' सिंधी नवयुवक अपनी विजय पर प्रसन्न हो रहा था और पंजाबी मन ही मन कुढ़ रहा था।

*

कुछ रोज़ पहले प्रेमिका ने अपने प्रेमी से विवाह का प्रस्ताव किया था। उसी सम्बन्ध में चर्चा चल रही थी।

प्रेमिका— "आज माता जी तुम्हारे सम्बन्ध में श्रीमती मलिक से पूछताछ कर रही थीं।"

प्रेमी ने अपने मन में सोचा कि श्रीमती मलिक ने उसकी बुराई की होगी, झट बोल उठा—"वह ······ वह ······ वह बहुत झूठी है। अपनी माता जी से कह देना कि उसकी बातों का विश्वास न करें।"

प्रेमिका—"ओह, तो क्या तुम सचमुच जुआरी और व्यभिचारी हो?"

प्रेमी— "नहीं तो प्रिये ; मैं कह तो चुका हूँ कि उसकी बातों का विश्वास न करो। वह झूठी और क्या कह गई ?"

प्रेमिका— "वह तुम्हारी तारीफ़ कर रही थीं। तो क्या तुम सचमुच तारीफ़ के लायक़ नहीं हो?"

*

सम्राट हेनरी चतुर्थ एक युवती से प्रेम करने लगे जो प्रति दिन दरबार मे आया करती थी। एक दिन सम्राट ने हँसकर पूछा— "मिस, तुम्हारे शयन कक्ष का मार्ग कौनसा है?"

युवती ने कहा, "गिरजे से होकर।"

*

प्रेमी देर से खड़ा खड़ा प्रेमिका के आने की राह देख रहा था। आखिर किसी तरह वह आ ही पहुँची।

प्रेमी दुःखित स्वर में बोला, "तुम आई तो, पर बहुत देर कर दी। अब तो सिनेमा खतम हो गया होगा।"

प्रेमिका—"नहीं, नहीं, मुझे ज्यादा देर तो नहीं हुई। मुश्किल से अभी साढ़े छः बजे होंगे।"

प्रेमी—"यदि ऐसा है तो फिर दिन की भूल हुई होगी, मै यहाँ शनिवार की शाम से खड़ा हूँगा।"

*

एक भोली भाली युवती एक दिन पुरुषों को कोस रही थी—"ओह, यह पुरुष जाति भी कितनी बेवफ़ा होती है!"

उसकी एक सखी ने पूछा—"क्यों बहन, पुरुषों पर इतनी खफ़ा क्यों हो?"

युवती ने कहा— "मुझसे तीन युवक प्रेम करते थे। मैंने अवसर देखकर आज ही तीनों को बुलाया। पर शायद उनको मालूम हो गया कि मैं तीनों से प्रेम करती हूँ, इस कारण कोई नहीं आया।"

*

"अब मैं समझ गया वह मुझे क्यों देख रही थी।"

*

अधेड़—— मैं १५ वर्ष से आपकी लड़की से प्रेम करता हूँ।
वृद्ध—— तो अब क्या चाहते हो ?
अधेड़— उससे विवाह करना चाहता हूँ।

वृद्ध— शुक्र है, मैंने समझा पैन्शन चाहते हो।

*

उसने अपनी प्रेमिका से एक बार विवाह का प्रस्ताव किया पर उसकी प्रेमिका ने स्वीकार न किया। उसने दूसरी बार कहा, फिर भी असफल रहा। अन्त में उसने कहा— "मैं तुम्हारे इन्कार से निराश नहीं हुआ हूं, मैं अभी और प्रतीक्षा करूँगा........"

उसकी प्रेमिका ने कहा, "तो अच्छा हो यदि आप यहाँ आने के बदले अपने ही घर पर प्रतीक्षा किया करें। मैं वहीं आपसे मिल लूंगी।"

*

प्रेमी— मैं रात भर तुम्हारे बंगले के चारों ओर टहलता रहा कि तुम कब बुलाओ और मैं तुम्हारे पास आऊँ।

प्रेमिका— हाँ, मुझे रात को ज़रूरत तो पड़ी थी कि कोई पास में होता। तुम आजाते तो अच्छा था। जब से मेरा टाभी मरा है, मुझको एकान्त से बेचैनी होती है।

*

कृष्ण दो वर्ष से निर्मला से प्रेम करता था। परन्तु इतनी हिम्मत नहीं थी कि शादी की बात करता। एक दिन उसने दिल कड़ा करके कहा, "प्यारी, मेरे मित्रों में आजकल बहुधा यही चर्चा रहती है कि हम दोनों की बहुत जल्दी शादी हो जायगी।"

निर्मला ने त्योरी में बल डालकर कहा, "लेकिन जब मैं तुम्हारे साथ शादी से इन्कार कर दूंगी तो बड़ा आनन्द आयगा। तुम्हारे मित्रों को निराश होना पड़ेगा।"

*

बद्रीनाथ (एक सुन्दरी को देखकर भोलानाथ से)— यार, कुछ अच्छी नहीं है।

भोलानाथ— यही मैं भी समझता हूँ। (ठहर कर) तुम्हारे साथ भी शादी करने के लिए राज़ी नहीं हुई क्या?

*

रंजन— कल मैंने देखा अन्धेरे में तुम मेरी प्रेमिका का चुम्बन कर रहे थे।

गिरीश— आज जब उजाले में मैंने उसे देखा, तब मुझे भी पश्चात्ताप हुआ।

*

दिल-फेंक प्रेमी— प्रिये ! तुम जैसे भी हो सके मेरी हो जाओ ।

प्रेमिका— मैं इतनी जल्दी कुछ नहीं कह सकती ।

दिल-फेंक प्रेमी— नहीं, मुझे अभी उत्तर दो । क्योंकि मुझे एक और से भी आज यही सवाल करना है ।

*

'क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो ?'

'इसमें क्या सन्देह है ?'

'तो क्या तुम मेरे लिये मर भी सकते हो ?'

'नहीं प्रिये, मेरा प्रेम अमर है ।'

*

"मिस पटेल, मैंने आज तक तुमसे कोई बात सख्ती से नहीं कही, तुम जानती हो न ?"

"जी हाँ, मगर आप यह बात क्यों कह रहे हैं ?"

"मैं चाहता हूँ कि यह बात मैं बिना सख्ती के ही तुम से कह दूँ कि ऑफिस के समय तुम अपने प्रेमी को चिट्ठी टाइप करके मत भेजा करो ?"

"लेकिन ...."

"उस दिन तुमने गुप्ता और चौहान कम्पनी को बिल के स्थान पर प्यार और चुम्बनों से भरा पत्र भेजा, जो आज उन्होंने सधन्यवाद लौटा दिया है।"

*

माँ ने वयःप्राप्त लड़की को डाटते हुए कहा, "तू फिर उस लड़के के साथ सिनेमा जा रही थी। जब मैं छोटी थी तो केवल अपने विवाह के लिए प्रस्तावित वाग्दत्त युवक के अतिरिक्त किसी के साथ कहीं जाने का साहस नहीं करती थी।"

लड़की ने जवाब दिया, "चिन्ता न करो माँ! वह लड़का भी मेरे विवाह के लिये प्रस्तावित वाग्दत्त लड़कों में से ही एक है।"

*

एक प्रेमी और प्रेमिका पार्क में बैठे हुए बातें कर रहे थे।

प्रेमी : "जीवन कभी कभी बड़ा सूना लगता है।"

प्रेमिका : "उसे मधुर भी बनाया जा सकता है।"

प्रेमी : "हाँ, एक छोटा सा घर हो, उसके सामने बाग़ लगा हुआ हो।"

प्रेमिका : "बड़ा आकर्षक होगा वह घर।"

प्रेमी : "और संध्या को जब कोई काम पर से लौटे तो उसकी पत्नी द्वार पर ही मुस्कराकर उसका स्वागत करे।"

प्रेमिका : "बड़ा भाग्यशाली होगा वह दम्पति।"

इसी समय एक महिला उधर से निकलीं। दो बच्चे उनके साथ चल रहे थे और एक गोदी में सवार था। महिला के आधे बाल सफ़ेद हो गये थे और उनके चेहरे की रौनक़ उड़ गयी थी। प्रेमी-प्रेमिका ने अपनी वार्ता का विषय बदल दिया।

*

युवक— आज तो हमें पूरी तरह छुट्टी मनानी है। मैंने थियेटर में तीन टिकटों का प्रबन्ध कर लिया है।

युवती— लेकिन तीन टिकट क्यों?

युवक— एक तुम्हारे पिता के लिए, दूसरा तुम्हारी माता के लिए, तीसरा तुम्हारे छोटे भाई के लिए।

*

प्रेमी— "तुम्हारा दिल पत्थर के समान कठोर है। इससे बढ़कर बुरी बात नहीं हो सकती।"

प्रेमिका— "हो सकती है। दिमाग़ का पिलपिला होना।"

*

युवक–– "अब तुमने व्याकरण की कोई ग़लती की तो मै तुम्हें चूम लूंगा।"

युवती–– तुम ऐसा कर सकता नहीं हूँ।

*

युवक–– तुमने साड़ी बहुत ग़लत बाँध रखी है।

युवती–– यह घूरने का अच्छा बहाना नहीं है।

*

'डार्लिग, क्या मैं ही पहला पुरुष हूँ जिसे तुमने प्रेम किया है?'

'हाँ प्रियतम, बाक़ी तो सब सहपाठी थे।'

*

सैली–– बाल डान्स क्या है, सगीत पर आलिगन का दूसरा नाम है।

नैन्सी–– तो इसमें तुम्हें किस बात से नाराज़ी है?

सैली–– संगीत से।

*

एक आधुनिका युवती वह है जो चुम्बन को इस भाँति मना करना जानती है कि वह उससे वंचित न रह जाय।

*

'क्या तुम सहायता के लिये चिल्लाओगी यदि मै तुम्हारा चुम्बन लेने का प्रयत्न करूँ?'

'क्यों, क्या इसमे भी तुम्हे सहायता की आवश्यकता है?'

*

'तुम क्या कहोगी यदि मैं तुम्हारा चुम्बन लूँ?'

'मै बोल कैसे सकूगी?'

*

युवती (झगड़े के बाद)–– मेरे घर से निकल जाओ। मै तुम्हारी शक्ल देखना नहीं चाहती। इसी समय चले जाओ।

युवक–– जाने से पहले मेरी एक प्रार्थना है।

युवती (बड़े प्रेम से)–– क्या, बोलो न?

युवक–– तुम मुझे अपने आलिगन से मुक्त कर दो, तभी तो मैं जा सकता हूँ।

*

शीला–– ओह रमेश! तुम बहुत सुस्त हो।

रमेश–– मैं तुम्हें समझ नहीं पाया।

शीला— यही तो मेरा मतलब था।

*

कारवाला— क्यों साहिबा, चलिये कार में बिठाकर ले चलूँ?

युवती— आप किधर जा रहे हैं?

कारवाला— दक्षिण को।

युवती— आगरे पहुँचकर अपने पागल भाइयों से मेरी नमस्ते कहना।

*

यह— यह कहा जाता है कि एक बार का नृत्य दस मील चलने के बराबर होता है।

वह— वह पुराने ज़माने की बात है। आजकल का नृत्य तो सौ पेड़ों पर चढ़ने के बराबर है।

*

लवंग— तुम्हें देखकर मुझे सागर की याद आ जाती है।

रमण— उच्छृंखल, रसमय और चंचल।

लवंग— नहीं, मतली और उबकाई।

*

कवि-प्रेमी— केवल एक चुम्बन। प्रेम में सारा संसार नेत्रों में घूमने लगता है।

व्यायाम-विलासिनी— यह हालत तो मेरा एक घूंसा खाकर भी हो जायगी।

*

प्रतिदिन वह सुन्दर युवती अपने काम से घर लौटते समय देखती थी कि एक चालिस वर्ष का अधेड़ आदमी अपनी कार मे उसका पीछा करता है।

अन्त में एक दिन उसे भी बदले का अवसर मिल गया। कार खड़ी कर वही आदमी एक मोटी स्त्री के साथ उतर रहा था। अवश्य वह उसकी पत्नी थी।

'हलो, डार्लिङ्ग!' सुन्दरी युवती ने बड़े प्रेम से हाथ हिलाकर कहा।

*

युवक— क्या तुम्हारी बहन को मेरे आने का पता था?

रामू— हाँ।

युवक— तुम कैसे जानते हो?

रामू— क्योंकि वह बाहर चली गई है।

*

पिताजी उस नवयुवक को अक्सर अपनी लड़की के पास आते देख कुछ

सशंकित हो रहे थे। आखिर एक दिन मौक़ा पा उन्होंने उससे पूछ ही लिया, "तुम्हें नलिनी के पास अक्सर आते-जाते देखा करता हूँ। आखिर क्या इरादा है तुम्हारा?"

नौजवान ने जवाब दिया, "मैं आपकी लड़की से विवाह करना चाहता हूँ, और आशा करता हूँ कि आपको इसमें कोई आपत्ति न होगी। मेरी सूरत शक्ल पढ़ाई लिखाई इत्यादि के बारे में आप जानते ही हैं।"

पिताजी बोले, "हाँ, सो तो सब ठीक है। मगर आर्थिक स्थिति के बारे में ···"

नवयुवक तुरन्त बोला, "ओह, उसकी आप चिन्ता न करें। आप के पास लड़की दामाद का खर्चा चलाने लायक़ काफी है सो मैं खूब जानता हूँ।"

विवाह की तैयारियाँ

'खैर, मै तुम्हारी तन्खा पर गुज़र कर सकती हूँ। लेकिन फिर तुम्हारा क्या होगा?'

*

युवक सर्वदा युवती का पीछा करता है जब तक वह उसे पकड़ नहीं लेती।

*

युवती नई कार चलाते हुए बोली, 'क्या तुम देखना चाहोगे कि मेरे टीका कहाँ लगा था?'

वह (उत्कण्ठा से)— 'हाँ, अवश्य।'

'तो अपने नेत्र खुले रखो। अभी ज़रा सी देर में कार वहाँ पहुंची जाती है।'

*

'प्रिये, क्या तुम मेरी पत्नी बनोगी?'

'क्या तुम मुझे जो मैं चाहूँ करने दोगे?'

'अवश्य।'

'क्या माँ मेरे साथ ठहर सकती है?'

'क्यों नहीं, प्रिये?'

'क्या तुम क्लब जाना छोड़ दोगे और माँगने पर मुझे मुहमाँगा धन दिया करोगे?'

'हाँ, हाँ, खुशी से।'

'मुझे बड़ा खेद है कि मै ऐसे भोंदू से विवाह नहीं कर सकती।'

*

एक शरमीला युवक एक युवती से विवाह करना चाहता था। लेकिन वह सोचता था कि विवाह का शब्द मुख से निकालते ही वह लज्जा से मर जायगा। इस समस्या पर बहुत सोच विचार करने के उपरान्त एक संध्या को वह युवती से फुसफुसाया— 'क्या तुम मेरे हाथों से अपनी चिता में आग लगवाना पसन्द करोगी ?'

❀

पेरीन (प्रेमी से) — मेरा मकान तीसरी मंज़िल पर है। जब आप आयें तो कोहनी से घण्टी के बटन को दबा दें।

खुर्शीद— कोहनी से क्यों, मैं उंगली से दबा दूगा।

पेरीन— मेरा मतलब था कि जब आप मुझसे मिलने आयेंगे तो आपके हाथ तो भरे ही होंगे।

❀

लड़की बहुत अमीर थी और लड़का बहुत ग़रीब। लड़की लड़के को प्रेम नहीं करती थी, लड़का यह जानता था।

एक दिन लड़के ने साहस किया और लड़की से पूछा, 'तुम बहुत अमीर हो?'

'हाँ, मेरे पिता ने विवाह के समय मुझे दो लाख रुपये देने का वादा किया है।' लड़की ने उत्तर दिया।

'और मैं निर्धन हूँ।'

'जानती हूँ।'

'क्या तुम मेरे साथ विवाह करोगी?'

'नहीं, बिल्कुल नहीं।'

'मुझे मालूम था कि तुम यही कहोगी।'

'तो फिर पूछा क्यों?'

'मैं यह देखना चाहता था कि जब किसी व्यक्ति के हाथ से दो लाख रुपये निकल जाते हैं तो वह क्या अनुभव करता है।'

*

'क्यों भई, इतने दुखी क्यों हो?'

'मैंने एक युवती से विवाह का प्रस्ताव किया था पर उसने उसे ठुकरा दिया।'

'तो इसमें दुखी होने की क्या बात है— और बहुत लड़कियाँ हैं।'

'हैं तो, पर मुझे तो उस बेचारी के लिये दुःख है कि मेरे समान अच्छा लड़का उसने खो दिया।'

*

प्रेमिका (उत्साह से)— मैं सर्वदा तुम्हारे पत्रों के टिकटों को चूमती हूँ क्योंकि मैं जानती हूँ कि उन्हें तुम्हारे होठों ने छुआ होगा।

प्रेमी— ओह प्रिये! और मेरी मूर्खता तो देखो; मैं उन्हें अपने कुत्ते की नाक से गीला करता था।

*

सुशीला और राजीव में बहुत प्रेम था। वे एक दूसरे पर जान देते थे। दुर्भाग्य से राजीव की बदली हो गई और उसे दूसरे शहर में जाना पड़ा। अब बेचारा सुशीला से कैसे मिल सकता था। फिर भी वह रोज़ाना सुशीला को तार द्वारा अपना प्यार भेजता था। कुछ माह बाद उसे भी एक तार मिला जिसमें सुशीला की उसका तार पहुँचाने वाले तारवाले से विवाह की ख़बर थी।

*

ज्योतिषी— तो आप अपने भावी पति के विषय में क्या जानना चाहती हैं?

युवती— मैं उनके भूत काल के विषय में जानना चाहती हूँ ताकि उसका

भविष्य में सदुपयोग कर सकूँ।

*

मां— रमा, तुम्हारे पास रमेश बहुत देर तक बैठा रहता है। जम्हाई लेकर उसे जतला दिया करो कि तुम्हें नींद आ रही है।

रमा— अम्मा, मैं इस तरकीब को आजमा चुकी हूँ। मेरे जम्हाई लेने पर उसने अगला आधा घण्टा मेरे दांतों की सुन्दरता की प्रशंसा में नष्ट कर डाला।

*

एक नवयुवक अपनी होने वाली पत्नी को देखने गया। उसने लड़की से सबसे पहला सवाल किया— आपको खाना बनाना आता है?

लड़की ने सीधा जवाब न देकर कहा— हमें किसी समस्या को सुलझाने के लिये तरतीबवार चलना चाहिये। खाना बनाने का सवाल पहला नहीं है।

'तो फिर पहला सवाल कौन सा है?' लड़के ने पूछा।

'क्या आप खाना बनाने का सामान खरीदने के लिये कुछ कमा सकते हैं?'

*

"जब तुम मेरी बेटी से विवाह करोगे तो तुम्हें मालूम होगा कि वह कितनी विशालहृदय और दानी है।"

"जी हाँ," युवक ने उत्तर दिया— "मुझे आशा है कि उसने यह बातें आप से ही सीखी होंगी।"

*

"तुम शादी क्यों नहीं करते?" एक युवक ने एक वयस्क कुआँरे मनुष्य से पूछा।

"बात यह है कि जब मैं युवा था, तो मैंने यह निश्चय किया था कि जब तक मुझे आदर्श स्त्री नहीं मिलेगी, मैं विवाह नहीं करूँगा।"

"फिर क्या हुआ?" युवक ने पूछा।

"जब मुझे ऐसी स्त्री मिली, तो वह अपने आदर्श पुरुष की खोज में थी," उस मनुष्य ने उतरे मुँह से कहा।

*

'अब जब तुमने मुझसे विवाह करने के लिये अन्तिम बार मना कर दिया है, मैं अब तुम्हें भूल जाऊँगा और तुम्हें ही नहीं सब कुछ भूल जाऊँगा, सब कुछ...'

'पर यहाँ से अपनी तशरीफ ले जाना न भूलना।'

*
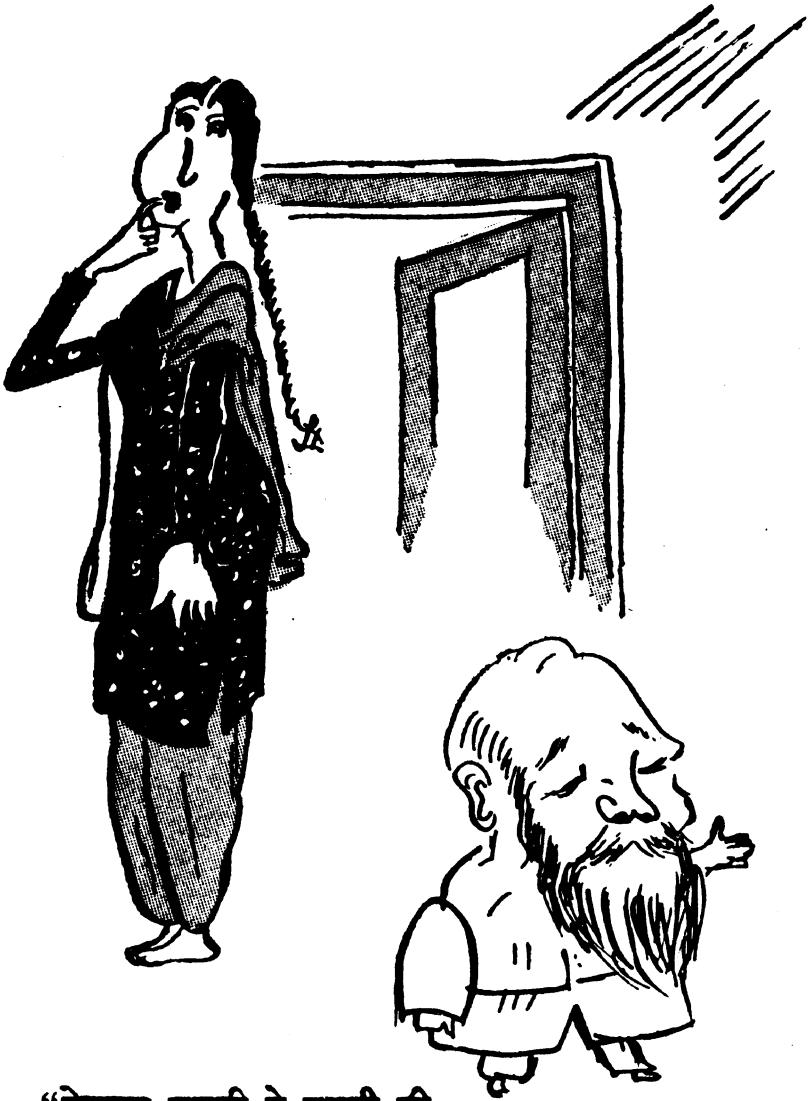
“बेवकूफ लडकी ने गलती की.
अब मेरे जैसा साथी उसे जीवन भर नहीं मिलेगा ।”

*

एक स्त्री और पुरुष में बहुत प्रेम था। उनकी शादी भी तय हो चुकी थी। एक दिन दोनों में झगड़ा हो गया। स्त्री बोली— "हम दोनों ने बड़े अच्छे दिन व्यतीत किये हैं। लेकिन अब मालूम हुआ कि हम दोनों एक दूसरे के लिये नहीं बने। जिसे मैं अब तक पति-पत्नी का प्रेम समझ रही थी वह भाई-बहन का प्रेम था। जब से मैंने कामता को देखा है, तब से मेरे मन में यह विचार बैठ गया है कि मेरा विवाह उसी से होगा। तुम अपनी अंगूठी वापिस ले लो।"

पुरुष ने दुःख भरे शब्दों में पूछा— "क्या मुझे बता सकती हो कामता इस समय कहाँ है?"

स्त्री ने डरते हुए पूछा— "क्यों, क्या उसे कुछ हानि पहुँचाने का इरादा है?"

पुरुष बोला, "नहीं, हानि पहुँचाने का काम तो तुम ही पूरा कर लोगी। मैं तो केवल इसलिये पूछ रहा हूँ कि शायद वही यह अंगूठी मुझसे खरीद ले।"

*

एक बहुत कम बोलने वाला युवक एक युवती के साथ घूमने जा रहा था। सहसा उसने युवती से पूछा— 'क्या तुम मेरे साथ शादी करोगी?'

युवती— 'अवश्य।'

थोड़ी देर तक दोनों मौन रहे। आखिर में युवती से न रहा गया, बोली, 'आप कुछ बोलते क्यों नहीं?'

'क्या बोलूं? मैं पहले ही बहुत बोल चुका हूँ।'

*

कुछ कुआँरी लड़कियाँ आपस में बातचीत कर रही थीं। एक ने कहा— "मै तो ऐसे आदमी से शादी करूँगी जिसकी नाक सोते समय ज़रा भी न बोले।"

यह सुनकर दूसरी बोली— "मगर इस बात का तुम पता किस तरह लगाओगी?"

*

एक लखपति अपने भावी दामाद से बातें कर रहा था। अन्त में उसने पूछा— "सच सच कहना, अगर मेरी लड़की किसी ग़रीब बाप की बेटी होती तो भी तुम उससे इतना ही प्रेम करते?"

"हाँ," नवयुवक ने लखपति को प्रसन्न करने के लिए कहा।

"बस, अब मैं अपनी बेटी का ब्याह तुमसे नहीं करूँगा। मुझे अपने परिवार में मूर्खों की संख्या नहीं बढ़ानी है।"

*

विमला के पिता धनवान थे। सगाई से कुछ दिन पहले उन्होंने उसके भावी पति को बुलाकर पूछा, "तो तुम मेरी लड़की से शादी करना चाहते हो? पर मै अपनी लड़की की शादी किसी ऐसे युवक से करना चाहता था जिसमें व्यापारिक बुद्धि हो। तुममें व्यापारिक बुद्धि है या नहीं?"

भावी पति ने जवाब दिया— "अजी, व्यापारिक बुद्धि न होती तो मैं आपकी लड़की से शादी करने की बात ही क्यों उठाता।"

❋

"क्यों, मोहिनी, जब तुमने अपने पिता से कहा कि मैं तुमसे शादी करने को तैयार हूँ, तो वे क्या बोले?" किशोर ने कई दिन बाद मिलते ही मोहिनी से पूछा तो उत्तर मिला—

"मेरी बात सुनते ही आँख मूंद के बोले— हे भगवान, जिस बेवक़ूफ की तलाश में मैं धरती आकाश के कुलाबे मिला रहा था, उसे इतनी आसानी से तुमने भेज दिया।"

❋

इङ्गलैंड में एक नवयुवक ने एक नवयुवती से मगनी करली। विवाह से पहले एक बार वह अपनी मंगेतर के शहर उससे मिलने चला। नवयुवक के पिता ने उसे बुलाकर कहा—

"बेटा, मैं तुम्हारे भले की ही कहता हूँ। विवाह मे अच्छा सौदा करना। विवाह के समय लड़की के बाप से तुम्हें अच्छी भेंट मिलनी चाहिये। यदि वह भला और ईमानदार आदमी है तो एक हज़ार पौंड लेने पर राजी हो जाना। अगर वह दिवालिया हो तो दो हज़ार से कम मत लेना। यदि वह किसी अपराध के कारण जेल में हो तो पाँच हज़ार से कम पर बात ही मत करना।"

अपने पिता की सलाह को गाँठ बाँध सुपुत्र अपनी होने वाली ससुराल के लिए चल दिया। अगले दिन ही उसके पिता को निम्न तार मिला :—

"ससुर को छः साल हुए फाँसी लगी थी। कितने पर तय करूँ?"

❋

"कल राजेन्द्र मुझ से कह रहा था कि मैं उससे विवाह कर लू और उसे संसार का सबसे सुखी व्यक्ति बनादूँ।"

"तो तुमने इन दोनों बातों में से किस बात को चुना?"

❋

विवाह की बातचीत चल रही थी।

लड़की की माँ बोली— "हमारी लड़की को गाना, नाचना, तैरना और

कार चलाना बड़ा अच्छा आता है।"

लड़के की माँ— "लेकिन हमारे लड़के को रोटी पकाना, बच्चे पालना, कपड़े धोना नहीं आता।"

*

भावी पत्नी— "यदि तुम्हे मुझसे शादी करनी है तो सिगरेट पीना और क्लब जाना छोड़ना पड़ेगा।"

"अच्छा।"

"ये तो वे चीज़ें हुई जो तुम मेरे कहने से छोड़ोगे। अब तुम अपनी ओर से कोई चीज़ बताओ जो छोड़ोगे।"

"हाँ, एक चीज़ अपनी मर्ज़ी से भी छोड़ूंगा।"

"वह क्या?"

"तुमसे शादी का इरादा।"

*

युवती क्रोध में भरकर बोली— मै सब जानती हूँ तुम क्या सोचते हो। क्यों तुम रोज़ाना यहाँ आते हो और मेरा समय बरबाद करते हो, मुझे मेरी सहेलियों से मिलने नहीं देते, मैं अच्छी तरह समझती हूँ। तुम मुझसे विवाह करना चाहते हो। क्यों, ठीक है न?

युवक घबरा उठा— मैं ······ मै चाह ······।

युवती मुस्करा कर बोली— देखा, मैंने ठीक समझा न? अच्छा, मै भी तैयार हूँ।

*

'क्या मैं अब गुडनाइट कर विदा लूं प्रिये?'

इस प्रश्न का उत्तर अन्दर के कमरे से लिली के पापा ने दिया— 'नहीं जोन्स। कुछ मिनट और रुक जाओ, फिर गुडमार्निङ्ग कहना।'

*

दोनों में काफी दिन से मैत्री थी— लड़का लड़की से प्रेम करने लगा था परन्तु बार बार चाहने पर भी वह शादी का प्रस्ताव नहीं रख सका। उसे समझ नहीं आता था कि किस प्रकार वह शादी का प्रस्ताव उस लड़की के आगे रखे।

एक दिन हौसला कर के लड़के ने लड़की से कहा, "मैं चाहता हूँ, आप मुझे मेरी तन्खा खर्च करने में सहायता दें।"

लड़की ने हैरान होकर कहा, "इसका मतलब?"

"मेरा मतलब है कि हमेशा के लिए," लड़के ने घबराये हुए स्वर में कहा।

"मेरा ख़्याल है, वह इतनी अधिक तो नहीं होगी कि हमेशा के लिये काफी हो," लड़की ने जवाब दिया ।

*

मोहन की मिस मालती से नई नई पहचान हुई थी । मालती ने यह कह दिया था कि "आप कभी भी घर आइये ।"

मि. मोहन दूसरे ही दिन क़दम नापते हुए मालती के घर जा पहुँचे । दरवाज़े पर घण्टी बजाई । एक बूढ़ी सी औरत ने दरवाज़ा खोला । मि. मोहन ने कहा— "क्या मैं मिस मालती से मिल सकता हूँ ?".

बुढ़िया ने पूछा, "आप कौन हैं ?"

मिस्टर मोहन सोच विचार में पड़ गये । कुछ हिचकिचा कर बोले— "मैं उसका भाई हूँ ।"

बुढ़िया भी असमंजस में पड़ गई । फिर कुछ सँभलती हुई बोली— "तशरीफ लाइये, मैं उसकी माँ हूँ ।"

*

यह बात तब की है जब नारायण की शादी नहीं हुई थी । सगाई हो गयी थी और श्रीमती नारायण का नाम मिस राधा था । सगाई के बाद राधा के पिता ने नारायण को बुला कर पूछा, "शादी की तारीख़ कौन सी रखी जाय ?"

नारायण— "इसका निश्चय मैंने राधा पर छोड़ दिया है।"

"शादी हिन्दू रीति से हो या अदालत द्वारा?"

"इसका निश्चय राधा की माता जी पर छोड़ दिया है।"

"तुम्हारी आजीविका कैसे चलेगी?"

"इसका निश्चय मैं आप पर छोड़ देना चाहता हूँ।"

*

कामिनी ने अपना सिर हिलाया, 'नहीं भारत, मै तुम्हारी कभी नहीं हो सकती।'

भारत ने बड़ी शांति से सहा। 'अच्छा। लेकिन मेरी भेंटों को क्या होगा?'

कामिनी ने ठंडे दिल से कहा, 'उन सब को मैं लौटा दूगी।'

'लौटा दूंगी! कैसे लौटा दोगी? तुम्हारे बाप को जो मैंने हवाना सिगार पिलाये हैं तथा उस उल्लू की दुम फाख़्ता तुम्हारे छोटे भाई को जो टॉफ़ी खिलाई हैं, उन्हें कैसे लौटा दोगी?'

*

युवक— बाबू जी, आपकी पुत्री ने मेरी वधू बनना स्वीकार कर लिया है।

बाबू जी— तो इसमें मेरी क्या ग़लती? तुम्हीं तो हर समय उसके चारों ओर चक्कर लगाते थे। अब जैसा किया वैसा भरो।

*

'शीला, तुम्हारा मंगेतर काफी रात गये तक तुम्हारे पास बैठा रहता है। तुम्हारी माता जी ने तुमसे इस विषय में कुछ नहीं कहा?'

'हाँ पिता जी, कहा है। वे बोलीं कि पुरुषों ने अपनी आदत बदली नहीं है।'

*

'जब तुम मुझे प्रेम करती थीं, तो पहले मना क्यों किया था?

'यह देखने के लिये कि तुम क्या करते हो।'

'मान लो कि मैं निराश होकर कमरे से भाग लेता और पता नही क्या कर डालता?'

'ऐसा नहीं हो सकता था। मैंने कमरे का ताला बन्द कर लिया था।'

*

कृष्ण बहुत शर्मीला था। जब राधा ने सुन्दर फूलों का गुच्छा भेंट करने की बधाई देते हुए उसका आलिंगन कर एक चुम्बन उपहार दिया तो वह झेंपकर कमरे से बाहर जाने लगा।

राधा घबराकर बोली— मुझे दुःख है तुम नाराज़ होगये।

कृष्ण भोलेपन से बुड़बुड़ाया—नहीं, नहीं, नाराज़ नहीं। मैं और फूल लेने जा रहा हूँ।

*

'मुझे दिन में सब से पहले तुम्हारा ध्यान आता है, प्रिये।'

'यही बलराज भी कहता है।'

'गधा कहीं का! वह मेरे से एक घण्टे बाद उठता है।'

*

नीता ने अपने पिता से कहा, "पापा, मनोहर ने कल मुझ से विवाह का प्रस्ताव किया था। मैंने कहा था कि पिताजी से पूछ लो। तो जब वह आपसे मिलने आए तो उसकी बड़ी खातिर कीजिए पर जब वह मुझ से शादी करने का ज़िक्र करे तो आप बिगड़कर कहिये—उसके लिए तो बड़े बड़े लखपतियों के लड़कों की बात मैंने लौटा दी है, वह किसी को पसन्द ही नहीं करती।"

पिता—"और जो साफ जवाब दे दूं तो?"

नीता—"नहीं, नहीं, पापा, ऐसा कभी न कीजिए। मैं उससे प्रेम करती हूँ। आप उससे ऐसा ही कहिये तो फिर मैं उसके सामने आपको समझाकर उससे ब्याह कर लूंगी।"

*

दिलीप ने पीछे से आकर मधुश्री की आँखें मींच ली और कहा, 'यदि तुम तीन बार में मेरा ठीक नाम न बता सकीं तो मैं तुम्हें चूम लूँगा।'

मंगेतर बोली—नारद, समुद्रगुप्त, कालिदास।

*

युवती (कोमलता से)—क्या मेरे ओठों का ही तुमने सबसे पहले चुम्बन लिया है?

युवक—हाँ। और वे ही अन्य सबसे अधिक मधुर हैं।

*

'तुम इतने दिनों से उससे मिल जुल रहे हो, शादी क्यों नहीं कर लेते?'

'क्योंकि उसकी बोली में एक गड़बड़ है।'

'बड़ा दुःख है, इतनी सुन्दरता में भी एक कलंक छिपा है!'

'हाँ। वह "हाँ" कहना नहीं जानती।'

*

'पिताजी को यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम एक कवि हो।'

'क्यों, क्या वे कविता से प्रेम करते हैं?'

'नहीं, पिछली बार मेरे कारण जिस युवक को उन्होंने घर से निकाला था वह एक बॉक्सर था।'

*

रमा ने दुखित स्वर में अपनी सहेली जबीन से कहा— भूषण बड़ा धोखेबाज निकला। मैंने उससे पूछा कि यदि उसे मै मिलती हूँ और एक करोड़ रुपये मिलते हों तो वह दोनों में से क्या लेगा? उस पशु ने फौरन रुपया चुन लिया।

जबीन ने सान्त्वना दी— तो ग़लत क्या किया? एक करोड़ रुपया मिलने पर तुम सौ बार अपनी गरज़ से उससे शादी करोगी।

*

'अच्छा, तो मेरी कन्या ने तुमसे विवाह करना स्वीकार कर लिया है। किस दिन विवाह करोगे?'

'यह मैंने पण्डित के ऊपर छोड़ दिया है।'

'फेरे सनातनी होंगे या आर्यसमाजी?'

'यह मैंने उमा की माताजी पर छोड़ दिया है।'

'विवाह के बाद तुम उमा का और अपना पेट कैसे पालोगे?'

'यह मैंने आपके ऊपर छोड़ दिया है।'

सुहागरात और उसके बाद

'हमारे परिवार में केवल एक व्यक्ति का विवाह ही सफल कहा जा सकता है— मेरी पत्नी का।'

*

पत्नी अस्वस्थ थी। पति चाय बनाना चाहता था पर उसे चाय की पत्तियाँ नहीं मिल रही थीं।

पत्नी ने कहा— वह क्या रखी हैं सामने? सामने वह कनस्तर है न?

पति ने झुंझलाकर कहा— पर उस पर तो मिर्च लिखा है।

पत्नी बोली— हाँ वही। उसे खोलो। उसी के भीतर एक चौकोर बक्स है जिस पर दियासलाई लिखा है। बस, उसी में पत्तियाँ हैं।

*

सेना के एक अफसर को सात दिन की छुट्टी मिली। उसने अपनी पत्नी को तार देकर बुला लिया। दोनों एक होटल में गये। अफसर ने ठहरने की जगह मांगी। मैनेजर ने कहा— प्रमाण-पत्र दीजिये कि यह महिला आपकी

पत्नी हैं तभी स्थान मिलेगा।

अफसर चुप हो गया। वह पत्नी को प्रमाण-पत्र लाने को लिखना भूल गया था। यह ज्ञात होने पर पत्नी पति पर बेहद बिगड़ खड़ी हुई।

मैनेजर ने कहा— मैं समझ गया कि आप इन की पत्नी हैं। ३४ नं० कमरे में जाकर ठहरिये।

*

"प्रेम भी विचित्र चीज़ है," शीला बोली। "जब मेरे पति लड़ाई में गये तो मेरी तस्वीर अपने साथ ले गये थे। जिस लड़ाई में भी वह लड़े, मेरी तस्वीर को हमेशा साथ रखा।"

उसकी एक सहेली ने यह सुनकर कहा, "शायद उन्होंने यह सोचा होगा कि इससे दुश्मन डर कर भाग जायंगे।"

*

झगड़े के बाद लीला अपने पति से बोली— 'अब तो हमें शान्ति से रहना चाहिये। मैं तब अपनी ग़लती मानूंगी जब आप यह कह दें कि मेरी कोई ग़लती नहीं है।'

*

एक आदमी के जुड़वां पुत्र हुए थे। उस दिन की छुट्टी लेने के लिये उसने

अपने दफ्तर टेलीफोन किया। दफ्तर वाले उसकी बात ठीक नहीं सुन पाये। उन्होंने कहा— मेहरबानी करके एक बार और दुहराइये।

उत्तर मिला— न बाबा न, यह मेरे बस का नहीं।

*

'कहा जाता है कि रम्भा से तुमने इसलिये विवाह किया है क्योंकि उसकी दादी उसके लिये बहुत माल छोड़ गई है।'

'यह बिल्कुल झूठ है। मैं तो उससे शादी करता ही करता चाहे कोई भी माल छोड़ता।'

*

पत्नी— कई बार कहने पर भी तुम रोज खाने के लिये क्यों टाल मटोल करते हो?

पति— बात यह है कि खाना खाते ही भूख का सारा मज़ा जाता रहता है।

*

अमेरिकन युवती (अपने पति से)— डार्लिंग, मैंने सुना है कि कहीं कहीं लोग घोड़ा लेकर अपनी पत्नी को बदले में दे देते हैं। यदि तुम्हें कोई घोड़ा दे तो तुम तो ऐसा न करोगे?

पति— घोड़ा, माई डियर? तुम मुझे क्या समझती हो? मैं मोटर कार से कम के प्रस्ताव पर विचार भी न करूँगा।

*

जज— यह तो तुम मानती हो कि तुमने अपने पति के कुर्सी उठा कर दे मारी। तुमने ऐसा क्यों किया?

पत्नी (निरीहता से)— क्योंकि मैं मेज़ नहीं उठा सकती थी।

*

'मेरी पत्नी की याददाश्त बहुत ही ख़राब है।'

'क्यों? ज़रूरी बातें भूल जाती है क्या?'

'नहीं, छोटी छोटी बातें भी याद रखती है।'

*

'मेरी पत्नी किसी भी विषय पर घण्टों बोल सकती है।'

'लेकिन मेरी पत्नी को तो विषय की भी आवश्यकता नहीं।'

*

पत्नी— (हर समय पढ़ने वाले पति से) क्या ही अच्छा होता यदि मैं किताब होती और हर समय तुम्हारी आँखों के सामने होती।

पति— (जो अपनी श्रीमती जी से बहुत तंग आ गये थे) क्या ही अच्छा होता कि तुम कलैण्डर होती ताकि मैं हर साल बदल लिया करता।

*

*

'उसके पति ने उसके पास एक पैसा भी नहीं छोड़ा।'

'मजे की बात यह है कि चोरों से बचने के लिये ही उस बेचारी ने विवाह किया था।'

*

एक सिनेमाघर में एक पति-पत्नी लगभग आधा समय आपस में बातें ही करते रहे। उनके पास बैठे दर्शकों को यह बड़ा बुरा लग रहा था। जब एक दर्शक से नहीं रहा गया तो वह बोल उठा— क्या तोते की तरह टाँय टाँय लगा रखी है। कभी चुप ही नहीं होते।

इस पर पति ने बिगड़कर कहा— क्या आप हमारे बारे में कह रहे हैं ?

उत्तर मिला— जी नहीं। आपको कहाँ, फिल्म वालों को कह रहा हूँ। शुरू से ही बकवास करे जा रहे हैं। आपकी दिलकश बातों का एक शब्द भी नहीं सुनने दिया।

*

एक दिन घर लौटने पर पति ने पत्नी को एक बीमा-पालिसी दी और कहा, "मैंने अपने जीवन का दस हज़ार रुपये का बीमा करवा लिया है ताकि मुझे कुछ हो जाने पर तुम्हें रक़म मिल जाये।"

पत्नी ने प्रसन्न होते हुए कहा, "तुम बड़े दूरदर्शी हो। ऐसा करने से हम लोग कम से कम एक चिन्ता से तो मुक्त हो ही गये— हर बार बीमार पड़ने पर तुम्हें डाक्टर को दिखाने की आवश्यकता नहीं होगी।"

*

पत्नी— जब कोई विवाहित पुरुष किसी सुन्दर स्त्री को देखता है उस समय वह भूल जाता है कि वह विवाहित है।

पति— यह बात बिल्कुल ग़लत है। सच पूछो तो उसे उसी समय यह स्मरण होता है कि वह विवाहित है।

*

मोहनसिह की पत्नी एक बार किसी विशष काम से अपने पति के पास उसके दफ्तर गई। दफ्तर का क्लर्क उसे नहीं जानता था। जब उसने मोहनसिह के बारे में पूछा तो क्लर्क ने कहा, "क्षमा कीजिये श्रीमती जी, वे अभी अपनी पत्नी के साथ भोजन करने गये हैं।"

पत्नी— 'ठीक है ! जब वे लौटें तो उनसे कह दीजिये कि उनकी स्टेनोग्राफर उन्हें पूछने आई थी।"

*

काफी देर तक आपस में झगड़ते रहने के बाद भी जब जीत किसी की नहीं हुई तो पति ने खीझ कर कहा, "क्या तुम यह कहना चाहती हो कि मेरे रिश्तेदारों में से तुम किसी को भी नहीं चाहती।"

"क्यों नहीं ?" पत्नी ने जवाब दिया। "मैं तुम्हारी सास को अपने आप से भी अधिक चाहती हूँ।"

*

"क्या बेबी अपने पिता के समान लगता है ?"

"अगर यह मैंने कह दिया तो मेरे पति मुझे जान से मार डालेंगे।"

*

"बेटा, तुम्हारी मां के पहनने का रेशम कहाँ से आता है ?"

*

एक मंत्री महोदय अपनी पत्नी से दो व्यक्तियों के सम्बन्ध में बातचीत कर रहे थे। बातचीत की दौरान में बोले, "मैं उन दोनों व्यक्तियों को तब से जानता

हूँ जब वे बच्चे थे। एक सुन्दर चतुर बालक था परन्तु दूसरा परिश्रमी था। दौड़ में चतुर बालक पीछे रह गया परन्तु परिश्रमी .... वह बेचारा असामयिक मृत्यु का शिकार हो गया। फिर भी अपनी विधवा स्त्री के लिये एक लाख रुपया छोड़ गया। कैसा आदर्श जीवन है!"

पत्नी ने मुस्कराते हुए कहा, "हाँ, और मुझे आज प्रातः ही मालूम हुआ कि चतुर साहब उस विधवा से विवाह कर रहे है।"

*

पति पत्नी में झगड़ा हो रहा था। पति कर्कश स्वर में बोला— "शादी से मर्दो का जीवन तबाह हो जाता है। मुझे ही देखो न, अब कुत्तों जैसा जीवन बिता रहा हूँ।"

पत्नी ने इस पर कोई ऐतराज़ नही उठाया बल्कि हाँ मिलाती हुई बोली, "बिल्कुल, दिन भर आप भौंकते रहते है और रात को गुर्राते हैं।"

*

नवविवाहित पति पहली बार ससुराल गया था। वह और उसकी पत्नी एक ही कमरे में थे। दूसरे कमरे में लगे हुए घण्टे से पहले नौ बजने की आवाज आई, फिर दस बजने की। इसी तरह ग्यारह और बारह भी बज गए। पति बोल उठा: "ओह, तुम्हारे साथ होता हूँ तो समय कितनी जल्दी बीतता है!"

"पागल मत बनो। पिताजी घड़ी ठीक कर रहे हैं।"

*

"किस चिन्ता में पड़े हो मेरे मित्र?"

"पत्नी ने आठ दिन तक मुझसे न बोलने की क़सम खाली है।"

"तो यह मातम की बात है?"

"यह नहीं, मातम की बात तो यह है कि उस क़सम का आज आठवां दिन है।"

*

एक आदमी को उसकी पत्नी ने रात में अपने बच्चे के पालने के पास खड़ा देखा। वह शान्ति से देखती रही कि वह क्या करता है। बच्चे की ओर देखते हुए उसके मुख पर भावों का मिश्रण आ रहा था— आनन्द, शक, बड़ाई, खेद, आदि। अन्त में पत्नी से नहीं रहा गया। वह अपने बिस्तर से उठी और पति के पास जाकर उसके गले में बाहें डाल दी और पूछा— क्यों जी, क्या देख रहे थे?

पति बोला— मैं यही देख रहा था कि कौन बेवकूफ़ तीन रुपये दस आने में ऐसा पालना बना सकता है।

*

*

"मेरी पत्नी कहती है कि वह मेरे मरने पर पुनर्विवाह नहीं करेगी ।"

"इसके माने हैं कि वह समझती है कि दुनिया में तुम जैसा आदमी और कोई नहीं है ।"

"नहीं, उसका ख़याल है कि सभी मुझ जैसे हैं।"

*

"मैं एक पुस्तक ख़रीदने जा रही हूँ।"

"पुस्तक!"

"हाँ, कल ही वे मेरे लिए एक बड़ा सुन्दर पढ़ने वाला लैम्प ख़रीद कर लाए हैं।"

*

नवयुवा दम्पति में पहली बार झगड़ा हुआ था। पति ने पत्नी को बहुत बुरा भला कहा, पत्नी रोने लगी।

"वही हैं आप जो कहा करते थे कि मैं आप के लिए स्वर्ग से आई हूँ..."

"यह तो मैं अब भी मानता हूँ।"

"सच?" कुछ प्रसन्न होते हुए पत्नी ने कहा।

"हाँ, तुम मेरे अपराधों के दण्डस्वरूप आई हो।"

*

पति— मालती के यहाँ जा रही हो? अपने नए बुन्दे दिखाने?

पत्नी— नहीं, यह दिखाने कि मेरे पति कितने उदार हैं।

*

शशिकान्त और उसकी पत्नी तभी झगड़ कर चुके थे।

"अच्छा हो, यदि मुझे मौत आ जाए," सुबकते हुए पत्नी बड़बड़ाई।

"मैं भी जीना नहीं चाहता।" पति भी ज़ोर से बोला।

"तब मैं मरना नहीं चाहती।"

और फिर लड़ाई शुरू हो गई।

*

दर्शक— "आपके नाटक का प्रेम दृश्य इस साल पिछली बार से आधा भी स्वाभाविक नहीं है, हालाँकि उन्हीं लोगों ने इसे इस बार भी खेला है।"

मैनेजर— "हाँ, लेकिन कुछ मास हुए उन प्रेमियों का विवाह हो गया है।"

*

"मोहन, ठीक ठीक बताना, तुमने मुझ से विवाह धन के लिए किया था या मेरे लिए?"

"अपने लिए।"

*

नवविवाहित पति— चाहे कोई कुछ भी चुराए, उसे एक दिन पछताना ज़रूर पड़ता है।

पत्नी— और विवाह से पहले तुमने मेरे जो चुम्बन चुराए थे, उनके बारे में तुम्हारा क्या विचार है?

पति— तुमने सुना नहीं मैंने क्या कहा था।

*

पत्नी— आपने मुझे यह तो बताया ही नहीं कि आपने शराब पीनी क्यों छोड़ी?

पति— बात यह है कि पिछली बार जब मै नशे में डूबा हुआ घर आया, तो मुझे एक की जगह तुम्हारे भाई दो दिखाई दिए— तभी से सहमकर मैंने शराब छोड़ दी।

*

"शादी मे पहले आप मुझे इतने उपहार दिया करते थे, अब क्यों नहीं देते?" पत्नी ने पूछा।

"क्या तुमने कभी सुना है कि मछली पकड़ने के बाद भी मछेरा उसे गोली खिलाता है?" पति ने मुस्करा कर उत्तर दिया।

*

"मुझे आपकी पत्नी से भेंट करने का सौभाग्य अभी तक नहीं हुआ है।"

"आपको यह कल्पना किस तरह हुई कि मेरी पत्नी से भेंट करना सौभाग्य का ही विषय है?"

*

पत्नी— और इस समय इतनी सवेरे आने का कारण?

पति— चाय, प्रिये।

*

नव-विवाहिता पत्नी— जब आपको मालूम है कि मुझे पापड़ तक सेंकना नहीं आता तब आपने पड़ौसियों से यह क्यों कहा कि आपने मुझसे इस कारण विवाह किया कि मैं खाना बहुत अच्छा बना सकती हूँ?

नव-विवाहित पति— कोई न कोई बहाना तो चाहिए था न, प्रिये।

*

एक विधवा ने एक विधुर से विवाह किया। कुछ दिनों के बाद विधवा की एक सखी ने उससे पूछा— "अच्छा, तुम्हारे पति ने कभी अपनी पहली पत्नी के बारे में बातें करनी आरम्भ करदी तो ······"

"ऐसा वे कभी नहीं करेंगे।"

"क्यों ?"

"एक दिन उन्होंने ऐसा किया था, और तब मैंने तुरन्त अपने मृत पति के बारे में बातें शुरू करदीं।"

*

विवाह करते हुए मनुष्य को यह भय इतना नहीं सताता कि उसे एक ही स्त्री के साथ बंधना पड़ेगा, किन्तु यह कि उसे कितनों से जुदा होना पड़ेगा।

*

एक सज्जन की शादी हुए लगभग तीन महीने हो चुके थे। उनके एक मित्र ने पूछा— "कहो भाई, क्या ठाठ हैं ? घर से निकलते भी नहीं।"

मित्र बोला, "हाँ, भाई, बात कुछ ऐसी ही है। शुरू में वह मेरे स्वप्नों की रानी थी। मैं उससे बहुत सी बातें कहा करता था और वह शान्त भाव से सुना करती थी। शादी के बाद कोई दस दिन मैं उसके स्वप्नों का राजा बना रहा। वह दुनिया की तमाम बातें करती रहती थी और मैं सिर झुकाए सब सुनता रहता था। परन्तु अब राजा रानी दोनों ही एक साथ बोलते हैं। सुनने वाले केवल पड़ौसी ही हैं।"

*

एक व्यक्ति जो अपनी मितव्ययिता के लिए प्रख्यात था, एक दिन अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहने जा रहा था। यह नई बात देखकर उसके एक मिलने वाले ने कहा, "आज क्या बात है जो ये बढ़िया कपड़े पहन रखे हैं ?"

"तुमने नवीनतम समाचार नहीं सुना ?"

"नवीनतम समाचार ! नहीं तो।"

"मेरी पत्नी ने एक साथ तीन बालकों को जन्म दिया है।"

"यह कारण है इस खुशी का?"

"कारण तो यही है, लेकिन खुशी का नहीं; इस बात का कि आखिर ऐसी हालत में कम खर्चा करने का फायदा क्या?"

*

पत्नी— लगता है मैं पहले से अधिक तगड़ी हो गई हूँ।

पति— क्यों?

पत्नी— तीन चार साल पहले मैं तीन चार रुपये का सामान खरीद कर खुद घर नहीं ला सकती थी। पर अब दस रुपये का सामान भी आसानी से ला सकती हूँ।

*

छात्रा (नवविवाहिता सहेली से)— विवाहित जीवन का तुम्हें अच्छा अनुभव होगया न?

नवविवाहिता— नहीं, कोई विशेष नहीं। हाँ, पहले मैं काफी रात तक प्रमोद के जाने की राह देखती थी और अब काफी रात तक आने की राह देखती हूँ।

*

"वह सामने एक काली, मोटी स्त्री खड़ी है न। कौन है वह?"

"वह मेरी पत्नी है।"

"आपकी पत्नी! माफ कीजिए। मुझसे बड़ी गलती हुई।"

"जी, गलती तो मुझसे हुई थी।"

*

पत्नी— मैं सुन्दर हूँ, में कौनसा काल है?

पति— भूत।

*

रुग्णा पत्नी— अब ठीक रहेगा न? तुम्हें हमेशा सुबह शिकायत नहीं करनी पड़ेगी कि चाय ठीक नहीं बनी है, नाश्ते की चीज़ जल गई है, इत्यादि। कल से मैं नाश्ता तैयार ही नहीं करूँगी।

*

पत्नी— दृढ़ निश्चय हो, तो कठिन से कठिन और असम्भव से असम्भव कार्य भी सुगम हो जाते हैं।

पति— तो ज़रा इस टूथपेस्ट को इस ट्यूब में वापिस रख दो न!

*

पति (दफ्तर से लौटने पर पत्नी से)— आज अभी तक भोजन क्यों नहीं बना ? मिसरानी कहाँ है ?

पत्नी (क्रोधित होकर)— आपने ही तो उसे फोन पर डाटा और गालियाँ दी और अब कहते हैं कि भोजन क्यों नहीं बना ।

पति (सिर पीट कर)— मैं भी कैसा मूर्ख हूँ ! मैंने समझा था कि फोन पर तुम हो ।

*

पत्नी— कभी आपने किसी की कोई भलाई की है ?

पति— हाँ । तुम्हारे साथ विवाह जो किया है ।

*

पति— उसे दूध क्यों नहीं पिला देती ? देखो, मुन्ना रो रहा है ।

पत्नी— वह पीता तो है ही नहीं ।

पति— पियेगा क्यों नहीं ? वह पियेगा, उसका बाप पियेगा । पिलाओ तो सही ।

*

पति— कहता हूँ, तुम जरा ढंग के कपड़े पहनने लगो ऐसा भी कोई उपाय है ?

पत्नी— हाँ, क्यों नहीं ।

पति— क्या ?

पत्नी— तुम पुरुषों को संसार से विदा कर दिया जाए ।

*

श्रीमती शर्मा ने अपने पति से शिकायत की— मै जो बात आपसे कहती हूँ आप एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देते हैं ।

श्रीमान शर्मा ने सहमति प्रकट करते हुए कहा— निस्सन्देह । किन्तु मै जो बात कहता हूँ उसे आप दोनों कानों से सुन कर मुँह से निकाल देती हैं ।

*

"मेरी पत्नी कह रही थी कि तुम्हारी पत्नी ने कल क्लब में पार्लेमेंटरी योग्यता का सुन्दर प्रदर्शन किया ।"

"क्यों न करतीं ? पिछले सात वर्ष से वे हमारे घर की स्पीकर भी तो हैं ।"

*

"इतनी रात गए क्यों लौटे हो ? अब तक कहाँ थे तुम ? बताओ । और सच सच बताना ।"

"दोनों बातें एक साथ सच सच मैं कैसे बता दूं।"

*

"हमारा ख़र्चा तो बड़ी मुश्किल से चलता है। तुम्हारा क्या हाल है, बहन ?"

"क्या बताऊँ बहन ? आमदनी का तीस फीसदी भाग मकान किराये में चला जाता है। चालीस फीसदी खाने पीने में। दस फीसदी बच्चों की पढ़ाई में। दस फीसदी बीमे की क़िस्तें अदा करने में और तीस प्रतिशत विविध ख़र्च में।"

"पर यह तो एक सौ बीस प्रतिशत हुआ।"

"जानती हूँ बहन, जानती हूँ!"

*

पहले बालक के जन्म पर पति-पत्नी खुशियां मनाते हैं, दूसरे के जन्म पर सन्तोष प्रकट करते हैं, तीसरे के समय विचार करते है, चौथे के समय चिन्ता में पड जाते हैं, पांचवे के समय प्रतिज्ञा करते हैं और छटे के समय या तो संन्यास लेने की बात सोचते है या आत्महत्या करने की।

*

मर्दुमशुमारी करने वाला— "आप के कितने बच्चे हैं?"

रमेश— "पांच— चार जीवित हैं और एक का विवाह हो गया।"

*

"मैने लखपति व्यक्ति से विवाह किया, यह तुम ग़लत कहती हो। सच तो यह है कि वह लखपति मेरे कारण बना।"

"और आप अपने विवाह से पूर्व क्या थीं?"

"करोड़पति।"

*

पत्नी (क्रोध में भर कर)— तुम बहुत ख़राब व्यक्ति हो। मुझे ऐसा मालूम होता तो मैं कदापि तुमसे विवाह न करती।

पति— परन्तु मैंने किया क्या ?

पत्नी— कल रात मैंने सपने में देखा कि तुम किसी पर-स्त्री से खूब घुलमिल कर बातें कर रहे थे।

पति— परन्तु यह तो सपना ही था।

पत्नी— था तो सपना किन्तु जब तुम मेरे सपनों में इस तरह का आचरण करते हो तो अपने सपनों में न जाने क्या करते होगे।

*

पत्नी— हमें बैंक में अब दूसरा खाता खोल लेना चाहिये।

पति— क्यों ?

पत्नी— पहले खाते में अब कुछ पाइयों के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं है।

*

पत्नी— शादी के बाद पति पत्नी प्रेम क्यों नहीं करते ?

पति— प्रेम तो करते है परन्तु आपस मे नही, दूसरो के साथ।

*

पत्नी— गुरुवार का दिन बड़ा मनहूस होता है।

पति— और लो, दुनिया कहती है गुरुवार तो बहुत शुभ दिन होता है।

पत्नी— यह कैसे ?

पति— यह कैसे ? और नन्हीं बच्ची बन जाओ। दूध पीती बच्ची हो न ? भला तुम किस दिन विदा होकर आई थी ?

*

"तुम बड़ी ख़र्चीली हो," पति ने अपनी पत्नी से कहा, "यदि, भगवान न करे, मुझे कुछ हो गया तो तुम्हें भीख माँग कर ही गुज़र करनी पड़ेगी।"

पत्नी ने कहा— "आप चिन्ता न करें, मुझे कोई परेशानी न होगी। आप से भीख माँगने की मुझे काफ़ी आदत जो पड़ गई है।"

*

पत्नी— यह पकवान मैंने अपनी पाकविज्ञान की पुस्तक में से निकाला था। कैसा पसन्द आया ?

पति— वाह, क्या कहने हैं ! यह उस पुस्तक में रहने लायक़ था भी नहीं।

*

"आपकी पत्नी कैसी है, मित्र ?" राज ने पूछा।

"कभी वह अच्छी रहती है, कभी खराब; किन्तु जब वह अच्छी हालत में होती है तो उसकी स्थिति को देखकर यही आभास होता है कि वह खराब हालत में ही अच्छी है।

*

एक साहब के यहाँ शादी के चार महीने बाद ही लड़का पैदा होगया। पत्नी ने पूछा कि उसका नाम क्या रक्खोगे।

पति— पक्षी।

पत्नी— ठीक है, क्योंकि उसने नौ महीने का रास्ता चार महीने में ही जो तय कर लिया है।

*

पति— मूर्ख न बनो।

पत्नी— अच्छा, जहाँ तक बनने का सम्बन्ध है सब कुछ मर्दों के लिये ही छोड़ दिया जाए।

*

पत्नी पति की माँ बहनों को बुरा भला कह रही थी। पति ने ज़रा क्रोध में भरकर कहा— "क्यों, मैं पूछता हूं क्या तुम्हें मेरी माँ बहनों के संबन्ध मे कोई अच्छी बात भी याद है या नही ?"

पत्नी— हाँ, एक बात तो याद है। वे इस बात के विरोध मे थी कि तुम्हारी शादी मेरे साथ हो।

*

परेशान होकर पति बोला, "मेरी रानी, मैं तुमसे कितनी बार कह चुका हूँ कि मेरे जीवन में बस एक ही नारी है, वही मेरी सब कुछ है।"

"हाँ, लेकिन अब तक आपने यह तो बताया ही नहीं कि उसका नाम क्या है," पत्नी बडबड़ाई।

*

पति अपने पुत्र की अक़्ल की बड़ाई कर रहा था। "मैं कहता हूँ उसे मेरा दिमाग़ मिला है, तभी तो वह इतना होशियार है।"

"हाँ," पत्नी ने उत्तर दिया, "आप का ही मिला होगा। मेरा दिमाग तो अभी मेरे पास है।"

*

पति— आज हमारे विवाह को बीस साल हो रहे हैं। इसे मनाने के लिए आज मुर्ग़ा पकना चाहिये।

पत्नी— लेकिन जो बेवकूफी उसके जन्म से पहले हो चुकी थी, उसके लिए मुर्गे को दण्ड क्यों दिया जाए ?

*

कार्यालय में एक दिन काम अधिक था और मुझे चार की जगह पाँच बज गये। घर ६ बजे शाम को पहुँचा। क्या देखता हूँ कि श्रीमती जी ने अभी भोजन भी नहीं बनाया। मैं क्रुद्ध ही तो गया। तमक कर बोला, "अभी तक भोजन भी नहीं बनाया ?"

"आज मैं ज़रा अपनी सहेली के यहाँ चली गई थी।"

"तो मैं होटल जाता हूँ," मैंने कहा।

"बस, पाँच मिनिट रुकिये।"

"पाँच मिनिट में क्या खाना बन जायगा ?" मैंने कठोरता से कहा।

परन्तु वे बड़ी मधुरता से बोलीं— "जी नहीं, मैंने यह कब कहा कि खाना बन जायगा ; मैं भी आप के साथ ज़रा बाल संवार कर चलती हूँ।"

*

बूढ़ा पति— प्रिये, मैं जवान तो नहीं हूँ ; मगर यह जानलो कि मुझसे बढ़कर भलामानुस पति दूसरा कोई नहीं हो सकता।

पत्नी— ऐसा तो मैं आपको खुद ही बना दूंगी। मगर यह तो बताइए कि आप मुझे किस क़िस्म की विधवा बनायेंगे।

*

पत्नी— "पता नहीं, साड़ियों के अब कौन से नए फैशन निकलेंगे।"

पति— "वही दो— एक तो जो तुम्हें पसन्द नहीं हैं, दूसरा जिसे लेने के लिए मेरी जेब में पैसे नहीं हैं।"

*

बीवी बड़ी भावुक थी, और मियाँ सीधा सादा। एक दिन बीवी ने पूछा— "क्यों जी, अगर मैं मर जाऊँ, तो क्या तुम मेरा मातम मनाओगे ?"

मियाँ ने धीरे से कहा, "हाँ, ज़रूर मनाऊँगा।"

"और तुम मेरी क़ब्र पर अक्सर जाओगे ?" बीवी ने पूछा।

मियाँ ने उत्तर दिया— "हाँ, ज़रूर। दफ्तर जाते समय क़ब्रिस्तान रास्ते में ही पड़ता है।"

*

पत्नी (गुस्से में)— मैं बहुत ही बेवकूफ थी जो तुम्हारे साथ विवाह किया।

पति— हाँ, प्रिये, लेकिन उस समय मैं प्रेम में इतना अन्धा था कि इस ओर मेरा ध्यान ही नहीं गया।

❀

पत्नी— हाँ, देखिए जी, आप अपना दर्ज़ी बदल डालिए। उसने आपके कोट का बटन इतना ढीला टाँका है कि मैं इसे आठ बार खुद टाँक चुकी हूँ और यह फिर निकल आया है।

*

पति-पत्नी में आपस में मतभेद हो गया था। लेकिन पति को दफ्तर जाने की जल्दी थी। वह फैसला करने के विचार से बोला, "तुम ठीक कहती हो, मैं ग़लती पर हूँ, जैसा कि अक्सर तुम होती हो।"

पति के दफ्तर जाने के बाद पत्नी ने सोचा— "वे कितने अच्छे हैं।"

लेकिन थोड़ी देर बाद उसने पति के कथन पर फिर सोचना शुरू किया।

*

घर में खड़-खड़ होने के पश्चात्।

*

होने वाला पिता अस्पताल में बच्चे के जन्म की प्रतीक्षा कर रहा था। कुछ देर में नर्स आकर बोली— "आपको किसकी इच्छा थी— लड़के की या लड़की की?"

"लड़के की," उत्सुक पिता ने तुरन्त कहा।

"मुझे बड़ा अफसोस है कि आपके लड़की हुई है।"

"ख़ैर, कोई बात नहीं। मेरी दूसरी इच्छा लड़की की ही थी।"

*

नीरजा अपनी सहेली उषा के घर गई तो उसे स्यापा करते देख अचरज में पड़ गई।

"क्यों, क्या तुम्हारा पति मर गया है, उषा?" उसने पूछा।

"नहीं, वर्तमान पति तो जीवित ही हैं," उषा ने जवाब दिया, "लेकिन वह मुझ पर इतना सन्देह करते हैं कि मुझे अपने पहले मृत पति का स्मरण हो आया, और मैं उनकी याद में फिर से रोने लगी।"

*

अपनी पत्नी से डरने वाला एक व्यक्ति दूसरे आदमी पर रोब गाँठ रहा था।

"अरे, हमारे यहाँ घर में कोई दिक़्क़त नहीं होती। तुम्हारी बात चाहे अपने घर में न चलती हो, लेकिन हमारे यहाँ मेरी एक एक बात मानी जाती है। अगर मुझे कोई काम कराना हो तो अकड़कर कहता हूँ।"

"क्या इस तरह तुम्हारा काम हो जाता है?"

"हाँ, चाहे वह काम खुद मुझे ही क्यों न करना पड़े।"

*

पति-पत्नी सिनेमा जाने की तैयारी में थे। पत्नी शृंगारगृह में ही मग्न थी। पति ने बाहर से पूछा— "अजी, अब आती हो या नहीं?"

भीतर से ही पत्नी ने जवाब दिया— "चुप भी रहो, एक घण्टे से कहे जा रही हूँ कि अभी एक मिनट में आती हूँ, लेकिन तुम हो कि सुनते ही नहीं।"

*

एक आदमी जब अपने घर पहुँचा तो उसे बताया गया कि उसकी पत्नी ने दो लड़कियों को जन्म दिया है। आदमी चैन की साँस लेकर बोला— "क्या खूब! ठीक दो बजे मैं घर पहुँचा और दो लड़कियों के होने की ख़बर मुझे मिली। अच्छा हुआ मै बारह बजे अपने घर नहीं पहुँचा।"

*

"आह, मेरी रानी," नवविवाहित युवक ने अपनी वधू से कहा, "अन्त में हम एक हो ही गए।"

आधुनिक वधू ने उत्तर दिया— "जी, कहने को तो यह ठीक है, पर वास्तविकता की दृष्टि से यदि आप भोजन दो व्यक्तियों के लिए आर्डर करें तो

अधिक उपयुक्त रहेगा।"

*

पति (सुबह देर से उठकर)— सुनीता, कल हमारे क्लब में शराब पीने की प्रतियोगिता हुई थी।

पत्नी— हाँ, वह तो मुझे रात मे ही दिख रहा है। दूसरे नम्बर पर कौन आया?

*

पत्नी— क्या मै अब भी तुम्हारे जीवन का प्रकाश हूँ?

पति— जी हाँ, आज ही बिजली का बिल आया है, और वह एक सौ पच्चीस रुपए का है।

*

पति ने झुँझला कर कहा— "क्या तुम समझती हो कि मैं रुपयों का बना हुआ हूँ?"

पत्नी— "रुपयों के बने होते तो अब तक मै तुम्हें भुना न डालती?"

*

पत्नी— क्यों जी, इतनी देर तक कहाँ रहे?

पति— देखो, तुमने फिर ग़लती की। समझदार स्त्रियाँ अपने पतियों से ऐसे प्रश्न नहीं किया करतीं।

पत्नी— मगर समझदार पति तो अपनी पत्नी से ············

पति— रहने भी दो, समझदार पति के पत्नी होती ही नहीं।

*

पति— तुम मुझे तभी प्यार करती हो, जब तुम्हें रुपयों की ज़रूरत होती है।

पत्नी— वाह, वाह, क्या तुम्हे मै बार बार प्यार नहीं करती?

*

"कल जब वे घूमघाम कर एक बजे रात को घर लौटे और चुपके-चुपके मेरे कमरे में आए, तो मेरे बदन में आग लग गई। फिर तो मुझसे रहा न गया, मै झुझंला कर बोली कि मै आपको देखना नहीं चाहती।"

"तो क्या वे लौट गए?"

"नहीं, उन्होंने लैम्प बुझा दिया।"

*

पति (विवाह के बाद अपनी पत्नी को रोती हुई देखकर)— हाय, हाय,

प्रिये! तुम इस तरह रोती क्यों हो?

पत्नी— मै दुःख से नहीं रो रही हूँ; बल्कि अपनी खुश-क़िस्मती पर मुझे रुलाई आ रही है। क्योंकि माँ मुझसे हमेशा यही कहा करती थी कि तू ऐसी बेहूदी है कि तुझसे कोई गधा भी शादी नहीं करेगा। लेकिन तुमने मुझसे शादी कर ही ली। फिर क्यों न मारे खुशी के मैं रोऊँ?

*

निशीथ— क्यों, राकेश, तुमने कभी ज्वालामुखी से आग का फव्वारा छूटते देखा है?

राकेश— नहीं ...... मगर, हाँ, याद आया। एक बार रात को जब मैं क्लब से घर को देर में आया तो हमारी श्रीमती जी ......

*

पत्नी— मैंने तुमसे सिर्फ इसलिए शादी की कि तुम पर मुझे तर्स आगया; क्योंकि तुमसे तब कोई बात भी नहीं करता था।

पति— हाँ, प्रिये, मगर अब सभी मुझ पर तर्स खाते हैं।

*

कपिल— क्यों, विमल, अपनी पत्नी के भाग जाने पर क्यों इतना रंज करते हो? जाने दो।

विमल— नहीं, इसका रंज नहीं है।

कपिल— तो फिर किस बात का रंज है?

विमल— इसी बात का कि वह कम्बख़्त फिर कहीं आ न जाए।

*

पति— मैं बड़ा बेवकूफ था जब मैंने तुमसे शादी की।

पत्नी— मै यह जानती थी, मगर समझती थी कि शायद तुम सुधरोगे।

*

दो नवविवाहित पुरुषों को सफ़र में अपनी अपनी पत्नियों सहित कुछ दिनों तक एक ही सराय में ठहरना पड़ा। दोनों की नई नई पत्नियाँ थीं। अतः दोनों खूब आनन्द से रहते थे। एक ही सराय में रहने के कारण दोनों पुरुषों में दोस्ती हो गई। छः महीने बाद अचानक दोनों की मुलाक़ात हो गई। तब एक ने दूसरे से पूछा— "कहो, मित्र, तुम्हारी पत्नी कैसी है?"

दूसरे ने जवाब दिया, "भाई, वह तो स्वर्ग की देवी है।"

पहला— "तब तो मित्र तुम बड़े भाग्यवान हो। मेरी तो कम्बख़्त अब तक जीती है।"

*

पत्नी— क्यों जी, आप में यह क्या बुरी आदत है? जब मै गाती हूँ तो आप घर से बाहर क्यों जा कर बैठ जाते हैं?

पति— इसलिए कि पड़ौसियों को यह शक न हो कि मैं तुम्हें मार रहा हूँ।

*

पति— जेल में रहने से एक बात का तो आराम है।

पत्नी— वह क्या?

पति— वहाँ कोई कमबख्त आधी रात को जगाकर यह नहीं कहता कि जाकर देख आओ कि पिछवाड़े वाला दरवाज़ा बन्द है या खुला।

*

पति— प्रिये, मैं एक बहुत ही आवश्यक कार्य से एक जगह जा रहा हूँ। जहाँ तक हो सकेगा जल्दी ही लौटने की कोशिश करूँगा। क्योंकि तुम जानती ही हो कि मुझे तुम्हारे बिना एक मिनट को भी चैन नही मिलता। लेकिन क्योंकि शाम अभी हो गई है इसलिए बहुत सम्भव है मुझे वहाँ कुछ देर हो जाए और रात अधिक हो जाने के कारण मैं आज न लौट सकूँ— तो वहाँ से किसी के हाथ तुम्हारे पास पत्र लिख कर भेज दूगा।

पत्नी— पत्र भेजने की कोई आवश्यकता नही है। उसे मैंने पहले ही से तुम्हारी जेब से निकाल लिया है।

*

पत्नी (गुस्से में लड़ाई के बाद)— अब तो मुझे ऐसा मालूम होता है कि हम लोगों की शादी हुए सौ बरस हो गए। यहाँ तक कि मुझे वह दिन भी नहीं याद है जिस दिन हमारी शादी हुई थी।

पति— मुझे तो याद है। वही दिन था न, जिस दिन हमें सुबह ही सुबह एक काने आदमी के दर्शन हुए थे?

*

स्त्री— (जिसने अपने दो पतियों को तलाक़ देकर अपनी तीसरी शादी की थी)— भला, जब मैं बूढ़ी हो जाऊँगी, तब भी तुम मुझे ऐसा ही प्यार करते रहोगे?

तीसरा पति— वाह! तब तक तो हम लोगों में तलाक़ हो जायगा।

*

पति— क्या माँ की तरह तुम खाना बना सकती हो?

पत्नी—क्यों नहीं? बशर्ते कि तुम अपने बाप की तरह बदहज़मी बरदाश्त करना क़बूल करो।

*

पत्नी— सुनिये तो, कल रात मैंने यह सपना देखा है कि मैं और आप एक दुकान पर गये हैं। उस दुकान में सोने चाँदी के गहने······

पति— पर यह सब बात सपने की ही है न?

पत्नी— उस दुकान से आपने मेरे लिये एक गहना खरीद दिया, तभी मैंने जान लिया कि यह सब सपना है।

*

पत्नी— तुम तो कभी प्यार की बातें नहीं करते।

पति— क्या कहा? हाँ, ······ देखो, कैसी प्यारी प्यारी हवा चल रही है।

*

पत्नी अपने मैके जा रही थी। पति ने कहा— "जब तुम्हे आना हो तो यहाँ पहले से तार दे देना।"

पत्नी— "अच्छा कितने रुपये के लिये तार भेजूं, यह भी तो बतला दीजिए?"

*

पति— मैं तुम्हारी वर्षगाँठ के अवसर पर तुम्हें उपहार देने के लिये यह मोतियों की माला लाया हूँ।

पत्नी— मगर मैंने तो मोटर के लिये कहा था।

पति— हाँ, कहा तो था। पर क्या करूँ, बाज़ार भर में कहीं नक़ली मोटर मिली ही नहीं।

*

पति— मैं तुम्हें कभी नहीं भूल सकता।

पत्नी— मैं अभी तुमसे एक ऐसी बात कहे देती हूँ कि तुम मुझको फ़ौरन भूल जाओगे।

पति— वह कौनसी बात है?

पत्नी— कल मेरी वर्षगाँठ है।

*

पत्नी— प्रिय! क्या तुम्हें अब मुझसे प्रेम नहीं रहा?

पति— नहीं, प्रिये! मै प्रेम तो तुमसे पहले की ही भाँति करता हूँ, पर करूँ क्या, जेब पर अब मेरा क़ाबू नहीं रहा।

*

पत्नी— क्यों प्रिय! यदि मैं मर जाऊँ और तुम विधुर हो जाओ तो तुम क्या करोगे?

पति— वही जो मेरे मरने पर तुम करती।

पत्नी— वाह! तो उस दिन तुम झूठ ही इतराते थे कि तुम कभी दूसरा ब्याह न करोगे।

*

पति— मुझे सौंदर्य पसन्द है।

पत्नी— मुझे बुद्धिमत्ता पसन्द है।

पति— हाँ, ठीक है, मनुष्य के पास जो चीज़ नहीं होती वह उसे ही पसन्द करता है।

पत्नी इस पर रूठ गई।

*

"क्या बात है तुम अपनी पत्नी से हर वक्त लड़ते ही रहते हो?"

"वह बहस बहुत करती है।"

"तो खफ़ा होकर बिगड़ने के बदले उसकी ग़लती क्यों नहीं बतला दिया करते?"

"मगर वह कभी ग़लती ही नहीं करती।"

*

नवविवाहिता पत्नी— पुरुषों की आदत भी विचित्र होती है। जब तक

शादी नहीं होती तब तक तो वे हमारे पीछे पीछे फिरते हैं। आधी आधी रात तक हमारे पास से नहीं हिलते और जब विवाह हो जाता है तो आधी आधी रात तक घर नहीं आते।

पति— तो क्या हुआ, कमी बेशी हमीं तो पूरी करते हैं। इसमें शिकायत कैसी?

*

"क्या बात है, तुम पति पत्नी की बनती क्यों नहीं? हर वक्त तू तू मैं मैं क्यों चलती रहती है?"

"इसलिए कि हम दोनों का मिज़ाज एकसा है।"

"अजीब बात है। यदि मिज़ाज एकसा है तब तो तुम दोनों में खूब प्रेम होना चाहिए।"

"तुम तो हो मूर्ख! इतना भी नहीं समझते। वह चाहती है घर में उसका राज हो और मैं चाहता हूँ मेरा राज हो। बस, यही लड़ाई की जड़ है।"

*

पत्नी— लीलावती सठिया गई है। वह कल मेरी उम्र तीस वर्ष बतलाती थी।

पति— मूर्ख है।

पत्नी— अच्छा, तुम्हारा अन्दाज़ क्या है?

पति— कम से कम चालीस वर्ष।

*

"क्यों सखी, तुमने कभी अपने 'उनकी' बात कान लगा कर भी सुनी है?"

"हाँ, जब वे स्वप्न में बड़बड़ाते हैं।"

*

नवविवाहिता पत्नी— क्यों, प्रिय! क्या तुम मुझे दिल से चाहते हो?

पति— हाँ, प्रिये? प्राणों से भी अधिक। हाँ, तुम्हारे पास मेरी नोट बुक रखी है न?

पत्नी— हाँ, प्रिय।

पति— अच्छा, तो उसमें ज़रा यह भी नोट कर लो ताकि रोज़ रोज़ न पूछना पड़े।

*

पत्नी— रात मैंने स्वप्न में देखा कि मुझको कहीं से एक हार मिला है। कल मेरा जन्म-दिन है।

पति— अच्छा, तो मैं तुम्हारे लिये कल 'स्वप्न विचार' नामक पुस्तक ला दूँगा। उसमें देख लेना किस स्वप्न का क्या फल होता है।

*

युवती पत्नी ने मीठे स्वर में पूछा— क्या मैं तुम्हारे लिए अब भी उतनी ही मूल्यवान हूँ जितनी विवाह से पूर्व थी?

पति ने उत्तर दिया— ठीक नहीं कह सकता, उस समय मैं खर्च का हिसाब नहीं रखता था।

*

पत्नी— "क्यों जी, तुम पर कभी बिजली गिरी है?

पति— याद नहीं, जिसको विवाह किये दस वर्ष हो गए हों, वह ऐसी साधारण बातें याद नहीं रखता।"

*

"मैंने तुम्हारे पति के विषय में एक बहुत बुरी बात सुनी है।"

"जल्दी कहो, मुझे कल ही नया वस्त्र ख़रीदना है।"

*

पत्नी— क्यों जी, विवाह करने से पहले तो तुम कहा करते थे कि मेरी छोटी सी छोटी इच्छा तुम पूरी करोगे।

पति— हाँ, कहा करता था, और मैं अब तक राह देख रहा हूँ कि तुम्हारी कौन सी इच्छा इतनी छोटी है जो मैं पूरी कर सकूं।

*

पति (नयी पत्नी से)— "मैं तुम्हारे खाना पकाने की बुराई नहीं करता, किन्तु मेरी यह इच्छा अवश्य है कि तुम मेरी माता की तरह अच्छा भोजन पकाने लगो।"

पत्नी— "ठीक है, इसमें तो कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये, यदि तुम मेरे पिता की तरह आटा गूंथना सीख लो।"

*

रघुवीर ने राधेश्याम के हाथ काले देखकर पूछा, "तुम भाई कारखाने में कब से काम करने लगे?"

"अपनी पत्नी को पहुँचाने स्टेशन तक गया था।"

"तो इसमें हाथ कैसे काले हो गये?"

"ज़रा इन्जन को प्यार से थपथपाने लगा था।"

*

सुशील बहुत मेहनती था और हर समय काम में लगा रहता था। जब वह काम में लगा होता था तो अपनी पत्नी की बात भी नहीं सुनता था चाहे वह कितना ही भौंकती रहे। एक दिन उसका बच्चा अपने खटोले पर सो रहा था और वह काम में लगा हुआ था। पत्नी उसे देख कर फूली नहीं समाती थी। वह बोली, "प्रियतम, देखो मुन्ना दिन पर दिन तुम्हारे जैसा होता जा रहा है।"

सुशील के कान में आधी सी बात पड़ी। वह काम करता-करता बोला, "अरे बाबा, क्या हो गया? अब मुन्ने ने क्या अपराध कर डाला?"

*

वज़न लेने वाली मशीन से उतर कर पत्नी ने पति की ओर देखा। पति ने पूछा: "क्यों, कितना वज़न है? मेरा मतलब है साधारण से कितने सेर अधिक है तुम्हारा वज़न?"

"वज़न अधिक है, यह तो मैं नहीं कहूँगी। पर ऊँचाई और वज़न की आनुपातिक तालिका के अनुसार मुझे ६ इंच और ऊँचा होना चाहिए था।"

*

पति— मैंने तो तुम्हें तार दिया था कि तुम अपनी माँ को साथ न लाओ।

पत्नी— हाँ, उसी तार के विषय में तुमसे बात करने के लिए ही तो मेरी माँ मेरे साथ चली आई हैं।

*

बहू— अम्मा जी! जब मेरे पेट से पुत्र पैदा हो तब मुझे जगा देना।

सास— उस समय तो तुम्हीं सारे गाँव को जगा डालोगी।

*

खाना खाने के बाद पति ने अपनी सुशिक्षिता पत्नी से पूछा— क्यों जी, अब आप क्या करेंगी?

पत्नी— कोई ख़ास काम नहीं। यही कुछ पढ़ूँगी, रेडियो सुनूंगी, वग़ैरा वग़ैरा।

पति— ठीक, जब आप वगैरा वगैरा पर आएँ, तब कृपया मेरी कमीज़ के बटन टांकना न भूलिएगा।

*

अपने एक दोस्त को काग़ज़ के एक टुकड़े को घूरते देखकर कालू ने पूछा— "क्या देख रहे हो इसमें?"

"मेरी घरवाली ने गाँव से ख़त भेजा है। वही देख रहा हूँ।"

"ख़त! लेकिन इस पर कुछ लिखा तो है ही नहीं।"

"हाँ, मेरी और मेरी घरवाली की बोलचाल आजकल बन्द जो है।"

बेचारा पति

पत्नी— यह खड़ खड़ की आवाज़ क्या आ रही है ? देखो, घर में कोई चोर तो नहीं घुस बैठा ।

पति— अंधेरे में क्या नज़र आयगा । दिन निकलने दो फिर देखा जायगा।

*

आशावादी= वह मनुष्य जो यह सोचकर अपनी सेक्रेटरी से विवाह कर लेता है कि वह विवाह के उपरान्त भी उसे डिक्टेट करता रहेगा।

*

रमा— मेरे पति हमारे विवाह की तारीख़ को याद नहीं रखते, मुझे इसका बड़ा दुख है। क्यों आशा, और तुम्हारे पति ?

आशा— वे भी भूल जाते हैं। पर मैं तो उन्हें जनवरी में और जून में दो बार याद दिला देती हूँ और इस प्रकार दो बार भेंट ले लेती हूँ।

*

एक सीधे सादे पति की तीखी पत्नी अपने पति से लड़ झगड़ रही थी। वह बेचारा एक कोने में चुपचाप बैठा सुन रहा था। अन्त में उसकी पत्नी बोली— और वहाँ अपनी जेबों में से मेरी ओर मुट्ठी तानते चुपचाप न बैठो।

*

भगवान ने स्त्रियों को रसिकता की भावना से शून्य इसी लिये बनाया है जिससे वे पुरुषों पर हँसने के बजाय उनसे प्रेम कर सकें।

*

प्रेमी— तो तय रहा कि आज रात को दो बजे हम शहर छोड़कर भाग जायेंगे ?

प्रेमिका— हाँ।

प्रेमी— तुम उस समय बिलकुल तैयार रहना।

प्रेमिका— तुम चिन्ता न करो। मेरे पति मेरा सामान बाँध रहे हैं।

*

दार्शनिक सुकरात का विवाहित जीवन सफल नहीं था। उनकी पत्नी बड़ी तेज़ मिज़ाज की थी। और घर में हर समय लड़ाई झगड़ा मचा रहता था। उन के एक मित्र ने उनसे विवाह के बारे में अपने विचार प्रकट करने को कहा।

सुकरात बोले— विवाह अवश्य करना चाहिये। यदि अच्छी पत्नी मिल गई तो जीवन सुख से कट जायगा। और यदि मेरी जैसी मिली तो तुम भी दार्शनिक बन जाओगे।

*

पति ने अपने पुत्र की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करते हुये पत्नी से कहा— इसने सारी बुद्धि मुझसे ली है।

पत्नी— हो सकता है। मेरे पास तो मेरी बुद्धि सही सलामत है।

*

जब आपको अपनी प्रिया को पत्र लिखना हो तो इस तरह से शुरू करना चाहिये— मेरी किशमिश के समान मधुर रानी तथा जूरी महोदयो!

*

डाक्टर— यह कोई बहुत पुरानी बीमारी है जो आपका स्वास्थ्य और सुख नष्ट कर रही है।
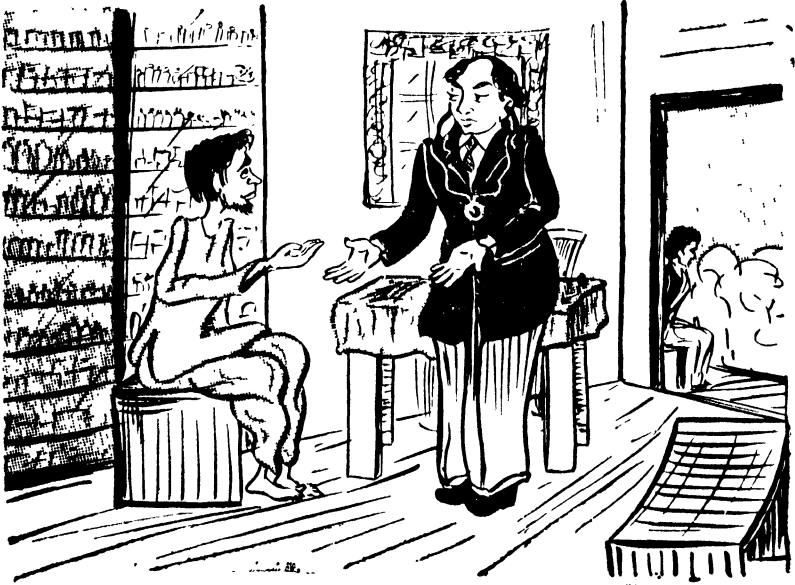
रोगी— भगवान के लिये धीरे बोलिये डाक्टर साहब! वह बाहर ही बैठी है।

*

वृद्ध पति-पत्नी अपनी सुहागरात की पचासवीं वर्षगांठ मना रहे थे।

एक पत्र का रिपोर्टर उनसे इण्टरव्यू करने आया। 'मैंने सुना है रंगानाथन जी, कि केवल १७५ रुपये मास के वेतन पर आपने सात बेटों तथा चार बेटियों का पालन किया है।'

'शशश! इतनी ज़ोर से न बोलो। क्या तुम मेरी शादी इस अवस्था में

तोड़ना चाहते हो? मेरी पत्नी का विचार तो सदा यह रहा है कि मुझे केवल १५० रुपये मास मिलता है।'

*

पति— तुमने मेरा नाम डुबा दिया है। मैंने बाग में उस पंजाबी को तुम्हें बार बार चूमते देखा है। तुमने उसे डाटा क्यों नहीं?

पत्नी (क्रोध से)— मैं उसे कैसे रोकती?

पति— क्यों?

पत्नी— मैं पंजाबी बोलना ही नहीं जानती।

*

पति— अभी शीला की शादी की क्या जल्दी है? बहुत समय पड़ा है। जब तक कोई अच्छा लड़का न मिले तब तक हमें बाट देखनी चाहिये।

पत्नी— बाट भी कब तक देखी जा सकती है? जब मैं शीला की अवस्था की थी तो मेरे घरवालों ने ही अच्छा लड़का मिलने तक कब इन्तज़ार देखी थी?

*

डाक्टर— देखिये, इस थर्मामीटर को अपनी पत्नी की ज़बान के तले रख दीजिये और उनसे कह दीजिये कि आधा मिनट तक मुँह न खोलें।

पति— डाक्टर साहब, कृपा करके आध घण्टे वाला थर्मामीटर दे दीजिये।

*

नवविवाहिता (पति से)— क्या विवाह के बाद भी तुम मेरी प्रत्येक चीज़ से उसी प्रकार दिलचस्पी लेते हो, जिस प्रकार पहले लिया करते थे।

पति— अवश्य, मैं अभी तक यही सोच रहा हूँ कि आज सुबह तुमने जो पत्थर जैसे कड़े पकौड़े बनाये थे उनमें क्या डाला था।

*

एक पति और उसकी पत्नी में एक दिन झगड़ा हुआ कि दोनों में कौन कितना काम करता है। पति ने पत्नी को दोषी ठहराया। तय यह हुआ कि एक दिन पति गृहस्थी सम्भाले। पति ने अपने दिन भर के काम का ब्यौरा तैयार किया, वह इस प्रकार था :—

बच्चों के लिये दरवाज़ा खोला	१०६ बार
बच्चों को शोर मचाने से रोका	६४ बार
बच्चों को कपड़े पहनाये	१६ बार
आपस का झगड़ा रोका	१६ बार
पानी के गिलास दिये	२६ बार
बच्चों के सवालों के जवाब दिये	२०२ बार

बच्चों के पीछे दौड़ना पड़ा लगभग ४ मील
और बिगड़ना पड़ा ४५ बार

दूसरे ही दिन पति ने पत्नी की सहायता के लिये खुद ही एक नौकर रख दिया।

*

पत्नी बहुत देर से पति की प्रतीक्षा कर रही थी। खाना काफी देर से
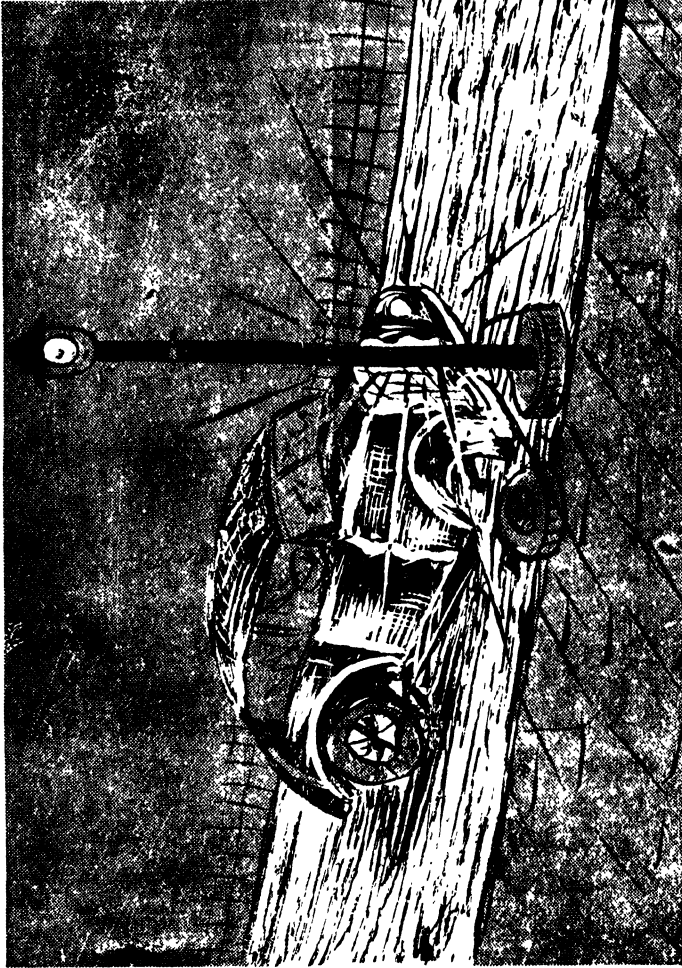
तैयार पड़ा था परन्तु पति समय पर नहीं आया। पति दो घण्टे देर से घर

लौटा। पत्नी ने पति के पैरों की आवाज़ सुनते ही चिल्लाना शुरू कर दिया— 'तो आप आ गये। मैं दो घण्टे से आपका इन्तज़ार कर रही हूँ। दो घण्टे देर से आने का मतलब क्या है?'

पति ने नीचे से डरते डरते कहा, 'मैं एक मोटर दुर्घटना में फँस गया था इसलिये देर हो गई थी।'

पत्नी ने ऊपर से गुस्से में ही कहा, 'मोटर दुर्घटना में फँस गये थे तो इसका क्या मतलब ? मोटर दुर्घटना में फँसने में क्या दो घण्टे लगते हैं ?'

*

पिता क्रोध में बच्चे की गाड़ी को सड़क पर घर के आसपास घुमा रहा था।

ऊपर से आवाज आई— सुनना जी।

'मुझे कुछ देर शान्त भी रहने दिया करो। क्यों जान खा रही हो ?'

एक घण्टे बाद फिर वही आवाज़ ऊपर की खिड़की से सुनाई दी— लल्ला के पिता, सुनना।

'कहो, क्या कह रही हो ?'

'तुम दोपहर भर लल्ला के गुड्डे को घुमाते रहे हो। अब तो लल्ला की बारी आ जानी चाहिये।'

*

मिस्टर वर्मा को घुड़दौड़ का बहुत शौक़ था। अपना काफी पैसा वह इस शौक़ में उजाड़ चुके थे। उनकी पत्नी इसी कारण उनसे बहुत नाराज़ थीं। लड़ भगड़ कर उन्होंने अपने पति से वादा ले लिया कि वह भविष्य में घुड़दौड़ में भाग नहीं लेंगे।

परन्तु मिस्टर वर्मा को तो घुड़दौड़ की लत थी। वह बीवी से चोरी चोरी घुड़दौड़ में जाते थे। उनके मित्रों को पता नहीं था कि श्रीमती वर्मा घुड़दौड़ के खिलाफ हैं।

एक दिन एक मित्र सुबह सुबह उनसे मिलने आ धमका और बोला— कहिये वर्मा साहब ! कल शाम तुमने रानी पर जो पैसा लगाया था उससे कुछ फायदा हुआ या नहीं ?

मिसेज़ वर्मा गुस्से से लाल पीली होने लगीं परन्तु बिना कुछ बोले ही वहाँ से चल दीं। उनके जाने के बाद मिस्टर वर्मा, जो अब तक घबराये हुए थे, अपने मित्र से बोले, "यार, आज तुमने अच्छा नहीं किया। मेरी पत्नी मुझ पर बहुत बिगड़ेगी। मैंने तो उसको वचन दिया हुआ है कि मै कभी घुडदौड़ में नहीं जाऊँगा। अब तुम ही मामले को संभालो।"

उनके मित्र को अपनी भूल पर बहुत दुख हुआ और वह श्रीमती वर्मा के लौटने पर उनसे बोला, "भाभी, आप शायद ग़लत समझीं। 'रानी' किसी घोड़े का नाम नहीं है, यह तो होटल में काम करने वाली एक लड़की का नाम है।"

❀

पत्नी ने तलाक़-पत्र के लिये आवेदनपत्र दिया था। जज के पूछने पर वह स्त्री बोली— मेरे पति ने घर की सारी प्लेटें मेरे सिर पर देकर मारीं और मेरे साथ बड़ा अत्याचार किया।

जज ने पूछा— क्या तुम्हारे पति ने मारपीट करने के बाद तुम से क्षमा याचना की ?

उस स्त्री ने उत्तर दिया— उनको खेद प्रकट करने का अवसर ही नहीं मिला। इससे पूर्व कि वह खेद प्रकट करते, अस्पताल की गाड़ी आकर उन्हें उठा ले गई।

❀

पति ने अदालत में तलाक़ की अर्जी पेश की। मजिस्ट्रेट ने उससे पूछा— तुम तलाक़ क्यों चाहते हो ?

'उसने मुझ पर गोली चलाई थी, एक बार नहीं पांच बार हुज़ूर।'

बाद में जिरह के दौरान में मजिस्ट्रेट ने पति से पूछा— तुम्हारा अपनी पत्नी से विच्छेद कब आरम्भ हुआ ?

'पहली गोली चलने पर हुज़ूर। और पाँचवीं गोली तक मैं उससे बिल्कुल अलग हो चुका था।'

❀

एक व्यक्ति पर अपनी स्त्री को बिना कारण त्यागने का आरोप था। अदालत में मुक़दमा चल रहा था। बहस के पश्चात् उसके वकील ने उसे गवाहों के कठघरे में बुलाया और कहा— तुम अपने मुँह की पट्टी खोल दो।

उस व्यक्ति ने पट्टी खोल दी। सभी यह देख कर चकित रह गये कि उस व्यक्ति की काफी मरम्मत की गई थी। वकील ने जज की ओर देखते हुए कहा— हुज़ूर, यह व्यक्ति अपनी पत्नी को छोड़कर नहीं भागा, यह तो शरणार्थी है।

❀

"कहो, मित्र, नई पत्नी के साथ कैसे पटती है ?"

"यार, कुछ न पूछो। जिस दिन से शादी हुई है घर में चीनी का एक बरतन भी साबुत नहीं बचा।"

"ईश्वर की सौगन्ध, तुम बहुत खुशक़िस्मत हो।"

"वह किस तरह ?"

"तुम्हारा सिर जो अब तक सुरक्षित है।"

*

जब श्रीमती जी सिनेमा जाती हैं !

*

ललिता— मैं रात को शोर सुन कर उठ बैठी, और मैंने पलंग के नीच एक आदमी की टाँगें देखीं।

रानी— ओह, तो क्या वह चोर था?

ललिता— नहीं। मेरा पति था जो शोर सुनकर पहले ही पलंग के नीचे जा छिपा था?

ॐ

आधी रात का समय है।

पत्नी— इस खिड़की के नीचे कोई चोर खड़ा जान पड़ता है।

पति— चुप भी रहो। जब से हमने नया रोगन लगाया है तब से यह खिड़की खुलती ही नहीं। उसे खिड़की खोल लेने दो।

*

पत्नी— देखो तो ज़रा उठकर। मकान में नीचे कुछ खटका मालूम होता है, शायद चोर है।

पति— मैं आधी रात को नहीं उठ सकता।

*

"तुमने नहीं सुना कि मिस्टर रे की बोली कल एकाएक बन्द हो गई?"

"नहीं, मैं अभी अपनी श्रीमती जी को उन्हें देखने के लिये भेजता हूँ।"

"क्यों? क्या वह उनकी रिश्तेदार हैं?"

"नहीं जी, शायद वह बीमारी छूत की हो।"

*

पति की हालत बहुत खराब हो गई थी। डाक्टर ने क़रीब क़रीब जवाब दे दिया था।

फिर भी पत्नी ने आशा न छोड़ी। और जान देकर उसकी सेवा में दिनरात लगी रही। जब भी पति को होश आता वह पत्नी को अपनी सेवा में जुटी देखता। इस सेवा का आख़िर नतीजा यह हुआ कि पति की हालत धीरे धीरे सुधरने लगी। एक दिन उसने पत्नी से पूछा— "तुम न होती तो मैं ज़रूर मर जाता। मगर यह तो बताओ आख़िर तुमने मेरी इतनी सेवा क्यों की?"

उत्तर मिला, "मैं चालीस साल की हो गई। और चार पाँच बच्चों की माँ हूँ। तुम अगर मर जाते तो कौन मुझ से ब्याह करता?"

*

"जिस दिन मेरी पत्नी आई, उसी दिन मेरा खजांची मेरे कुछ रुपए लेकर चम्पत हो गया।"

"तुम नहीं जानते, मुसीबत कभी अकेली नहीं आती।"

*

तार बाबू की पत्नी बड़ी बदमिज़ाज और लड़ाका थी। उस दिन जब वह कई घण्टे तक बकवाद कर चुकी और उसके पति चुप बैठे रहे तो उसने झुंझलाकर कर कहा, "आखिर तुम मेरी बात कान देकर सुनते क्यों नहीं ? मैंने कहा, क्या सोच रहे हो ?"

तार बाबू चौंक कर बोले, "मैं सोच रहा था कि इतनी देर में जितने शब्द तुम्हारे मुंह से निकले हैं, वे यदि कहीं तार मे भेजे जाएं तो उन पर उन्तालीस रुपए छः आने खर्च हों।"

*

क्लब से आए हुए पति ने अपनी बदमिज़ाज पत्नी से कहा— "अभी मेरे ख़्याल से साढ़े दस बजे होंगे।"

अभी वह इतना ही कह पाया था कि घड़ी ने टन-टन करके तीन बजाए। पत्नी ने बिगड़ना शुरु किया तो पति ने झल्ला कर कहा— "मैं कल ही इस घड़ी को यहाँ से हटा दूंगा। दस कौड़ी की घड़ी के आगे अब मेरी तो कोई बात मानी ही नहीं जाती।"

*

"कहो दोस्त, अपनी पत्नी के साथ तुम्हारी कैसी बीत रही है ?"

"अजी, क्या पूछते हो ! पिछली रात को ही बात है, वह घुटनों के बल चल कर मेरे पास आई थी।"

"वाह, वाह, क्या बात है ! तुमने तो अपनी पत्नी को खूब बस में किया है। हाँ तो, फिर क्या कहा उसने ?"

"वह बोली— कायर, पलंग के नीचे क्यों छिपा है डर कर ?"

*

थका हुआ पति— आज शाम का घूमना तो कैंसिल करो।

पत्नी— आप भी अजीब हैं। सुबह से कह रहे थे। मै तो तभी से मेकअप कर रही हूँ। अब पूरा हुआ तो मना करने लगे ?"

*

"क्यों, क्या तुम्हे अपने पति के फौज में भरती होने पर कुछ भी खुशी नहीं हुई ?"

"नहीं।"

"क्यों ? उनकी नई वरदी कितनी शानदार है ?"

"बस, यही दिक़्क़त है। अब उनकी जेबें टटोलने में वक्त ज्यादा लगता है।"

*

"यह मेरी पत्नी है, हमेशा मेरे साथ रहती है।"

*
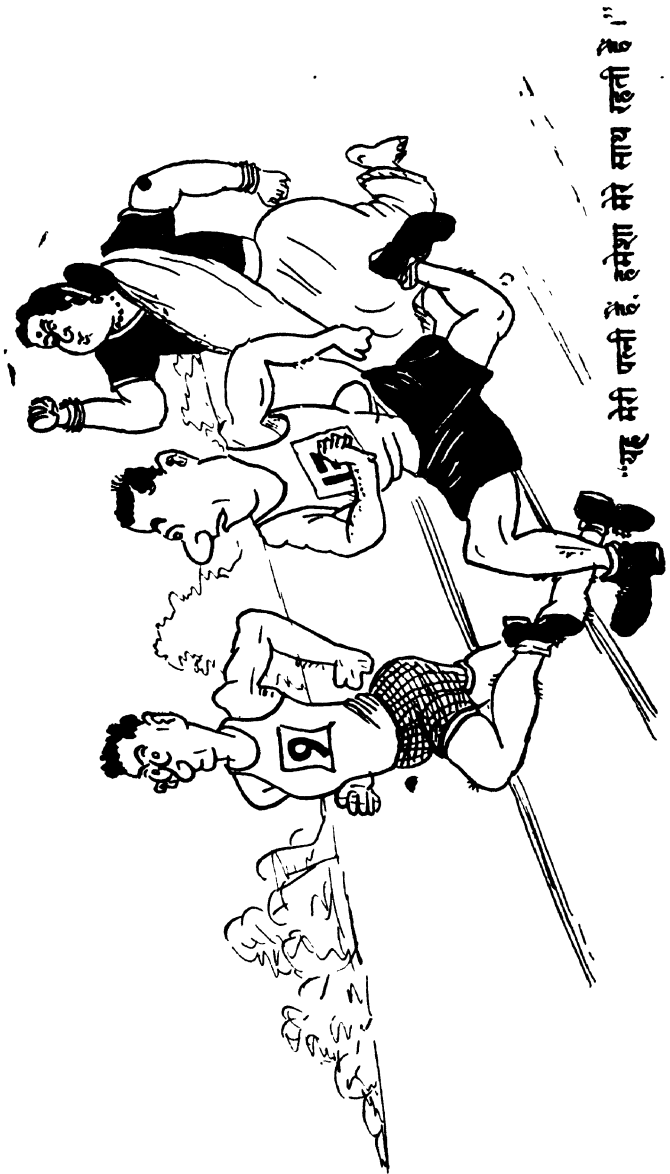
उमा और रमा बहुत दिनों में मिली थीं। यकायक उमा ने रमा का बटुआ देखा, और बोली, "अरे, यह तो बिल्कुल नया मालूम होता है ?"

"हाँ", रमा ने उत्तर दिया। "तुम्हें कैसा लगा ? यह मैंने अपनी मेहनत से कमाया है।"

"कैसे ?"

"बड़ी आसान तरकीब है। मैंने अपने पति का जेबख़र्च और बस-भाड़ा कम कर दिया है ?"

*

नरेश और रमेश बैठे हुए आपस में बातें कर रहे थे। नरेश ने कहा—"मेरी माँ हमेशा ही बिगड़ती रहती है— 'यह क्यों नहीं किया ?' 'वह क्यों नहीं हुआ ?' 'कुछ याद ही नहीं रहता।' "

रमेश को अपने साथी के प्रति सहानुभूति हो आई। "तुम्हारी माँ इतनी कड़ी हैं, तो तुम्हारी तो मुसीबत आ जाती होगी काम करते करते।"

"लेकिन माँ यह सब मुझसे नहीं कहती हैं, पिता जी से कहती हैं।"

*

ख़ुर्शीद— "आज आप की बीवी इतनी तैयारी क्यों कर रही है ? क्या आप लोग कहीं जा रहे हैं ?"

बरजोरजी— "हाँ।"

ख़ुर्शीद— "कहाँ ?"

बरजोरजी— "बम्बई।"

ख़ुर्शीद— "रेल पर ?"

बरजोरजी— "नहीं, हैलीकौप्टर पर।"

ख़ुर्शीद— "मगर मुसाफिरों के लिए अभी हैलीकौप्टर कहाँ चलता है ?"

बरजोरजी— "जब तक मेरी बीवी का शृंगार करना ख़त्म होगा, तब तक चलने लगेगा।"

*

एक मिस्टर अपने दोस्तों से बातें करने में लग गए इसलिए रात को घर ज़रा देर में पहुँचे। फिर क्या था ? मिसेज़ की गर्मागर्म फटकार शुरू हो गई। कमरे में रोशनी न थी। मिस्टर चुपके से खिसक कर बाहर हो गए, और फिर अपने दोस्तों से आ मिले। दो घण्टे बाद घर की तरफ मुड़े और कमरे के बाहर खड़े होकर भाँपने लगे कि मिसेज़ सो गई कि नहीं।

मिस्टर— वाह, वाह, शुक्र है ! उसे मालूम ही नहीं हुआ कि मैं ग़ायब हो

गया था, क्योंकि फटकार अभी तक जारी है।"

*

निर्मला— "क्यों बहन, क्या अपने हाथ से अपना खाना बनाने मे बड़ा फ़ायदा और किफायत है ?"

विमला— "बेशक ! क्योंकि मेरे पति जितना पहले खाते थे, अब उसका आधा भी नहीं खाते ।"

*

बीवी सामने डण्डा लिये खड़ी है और मियाँ की आवाज़ चारपाई के नीचे से बड़े धीमे स्वरों में आ रही है ।

मियाँ— "नहीं, मैं बाहर नहीं आऊँगा । देखो, बीवी साहिबा, अपने घर में मैं ही मालिक होकर रहूँगा, और जो कहूँगा वही करके छोड़ूंगा ।"

*

एक पति महाशय अपनी पत्नी से बहुत डरते थे। जब कभी बेचारे शाम को अपने किसी दोस्त के यहाँ जाते और घर आने में ज़रा देर हो जाती, तो उनकी बीवी साहिबा उनकी पूरी तरह ख़बर लेती थीं। एक दिन संयोग से घर लौटने में बहुत रात हो गई । पति महाशय बहुत घबराए कि अब क्या करें । अन्त में तय किया कि जब बीवी सो जाए तो घर के भीतर जाएँ और चुपके से सो रहें। इसी ख़्याल से वह घर के बाहर बड़ी देर तक खड़े रहे । उन्हें जब इतमीनान हो गया कि वह सो गई, तब आपने बड़ी हिम्मत करके मकान के भीतर पैर रखा । मगर कमबख़्ती के मारे सीढ़ियों पर पैर फिसल गया। धमाके की आवाज़ हुई । फिर क्या था, बीवी साहिबा ने कमरे के भीतर से ही चिल्लाकर पूछा— "क्या तुम हो ?"

इस पर पति महाशय ने घबराकर जवाब दिया – "प्यारी, मैं नहीं हूं। मैं चोर हूँ, चोर । जल्दी पुलिस को बुलाओ ।"

*

पति महाशय आधी रात को घूमकर घर लौटे तो बीवी साहिबा ने बिस्तरे ही पर से पूछा— कुछ ख़बर भी है हज़रत कि कितने बजे हैं ? मैंने अभी अभी दो बजते सुने हैं ।

पति— प्यारी, तुमने ठीक सुना । मैं जैसे ही आया वैसे ही घड़ी में दस बजने के लिए घण्टी बजने लगी। मैंने खट से घण्टी का खटका दबा दिया ताकि तुम्हारी नींद न ख़राब हो । मगर मेरी एहतियात पर भी घण्टी दो दफे बज ही गई और तुम जग पड़ी । इसका मुझे बड़ा अफसोस है ।"

*
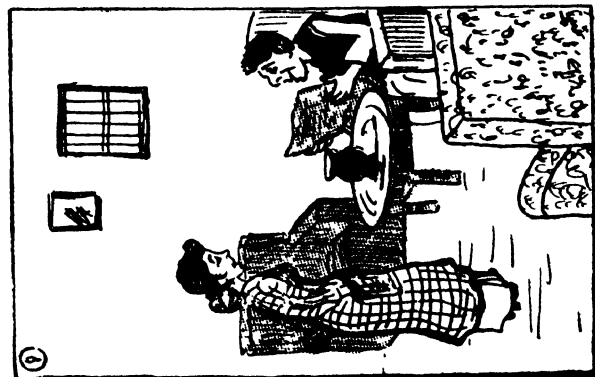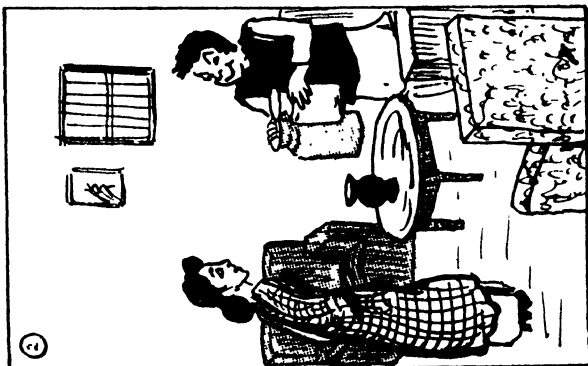
पत्नी— 'यह फूलदान कहाँ से आया ?
पति— यही क्या और चीनी के बरतन भी मैंने बरतन वाले से लिये हैं।
पत्नी— तुम बड़े अच्छे हो ! पर लिये कैसे ?
पति— तुम्हारी कई चप्पल, सैंडिल बेकार रखी थीं।

*

लड़का— क्यों माँ? भाषा को लोग मातृ-भाषा क्यों कहते हैं, पितृ-भाषा क्यों नहीं कहते?

माँ— इसलिए कि इसे तुम्हारी माता अधिक बोलती है।

लड़का— ओह, तभी तो पिता जी खाली सुना करते हैं। तुम्हारे सामने कभी बोलते नहीं।

*

गौतम— कल तीन बजे रात को जब मैं क्लब से घर आ रहा था, तो मेरे मकान में एक चोर घुसा था।

भारत— तो उसे कुछ मिला?

गौतम— हाँ, जो मुझे मिलना था वह उसे मिल गया।

भारत— वह क्या?

गौतम— यही कि मेरी बीवी ने समझा कि मैं हूँ। फिर क्या पूछना था? वह बेचारा अब अस्पताल में है।

*

एक पहलवान, जिसका सिर फूट गया था और एक आँख सूजी हुई थी, एक डाक्टर के पास इलाज के लिये आया।

डाक्टर— "क्या अखाड़े में चोट खा आए?"

पहलवान— "वाह! अखाड़े में भला मुझे कोई पछाड़ सकता है?"

डाक्टर— "तब क्या चोरों ने मिलकर कहीं तुम्हें ठोका है?"

पहलवान— "अजी, चोरों में इतनी हिम्मत कहाँ?"

डाक्टर— "तब यह नौबत कैसे पहुँची, मैं कुछ समझ नहीं पाता?"

पहलवान ने एक गहरी साँस लेकर जवाब दिया, "क्या बताऊँ, डाक्टर साहब? कल हमारी बीवी ने आखिर साबित कर ही दिया कि उसके कंगन की चांदी खराब है, इसलिए उसे अब सोने के कंगन चाहियें।"

*

एक महाशय अपनी बीवी साहिबा को टहलाने के लिए बाज़ार ले गए। वहाँ बीबी साहिबा ने इतना सामान ख़रीदा कि हज़रत के होश उड़ गए; और उस पर मुसीबत यह पड़ी कि सब मियाँ को अपने सिर पर लादना पड़ा, क्योंकि कमबख़्ती के मारे उस वक्त उन्हें न तो कोई सवारी ही मिली और न कोई मज़दूर। क्या करते, बेचारे बण्डलों के बोझ से दबे हुए किसी तरह हाँफते-काँपते धीरे-धीरे चले।

पत्नी— अरे, ज़रा जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाओ। नहीं तो रास्ता खराब है, कहीं कोई लुटेरा न मिल जाए।

पति— ईश्वर करे, वह मिल जाए तो मैं दो पैसे का प्रसाद चढ़ाऊँ।

*

वकील— "तुम्हारी उंगली रेल के किवाड़ से दब कर कट गई और इसके लिए तुम पचास हज़ार रुपये का हरजाने का दावा रेलवे वालों पर करना चाहती हो। मगर यह किस तरह साबित करोगी कि तुम्हारी उँगली की मालियत सचमुच पचास हज़ार रुपये की थी?"

मुवक्किला— "अरे! इसी उँगली पर तो मैं अपने पति को नचाया करती थी।"

*

एक बहुत पढ़े लिखे आदमी का विवाह एक ऐसी लड़की से हुआ जो पढ़ने लिखने के अलावा कोई दूसरा काम ही नहीं जानती थी।

एक दिन पति महाशय ने अपनी पत्नी से कहा— "तुम्हें खाना बनाना बिलकुल नहीं आता, औरतों के लिए यह बड़ी लज्जा की बात है। औरतों को खाना बनाना तो अवश्य ही आना चाहिए।"

पत्नी— "मैंने पढ़ने लिखने के अलावा और कुछ नहीं जाना। भोजन पकाने का काम नौकर करते थे, मैं खाना खाने के अलावा और किसी समय रसोई में नहीं जाती थी, इसलिए पकते हुए भी नहीं देखा। परन्तु ज़रूरत पड़ने पर सब कुछ किया जा सकता है।"

पति— "बिना सीखे, बिना देखे, कोई कुछ नहीं कर सकता।"

पत्नी— "यदि मैं भोजन बनाकर दिखा दूँ तो?"

पति— "यदि तुम बनाकर दिखा दो तो मै मान लूंगा। आज शाम को तुम्हीं बनाना।"

पति महाशय यह कहकर कहीं चले गये। कुछ देर में जब लौटे तो देखा कि देवी जी एक पुस्तक खोले बैठी हैं और किसी विचार में डूबी हुई हैं। पति महाशय यह जान कर कि देवी जी कुछ सोच रही हैं, बोले— "क्यों, क्या सोच रही हो?"

देवी जी ने कहा— "मैं ज़रा 'पाक-शास्त्र' देख रही थी। इसमें लिखा है कि किसी भी तरकारी को काटने के पश्चात् धो लेना चाहिए, पर यह नहीं बताया कि खाली पानी से धोना चाहिए या साबुन लगा कर।"

*

मियाँ मिट्ठू— औरतों को कोई अगर अपने क़ब्ज़े में रखना चाहे, तो मुझसे सीखे। मुझे एक ऐसा मंत्र याद है कि जिसके जपते ही कैसी ही लड़ाका औरत

क्यों न हो, एक दम दुम दबाकर क़ाबू में ग्रा जाती है।

क़ादिर ख़ाँ— फिर ग्रापकी बीवी इतनी लड़ाका क्यों हैं?

मियाँ मिट्ठू— ग्ररे भाई, क्या बताऊँ? उसके मारे तो मैं तंग ग्रागया। वह मुझे मन्त्र जपने की फुरसत ही नहीं देती।

*

शादी के कुछ महीने बाद पति की ग्रक़्ल ठिकाने ग्राई ग्रौर उसने पैसे बचाने की चिंता शुरु की। उसने यह भी फैसला किया कि वह हमेशा दफ्तर से घर पैदल ही ग्रायेगा, बस में नहीं।

दफ्तर से लौटते समय वह एक बस के पीछे दौड़ता हुग्रा घर पहुँच गया। घर पहुंच कर उसने ग्रपनी पत्नी से कहा, "प्रिये, मैं ग्राज एक बस के पीछे दौड़ता ग्राया, ग्रौर मैंने दो ग्राने बचा लिये।"

पत्नी ने उसकी तारीफ करने के बजाय उसे डाटते हुए कहा, "ग्रजब बेवकूफ हो। पैसे बचाने ही थे तो टैक्सी के पीछे दौड़ते ग्राते; कम से कम एक रुपया बचता।"

*

श्रीमती राय ने ग्रपनी सहेली से कहा, "जब हमारे ये घर ग्राते हैं तो मैं उन्हें बड़े ग्राग्रहपूर्वक ग्रारामकुर्सी पर लेटने को कहती हूँ ग्रौर यह भी इजाज़त दे देती हूँ कि वे ग्रपने पैर सामने वाली तिपाई पर फैला लें।"

सहेली ने कहा— "तुम्हें इस उदारता का क्या इनाम मिलना है?"

"कुछ देर बाद ग्रारामकुर्सी पर बहुत रेज़गारी मिल जाती है जो उनकी जेब से गिरी होती है।"

*

रजनी— "दिवाली पर उन्होंने मुझे यह साड़ी दिलवाई है।"

"यह उन्होंने ग्राप ही पसन्द की है?"

"नहीं, उन्हें तो ग्रभी मालूम भी नहीं।"

*

'बस, ग्रब ग्रन्त है,' पति ने बाहर जाते जाते ग्रपनी पत्नी से क्रोध में भर कर कहा। 'मैं इतने दिनों तक सब सहता रहा, परन्तु ग्रब मैं ग्रपने को झील में फेंक कर सब समाप्त कर डालता हूँ।'

'लेकिन तुम तैरना तो जानते नहीं।' पत्नी ने उसे याद दिलाया।

'ठीक है,' उसने दुखी होकर कहा। 'मुझे कोई ग्रन्य रास्ता ढूंढना पड़ेगा।'

*
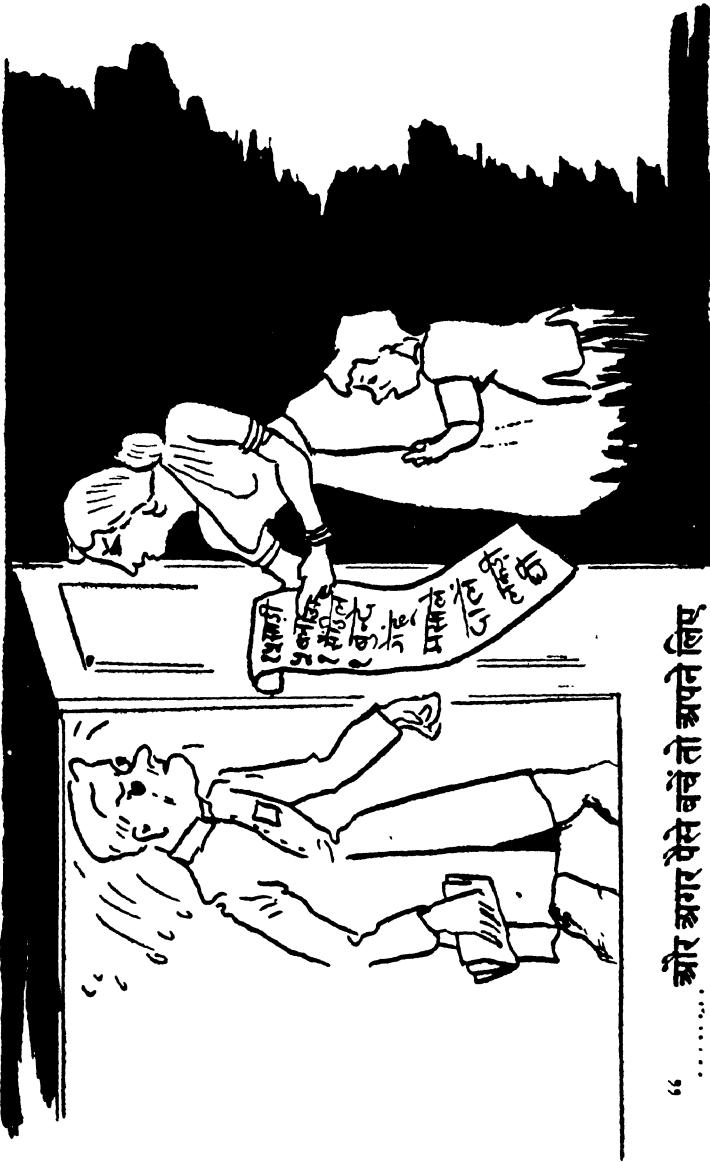
"........और अगर पैसे बचें तो अपने लिए बनियान भी लेते आना।"

"मैंने अपनी पत्नी को 'कम खर्च करने की शिक्षा' देने वाली एक पुस्तक दी। उसे वह पसन्द आई।"

"पर उसका प्रभाव भी कुछ हुआ ?"

"हां, मुझे धूम्रपान छोड़ना पड़ा।"

*

मौहल्ले के एक पड़ौसी ने दूसरे से पूछा, "कल रात तुम्हारे घर में कैसा शोर मच रहा था ? खूब ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ आ रही थी।"

पड़ौसी बोला, "कुछ नहीं, मुझमें और श्रीमती जी में कहासुनी हो गई थी। लेकिन उन्होंने मुझे कुछ कहने का मौक़ा ही नहीं दिया।"

*

एक पति जब अपनी पत्नी की ज्यादती से बहुत तंग आ गया तो उसने मैजिस्ट्रेट को यह पत्र लिखा :—

"अब मैं इस पद के योग्य नहीं रह गया। कृपया इससे मेरा त्याग-पत्र स्वीकार कीजिए।"

*

"तुम बहुत दिनों से अपने घर-खर्च का हिसाब रख रहे हो। इस रीति से कुछ बचत होती दिखाई देती है क्या ?"

"निस्सन्देह। शाम को दिन भर के खर्च का हिसाब मिलाने में इतना समय बीत जाता है कि सिनेमा जाने की घड़ी ही टल जाती है और मेरी पत्नी शिकायत भी नहीं कर पाती।"

*

एक स्त्री ने अपने पति से पूछा, 'आप किसी व्यक्ति को देखकर उसकी शक्ल भूल तो नहीं जाते ?'

पति ने गर्व के साथ उत्तर दिया, 'बिल्कुल नहीं। मैं जिस इन्सान को एक बार देखलू, उसकी शक्ल उमर भर नहीं भूल सकता।'

पत्नी ने प्रसन्न होते हुए कहा, 'चलो यह तो अच्छा हुआ। मुझसे तुम्हारा शेव करने का शीशा टूट गया है। पर तुम्हें अधिक कठिनाई नहीं होगी।'

*

अपनी पत्नियों से भय खाने वाले दस पतियों ने एक सभा बनाई। सभा का उद्देश्य था पत्नियो के रोब का सामना करना। सभा की पहली मीटिङ्ग हो रही थी। दसों के दस सदस्य शरबत व सिगरेट पीते हुए अपनी नई सभा के विधान आदि पर बातचीत कर रहे थे।

किसी प्रकार उनकी पत्नियों को इस मीटिङ्ग की सूचना मिल गई। दसों

पत्नियाँ इकट्ठी होकर घटनास्थल पर आ पहुंची। पत्नियो को आता देख कर पतियों की सभा में खलबली मच गई। भगदड़ में नौ पति किसी तरह खिड़कियों से कूद कूद कर भाग लिये। लेकिन दसवाँ अपने स्थान से नहीं हिला।

अपने आक्रमण की सफलता पर मुसकराती हुई पत्नियाँ इस अकेले बैठे पति से कुछ कहे बिना वापिस लौट गई। भागे हुए नौ पति अब वापिस जाने की बात सोचने लगे। दसवें पति की वीरता से वे इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने उसे अपनी सभा का प्रधान बनाने का निश्चय कर लिया था। लेकिन कमरे मे लौट कर उन्होंने देखा कि दसवाँ पति भय के मारे अपनी कुरसी पर बैठा बैठा ही मर गया था।

*

डाक्टर अपना दवाखाना बन्द करने वाले थे। वह बत्ती बुझाने के लिये बटन दबा ही रहे थे कि एक रोगी बदहवास दौड़ा आया।

"डाक्टर साहब, दवा दीजिये, जल्दी।"

"क्यों, क्या हुआ? बैठिये।" डाक्टर ने कहा।

"वही घर की सफ़ाई।"

"क्या? तुम्हारी पत्नी ने घर की झाडू बुहारी तुमसे लगवाई थी?"

"नहीं, मै दफ़तर से आया और बिना देखे भाले वहीं बैठ गया, जहाँ सुबह सोफ़ा था।"

*

गगाप्रसाद— कहो, भाई जमुना, अब तुम्हारी आँख की चोट का क्या हाल है?

जमुनाप्रसाद— ठीक है। मैंने अब पत्नी से मित्रता करली है। आज सवेरे उन्होंने मेरे ऊपर केवल टेबिल क्लॉथ फेंका।

*

राजकीय अस्पताल में तीन पिता प्रतीक्षा कर रहे थे। पहिले को समाचार मिला कि उसकी पत्नी ने जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया है और दूसरे को यह कि उसे तीन बालक एक साथ प्राप्त हुए। तीसरा अभी प्रतीक्षा ही कर रहा था।

पहला बोला— "कैसे मज़े की बात है कि मेरी पत्नी ने 'जुड़वाँ बच्चे' नाम की पुस्तक पढ़ी थी और उसके दो बच्चे हुये।"

दूसरा बोला— "अरे, तो यह पुस्तक पढ़ने का ही असर है। ठीक है, मेरी पत्नी ने 'तीन तिलंगे' पुस्तक पढ़ी थी और तुमने सुना ही कि उसके तीन बच्चे पैदा हुए हैं।"

उन दोनों की बात सुनकर तीसरा पिता बेहोश होगया। उपचार के बाद

वह होश में ग्राया तो उन दोनों ने पूछा—"क्यों भाई, हमने ऐसी क्या बात कह दी कि तुम बेहोश हो गये?"

सिसकी भरते हुए वह बोला, "ग्रो, माई गॉड! मै क्या करूं? मेरी पत्नी ने तो 'एक राष्ट्र का जन्म' नाम की पुस्तक पढ़ रक्खी है।"

*

"क्या तुम्हारा विवाहित जीवन सुखी है?"

"हाँ, मैंने ग्रपने स्वप्नों की सुन्दरी से विवाह किया है। वह ग्राज भी उतनी ही सुन्दर है, जितनी विवाह के दिन थी। उसके हाथ हमेशा गोरे ग्रौर मुलायम रहते है। उसके केश हमेशा हृदय को लुभाते रहते है, ग्रौर उसके शृंगार का तो कहना ही क्या।"

"तो इसके माने हैं तुम्हें किसी प्रकार का दुःख नही है?"

"नही। लेकिन, यार, मै बाजार में खाना खाते खाते तंग ग्रा गया हूँ।"

*

एक महोदय ने ग्रपना सारा वेतन ग्रपनी पत्नी को दे दिया। संध्या को वह सब की साड़ियाँ खरीद लाई। पति देव ने पूछा— "यह क्या किया तुमने?"

पत्नी ने कहा— "ग्राज सवेरे तुमने ही तो कहा था कि रुपया सब बुराइयों की जड़ है। मैंने सोचा तब इसका न रहना ही उत्तम है।"

*

'जब तुमने सारे कपड़े कमरे में फैले हुए देखे थे तो पुलिस को क्यों नहीं बुलाया?'

'मैंने समझा मेरे पति ग्रपनी एक साफ कमीज ढूढ रहे होगे।'

*

पत्नी समाचारपत्र में पढ़कर बोली, 'इसमें लिखा है एस्किमो मछली पकड़ने के काँटे धन के लिये प्रयोग में लाते हैं।'

नासिर हँस कर बोला, 'तब तो उनकी पत्नियों को उनके सोने पर धन निकालने मे बड़ी कठिनाई होती होगी।'

'कठिनाई क्या है? वहाँ रात भी तो छः मास की होती है।'

*

'तुम्हें करोड़पति किसने बना दिया?'

'मेरी पत्नी ने।'

'ग्रच्छा, क्या तुम्हारे······।'

'नहीं, नहीं। मैं केवल यह देखना चाहता था कि क्या कोई ऐसी ग्राय की

सीमा भी है जिसे व्यय करने में वह समर्थ नहीं है।'

*

'ओह, बेचारी नरगिस बूढ़ टमटमवाला से विवाह कर बुरी तरह लुट गई !'

'क्यों, क्या टमटमवाला के पास धन नहीं है।'

'धन तो है पर जितनी अवस्था उसने अपनी बताई थी उससे दस वर्ष कम अवस्था का निकला।'

*

जेम्स— मैंने अपनी पत्नी से कहा कि समुद्रतट पर उसने किसी पुरुष की छेड़खानी पर ध्यान दिया तो मैं उस पुरुष को गोली मार दूंगा।

स्मिथ— तब उसने क्या कहा ?

जेम्स— उसने मुझे मशीनगन ले चलने को कहा।

*

यात्री— आपके क्लब में टेलीफोन क्यों नहीं है ?

मैनेजर— क्योंकि हमारे क्लब मे विवाहितों का बहुमत है।

स्त्री

एक दिन बम्बई की सड़क पर एक मोटर बस तेज़ी से भागी जा रही थी। सामने की सीट पर बैठी स्त्री ने अपनी बेटी से जो गोली चूस रही थी, कहा— 'ध्यान रख कर चूस। आगे होटों पर न ला। कहीं ऐसा न हो गोली फिसलकर पास बैठे आदमी के सूट पर गिर जाये और उसमें कोट के बाल लग जायें। पूरे दो पैसे का खून हो जायेगा।'

*

एक स्त्री पार्सल कराने पोस्ट ऑफिस गई। पार्सल को तोल कर पोस्ट मास्टर ने कहा— 'बहन जी, आपने ग़लती से इसमें टिकट अधिक लगा दिये है।'

स्त्री ने घबरा कर पूछा— 'क्यों, अधिक टिकट से यह पार्सल अधिक दूर तो नहीं चला जायगा ?'

*

एक कमरे में चाय-पार्टी हो रही थी। एक कोने से एक महिला ने दूसरे कोने पर बैठी महिला से ऊँची आवाज़ में पूछा— 'क्यों मोहनी, तुम्हें परसों वाले भोज में आमन्त्रण क्यों नहीं दिया गया ? बार बार मुझे यही विचार आ रहा है।'

मोहनी देवी ने उससे भी ऊँची आवाज से उत्तर दिया— 'मैं भी बहुत

देर से यह सोच रही हूँ कि आखिर तुम्हें क्यों आमन्त्रण दिया गया।'

*

"तो यों कहो कि तुम्हें भी कुछ पक्का नहीं मालूम। किसी ने गप्प ही उड़ाई है।"

"नहीं भाई, ऐसी बात नहीं। यह ख़बर मेरी पत्नी कीर्तन में सुनकर आई है। और तुम तो कीर्तन में जाने वाली बूढ़ियों को जानते ही हो। जब उन्होंने सुशीला के चरित्र पर लांछन लगाया है तो वे इसे सच्चा करके ही रहेंगी।'

*

स्त्री पर नयी साड़ी का वही प्रभाव होता है जो मदिरा के तीन प्यालों का पुरुष पर होता है।

*

एक बार सम्राज्ञी जोसेफीन ने एक फ्राँसीसी अफ़सर से, जो अभी ऑस्ट्रिया से वापिस आया था, ऑस्ट्रिया की प्रसिद्ध सर्व-सुन्दरी स्त्री के बारे में पूछा—"तुम क्या नहीं मानते कि वैसी सुन्दर स्त्री तुमने जीवन भर नहीं देखी?"

अफ़सर ने युक्तियुक्त जवाब दिया— "जी, कल तक तो मेरा भी यही ख़्याल था।"

*

कैमिस्ट की दुकान में प्रवेश करके एक महिला ने विक्रेता से पूछा, 'तुम एक अनुभवी कैमिस्ट हो न?'

'जी हाँ।'

'तुमने अपने धन्धे की सब परीक्षायें पास की हैं न?'

'जी हाँ।'

'कभी गलती से किसी को ज़हर तो नहीं दे दिया तुमने?'

'बिल्कुल नहीं।'

'तब ठीक है। लाओ मुझे एस्पीरीन की एक पुड़िया दे दो।'

*

'रामकिशन की पत्नी को पता नहीं कि उनके लड़के के दिमाग़ पर किसका असर आया है।'

'यही तो अचम्भा है कि अधिकतर युवती माँ इस उत्तरदायित्व को घपले में डाल देती हैं।'

*

स्त्री— "मेरे बारह बच्चे हैं और मुझे अभी मालूम हुआ कि मेरे पति मुझसे प्रेम नहीं करते।"

डाक्टर— "और अगर वह तुमसे प्रेम करते ...."

*

फेरीवाला— बीबी जी, आपको बिजली की इस्तरी लेनी है?

घरमालकिन— नहीं, लेकिन पड़ौसियों को दे दो। उनकी पुरानी इस्तरी ख़राब हो गई है। हम तो उन्हीं से माँग कर काम चला लेते हैं।

*

पति जब संध्या को घर लौटा तो देखा कि पत्नी मुँह फुलाए आँसू बहा रही है।

"आज तुम्हारी माता जी ने मेरा बड़ा अपमान किया है।" वह हिचकियाँ लेते हुए बोली।

"परन्तु माँ तो इस शहर तक में नहीं है, तुम्हारा अपमान कैसे किया?" किशोर आश्चर्यचकित होकर बोला।

"हाँ, यह ठीक है कि वह यहाँ नहीं हैं, पर ज़रा इस पत्र को तो देखो जो

उन्होंने तुम्हारे नाम भेजा है। इस पत्र के नीचे उन्होंने लिखा है— 'बहूरानी, यह पत्र किशोर को जरूर दे देना।' यह उन्होंने कैसे समझ लिया कि मैं तुम्हारे पत्र खोल कर पढ़ लेती हूँ?"

*

"प्रकृति स्त्रीलिंग है या पुल्लिग?" यह एक प्रश्न पूछा गया है।

प्रकृति स्त्रीलिंग है। और कारण भी यदि प्रश्नकर्त्ता जानना चाहे तो यह है कि स्त्री की भाँति उसकी ठीक आयु किसी को भी ज्ञात नहीं।

*

एक बड़े व्यापारी ने अपनी सेक्रेटरी से विवाह कर लिया। हनीमून के पश्चात् जब वापिस लौटने की तैयारी होने लगी, तो व्यापारी बोला, "अब मुझे कोई नई सेक्रेटरी ढूंढनी पड़ेगी।"

उसकी पत्नी फ़ौरन बोली, "आप को इसकी चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं। मैंने इसका सारा इन्तज़ाम कर रखा है।"

"कौन है वह? क्या नाम है उस छोकरी का?"

"अब छोकरी वोकरी नहीं चलेगी, वह मेरा भाई है।"

*

विमला— कई महीनों तक मुझे यह नहीं पता चला कि मेरे पति संध्या को कहाँ ग़ायब रहते हैं।

विद्या— फिर कैसे मालूम हुआ?

विमला— एक दिन शाम को जब मैं घर पहुँची तो देखा वे वहीं थे।

*

"क्या तुमने ही मेरे पति को नदी में डूबने से बचाया था ?"

"जी हाँ, श्रीमती जी।"

"तो उनकी चप्पलों का तुमने क्या किया ?"

*

मित्र— "कहिये मिस्टर, आपका लोहे वाला बक्स खुला जिसकी चाबी खो गई थी, और जिसके खोलने में आप दिन भर परेशान थे ?"

मिस्टर— "हाँ, भाई, बड़ी तरकीब से उसे खुलवाया।"

मित्र— "क्या लुहार बुलाया था ?"

मिस्टर— "नहीं जी। जब सब तरह से हार गया, तब मैंने कह दिया कि इसमे मेरी पूर्व प्रेमिका के पत्र रखे हुए है। इतना सुनते ही न जाने कहाँ से मेरी पत्नी में इतनी ताक़त आ गई कि एक ही झटके से उसे खोल दिया।"

*

एक मनुष्य— क्यों जनाब, पुरुष हमेशा बक्की औरत से ही क्यो विवाह करता है ?

दूसरा— भाई, हमें तुम ऐसी औरत ढूढ दो जो बक्की न हो।

*

दो आदमी आपस में बहस कर रहे थे कि गंजे के सिर पर बाल क्यों नहीं उगते। इस पर एक ने कहा— "मै समझता हूँ कि इसका कारण केवल भेजे का शीघ्र चलना है। अक्सर बड़े बड़े बुद्धिमान ही गंजे हुआ करते है। भेजा सिर के भीतर ऐसी तेज़ी से चलता है कि बालों की जड़ें ही उखड़ जाती हैं।"

इस पर दूसरा चट से बोल उठा— "यदि यह सच है तो मैंने भी एक नई बात का पता लगा लिया। स्त्रियों के दाढ़ी मूंछ क्यों नही होतीं ? बताऊँ ? अच्छा सुनिए, इसका कारण भी यही है कि स्त्रियों की जीभ उनके मुह के भीतर ही भीतर बड़ी तेज़ी से चला करती है।"

*

एक स्त्री— जब मैं २६ वर्ष की थी तभी से मैंने अपनी सही अवस्था किसी को नहीं बताई है।

दूसरी स्त्री— कभी न कभी तो बतानी पड़ेगी ही।

पहली— (बुरा मानकर) वाह, जब मैं इस बात को १५ वर्ष तक गुप्त रख सकी हूँ तो जीवन भर इसको गुप्त रखना क्या कठिन है ?

*

डाक्टर— देखिए, श्रीमती जी। आपके पति को शांति की बड़ी आवश्यकता

है । लीजिये, यह नींद की दवा है ।

श्रीमती— यह कब दूं उन्हे ?

डाक्टर— उन्हें नहीं, इसे आप स्वयं पी लें ।

*
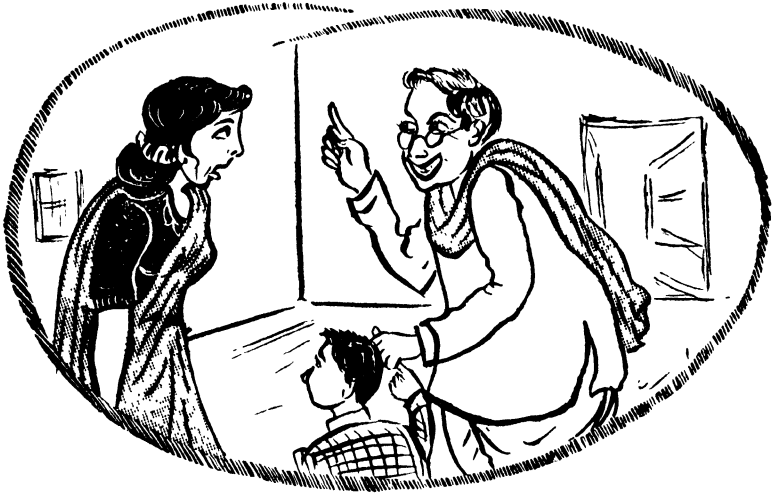
एक धनी महिला ने अपने लड़के को स्कूल में भरती कराने के बाद वर्ग-शिक्षिका को ताकीद भिजवाई— 'देखिये, लड़का बड़ा भावुक है । इसे आप कभी सज़ा मत दीजियेगा । हाँ, कभी डराना ही हो, तो इसके बगल के लड़के के तमाचा मार दीजिये, यह खुद डर जायगा ।'

*

विद्यार्थी— डाक्टर, मै कैसे जान सकता हूँ कि अमुक आदमी या औरत में जान नहीं है ।

डाक्टर— जब आदमी का दिल धड़कना और औरत की ज़बान चलना बन्द हो जाए ।

*

दो सखियाँ अपना अपना विवाह हो जाने के बाद पहली बार मिलीं । बातें करते करते पहली ने दूसरी से पूछा— 'सुना है तुम्हारे पति रामदयाल ने रेल के ठेके में बम्बई में एक लाख रुपया कमाया है ।'

"बहन, तुम्हारी सुनी बात में कुछ बात ग़लत है । पहली तो यह कि मेरे पति का नाम रामदयाल नहीं है, विशम्भरदयाल है । दूसरी बात यह कि उन्होंने

रेल का ठेका कभी नहीं लिया, उनके पास सरकारी इमारतें बनाने का ठेका था। तीसरी बात यह कि बम्बई वह आज तक नहीं गये, ठेका उन्हें लाहौर में मिला था। और चौथी बात यह कि एक लाख रुपया कमाया नहीं, खोया है।

*

"जनाब, यह बात बिल्कुल निश्चित है कि हमारे भारत में कोई स्त्री प्रेसीडेंट के पद पर आसीन नहीं हो सकेगी।"

"क्यों?"

"३५ वर्ष से कम का कोई व्यक्ति प्रेसीडेण्ट नही बन सकता और कौन स्त्री ऐसी है जो अपनी आयु ३५ वर्ष बतायगी।"

*

पिछले महीने की बात है। मै कलकत्ते के एक होटल मे ठहरा था। मेरे कमरे के पास ही बम्बई की प्रसिद्ध अभिनेत्री ······ भी ठहरी थीं। एक रात, दो बजे के क़रीब उन्होंने अपने कमरे से होटल के टेलीफोन आपरेटर से फोन पर कहा: "मैं बम्बई के श्री ··· से अभी बातें करना चाहती हूँ। अभी, अभी, बिल्कुल अभी।" आपरेटर ने कहा, "मैंने नम्बर नोट कर लिया है, और मिलते ही आपको सूचित करूंगा।" नम्बर मिलने में आधा घण्टा तो लग ही गया और इस आधे घण्टे में उन देवी जी ने बार-बार ऊँचे स्वर में आपरेटर को "रिमाइन्ड" कर-करके सब लोगों को सोते से जगा दिया। वह बार-बार आपरेटर से कह रहीं थी: "इट इज़ मोस्ट अर्जेण्ट (मुझे बड़ा ज़रूरी काम है)। अभी नम्बर चाहिये, अभी, अभी।"

जब नम्बर मिला और आपरेटर ने उनसे कहा, "यह लीजिये, बम्बई लाइन पर है, आप बातें कीजिये", तो हम सब लोग बड़ी उत्सुकता से उनके कमरे के बाहर कान लगाये सुनने लगे कि आख़िर रात को दो बजे इन्हें कौन-सी ज़रूरी बात कहनी थी।

उन्होंने फोन का चोंगा हाथ में लेकर कहा—

"यह बम्बई है न?"

"हाँ।"

"तुम ··· हो न?"

"हाँ, कहिये।"

"मैं ··· मैं ··· मैं ··· यह कहना चाहती हूँ कि मै तुमसे कुछ नहीं कहना चाहती और कभी कुछ नहीं कहूँगी।"

*

स्त्री जब असम्भव मांगें पेश करे, तो यह नहीं समझ लेना चाहिये कि वह उन्हें पूरा ही कराना चाहती है।

विश्वविख्यात नर्तकी अन्ना पावलोवा अमेरिका-भ्रमण से पूर्व नृत्य का रिहर्सल कर रही थी। मूड कुछ ख़राब था और वह बार बार ग़लती कर रही थी। उसके मैनेजर ने पूछा : "क्या बात है ?"

"कुछ नहीं। फव्वारे को यहाँ से हटा दीजिये, बड़ी आवाज़ करता है। मेरा ध्यान इसी के कारण भंग होता है। हटवा दीजिये इसे।"

कुछ देर बाद जब अन्ना लौटी तो उसने देखा कि फव्वारे से पानी का प्रवाह जारी है। उसकी भौंहें सिकुड़ गई। पर इतने में मैनेजर ने उसके पास पहुंचकर कहा— "श्रीमती जी! बस, अब यह फव्वारा आप को तंग नहीं करेगा। इसमें पहले भारी पानी भरा था। मैंने अब इस में हल्का पानी— वही पानी जिसे आप स्नान के लिये प्रयोग में लाती हैं— भरवा दिया है। अब यह आवाज नहीं करेगा।"

सच ही, अन्ना को अब कोई शिकायत नहीं रही और उसने बड़े उत्साह के साथ पुनः रिहर्सल आरम्भ कर दिया।

*

मार्था ने ५० साल की उम्र तक विवाह नहीं किया। फिर अचानक शहर में अधेड़ अवस्था के दाँत के एक डाक्टर आए और मार्था से उनकी मित्रता हुई। तीन महीने में दोनों का विवाह हो गया। एक दिन मार्था को बस में जाते देख एक मित्र ने पूछा कि वह कहाँ जा रही है।

"दाँत में कुछ दर्द है, डाक्टर के पास जा रही हूँ।"

"तुम्हारे तो पति स्वयं दाँत के डाक्टर हैं।"

मार्था कुछ झेंपी, फिर चुपके से कान में बोली, "कहते हैं घोड़े के दाँत देख कर उसकी उम्र बताई जा सकती है।"

*

एक स्त्री एक मोटी स्त्री से झगड़ रही थी। बोली "तुमने मेरे बेटे को क्यों मारा?"

"मैंने उसे इसलिए मारा कि वह मुझे मोटी भैंस कहता था।" मोटी स्त्री ने उत्तर दिया।

लड़के की माता ने नम्र स्वर में कहा, "परन्तु बहन, इससे तुम्हें कुछ विशेष लाभ तो नहीं होगा। यह तो तुम्हें स्वयं ही सोचना चाहिए। मेरे बेटे को पीटने की बजाय तुम्हें अपनी खुराक में कमी करनी चाहिए थी।"

*

मनोहर ने पहले अपनी पत्नी को क्रोध से देखा और फिर अपने बेटे मोहन को।

"मोहन ने मेरी जेब में से पैसे निकाल लिए हैं।" उसने कहा।

पत्नी ने उसकी बात का विरोध किया। "आप यह पक्की तौर पर कैसे कह सकते हैं? हो सकता है मैंने ही निकाल लिए हों।"

मनोहर ने अपना सिर हिलाया।

"नहीं, तुमने नहीं निकाले। जेब में अभी कुछ पैसे बाक़ी जो पड़े हैं।"

*

पहले ब्रह्मा ने ब्रह्माण्ड को रचा और आराम किया। तब ब्रह्मा ने पुरुष को रचा और फिर आराम किया। तब ब्रह्मा ने स्त्री को रचा और उस दिन से न ब्रह्मा को चैन मिला, न पुरुष को।

—टाल्स्टाय

*

'क्यों महोदय, आपने अपना शब्द-कोष किस प्रकार एकत्र किया?' एक सज्जन ने सम्पादक से पूछा।

'ओह, वह अपनी पत्नी से लड़ाई के समान था— एक शब्द से दूसरा शब्द निकलता रहा।'

*

'पिताजी, पहली बार मुझे एक नाटक में काम करने का अवसर मिला है।' होने वाला ऐक्टर बोला। 'मुझे एक आदमी का पार्ट अदा करना है जो बीस वर्ष से विवाहित है।'

'हाँ, शुरुआत तो अच्छी है।' उसके पिता जी बढ़ावा देते हुए बोले। 'भगवान् ने चाहा तो एक दिन तुम्हें बोलने वाला पार्ट भी मिल जायगा।'

*

मैनेजर— देखो मिस माला! तुम अपना समय बनाव शृंगार में बरबाद करती रहती हो। ऐसे कैसे काम चलेगा। दफ्तर को नई टाइपिस्ट ढूंढनी पड़ेगी।

मिस माला— आप कैसे कहते हैं कि मैंने समय बरबाद किया? यहाँ आये मुझे केवल पांच माह बीते हैं और मेरी सगाई फर्म के भागीदार से हो गई है।

*

जानवरों के अस्पताल में एक स्त्री एक कुत्ते को ले आई। डाक्टर ने कुछ देर बाद कुत्ते के पेट से वह चवन्नी निकाली, जो उसने निगल ली थी। चवन्नी निकालकर उसने उस स्त्री को दे दी। चवन्नी को देखते ही स्त्री ने चकित होते हुए कहा, "अरे! यह तो चवन्नी थी; मै समझी उसने रुपया निगल लिया है। मैंने आपको व्यर्थ ही तकलीफ दी।"

*

एक स्त्री एक मोटर के नीचे आ गई परन्तु उसे अधिक चोट नहीं लगी। मोटर वाली मोटर लेकर वहाँ से भाग गई। पुलिस ने कुचली जाने वाली स्त्री से पूछा, "क्या तुमने मोटर का नम्बर देखा था?"

उस स्त्री ने कहा, "मुझे नम्बर देखने का समय ही नहीं मिला। मोटर आंधी की तरह निकल गई। हाँ, मोटर चलाने वाली स्त्री ने नीली साड़ी, सफेद ब्लाउज़ और कानों में बालियाँ पहनी हुई थीं। उसके माथे पर बिंदी थी, देखने में सुन्दर लगती थी— आयु लगभग तीस वर्ष होगी।"

*

एक स्त्री एक ऐतिहासिक स्थान को देखने गई। टूटे हुए एक मीनार के पास खड़ी होकर वह फोटो खिंचवाने लगी। अचानक उसे ख्याल आया और वह फोटोग्राफर की ओर देख कर चिल्ला उठी, "फोटो में मेरी मोटर न आए; नहीं

तो मेरा पति समझेगा कि मैंने ही इस मीनार को टक्कर मार कर गिराया है।"

*

"इस वस्त्र का क्या दाम है?" कम सुनने वाली बुढ़िया ने दुकानदार से पूछा।

"सात रुपये" दुकानदार ने जवाब दिया।

"सत्रह रुपये! मुझे बुढ़िया समझ कर ठगना चाहता है। मैं तो चौदह रुपये दूंगी।"

"मैं सात रुपये कह रहा हूँ," दुकानदार ने दुहराया।

"सात रुपये। अच्छी बात है, मैं चार रुपये दे दूंगी।"

❀

धोबी को कपड़े देने से पहले अपने पति के कपड़ों की जेबें सम्भालते हुए गृहस्वामिनी को काग़ज़ का मुड़ामुड़ाया एक टुकड़ा मिला। उस पर एक टेलीफोन नंबर लिखा हुआ था। नारी की जिज्ञासा ही जो ठहरी! उसने तुरन्त वह नंबर

घुमाया। पर कान में टेलीफोन के व्यस्त होने की घूंघूं सुनाई दी। थोड़ी देर बाद उसने दुबारा वही नम्बर मिलाया, लेकिन फिर भी उसके व्यस्त होने की घूंघूं ही सुनाई दी। तीसरी बार टेलीफोन करते हुए गृहस्वामिनी की दृष्टि पास रखी हुई डाइरेक्टरी के कवर पर लिखे अपने टेलीफोन के नम्बर पर पड़ी— पति महोदय ने अपना ही टेलीफोन नम्बर उस पर्चे पर लिख रखा था।

*

एक ईसाई महिला ने अपने पति की मृत्यु के पश्चात् श्मशान में एक शिला लगवाने का आर्डर दिया, जिस पर उसने निम्न शब्द लिखवाये—

"मेरा दुख इतना अधिक है कि मै उसे सहन नही कर सकती।"

आर्डर देने के कुछ दिन पश्चात् ही उसने विवाह कर लिया, और शिलालेख लिखने वाले से कहा कि वह स्मारक वाक्यो मे 'उसे' शब्द के बाद 'अकेले' शब्द और बढ़ा दे।

*

एक महिला अपने मृत पति की तस्वीर लेकर एक आर्टिस्ट के पास पहुँची और बोली, "इस चित्र को 'एन्लार्ज' कर दीजिये। परन्तु यदि आप इनके सिर पर से यह टोप हटा दे तो ज्यादा ठीक रहेगा।"

आर्टिस्ट— "हो जायगा। मुझे यह बता दीजिये कि वे मांग किस तरह निकाला करते थे।"

"यह तो मुझे याद नहीं, लेकिन जब आप टोप हटायेगे तो आपको स्वतः ज्ञात हो जायगा।"

*

एक नव-विधवा और उसकी एक सहेली बैठी हुई वकीलों की बुराई कर रही थीं। उसकी सहेली बोली, "मुझे इन वकीलों ने इतना तंग किया है कि मेरी तो तबीयत घबरा गई।"

वह नव-विधवा बोली, "ओह! वकीलों का तो मेरे सामने नाम न लो। जब मेरे पति मरे तो इन सब ने मुझे इतना परेशान किया कि मैं सोचने लगी कि पति न मरते तभी अच्छा था।"

*

एक स्त्री भागी भागी एक दूकान में गई, और वहाँ टेलीफोन में ४४४४४ नम्बर मिलाने लगी। चोंगे पर मुँह लगाकर उसने पूछा, "क्या यह ४४४४४ है?"

"नहीं, हम ४४४४३ से बोलते हैं," किसी ने जवाब दिया।

"देखिए, मैं ज़रा जल्दी में हूँ— अपने पड़ौसी के यहाँ जाकर कह दीजिये

कि हमारे यहाँ आग लग गई है। आग बुझाने का इंजन फौरन भेज दें।"

*

एक भावुक स्त्री बाग की सैर कर रही थी। वहाँ एक बहुत पुराने पेड़ को देखकर वह रुक गई और कहने लगी— "काश, मैं इस बूढ़े पीपल से बातें कर सकती तो यह क्या कहता!"

पास खड़े हुए एक व्यक्ति ने यह बात सुन ली। वह कुछ ज़ोर से बोला— "यही कि, श्रीमती जी, मैं पीपल नहीं, बड़ हूँ।"

*

एक मोटी स्त्री ने कपड़ की एक बड़ी दुकान के मालिक से कहा— मेरे लायक़ रंगबिरंगी साड़ियाँ दिखाओ।

मालिक ने कुछ सोचकर कहा— श्रीमती जी, ईश्वर ने जब तितली को बनाया तो उसे कई प्रकार के रंग दिये, पर जब हाथी को बनाया तो उसे केवल भूरा रंग ही दिया।

*

एक दिन किसी महिला ने बड़े शौक़ से दही की पकौड़ियाँ बनाईं। वह बहुत खुश थी। शाम को उसकी एक पड़ौसिन मिलने आ गई। उस महिला ने थोड़ी देर बातचीत करने के बाद मुस्कराते हुए कहा, "बहन, आज मैंने बड़ी ज़ायक़ेदार चीज़ बनाई है।"

"क्या बनाया है?" पड़ौसिन ने उत्सुक होकर पूछा। वह महिला कुछ देर चुप रही, फिर हँसकर बोली, "मुन्ने के पिता जी को मसालेदार दही में डाला है।"

बेचारी पकौड़ी कैसे कहती, क्योंकि पकौड़ीमल तो उसके पतिदेव का शुभ नाम था।

और सुनिये, वह पड़ौसिन पकौड़ियों से भी स्वादिष्ट एक चीज़ बनाकर आई थी। वह खुश होकर बोली, "बहन, मैंने भी आज एक बढ़िया मिष्टान्न बनाया है।"

"लड्डू?" मुन्ने की माँ ने पूछा।

"नहीं, लल्ला के पिताजी व ताऊजी को शीरे में डाला है।"

कहिये, क्या समझे? उस पड़ौसिन के पति का नाम था गुलाबचन्द्र और जेठ का जमुनाप्रसाद। जो मिठाई उसने तैयार की थी— गुलाबजामुन— उसका ज़िक्र करते ये दोनों नाम आड़े आते थे।

*

"हीरा सबसे कठोर पदार्थ क्यों माना जाता है ?"

"क्योंकि वह महिलाओं पर भी छाप डालने में समर्थ होता है।"

*

"स्त्री किसी बात को कितने समय तक गुप्त रख सकती है ?"

"बात सुनने के बाद उसे टेलीफोन तक पहुँचने में जितना समय लगे, तब तक।"

*

एक सनकी औरत ने अपनी पड़ौसिन को आखिर बता ही दी अपने भेद की बात— कि उसने धन अमुक स्थान पर छिपा कर रखा है।

"परन्तु" पड़ौसिन ने उसे टोका "तुम्हारा ब्याज का नुक़सान तो हो रहा है।"

"नहीं, नही, क्या कहती हो तुम ? ब्याज के नाम पर भी मैं रोज़ थोड़ा थोड़ा अलग डिब्बे में डालती जाती हूँ।"

*

फोटोग्राफर— श्रीमती जी, क्या आप तस्वीर खिचवाने को बिलकुल तैयार हैं ? मैं तस्वीर लूं ? अच्छा, एक ...... दो ...... ।

बीच ही में श्रीमती जी बोल उठी— ज़रा ठहरिये, मैं जम्पर में थोड़ा सैंट लगा आऊँ।"

*

एक सखी— "तुम भी अद्भुत औरत हो ! अपने पति को ऐसा सीधा किया है कि जिसका नाम नही। आखिर यह तुमने किया कैसे ?"

दूसरी सखी— "वे पराई औरतों को बहुत ताका करते थे। मैंने दूसरे मर्दों को ताकना शुरू किया, बस सम्भल गये।"

*

श्रीमती हिजिस को हर बात पर शिकायत करने की आदत थी। उनके पड़ौसियों और मिलने-जुलने वालों को ऐसा कोई विषय ही नहीं मिलता था जिस पर कि श्रीमती हिजिस हर्षपूर्वक बातचीत करें। एक साल उनकी आलू की फसल बहुत अच्छी हुई। गाँव भर में किसी के आलू इतने अच्छे नहीं हुए थे।

उनके एक पड़ौसी ने एक दिन उनसे मुस्कराते हुए कहा: "इस बार तो आप सचमुच प्रसन्न होंगी। सारा गाँव आपके आलुओं की तारीफ कर रहा है।"

श्रीमती हिजिस ने मुँह बनाते हुए कहा: "आलू अच्छे तो हुए हैं लेकिन

अपने सुअरो को खिलाने के लिये ख़राब आलू कहाँ से लाऊँगी ?"

*
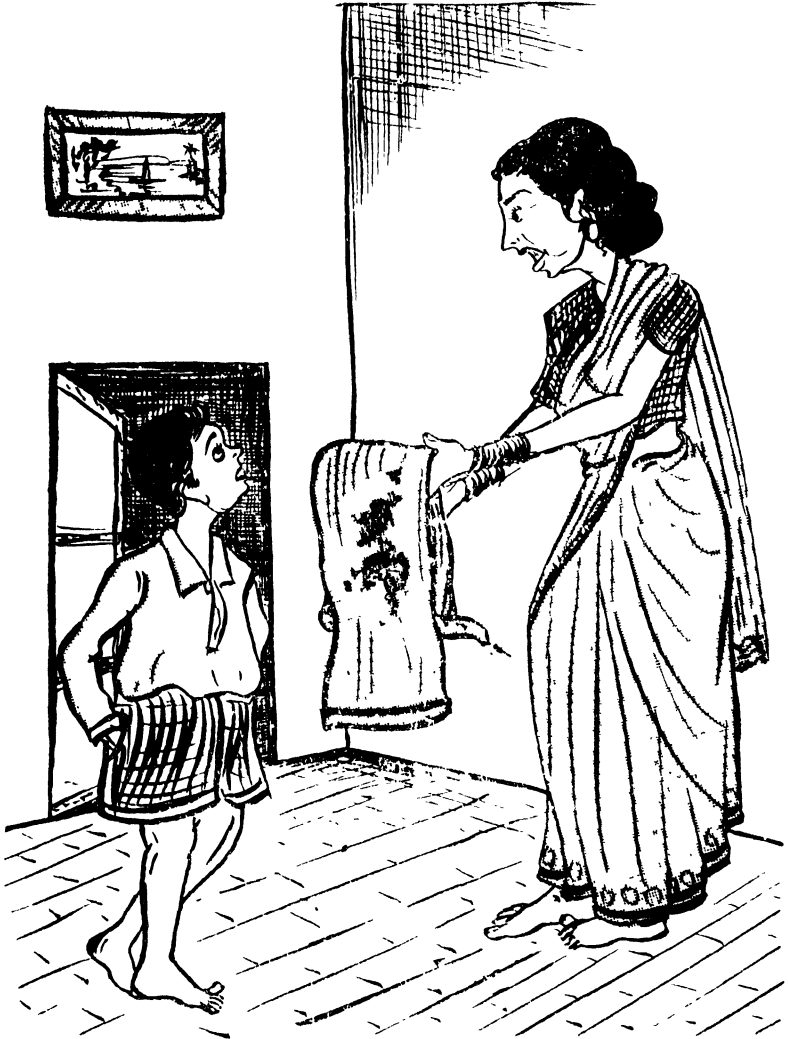
माँ— पागल ने दो पैसे की नीली स्याही बिखेर दी ।

*

अपने दोस्त के दफ्तर में घुसते ही उसे बहुत ही सुस्त और उदास देख उसने पूछा, "क्यों, क्या मामला है ? बड़े चिन्तित मालूम हो रहे हो ?"

दोस्त ने जवाब दिया, "कुछ नहीं। बस मेरी स्त्री यहाँ आ गई थी और आते ही मुझ पर बरस पड़ी। कहने लगी कि टाइप करने के लिए इतनी लड़कियाँ क्यों रखी है? सबको हटाओ और उनकी जगह आदमी रखो।"

उस ने सान्त्वना देने के ढंग से कहा, "क्या करोगे? औरतें ऐसी ही होती हैं। हटा दो फिर, और मर्दों को नौकर रखो।"

दोस्त ने जवाब दिया "तब फिर यह ऑफिस रखने से ही क्या फायदा?"

*

'रेणु, क्या तुम एक बात गुप्त रख सकती हो?'

'हाँ हाँ, लेकिन मेरा दुर्भाग्य है जिनसे मै वह बात कहूँगी वे उसे गुप्त नहीं रख सकतीं।'

*

'हे भगवान्, दुनिया में कैसे कैसे चार सौ बीस भरे पड़े हें।'

'क्यों, क्या हुआ?'

'आज सवेरे दूधवाला मुझे खोटी अठन्नी दे गया।'

'देखूं, खोटी है भी।'

'वह तो मैंने सागवाले को चला दी।'

*

'मेरे मंगेतर ने ईरान में सब जगह फैला दी है कि वह संसार की सबसे सुन्दर स्त्री से विवाह करने जा रहा है।'

'अच्छा!'

'हाँ, मेरे से सगाई होने के एक साल बाद।'

*

नरगिस— तुम्हारी उन युवतियों के विषय मे क्या राय है जो पुरुषों की नक़ल करती हे?

अहमद— वे पागल मूर्ख होती हैं।

नरगिस— तब तो नक़ल में वे सफल हो गई है।

*

मेरी (जलकर)— मुझे दुख है कि मैं कल तुम्हारी पार्टी में नहीं आ सकी।

मे (भुनकर)— क्या तुम उसमें नहीं थीं?

*

रुखसाना— नईम मेरे पीछे पागल है।

परवीन— इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई है? तुमसे मिलने से पहले ही वह पागल था।

*

'मुझे आपकी पत्नी के लिये बड़ा खेद है। आज चर्च में उन्हें खाँसी का ऐसा धसका लगा कि सब के नेत्र उनकी ओर उठ गये। अब तो उनकी तबियत ठीक है?'

'चिन्ता न करें। आज वह नया स्कर्ट पहन कर गई थी।'

*

रमा— 'तुम्हारे अन्दर बुराई क्या है?'

मधु— 'मैं अभिमान से पीड़ित हूँ। दर्पण के सामने खड़ी होकर मैं घण्टों अपनी सुन्दरता निहारा करती हूँ।'

रमा— 'यह अभिमान नहीं, कल्पना है।'

*

'एक सुन्दर नारी देखने पर तुम क्या करती हो?'

'मैं कुछ देर देखती हूं। फिर थककर शीशा मेज पर रख देती हूँ।'

*

ट्राम बिल्कुल भरी हुई थी। स्त्री ने दबी आवाज़ में अपनी सहेली से कहा— मैं चाहती हूँ कि वह आकर्षक पुरुष अपनी सीट मुझे देदे।

फौरन पांच पुरुष अपनी सीट छोड़कर खड़े हो गये।

अध्यापक और प्रोफेसर

प्रोफेसर रमाकान्त ध्यानमग्न सड़क पर चले जा रहे थे। सामने से उनका एक परिचित आ रहा था जो बहुत बातूनी था। प्रोफेसर ने उसको नहीं देखा और चलते रहे। उस व्यक्ति ने प्रोफेसर को रोक कर पूछा— ओहो! प्रोफेसर रमाकान्त हैं। आज दो दिन हो गये आपसे मिले हुए। कहिये, क्या चल रहा है?

'मैं चल रहा हूँ।' कह कर प्रोफेसर ध्यान-मग्न आगे की ओर बढ़ लिये।

*

एक बैंक का यह नियम था कि वह अपने गाहकों को चैक भुनाते समय नये नये नोट दिया करता था। एक दिन एक स्त्री चैक भुनाने आई। काउण्टर पर बैठे क्लर्क ने उसे पुराने तथा मुसे तुसे नोट दिये। वह बोला— मुझे बड़ा शोक है कि नये नोट समाप्त हो गये हैं। उसने फिर पूछा— क्या आप इन नोटों पर पाये जाने वाले जीवाणुओं से तो नहीं डरती है?

'जीवाणु! नहीं। मैं एक अध्यापिका हूँ। क्या तुम सोचते हो कि एक जीवाणु मुझे मिलने वाली तन्खा पर जीवित रह सकता है?'

*

'गुड ईवनिंग,' सामने से आती अतीव सुन्दर युवती ने नम्रता से कहा, और फिर उसी साँस में बोली— 'मुझे बड़ा दुख है। मैं आपको अपने दो बच्चों का पिता समझी थीं।'

वह व्यक्ति मुंह बाये खड़ा था, जब कि एक दूसरे व्यक्ति ने जिसने वह बातचीत सुनली थी उसको मूर्छित होने से बचा लिया। 'अपनी कल्पना को बेलगाम न दौड़ने दो। यह मान्टसेरी स्कूल में पढ़ाती हैं।'

*

एक प्रोफेसर साहब भुलक्कड़पने के लिये प्रसिद्ध थे। एक दिन वह रात के समय एक पुस्तक पढ़ रहे थे। सोते समय उन्होंने अपनी पत्नी की छोटी कैंची विरामचिह्न के स्थान पर उस पुस्तक में लगा दी और सो गये।

सवेरे को उनकी पत्नी को कैंची की जरूरत पड़ी और वह उसे खोजने लगी। प्रोफेसर साहब से भी उसने पूछा लेकिन वे नहीं बता सके।

दोपहर को प्रोफेसर साहब वह पुस्तक लेकर कॉलिज पढ़ाने गये। कक्षा के सामने उन्होंने पुस्तक खोली तो उसमें वह कैंची मिली। हैरान होकर उन्होंने कैंची हाथ में ली और खुश हो कर बोले— प्रिये, यह मिल गई है।

*

एक मास्टर जी थे। वह एक टांग से लंगड़े थे। उनको शायरी सुनने का

बहुत शौक़ था। एक दिन कक्षा में बैठे थे। उन्होंने लड़कों से कहा— मेरा शेर पूरा करो— मांग वह मांग जिस मांग ने दिल मांग लिया।

एक शरारती लड़के ने पूरा करके कहा—

टांग वह टांग जिस टांग ने दिल टांग लिया।

*

शिक्षक बुरी तरह नाराज़ हो रहा था। गुस्से मे आकर वह चिल्लाया, "इस श्रेणी में जो भी गधे हों खड़े हो जायें।"

क्लास में कुछ देर तो खामोशी रही और फिर एक लड़का चुपचाप अपनी जगह पर खड़ा हो गया।

मास्टर ने हैरान होकर पूछा, "क्या तुम गधे हो ?"

"नहीं," लड़के ने उत्तर दिया।

"फिर खड़े क्यों हुए ?" शिक्षक ने पूछा।

"आपको अकेला खड़ा देखकर सहानुभूति हो आई।"

*

रात्रि के तीन बजे, एकाएक फोन की घण्टी बज उठने से, प्रोफेसर की नींद खुल गई। फोन के दूसरे सिरे पर एक महिला बोल रही थी। उसने कहा— "आपका कुत्ता बड़ा बदतमीज़ है। उसके भौंकते रहने से मेरी नींद हर रात हराम हो जाती है— पल भर भी आंख नहीं लगती।" प्रोफेसर ने उक्त महिला से क्षमा याचना करते हुए उसका पता नोट कर लिया।

दूसरे दिन रात्रि के दो बजे उक्त महिला फोन की घण्टी सुनकर उठ बैठी— फोन के दूसरे सिरे पर प्रोफेसर था।

"महाशया," प्रोफेसर ने कहा, "आपकी कल की कृपा के लिये मैं आभारी हूँ। हाँ, एक बात मैं आपको बताना भूल गया था कि मेरे पास कोई भी कुत्ता नहीं है।"

*

एक सरकारी स्कूल में हर पाँचवें वर्ष नया हैडमास्टर आता था। इस बार जब हैडमास्टर बदला गया तो उसको विदाई पार्टी दी गई। स्कूल के सभी विद्यार्थी और अध्यापक वहाँ उपस्थित थे।

एक बूढ़े अध्यापक ने हैडमास्टर की ओर देखते हुए पूछा, 'न जाने आपकी जगह आने वाले सज्जन कैसे हों ?'

हैडमास्टर ने नम्रता से उत्तर दिया, 'आप चिन्ता न करें। नया आने वाला व्यक्ति मुझ से कहीं अच्छा होगा।'

बूढ़े अध्यापक ने उत्तर दिया, 'मुझे विश्वास नहीं होता, साहब। पिछले

पांच हैडमास्टरों से तो मेरा वास्ता पड़ता आया है— हर आने वाला पिछले से बुरा होता था।'

*

एक प्रोफेसर— तुम जीवन-यापन के खर्चे को कैसे निकालते हो?

दूसरा प्रोफेसर— आजकल का मुख्य तरीक़ा यह है कि अपनी सारी आय जोड़ लो तथा उसमें शत प्रतिशत और मिला दो।

*

एक प्रोफेसर को स्वयं अपने से बातें करने की आदत थी। इसी कारण उसके मित्र उसका मज़ाक़ उड़ाया करते थे। एक दिन एक मित्र ने उससे पूछा, 'मित्र, तुम ऐसा क्यों करते हो? जान कर करते हो या अनजाने में?'

प्रोफेसर ने एकदम कहा, 'मैं जान कर ही यह सब करता हूँ। पहली बात तो यह है कि मैं एक बुद्धिमान व्यक्ति की बात सुनना पसन्द करता हूँ। दूसरे मैं एक बुद्धिमान से ही बात करना पसन्द करता हूँ।'

*

दर्शन शास्त्र का एक बहुत बड़ा प्रोफेसर घर से कॉलिज के लिये निकला। अपने विचारों में मग्न वह कॉलिज के स्थान पर एक पागलखाने में जा पहुँचा। जब उसे अपनी ग़लती मालूम हुई तो पागलखाने का चौकीदार हँस रहा था।

उसने बड़ी संजीदगी से कहा— 'नहीं, यह कोई हँसने की बात नहीं। पागलखाने और कॉलिज में कोई अन्तर नहीं।'

चौकीदार ने उत्तर दिया— "एक अन्तर बड़ा महत्त्वपूर्ण है साहब! पागलखाने से निकलने के लिये एक व्यक्ति के लिये आवश्यक है कि उसमें काफी सुधार हुआ हो।"

*

एक वृद्ध महिला का परिचय एक डाक्टर साहब से करवाया गया जो किसी विश्व-विद्यालय में प्रोफेसर भी थे। वृद्ध महिला इस पशोपेश में पड़ गई कि उन को डाक्टर कह कर पुकारे या प्रोफेसर।

वृद्ध महिला ने डाक्टर से पूछा, 'मेरी समझ में नहीं आता कि मैं आप को क्या कह कर पुकारूं— डाक्टर कहूँ या प्रोफेसर।'

डाक्टर ने हँसते हुए कहा, 'यह भी कोई चिन्ता की बात है— आप मुझे जिस नाम से चाहें पुकार सकती हैं। कुछ लोग तो मुझे बूढ़ा बेवकूफ भी कह कर पुकारते हैं।'

वृद्ध महिला ने संकोच दिखाते हुए कहा, 'पर वे तो आप से बहुत अच्छी

तरह परिचित होगे ।'

*

खीजे हुए प्रोफेसर ने क्लास से पूछा— "क्या तुम लोग मुझ पर हँस रहे हो ?"

"जी, नहीं," सबने एक साथ उत्तर दिया ।

"तो," अपनी बात पर ज़ोर देते हुए प्रोफेसर ने कहा, "इस कमरे में और हँसने की चीज़ ही क्या है ?"

*

शिक्षक— क्या तुम अपने को शिक्षक समझते हो ?

छात्र— नहीं तो ।

शिक्षक (क्रोध से)—तो मेरी अनुपस्थिति में गधे की तरह क्यों रेंकते हो ?

*

क्लास में पंडित जी लड़कों को समझा रहे थे कि भगवान हम सब का पिता है ।

एक लड़का खड़ा होकर बोला, "पंडित जी, मेरे पिताजी कह रहे थे कि हमारे पूर्वज बन्दर थे ।"

"मुझे तुम्हारे परिवार की बातों से कोई मतलब नहीं," पंडित जी ने उसे बैठाते हुए कहा ।

*

एक स्कूल इन्सपैक्टर एक क़स्बे में एक छोटे स्कूल का निरीक्षण करने गया। जिस कक्षा का वह निरीक्षण कर रहा था, उसके पास वाली कक्षा से बहुत शोर आ रहा था। जब वह अधिक देर न सह सका, तो उठकर उस कक्षा में जा पहुँचा। वहाँ अन्य लड़कों से कुछ अधिक लम्बा लड़का सब से ज्यादा बातें बना रहा था। उसका कान पकड़कर वह दूसरी कक्षा में ले आया और एक कोने में खड़ा कर दिया।

लगभग दस मिनट बाद कुछ लड़के दरवाज़े में से झाँक कर बोले — "अब तो हमारे मास्टर जी को छोड़ दीजिये, इन्सपैक्टर साहब।"

*

उस वर्ष कॉलिज में विशेष प्रोफेसर को निमन्त्रित किया गया था। जब अपना काम समाप्त करके प्रोफेसर वहाँ से जाने लगा तो कॉलिज की मैनेजिङ्ग कमेटी ने उसकी सेवाओं के पुरस्कार-स्वरूप कुछ धन देना चाहा। लेकिन प्रोफेसर ने धन लेने से इन्कार कर दिया। कहा— "इसे आप कॉलिज के लिये किसी और अच्छे काम पर लगा दें।"

कुछ सोच विचार के बाद कमेटी ने प्रोफेसर की सलाह मान ली। प्रोफेसर ने पूछा कि वह रुपया किस काम में लगाया जायगा।

कमेटी ने जवाब दिया— "अगले वर्ष किसी अच्छे प्रोफेसर को बुलाने के लिये।"

*

"मैं बड़ा होकर मास्टर बनूंगा।" चुन्नू ने अपने पिता जी से कहा।

"तुम्हें उसके लिये सख़्त मेहनत करके बहुत कुछ पढ़ना पड़ेगा।"

"नहीं, पढ़ने की ज़रूरत नहीं। मास्टर केवल सवाल ही तो पूछते हैं।"

*

शार्टहैंड का शिक्षक (शार्टहैंड के गुणों का बखान करते हुए)— "कहा जाता है कि प्रसिद्ध कवि श्रीमोहन ने अपनी प्रसिद्ध कविता 'रानी' सात साल में लिखी थी। लेकिन आप सोचिये कि अगर उन्हें शार्टहैंड में लिखना आता होता तो कितना समय लगता। मेरे एक शिष्य ने 'रानी' की नक़ल शार्टहैंड में एक घंटे से भी कम समय में कर डाली थी।"

*

एक अध्यापक से पूछा गया कि वह अपने शिष्यों को क्या पढ़ाते हैं। अध्यापक ने बड़े आराम से उत्तर दिया— "पहले तो मैं उन्हें बताता हूँ कि मैं क्या बताने वाला हूँ। फिर जो मुझे बताना होता है, वह उन्हें बता देता हूँ। और

अन्त में मैं उन्हें यह बताता हूं कि मैंने उन्हें क्या बताया है।"

*

किसी मास्टर ने एक लड़के से एक सवाल पूछा। सवाल पेचीदा था। उसकी समझ में नहीं आया। दूसरे लड़के ने उसके कान में चुपके से कहा— "मास्टर गधा है।"

मास्टर (दूसरे लड़के से)— "तुम उसे क्यों बताते हो? वह खुद ही समझकर बतायगा।"

*

प्रोफेसर— आज मैं अपना छाता ले जाना भूल गया।

पत्नी— यह तुम्हें कब पता चला?

प्रोफेसर— जब वर्षा बन्द होने पर उसे बन्द करने के लिये मैंने हाथ ऊपर उठाया।

*

प्रोफेसर अपने अध्ययन-कक्ष में बैठा आवश्यक कार्य में लीन था जब उसकी पत्नी क्रोध में भरी अन्दर आई। 'तुमने देखा जी, इस अखबार ने तुम्हारी मृत्यु का समाचार छाप दिया है?'

'क्या कहा? मुझे याद दिलाना एक मृत्यु-लेख मैं भी लिखकर भेज दूंगा।'

*

बहुत व्यस्त प्रोफेसर नाई की दुकान में हाँफता हुआ घुसा— रमज़ानी, मेरे बाल काट देना।

नाई ने कहा— कृपया अपना टोप तो उतार लीजिये।

प्रोफेसर ने फौरन टोप उतार लिया। फिर इधर उधर देख कर बोले— पर यहाँ कोई स्त्री तो मौजूद है नहीं।

*

डाक्टर— आपके घर एक बच्चा आया है।

अध्यापक— आप उससे कह दीजिये कि मैं शुक्रवार की सन्ध्या से पहले नहीं मिल सकता।

*

प्रोफेसर घर की कई चीज़ें ख़रीद कर लाया था। बस में जगह नहीं थी। सो उसे डण्डा पकड़कर खड़ा रहना पड़ा। उसका एक हाथ डण्डे पर था और दूसरा कई बण्डलों को थामे था जब कण्डक्टर उसके पास आया। कण्डक्टर ने पूछा— कहिये श्रीमान्, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

प्रोफेसर बोले—तुम इस डण्डे को पकड़ लो जब तक मैं पैसे बाहर निकालूं।

*

प्रोफेसर—देखो रामू, बाहर जो आदमी खड़ा है उससे तुमने कह दिया क्या कि मैं घर पर नहीं हूँ?

रामू—सरकार, कह तो दिया पर वह विश्वास नहीं करता।

प्रोफेसर—ओह, तो मुझे ही जाकर कहना पड़ेगा। "मेरी बात तो वह मानेगा।

*

मास्टर साहब लड़कों को पढ़ा रहे थे और कह रहे थे, "कभी क्रोध मत करो। कभी तेजी में मत आओ। हमेशा अपने को क़ाबू में रखो। बिना घबराये हुए शान्त भाव से प्रत्येक कठिनाई का सामना करो। मुझे देखो, मैं कभी किसी
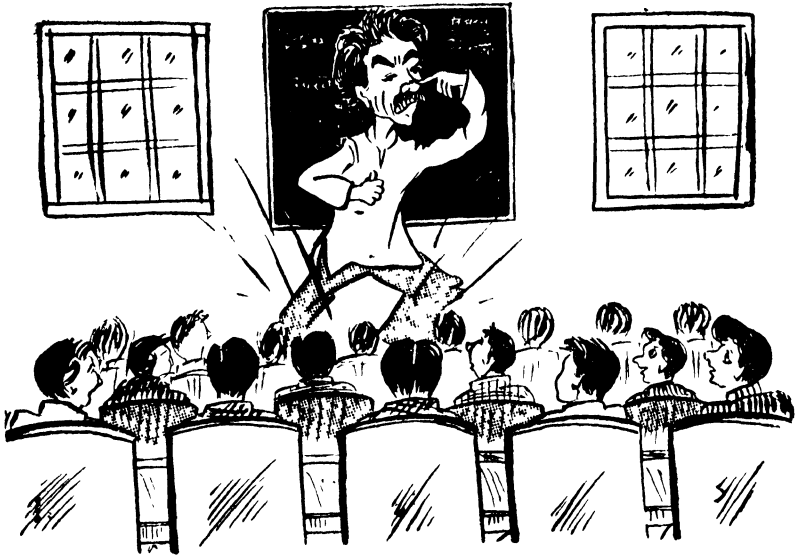
चीज़ के लिये परेशान नहीं होता। उदाहरण के तौर पर देखो, मेरी नाक पर अभी मक्खी आकर बैठी है। क्या मैं परेशान होकर उसे उड़ा रहा हूँ? कदापि नहीं। मैं बहुत गम्भीरता और आहिस्ते से हाथ ऊपर ले जाता हूँ और धीरे से उसको ······ अरे, बाप रे बाप, यह तो ततैया था। काट खाया कम्बख्त ने।" मास्टर साहब ने चिल्ला कर कहा।

*

जब उन्होंने डूबते प्रोफेसर को बाहर निकाला तो वह उन पर बरस पड़ा—अजीब आदमी हैं आप। जब मुझे ध्यान आया कि मैं तैरना जानता हूँ तभी आपने मुझे बाहर निकाल लिया।

दार्शनिक

दर्शन का एक प्रोफेसर किसी दूसरे प्रोफेसर के घर मिलने गया। बातें करते करते रात के दो बज गये। तंग आकर मेज़बान ने मेहमान से कहा—'आपको बिदा करते मुझे बड़ा दुःख है, पर कल ६ बजे मुझे एक कक्षा लेनी है।'

'वाह, मैं तो समझा था तुम मेरे घर आये हुए हो।' जम्हाई लेकर उठते हुए दार्शनिक बोला।

*

अखबार पढ़ने के एक धत्ती ने एक प्याले चाय के लिए आवाज़ लगाई। उसकी पत्नी बोली— "चाय! क्या आज दफ्तर नही जाओगे? जाने का वक्त हो गया।"

"दफ़्तर! मैं तो समझा था कि मै दफ़्तर में ही बैठा हूँ।"

*

एक पार्टी हो रही थी। उसमें एक दार्शनिक भी था। थोडी देर में वह बोला, "यह तो आप सब लोग जानते ही हैं कि मैं दार्शनिक हूँ, और मैं भी यह जानता हूँ कि आप सब मुझसे सवाल करना चाहते हैं। अच्छा, तो पहले कौन सवाल पूछेगा?"

एक व्यक्ति खड़ा हुआ और बोला, "क्या यह सच है कि दार्शनिक बड़े भुलक्कड़ होते हैं और उन्हें अपने होशहवास का भी पता नहीं रहता?"

दार्शनिक इस पर बिगड़कर बोला, "यह एक सफ़ेद झूठ है। दार्शनिकों की याददाश्त बिल्कुल ठीक होती है, और उन्हें अपने होशहवास का हमेशा ध्यान रहता है। आपका ख्याल है कि मैं यह नहीं जानता कि मैं इस समय कहाँ हूँ और क्या कर रहा हूँ? और कल तक मुझे यह याद नहीं रहेगा कि मैंने आज दिन भर क्या किया? बिल्कुल गलत बात है। हाँ, साहब, कोई दूसरा सवाल।"

इस पर एक और व्यक्ति खड़ा हुआ और बोला, "क्या यह सच है कि दार्शनिक बड़े भुलक्कड़ होते हैं और उन्हें अपने होशहवास का भी पता नहीं रहता?"

दार्शनिक बोला, "मैं तो जानता ही था कि यह सवाल पहले या पीछे यहाँ ज़रूर पूछा जायगा। हाँ, तो ······।"

*

दार्शनिक (रेल में जल्दी से सवार होकर)— भाग्य अच्छे थे, जो गाड़ी मिल गई। (गाड़ी छूटने पर अपनी चीजों को देख-भाल कर) धन्य ईश्वर! सब ठीक है। यही मेरी पहली यात्रा है, जिसमें मैं कुछ नहीं भूला हूँ।

एक मुसाफिर (जो उसी स्टेशन से चढ़ा था)— कहिए, दार्शनिक महोदय, वह स्त्री कौन थी जो आपके साथ बाज़ार में घूम रही थी?

दार्शनिक (चौंक कर)— वह मेरी स्त्री थी। अरे! उसे तो मैं हलवाई की दूकान पर ही खड़ी छोड़ आया। हाय, हाय, अब क्या करूं?

*

दो दार्शनिक मोटर पर घर वापिस आ रहे थे। मोटर तेज़ चलते ही दोनों हवा के झोंकों का मज़े में आनन्द लूटने लगे। इतने में मोटर एक खम्भे से टकरा गई। एक चौंक पड़ा और बौखला कर बोला, "भाई, ज़रा सम्भाल कर।"

दूसरा— "अरे! मैं इस ख्याल में था कि तुम चला रहे हो।"

*

एक दार्शनिक महोदय अपने दो साथियों सहित पैदल यात्रा को निकले जिनमें से एक नाई था और दूसरा गंजा था। रास्ते में एक सुनसान जंगल में पड़ाव डाला तो आपस में तय हुआ कि पहले नाई, फिर दार्शनिक और फिर गंजे महोदय बारी-बारी से पहरा देंगे और शेष दो सोते रहेंगे। इसी निश्चय के अनुसार दार्शनिक और गंजे सज्जन तो सो गये और नाई महाशय पहरा देने लगे।

उस सुनसान रात में कुछ ही देर में नाई ऊब गया। लेकिन तभी उसकी नज़र दार्शनिक की बढ़ी हुई हजामत पर पड़ी और उसने उस्तरा निकाल कर उनके बाल मूंडने प्रारम्भ किये। जब तक यह क्षौर कर्म समाप्त हुआ तब तक नाई की ड्यूटी का समय भी पूरा हो गया और वह दार्शनिक महोदय को पहरा देने के लिए जगाकर खुद सोने चला गया।

दार्शनिक कुछ देर इधर उधर टहलते रहे। फिर यकायक उनका हाथ अपने सिर पर जा पहुंचा। कहाँ तो वर्षों के बढ़े हुए बाल और कहाँ एकदम सफाचट। कुछ देर सोचकर बोले, "यह नाई भी कितना बेहूदा है। उसके बाद जगते रहने की बारी थी मेरी और जगा दिया है बेवकूफ ने गंजे को। ऐसे लोगों को यात्रा में साथ रखना भी भारी मुसीबत है।"

*

दार्शनिक— आज रास्ते में किसी ने मेरी जेब से बटुआ निकाल लिया।

पत्नी— जब चोर ने तुम्हारी जेब में हाथ डाला था तो तुम्हें पता न लगा?

दार्शनिक—— लगा तो था, पर मैं समझा कि वह मेरा अपना हाथ है।

*

भुलक्कड़ पति—— अब बताओ भुलक्कड़ कौन है? तुम बस में अपना छाता छोड़ कर चली आ रही थी, मैं उसे तो ले ही आया। साथ ही अपना छाता भी लाना न भूला।

श्रीमती जी— मगर श्रीमान, घर से तो हम में से कोई भी छाता ले कर नहीं चला था।

*

बेचारे जटाजूट-धारी दार्शनिक नंगे भोले बाबा शंकर को सागर ने गरल दिया तथा पीताम्बर-धारी भड़कीले विष्णु को अपनी पुत्री लक्ष्मी।

*

श्रीमान जी के भुलक्कड़पने से श्रीमती जी बहुत तंग आ चुकी थीं। कोई सात दिन पूर्व, श्रीमती जी ने पत्र उन्हें दिया था और कहा था— देखिये, यह पत्र बहुत आवश्यक है, अवश्य ही डाक में डाल दीजियेगा, कहीं जेब में ही न रह जाये। श्रीमान जी ने बहुत विश्वास दिलाया और चले गये। घर लौटे तो पत्नी ने पत्र जेब ही में पाया। पत्नी बहुत लाल पीली हुई। श्रीमान जी ने हाथ जोड़ कर मनाया परन्तु अगले दिन भी खत डालना भूल गये। यही क़िस्सा ६–७ रोज़ से चल रहा था।

आज जब श्रीमान जी घर से निकलने लगे तो श्रीमती जी ने कहा, 'आज तो पत्र अवश्य ही डाल दीजिये, नहीं तो अच्छा नहीं होगा।' रोज़ की तरह

आश्वासन देकर श्रीमान जी घर से निकल पड़े।

सड़क पर चलते चलते उन्हें इतने काम याद आते गये कि वह पत्र के सम्बन्ध में बिल्कुल ही भूल गये। अचानक किसी व्यक्ति ने उनकी पीठ पर हाथ रखा।

उन्होंने पीछे मुड़कर देखा। कोई अजनबी था। अजनबी ने कहा— महाशय, पत्र डालना न भूलें। अजनबी यह कहकर आगे चल दिया। श्रीमान जी को अचानक पत्र की याद आई और वह खत डालने चल दिये। अभी वह डाकखाने के पास ही पहुँचे थे कि एक और अजनबी ने उनसे कहा— मान्यवर, पत्र अवश्य डाक में छोड़ दीजिये। श्रीमान जी ने पत्र डाक में छोड़ दिया और चलने लगे।

एक तीसरा व्यक्ति मुस्कराता हुआ आया और उनसे बोला— आप खत डालना न भूलें।

श्रीमान जी ने हैरान होकर कहा— महाशय, पत्र तो मैंने डाल दिया है पर आप मुझे इतना बताने की कृपा करें कि आप को इस पत्र के विषय में मालूम कैसे हुआ।

उस व्यक्ति ने हँसते हुए, श्रीमान जी के कोट के पीछे सिया हुआ एक काग़ज़ का टुकड़ा उतार कर उनके हाथ में दे दिया। उस पर लिखा

था— कृपया इस व्यक्ति को यह याद करवा दीजिये कि उसे एक पत्र डाक में छोड़ना है ।

*

एक बार एक दार्शनिक किसी नाई की दुकान पर हजामत करवा रहा था। अचानक कोई सड़क पर चिल्लाया— "मियाँ अब्दुल साहब, आपके मकान में आग लग गई।"

वह तड़प उठे। हज्जाम को परे ढकेला। गले का सफेद कपड़ा एक ओर दे मारा। चेहरे का साबुन एक और साहब पर फेंका। दो ग्राहकों से बड़ी बुरी तरह टकराए, सड़क पर कूदे, फिसले, गिरे, फिर उठे, एक दही-बड़े वाले से टकराए, उछलकर भागे, कुछ दूर जा कर रुके और शर्मिन्दा होकर बोले, "ओह! मैं भी क्या हूँ? मेरा नाम अब्दुल कहाँ है?"

*

दिल्ली शहर की एक प्रसिद्ध सड़क पर एक मोची ने चमड़े की दुकान खोली। उसने सोचा कि दुकान के सामने नाम की एक अनोखी तख़्ती टाँगनी चाहिए जिस से ग्राहकों का मन दुकान की ओर खिचे। मोचीराम ऐसी अनोखी तख़्ती की खोज मे बहुत समय तक पड़े रहे, पर कोई नये ढग की तख़्ती उनके ध्यान में नहीं आई। तब आपने दुकान के सामने एक खम्भा गाड़ा और उसके ऊपरी सिरे में एक छेद कर उसमें बकरे की पूंछ इस तरह अटका दी कि उसका झब्बा नीचे की ओर झूलता रहे। इतना कर मोचीराम मन ही मन लड्डू खाते हुए अपनी करामात का नतीजा देखने के लिए दुकान पर जा डटे।

घंटे भर बाद वहाँ एक महाशय आए। खम्भे पर नज़र पड़ते ही वे ठिठक कर खड़े हो रहे। चट से आपने चश्मा लगाया और बड़ी गम्भीरता से पूंछ की ओर ताकने लगे। इस तरह पूंछ की ओर ताकते ताकते उन्हें घंटों बीत गए। इस से मोची को बड़ा अचरज हुआ। अन्त में वह अपने को न रोक सका। बड़ी उत्कण्ठा से वह उन महाशय के पास आया और बोला— "आदाब अर्ज़!"

महाशय— "तस्लीमात अर्ज़।"

मोची— "हुज़ूर क्या चमड़ा ख़रीदने की इन्तजारी में हैं?"

महाशय— "नहीं।"

मोची— "तो शायद बेचने की इन्तजारी में हैं?"

महाशय— "नहीं।"

मोची— "शायद आप चुंगी के दारोग़ा होंगे?"

महाशय— "नहीं।"

मोची— "तो शायद आप किसी वकील बैरिस्टर के मुंशी होंगे ?"

महाशय— "नहीं।"

मोची— "मालूम होता है आप अभी देहात से चले आ रहे हैं ?"

महाशय— "नहीं।"

मोची— "तब फिर आप कौन हैं ?"

अब उन महाशय ने पूंछ पर से नज़र हटाई और कहा— "मै एक बड़ा भारी फिलॉसफर हूँ।"

मोची— "तो फिलॉसफर साहब, आप इस तरह यहाँ खड़े खड़े क्या कर रहे हैं ?"

फिलॉसफर— "मै बड़ी देर से यह जानने की तलाश में हूँ कि इस खम्भे के उस छोटे से छेद मे से पूरा बकरा कैसे भीतर चला गया और यह उसकी पूछ भीतर न जाकर बाहर ही क्यों अटक रही है ?"

*

एक प्रोफेसर महोदय शाम की चाय पीकर आराम से बैठे थे। उनकी पत्नी जिसके विवाह को अभी तीन महीने ही हुए थे, पास ही बैठी स्वेटर बुन रही थीं। बुनते बुनते वह बोलीं, "मै आज डाक्टर के पास गई थी।"

प्रोफेसर महोदय दो मिनट तक कुछ सोचते रहे। फिर बोले, "अच्छा, डाक्टर से मिलने गई थीं ! कैसी तबियत है उनकी ?"

*

एक दार्शनिक महाशय रेल में सफर कर रहे थे। रास्ते मे टिकट चैकर ने

जो उन्हे अच्छी तरह जानता था, उनसे टिकट दिखाने को कहा। आप बोले— "ढूँढता हूँ।"

थोड़ी देर में जब टिकट नहीं मिला तो टिकट चैकर यह कहता हुआ दूसरे डिब्बे में चला गया कि लौटती बार देख लूँगा, तब तक ढूंढ रखिये।

थोड़ी देर बाद टिकट चैकर लौट कर आया। उस समय तक भी दार्शनिक महाशय को टिकट नहीं मिला था। तब टिकट चैकर ने उनसे कहा— "महाशय, नहीं मिलता तो रहने दीजिये, कोई हर्ज नहीं।"

तब आप बोले— "वाह, हर्ज क्यों नहीं। मुझे उसमें यह देखना है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ?"

*

एक भुलक्कड़ महाशय एक नगर में पहुँचकर एक बड़े होटल में ठहरे। अपनी भूलने की आदत से वे काफी परेशान थे, नुक़सान भी उठा चुके थे, अतएव होटल से बाहर निकलते समय उन्होंने अपने कमरे के नम्बर को रटना प्रारम्भ कर दिया। दो एक घण्टे घूमने के पश्चात् जब वे वापिस लौटे तो यह जानकर बहुत खुश हुए कि उन्हे अपने कमरे का नम्बर ठीक ठीक याद था। पर ज्योंही १० नम्बर के कमरे में पहुँच कर उन्होंने दरवाज़ा भीतर खिसकाया एक नवदम्पति को अन्दर विराजमान देखा। अब उनके क्रोध का पारावार न रहा, गर्जकर बोले, 'मेरे कमरे में मेरी आज्ञा के बग़ैर घुसकर बैठने का क्या मतलब है? मै आप लोगों को अभी पुलिस में देता हूँ।'

'ज़रा होश में बातें करो, यह हमारा कमरा है।' नवदम्पति ने भी क्रुद्ध होकर कहा।

'मै अभी मैनेजर से रिपोर्ट कर आपको निकलवाता हूँ।' और भुलक्कड़ महाशय मैनेजर के दफ्तर की ओर चले। पर वहाँ पहुंच कर क्या देखते है कि दफ्तर ही नदारद है। अब उनकी आँखे खुलीं; वे अपने होटल का नाम भूलकर दूसरे होटल में घुस गए थे।

*

फिलॉसफी के प्रोफेसर कॉलिज से बाहर निकल ही रहे थे कि एक छात्रा ने उन्हे रोक कर कहा, 'प्रोफेसर साहब, आपने उल्टी हैट पहन ली है। पीछे का हिस्सा आपने आगे लगा लिया है।'

'तुम पागल हो। तुम्हें यह कैसे मालूम मै किस दिशा मे जाने वाला हूँ?' फिलॉसफर-प्रोफेसर ने उत्तर दिया।

*

'कार कहाँ है?' प्रोफेसर की पत्नी ने प्रोफेसर से पूछा।

'क्या कार मैं ले गया था?' प्रोफेसर को आश्चर्य हुआ।

'हाँ, आप ही तो ले गये थे।'

'तब तो बड़ा गड़बड़ हो गया। जब मै पोस्ट ऑफिस पर उतरा तो ड्राइवर को धन्यवाद देते समय देखा कि वह नदारद था।'

*

एक भुलक्कड़ ने एक दिन डाक्टर दोस्त को टेलीफोन करके बुलाया। गपशप करने के पश्चात् डाक्टर उठ खड़ा हुआ और चलते हुए बोला, "कहो दोस्त! भाभी तो मज़े में हैं।" तब उस भुलक्कड़ को ख़्याल आया और वह घबरा कर बोला, "अरे, वह तो छत से गिर पड़ी है और तभी से बेहोश है।"

*

एक प्रसिद्ध दार्शनिक बाज़ार में से गुज़र रहा था। एक लड़का, बूट पालिश का सामान लिए हुए उसके सामने आ खड़ा हुआ और नम्र स्वर में बोला, "साहब, आपका बूट चमका दूँ।"

दार्शनिक महोदय ने देखा— लड़के के पास कपड़े बहुत गन्दे थे और मालूम पड़ता था कि उसने अपना मुँह भी काफी दिन से नही धोया था।

दार्शनिक महोदय कुछ सोचकर बोले, "मुझे बूट तो नहीं चमकवाना। हाँ, अगर तुम अपना मुँह धोकर चमका लाओ तो मै तुम्हें आठ आने दे सकता हूँ।"

यह बात सुनकर वह बालक उछल कर मुंह धोने उठा और पलक मारते ही मुँह धोकर आ खड़ा हुआ।

दार्शनिक ने खुश होते हुए कहा, "ठीक है। यह लो आठ आने।"

लड़के ने मुँह बिचका कर कहा, "पैसे मुझे नही चाहियें। इन्हें अपने ही पास रखो और इनसे अपने बाल कटवाना।"

*

"आज सुबह मै कहीं अपनी बेंत भूल गया।"

"तुम्हें यह कब मालूम हुआ कि तुम अपनी बेंत भूल गये हो?"

"जब एक कुत्ता मेरे पीछे लगा और मैंने उसे भगाने को हाथ उठाया तो देखा बेंत ही नदारद है।"

*

पत्नी ने अपने भाई को चिट्ठी लिखी थी। पति ने, जो अपने भुलक्कड़पने के लिये प्रसिद्ध था, पूछा— "इस पर एक सप्ताह आगे की तारीख़ डालने से क्या फायदा होगा?"

"यह चिट्ठी डालने के लिये तो मैं तुम्हें ही दूगी।"

*

एक प्रोफेसर साहब अपनी घड़ी हमेशा अपने 'वेस्ट कोट' की दाहिनी जेब में रखा करते थे। एक दिन जब वह पढ़ाने क्लास में आये और दाहिनी जेब में हाथ डाला तो ज्ञात हुआ कि घड़ी नदारद है। तब उन्होंने सब लड़कों की ओर देखकर एक लड़के से कहा—– तुम हमारे घर दौड़कर जाओ और घड़ी ले आओ।

जैसे ही वह लड़का उनकी हुक्म की तामील करने के लिये जाने लगा, वैसे ही प्रोफेसर साहब ने अपनी बाई जेब में हाथ डाला और उसमें से घड़ी निकाल
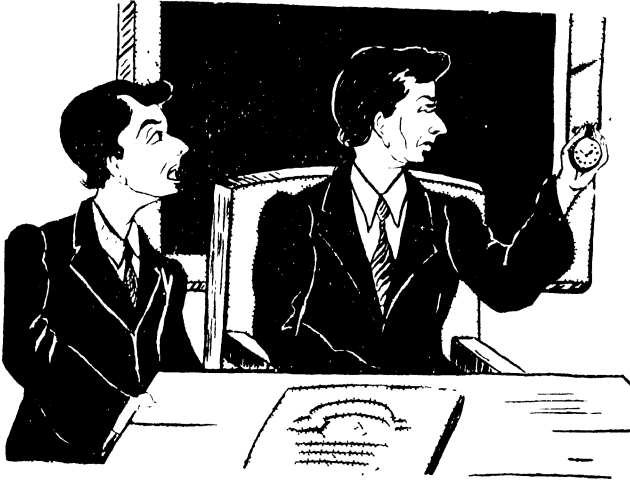
कर कहा— देखो, इस वक्त दस बजकर दस मिनट हैं और तुम ठीक साढ़े दस बजे लौट आना। खबरदार, देर न लगाना।

*

एक भ्रांतचित व्यक्ति एक कम्पनी को कुर्सियों का आर्डर देने लगा। उसने कम्पनी को पत्र लिखा— "कृपया दो कुर्सियाँ शीघ्र भेज दें।"

पत्र समाप्त करके उसने महसूस किया कि दो कुर्सियाँ मंगवाना तो बेकार है, एक ही काफी थी। सो उस पत्र को फाड़ कर वह नया पत्र लिखने लगा। लेकिन तब तक एक बार फिर उसका विचार बदल चुका था। उसने दूसरे पत्र में भी यही लिखा— "कृपया दो कुरसियाँ शीघ्र भेज दें।"

यह पत्र लिखकर भी उसने फाड़ दिया और एक नया पत्र लिखना शुरू किया— "कृपया एक कुर्सी भेज दें।"

यह पंक्ति लिखकर नीचे यह लिख दिया— "नोट :— इसके साथ एक और भी भेज दें।"

और यही पत्र उसने भेज दिया।

*

नवविवाहित दार्शनिक— श्रीमती जी, आप मेरे सोने के कमरे में क्या कर रही हैं ?

श्रीमती जी— बात यह है, मुझे यह मकान पसन्द है, यह कमरा पसन्द है और आप तो बहुत ही पसन्द हैं। मैं आपकी पत्नी हूँ।

*

दोस्त— रमेश, मैंने सुना है तुम्हारे जुड़वाँ बच्चे हुए हैं। लड़के या लड़कियाँ ?

दार्शनिक— भई, मेरे विचार से एक लड़का है और दूसरी लड़की। पर इससे उलटा भी हो सकता है।

*

रिपोर्टर— आप किस चीज़ पर खोज कर रहे हैं।

दार्शनिक— मेज़ पर अपने चश्मे की।

*

एक दार्शनिक अपने कमरे के बाहर निकला। उसका एक मित्र उससे मिलने आने वाला था। उसके लिये वह एक चिट द्वार पर पिन कर गया कि वह बाहर जा रहा है और १५ मिनट में लौट आयगा। १५ मिनट बाद लौट कर आने पर उसने परची लगी देखी और अपनी इन्तज़ार करने बाहर बैठ गया।

*

पत्नी— मैंने कहा था कि कुत्ते को बाहर सुला आओ। तुम मेरी सुनते ही नहीं।

दार्शनिक— प्रिये, मैं सुला तो आया। कुत्ता यहाँ है ? तो मुन्नू को सुला आया हूंगा।

*

दार्शनिक— सिर में दर्द की, कुछ बुखार की, तीन दवाइयों की एक दवाई, व्यापारिक रेडियो से ब्राडकास्ट जो होती है, वही वही ······

कैमिस्ट— क्या, सैरीडोन ?

दार्शनिक— हाँ, यही जो तुमने नाम लिया है। ४ गोलियाँ दे दो।

*

"प्रोफेसर, तुम आज यह भेंट कहाँ ले जा रहे हो ?"

"डाक्टर, बात यह है कि आज मेरी पत्नी ने बहुत दिनों बाद मेरा आलिंगन किया और चुम्बन दिया। सो या तो उसका जन्मदिन है या हमारे विवाह की वर्षगांठ है।"

*

दार्शनिक मेज से उठ कर जाने लगा। वेटर ने उसे टोका।

दार्शनिक बिगड़ कर बोला, "क्या बात है? मैं तुम्हें टिप कर चुका हूँ।"

वेटर ने उत्तर दिया, "श्रीमान्, आप खाना तो मेज़ पर ज्यों का त्यों छोड़ चले हैं?"

*

दार्शनिक, जो गोल घूमने वाले लोहे के द्वार से निकल रहा था, झुंझला कर बोला, "हे भगवान, मुझे ध्यान नहीं रहा कि मैं अन्दर जा रहा हूँ या बाहर निकल रहा हूँ।"

*

एलिस (पत्नी) — प्रियतम, तुम्हें ध्यान है हमारा तुम्हारा सम्बन्ध हुए पच्चीस वर्ष बीत चुके हैं?

विलियम (पति)— पच्चीस वर्ष! तुम्हें मुझे पहले याद दिलाना चाहिये था। खैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, हमें शादी कर लेनी चाहिये।

पण्डित, मुल्ला, पादरी

एक आर्यसमाजी उपदेशक को बहुत तेज अचार खाने की आदत थी। उपदेशों के लिये घूमते समय उस तरह का अचार न मिलने के कारण उसे वह अपने साथ रखा करते थे।

एक दिन वह एक होटल में अपने अचार की शीशी सामने रखे खाना खा रहे थे। तभी एक अजनबी आया और वह भी उसी मेज़ पर बैठ कर खाना खाने लगा। उसने उपदेशक से अचार खाने को माँगा। उपदेशक ने नम्रतापूर्वक अचार उसे दे दिया। उसके मुँह तथा आँखों से पानी टपकता देखकर उन्हें बड़ी तृप्ति हुई।

'मुझे आपके भेष से पता लगता है कि आप कोई उपदेशक हैं?' अजनबी ने पूछा।

'जी हाँ, आप ठीक कह रहे हैं।'

'क्या आप नरकाग्नि के बारे में भी उपदेश देते हैं?'

'हाँ, क्यों नहीं। मैं इसे अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि कभी कभी अपने श्रोताओं को अनन्त दण्ड का चित्र दिखा दिया करूँ।'

'मैं भी यही सोचता था', अजनबी ने कहा, 'लेकिन आपके वर्ग में से मैंने आप ही पहले सज्जन ऐसे पाये हैं जो अपने साथ उसका नमूना भी लिये फिरते हैं।'

*

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं। मनुवां तो चहुं दिस फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं॥

*

एक उपदेशक एक गाँव में व्याख्यान देने गया । वह इससे पहले वहाँ कभी नहीं गया था । गाँव के बाहर पहुँच कर उसने एक युवक से जो पेड़ के नीचे बैठा था, चौपाल का रास्ता पूछा । लड़के ने कहा— 'वहाँ तो आज एक व्याख्यान होने वाला है ।'

उपदेशक बोला— 'हाँ, वहीं ।'

लड़के ने कहा— 'एक सौ क़दम सीधे चले जाओ । फिर मोड़ पर बायें को मुड़ जाना । दस क़दम चलकर एक गेहूँ का खेत आयेगा । उसके दायें पर जाकर पचास कदम आगे ही चौपाल है ।'

उपदेशक ने उसको धन्यवाद दिया और कहा— 'मैं ही आज वहाँ व्याख्यान दूँगा । मुझे आशा है कि तुम वहाँ अवश्य आओगे । मैं तुम्हें स्वर्ग का मार्ग दिखलाऊँगा ।'

लड़का बोला -- 'दिखला दिया ! तुम्हें चौपाल के मार्ग तक का तो पता नहीं ।''

*

एक बड़े पहुँचे हुए महात्मा श्रद्धालु श्रोतागण को जब उपदेश दे चुके, तो बोले, ''जो लोग स्वर्ग जाना चाहते हों, वे अपना हाथ खड़ा कर दें ।'' सबने हाथ खड़े कर दिये । केवल एक मनुष्य चुपचाप बैठा रहा ।

महात्मा ने गरज कर उस नास्तिक से पूछा— ''क्यों जी, तुम स्वर्ग नहीं जाना चाहते ?''

''जी, अभी इसी समय नहीं ।''

*

एक पादरी गिरजे में व्याख्यान दे रहा था । उसने देखा कि जब भी वह 'शैतान' शब्द का उच्चारण करता, तभी श्रोताओं में से एक मनुष्य अपना सिर झुका लेता । व्याख्यान के बाद उसने उस मनुष्य से इसका कारण पूछा ।

''देखिये, बात यह है,'' उस मनुष्य ने उत्तर दिया, ''विनय और नम्रता से किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचता, और फिर न मालूम कब किससे वास्ता पड़ जाये ।''

*

पुजारी काफी ग़रीब था । एक दिन जब वह शाम को घर लौटा, तो उसकी सबसे बड़ी लड़की ने कहा— ''पिताजी आज दोपहर को हमारी पाँचवीं बहन का जन्म हुआ ।''

और फिर एक क्षण सोचकर बोली, ''मगर पिताजी, इस बहन से अधिक

हमें दूसरी चीज़ों की ज़रूरत थी।"

*

एक युवक तथा युवती का जोड़ा विवाह से एक दिन पहले मोटर-दुर्घटना में स्वर्गवासी हो गया। स्वर्ग पहुँचकर दोनों ने भगवान से कहा— हे भगवान, यह आपने क्या किया ? हमें विवाह होने से पहले ही बुला लिया।

भगवान बोले— कोई बात नहीं, हम तुम दोनों का विवाह यहीं करवा देंगे।

इस घटना को ५०० वर्ष गुज़र गये। पर विवाह नहीं हुआ। दोनों फिर अपनी फरियाद लेकर पहुँचे। वे बोले— भगवान, आपने तो विवाह कराने का वादा किया था, लेकिन आपके वादे को ५०० वर्ग बीत गये हैं।

भगवान (सिर खुजलाते हुये)— भाई, मैं क्या करूँ ? आज ५०० वर्ष हो गये पर कोई पण्डित ही स्वर्ग में नहीं आया।

*

एक पण्डित को कार्यवश जंगल में जाना पड़ता था। एक दिन एक व्यक्ति ने प्रश्न किया— "महाशय, आप तो यह मानते हैं कि भाग्य में जो लिखा है वही होता है ?"

"हाँ।"

"तब अगर बाहर जाने पर आपको कोई जंगली पशु मिल जाये और अगर आपका समय पूरा न हुआ हो तो वह पशु आपका बाल भी बाँका नहीं कर सकता।"

"ठीक है, मैं सहमत हूँ।"

"तब आप बाहर जाते समय बन्दूक क्यों साथ रखते हैं?"

"यह इसलिये कि हो सकता है कि मुझे कोई ऐसा हिंसक पशु मिल जाये जिसका समय समाप्त हो चुका हो।"

*

बूढ़ा किसान पुजारी जी से रो पीट रहा था कि अब की बार फ़सल ऐसी हुई कि सब कुछ चौपट हो गया।

पुजारी जी ने सान्त्वना देते हुए कहा— "अरे भाई भीखू, तुम्हें इस प्रकार दुखी नहीं होना चाहिए। भगवान् का भरोसा रखो, वह सब ठीक करता है। वह हर प्राणी की खोज रखता है— पक्षियों तक को रोज़ भोजन देता है।"

भीखू ने जवाब दिया— "हाँ, ठीक है, पर भगवान पक्षियों के लिए भी मेरा ही अनाज काम में लाता है।"

*

एक उपदेशक उपदेश दे रहे थे: "शराब! शराब से बुरी कोई चीज नहीं है। शराब पी कर अपने पड़ौसियों से लड़ने को तबियत होती है। लोग शराब के नशे में आकर अपने दोस्तों पर गोली चलाने के लिए तैयार हो जाते हैं। और दुख तो यह है कि शराब के नशे में उनका निशाना भी ठीक नहीं बैठता।"

*

ज्योतिषी— "शास्त्र कहता है कि तुम्हारे निकट के किसी व्यक्ति को बड़ी निराशा होगी।"

व्यक्ति— "हाँ, यह ठीक ही है। मैं अपना बटुआ घर ही भूल आया हूँ।"

*

वृद्ध उपदेशक— देखो, मेरी आयु ९४ वर्ष की है और एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिससे मेरी शत्रुता हो।

युवक— वास्तव में यह एक आश्चर्य की बात है।

वृद्ध उपदेशक— हाँ, सो तो है ही। भगवान् का धन्यवाद है कि वे सब बहुत पहले ही मर गए।

*

एक पुजारी को नौकरी करने की ज़रूरत आ पड़ी। उसने पुलिस में भरती होने की अर्ज़ी दी। उसके हृष्टपुष्ट डीलडौल से सन्तुष्ट होकर उसके मस्तिष्क को जाँचने के लिए पुलिस अफ़सर ने कुछ प्रश्न किए। उन प्रश्नों में से एक था कि उत्तेजित भीड़ को तितर बितर करने के लिए वह क्या करेगा।

पुजारी ने उत्तर दिया— दान मांगने लगूँगा।

*

एक पंडित जी सब लोगों से हमेशा कहा करते थे कि जो कुछ होता है, सब भाग्य से होता है। आदमी कुछ नहीं करता।

पंडित जी के घर में एक नौकर था। एक दिन उस नौकर ने पंडित जी की घड़ी चुराली। जब पंडित जी को मालूम हुआ तो उन्होंने उसे मारना शुरु कर दिया।

पिटते हुए नौकर ने कहा— "पंडित जी, आप मारते क्यों है? आपके भाग्य में घड़ी चुराया जाना लिखा था।"

पंडित जी ने बिगड़कर कहा— "तो तेरे भाग्य में भी तो पिटना लिखा था।"

*

भोजन करने के लिए एक चौबे जी का किसी के घर न्यौता हुआ। जिस दिन न्यौता दिया गया, उस दिन से भोजन करने का दिन कई दिन बाद में था। चौबे जी उसी दिन से लंघन करके न्यौते की तैयारी करने लगे।

जब भोजन करने का दिन आया और चौबे जी भोजन के लिए बुलाए गए तो न्यौते में जाकर उन्होंने ज़्यादा से ज़्यादा खाने की कोशिश की। जब वे खाना खा कर घर आए और रात में लेटे तो उनके पेट में दर्द होने लगा।

रात में चौबे जी के पेट का दर्द बढ़ता हुआ देख कर उनकी स्त्री वैद्य के पास दौड़ी गई और चौबे जी का सब हाल बताकर चूर्ण की गोलियाँ ले आई। उसने चौबे जी के पास आकर कहा: "लो, यह चूर्ण की गोलियाँ खा लो। इससे तुम्हारा दर्द कम हो जायगा।"

चौबे जी ने बिगड़कर अपनी स्त्री से कहा— "बेवकूफ कहीं की! अगर पेट में चूर्ण की गोली के लिए जगह होती तो सेठ जी के यहाँ एक लड्डू ही और न खा लेता।"

*

एक दिन पंडित जी ईश्वर के रूप का वर्णन करते करते बोले, "पृथ्वी पर जितने पहाड़ हैं, वे ईश्वर की हड्डियाँ हैं। जो काला आकाश देखते हो, वह उनका शरीर है और सूर्य चन्द्रमा उनकी दोनों आँखें हैं।"

एक श्रोता बात काट कर बोला, "मगर पंडित जी, उस दिन तो आप कहते थे कि भगवान् का शरीर बहुत सुन्दर है। पर आज तो वे काने निकले; क्योंकि वे दिन के समय भी एक आँख से देखते हैं और रात को भी वही हाल है।"

*

स्वर्ग कैसे लोगों को मिलता है— यह समझाते समझाते पंडित जी ने पूछा— "हाँ, अब कोई बता सकता है कि मैं स्वर्ग कैसे पा सकता हूँ।"

भीड़ में से एक आवाज़ गूंजी— "मरने पर।"

❀

एक दिन गिरजे में एक नये पादरी साहब आये। उपदेश के बाद उन्होंने अपना टोप उतार कर एक लड़के को दिया कि वह उसे सब आदमियों के सामने ले जाकर चन्दा इकट्ठा कर लाये। लड़का टोप लेकर सब आदमियों के सामने हो आया लेकिन किसी ने उसमें एक पाई भी नहीं डाली। लड़के ने पादरी साहब को उनका टोप वापिस कर दिया।

पादरी साहब ने गम्भीरता से टोप लिया और उसे उल्टा करके हिलाया जिससे पता चल जाये कि उसमें एक भी पैसा नहीं है। फिर वे छत की ओर

आंख उठा कर बोले, 'हे परमात्मा, तेरा लाख लाख धन्यवाद है कि ऐसे भक्तों की भीड़ में से मेरा टोप तो सही सलामत वापिस आ गया।'

❀

सेठ जी— "देखो पंडित जी, मैं तुम से कितनी बार कह चुका हूं कि तुम अपने माथे पर रामानन्दी तिलक न लगा कर त्रिपुण्ड धारण किया करो। पर तुम मानते ही नहीं। अगर अब भी न मानोगे तो मैं तुम्हे डिसमिस कर दूंगा।"

पंडित जी— "अरे, सेठ जी महाराज, गंगामैया आपको बनाए रहें। आप तो हमारे अन्नदाता हैं और हम तो आपकी गऊ हैं गऊ! ऐसे डिस-डिस्मिस-मिस मुखतें न निकारबे करें! भला जो हम आपकी आज्ञा न माने हैं, तो का भाड़

थोरइ झौकहै। हम तो सदा ही आप की आज्ञा मानत हैं।"

सेठजी— "क्या तुमने मुझे अन्धा समझ रखा है? अभी तक तो माथे पर रामानन्दी तिलक लगा है, फिर भी आज्ञा पालन का जाप कर रहे हो।"

पंडितजी— अरे, सेठ जी महाराज, भगवान आपको मंगल करै। मैं तो श्री रामानन्दी जी महाराज को भगत हों सो माथे पै रामानन्द लगावत हौं और यह पेट आपको भगत है, सो या पेट पै तीनों टैम त्रिपुण्ड लगावत हौं।"

और यह कहकर उन्होंने अपना पेट दिखा दिया।

*

विद्यार्थी— "पादरी साहब, प्रणाम! क्या आप सुनहरी बाइबिल की एक प्रति और देने की कृपा करेंगे?"

पादरी— "क्यों नहीं, बड़ी खुशी और शौक के साथ। बड़े दिन की खुशी में बतौर भेंट के लो। पर यह तो बताओ तुमने कल वाली प्रति क्या की? क्या अपने मास्टर जी या किसी मित्र को दे दी? तुमने वह पढ़ी तो जरूर होगी?"

विद्यार्थी— "नहीं, साहब, पर उसने मुझे बड़ा काम दिया जिसके लिए मै आपको बिना धन्यवाद दिए नहीं रह सकता।"

पादरी ने खुश होकर कहा, "वह कौनसा काम है?"

विद्यार्थी— "मैंने उसकी सुनहरी जिल्द उतार कर अपनी भूगोल की नोट बुक पर लगा ली जिसकी मुझे बड़ी ज़रूरत थी। और अब मुझे दूसरी जिल्द इतिहास की नोट बुक के लिए और चाहिए।"

*

एक भक्त एक ब्राह्मण से— महाराज, जब आप धर्म की इतनी बातें करते है, तो सन्ध्या क्यों नहीं करते?

ब्राह्मण— वाह! तुमने भी खूब कही! मेरे सन्ध्या करने न करने से होता ही क्या है। जहाँ शाम के छः बजे और सूर्य डूबा, वहाँ सन्ध्या तो आप ही हो जाती है।"

*

मृत्यु की भयंकरता के सम्बन्ध में बहुत देर तक व्याख्यान झाड़ने के बाद चतुर उपदेशक महाशय बोले— "भगवान की कैसी अपार दया है! मृत्यु भंयकर होने पर भी भगवान की असीम दया से हम लोगों के जीवन के अन्त में ही आक्रमण करती है। यदि मृत्यु हम लोगों के जीवन के पहले, आरम्भ में, या बीच में होती, तो हम लोगों को कितना कष्ट उठाना पड़ता।"

*

एक आदमी एक पण्डित के यहाँ गया। पण्डित जी अपने यजमान को देखते ही पहचान गये। यजमान ने पण्डित जी से पूछा— "क्यों, पण्डित जी, क्या दूसरों की ग़लती से फायदा उठाना अच्छा है?"

"नहीं, यह तो पाप है।"

"तो पण्डित जी, आप मेरे दस रुपए वापिस कर दीजिये, जो मैंने आपको अपने विवाह के अवसर पर दक्षिणा में दिये थे।"

*

एक बार एक उपदेशक के मित्र ने उससे पूछा, "आपने अपने बच्चे के लिये क्या सोचा है?"

उपदेशक ने कहा, "मैं तो इस बात में विश्वास रखता हूँ कि प्रत्येक बालक स्वयं ही अपने जीवन का निर्माता होता है। कल मैंने एक परीक्षा ली थी। मैंने एक कमरे में एक शास्त्र, एक सेव और एक रुपया रख दिया और बच्चे को वहाँ खेलने भेज दिया। मेरी मान्यता यह थी कि यदि यह शास्त्र से खेलेगा तो मैं इसे उपदेशक बनाऊँगा, यदि यह सेव से खेलेगा तो मै इसे कृषि-शास्त्री बनाऊँगा और यदि यह रुपये से खेला तो इसे बैंक का काम सिखाने का प्रयत्न करूँगा।"

मित्र— "फिर क्या हुआ, उसने कौनसा जीवन पसन्द किया?"

उपदेशक— "जब हम कमरे में पहुँचे तो हमने देखा कि टुन्नू बाबा शास्त्र पर बैठे हुये है, सीधे हाथ से सेव खा रहे हैं और उलटे हाथ में रुपया पकड़ा हुआ है। हम तो इसी निर्णय पर पहुँचे भाई, कि यह बड़ा होकर राजनीतिज्ञ बनेगा।"

*

एक पादरी साहब गिरजाघर में उपदेश दे रहे थे। आधा उपदेश ख़त्म हो चुका था। तभी उन्होंने अचानक गिरजे की खिड़कियों की तरफ देखा और छोटे पादरी को संकेत से बुलाया। उन्होंने कहा, "देखो भाई, खिड़की खोल दो।"

छोटे पादरी को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "खिड़की क्यों खुलवाते हैं पादरी साहब? बाहर तो बर्फ पड़ रहा है और ठंडी हवा से हाथ पाँव ठिठुर रहे हैं।"

"यह तो मैं जानता हूँ," पादरी साहब बोले, "लेकिन जितने भी वैज्ञानिक हैं, वे इस बात को मानते हैं कि कमरे की खिड़कियाँ बन्द करके सोने से स्वास्थ्य ख़राब हो जाता है।"

*

एक वृद्ध उपदेशक ने ६० वर्ष तक पादरी रहने के बाद अवकाश ग्रहण कर

लिया था। वह गिरजे में आने वालों से आँखों में आँसू भर कर विदाई ले रहे थे। एक बूढ़ी स्त्री सिसकियाँ लेते हुए बोली, "आप तो जा रहे हैं, अब हमारा क्या होगा?"

पादरी ने उसे दिलासा देते हुए कहा, "संसार के काम ऐसे ही चलते हैं। रोने से क्या होगा? हमारे देश में बड़े योग्य पादरी है। मुझे पूरी आशा है कि यहाँ कोई बहुत योग्य पादरी भेज दिया जायगा।"

बूढ़ी ठंडी सांस लेकर बोली, "यह तो ठीक है। हम आशा ही आशा करते रहे हैं। लेकिन अब तक तो हमारी आशा पूरी हुई नहीं।"

*

एक पुजारी जी काफी पानी मिला हुआ दूध मिलने से बहुत अप्रसन्न थे। एक दिन उन्होंने दूध वाले को डाँटने का निश्चय किया। जब दूध वाला नित्य प्रति के समय पर आया तो आप उससे बोले -- "यह दूध मैं पीने के लिये लेता हूँ, मूर्ति को स्नान कराने के लिये नहीं।"

*

दो सनातनी और आर्यसमाजी उपदेशकों में बहुत मतभेद था, किन्तु फिर भी वे एक दूसरे के पक्के मित्र थे। अपनी दोस्ती की प्रशंसा करते हुए एक दिन आर्यसमाजी ने कहा, "यह कितनी अच्छी बात है कि हमारे बीच इतने मतभेद होते हुए भी हम लोग इतने अच्छे मित्र हैं।"

सनातनी ने कहा, "ठीक है भाई, ऐसा तो होना ही चाहिये। इसमें मतभेद ही क्या है? हम दोनों एक ही पाठ पढ़ाते हैं और एक ही शास्त्र की व्याख्या करते हैं। अन्तर केवल इतना है कि तुम अपने तरीक़े से करते हो और मैं भगवान के तरीक़े से।"

*

एक नवयुवक पादरी गाँव में नये नये आये थे। अवकाश के समय वह एक ग्रामीण के यहाँ मिलने गये। वहाँ उसके नवजात शिशु का रूप रंग सराहते हुए आपने गृहिणी से उसकी आयु पूछी।

गर्विता माता ने कहा— "ढाई महीने।"

नवयुवक पादरी ने पूछा— "और क्या यही आपका सबसे छोटा बच्चा है?"

*

एक पादरी साहब सड़क पर जा रहे थे। वे एक मदिरालय के सामने से गुज़रे। एक व्यक्ति जो पादरी का बहुत आदर करता था, उसमें से निकल रहा

था। पादरी ने रुककर उसे गम्भीर दृष्टि से देखा और दुःखभरे स्वर में कहा, "मुझे तुमको ऐसे ख़राब स्थान से निकलता देखकर बहुत ही दुःख हुआ।"

"अच्छी बात है पादरी साहब," उस व्यक्ति ने उत्तर दिया। "आप दुःखी न हों, मैं फिर अन्दर चला जाता हूँ।"

*

एक बार एक मुल्ला जी ने घोषणा की कि जो उन्हें एक रुपया देकर कूपन ख़रीदेगा वह मरने के बाद निश्चय ही जन्नत में जायगा। जब इस तरह मुल्ला जी के पास बहुत धन इकट्ठा हो गया तो वे उसे एक दिन गिनने बैठे। एक नवयुवक ऐसे ही मौके की तलाश में था। उसी समय आ धमका और पिस्तौल दिखाकर सब कुछ छीन लिया। मुल्ला जी चिल्लाकर बोले, "अरे बदमाश, तू सीधा दोज़ख में जायगा।'

युवक ने मुस्करा कर उत्तर दिया, "मैंने पहले ही एक रुपये वाला कूपन ख़रीद लिया है।"

*

पण्डित जी— "तुम्हारा विवाह एक पियक्कड़ से होगा। और विवाह के पश्चात् कुछ वर्षों तक तुम बहुत दुखी रहोगी।"

"और उसके बाद ?"

"उसके बाद तुम्हें दुःख सहने की आदत पड़ जायगी।"

*

पंडित जी— "ठाकुर साहब, झूठी गवाहियाँ दिलवा कर मुक़दमा जीते हो। कुछ परलोक का भी ख़्याल है?"

ठाकुर— "हरे कृष्ण! हरे कृष्ण! पंडित जी, यह तो नीति है। जब स्वयं भगवान कृष्ण गीता का महान् उपदेश करने के बाद ही महाभारत युद्ध में युधिष्ठिर द्वारा झूठी गवाही दिलवा कर द्रोणाचार्य को मरवा सकते थे, तो मैंने ही कौन सा पाप कर डाला?"

*

महापंडित जगत्गुरु ज्योतिषाचार्य नई दिल्ली में एक शानदार कमरा, किराये पर लेकर रहते थे, और झूठ-मूठ भविष्यफल बताकर बड़े बड़े सरकारी अफसरों को लूटा करते थे। एक निराश से दिखाई देने वाले नवयुवक ने उनके कमरे में प्रवेश किया। उस पर अपने पंडितपने का रोब जमाने के लिए जगत्गुरु ने कहना शुरू किया— "आओ बच्चा, तुम्हारे चेहरे को देखकर ही मैंने तुम्हारा सारा हाल जान लिया है। तुम्हें कई बार निराश होना पड़ा है। जिस काम के पूरा होने की तुम्हें इच्छा थी, वह बार बार बिगड़ गया है। लेकिन घबराने की कोई बात नहीं है। अब तुम्हारा मनोरथ जल्दी ही पूरा होगा ......"

"वाह, वाह, बहुत अच्छे!" अपनी जेब से एक काग़ज़ निकालते हुए वह युवक बोला, "बस, आज आराम मिलेगा। इस बिल के लिये मैं आपके घर के दस चक्कर लगा चुका हूँ। आज यह ज़रूर अदा हो जायगा। लाइये, इसके पैसे दिलवा दीजिये।"

*

पुरोहित (होटल के बैरे से)— "अरे भई, हमारा मुँह क्या देखते हो! जल्दी से मुर्गमुसल्लम, कोफ्ते, रोग़नजोश, मछली वग़ैरा सब ले आओ। भई, जब हम हरिजन नाम के बड़े प्राणी को सटकने की चिन्ता में रहते हैं तो मुर्गे, बकरे और मछली जैसे तुच्छ जीवों की क्या गिनती!"

*

रेस्ट्राँ में एक स्त्री अकेली बैठी थी। तभी एक पण्डित जी अपनी पत्नी के साथ आये और अगली मेज़ पर बैठ गये। कुछ क्षण बाद पण्डित जी उठकर बाहर गये और अख़बार मोल लेकर अन्दर घुसे। वे कोई ख़बर पढ़ने में इतने लीन थे कि अकेली स्त्री की मेज़ पर बैठ गये।

मुख के आगे अख़बार किये उन्होंने पूछा, 'हाँ, तो प्रिये, बताओ क्या चीज़ मंगाई जाये?"

यह सुनकर वह स्त्री इतनी आश्चर्यचकित हुई कि उसके मुख से कुछ बोल नहीं निकला।

उत्तर न पाकर पण्डित जी ने नेत्रों के सामने से अखबार हटाया। अपनी ग़लती अनुभव कर वे बोले, 'मुझे बड़ा खेद है ······ ग़लत पत्नी !'

*

मुल्ला जी के सुनने वाले धीरे धीरे जाने लगे। उनका भाषण बहुत रूखा और लम्बा था। अन्त में केवल चौकीदार रह गया। वह भी एक काग़ज़ मेज़ पर रखकर चला गया—'जब आप ख़त्म कर चुकें तो मेहरबानी कर बिजली बुझादें, दरवाज़े को बन्द कर दें और ताली दरी के दायें कोने के नीचे खिसका दें।'

*

'सवेरे तुमने आर्यसमाज मन्दिर में शम्भूदयाल को खर्राटे लेते सुना ? यह कितनी भद्दी बात है ?'

'हाँ, उसके खर्राटों ने ही तो मुझे जगा दिया।'

*

मौलवी साहब मस्जिद के लिये चन्दा करने लगे। लखपति खाँ साहब ने उठकर कहा—पाँच रुपये।

तभी पुरानी मस्जिद की छत से कुछ मलबा उनके सिर पर गिर पड़ा। चोट से खाँ साहब एक बार तो सुन्न हो गये, फिर सँभल कर बोले, 'नहीं, नहीं। पाँच सौ रुपये।'

मौलवी साहब ने खुदा से इल्तिजा की, 'हे खुदा, एक बार और।'

*

एक उपदेशक ने नये गांव में अड्डा डाला। एक दिन उन्होंने सड़क चलते किसी गाँव वाले से पूछा—कहो भाई, तुम्हें मेरे उपदेश कैसे लग रहे है ?

गांव वाला बोला—वाह महात्मा जी ! आपके उपदेश तो बहुत सुन्दर हैं। और शिक्षा देने वाले। आपके आने से पहले हमें पता ही न था कि पाप क्या होते हैं।

*

अंग्रेज़ी का प्रसिद्ध हास्य-लेखक मार्क ट्वेन बहुधा चर्च में रविवारीय उपदेश सुना करता था। एक दिन वह पादरी से बोला, 'डा० डोन, आपका उपदेश सुनकर मुझे बड़ा हर्ष होता है। ऐसा लगता है जैसे मैं अपने पुराने मित्र से मिल रहा हूँ। क्योंकि आप जानते होंगे कि मेरे पास एक पुस्तक है जिसमें आपके उपदेश का प्रत्येक शब्द है।'

'बिल्कुल ग़लत बात है।'

'नहीं। मेरे पास सचमुच है।'

'अच्छा तो उसे मेरे पास भेज देना।'

'ज़रूर लो।'

अगले दिन सवेरे मार्क ट्वेन ने बड़ा शब्द-कोष पादरी के पास भेज दिया।

*

पण्डित जी लड़कियों के सौन्दर्य-प्रसाधनों के विरुद्ध आग उगल रहे थे। वे बोले, 'लिप्स्टिक मेरे स्वाद के अनुकूल नहीं है।'

*

कुछ आदमी रेस्ट्राँ में जमा थे जब दरवाज़े पर एक भिखारी दिखाई दिया। उसके कुछ कहने से पहले एक बोला, 'देखो, हम तो तुम्हें कुछ नहीं देंगे। लेकिन खिड़की के पास जो दाढ़ी वाले सज्जन बैठे हैं उन मुल्लाजी के पास चले जाओ। वे बड़े दयालु हैं और तुम्हें कुछ न कुछ ज़रूर मिल जायगा।'

भिखारी मुल्लाजी के पास जा पहुँचा। सब आनन्द से देखने लगे। मुल्लाजी और भिखारी में खूब बातें हुई। पर भिखारी कुछ दुखी दिखाई देता था। फिर दोनों के हाथ मिले, कोई चीज एक हाथ से दूसरे हाथ में गई।

भिखारी दर्शकों की आँख बचाकर लौटने लगा, पर एक ने पूछा, 'कहो क्या मिला?'

भिखारी बोला, 'तुम्हारा सिर! उस गधे की मस्जिद के लिए एक रुपया देकर आ रहा हूँ।'

लेखक

एक लेखक के प्रशंसक ने कहा, "उन्होंने अपने उपन्यासों के पात्र वास्तविक जीवन से लिए हैं।"

आलोचक ने उत्तर दिया, "तब तो अच्छा है। उन्हें चाहिये कि इसी तरह अपने पात्र वास्तविक जीवन से लेते रहें, क्योंकि वास्तविक जीवन से ऐसे पात्र जितने कम हो सकें अच्छा है।"

*

लेखक— आज मैंने एक ऐसी चीज़ लिखी है जो संसार की हर पत्रिका लेना पसंद करेगी।

मित्र— वह क्या चीज़ है?

लेखक— वर्ष के चन्दे का चैक।

*

एक व्यक्ति जो अपने आप को बहुत बड़ा लेखक समझता था, एक बार

अपने एक मित्र के साथ बाज़ार से गुज़र रहा था। एक घर के दरवाज़े पर वह यह पढ़ कर रुक गया— "यहाँ प्रसिद्ध कवि ······· रहा करता था।"

लेखक महोदय भावुकता के प्रभाव में, अपने मित्र से बोले, "दोस्त, जब मैं मर जाऊंगा तो मेरे मकान के दरवाजे पर क्या लिखा जायगा ?"

लेखक की आशाओं पर पानी फेरते हुए परन्तु कुछ सोचने का बहाना करते हुए उनका मित्र बोला— "किराये को खाली है।"

*

प्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान वाल्तेयर अपनी ज़िंदादिली के लिए प्रसिद्ध था। विषम-से-विषम और गम्भीर परिस्थितियों में भी वह मजाक़ करने मे नहीं चूकता था। अपने अन्तिम दिनों में जब वह मृत्यु शय्या पर लेटा था तो धर्मोपदेश के लिए चर्च से एक पादरी बुलवाया गया। विनोदी वाल्तेयर इस वक्त भी मज़ाक़ करने का लोभ संवरण नहीं कर सका। उसने पादरी से प्रश्न किया, "आप कहाँ से आ रहे हैं ?"

पादरी ने उत्तर दिया, 'प्रभु यीशू के दरबार से।"

और वाल्तेयर ने झट हाथ फैला दिये, "जरा देखूं तो आपका प्रमाण-पत्र।"

पादरी गालियाँ देता हुआ उल्टे पैरों वापिस चला गया।

*

"कवि का भूत काल क्या होता है ?"

"रद्दी की टोकरी।"

*

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो किसी चीज़ को न जानते हुए भी यह दिखाने की कोशिश करते हैं कि वे उस चीज़ से भली प्रकार परिचित हैं। ऐसे ही दो मित्र एक बार एक होटल में बैठे थे। कुछ और लोग भी वहाँ पर मौजूद थे। साहित्य पर बात चल पड़ी। कालिदास के नाटकों की प्रशंसा होने लगी। दोनों मित्रों में से एक बोला, "आप लोगों ने कालिदास की बात भी खूब की। आज सुबह १५ नम्बर बस में मैंने उसे देहली गेट जाते हुए देखा था।"

उसकी इस बात को सुन कर सभी व्यक्ति ज़ोर से हँस पड़े। होटल से बाहर निकलने पर दूसरे मित्र ने उसे धमकाना आरम्भ किया। इस पर पहले मित्र ने कहा, "आख़िर मैंने ऐसी कौनसी बेवकूफी करी थी जो तुम मेरे पीछे पड़ रहे हो?"

दूसरा मित्र बोला, "तुम निरे ही बेवकूफ हो। तुम्हें देहली में रहते इतने साल हो गये परन्तु यह भी मालूम नहीं कि १५ नम्बर बस देहली गेट नहीं जाती।"

*

इलाहाबाद में एक रात वहाँ के एक साहित्यिक के पास एक देहाती दौड़ा आया और बाहर से चिल्लाने लगा—"डाक्टर साहब, डाक्टर साहब।"

डाक्टर साहब ने अधपकी नींद मे जाग कर दरवाज़ा खोला। देखा सामने एक देहाती खड़ा है। बोले—"क्या है?"

देहाती बोला—"डाक्टर साहब, जल्दी कीजिये। मेरे बेटे के पेट में सख्त दर्द हो रहा है।"

साहित्यिक महोदय चकराये। और बोले—"अरे भई, मैं डाक्टर नहीं हूँ।"

देहाती बोला—"डाक्टर होकर झूठ बोल रहे हो। आपके दरवाज़े पर तो लिखा है डाक्टर ......।"

"अरे, मैं वह डाक्टर नहीं हूँ, मैं तो साहित्य का डाक्टर हूँ।"

देहाती बोला—"साहित्य कौन सा रोग है, डाक्टर साहब?"

*

पाठक—आपके लेख का कुछ अंश तो मुझे बहुत ही पसन्द आया।

लेखक (प्रसन्न होकर)—सच! वह कौन सा अंश है?

पाठक—जहाँ आपने सूरदास जी की कुछ कविताएँ नक़ल की हैं।

*

एक इटालियन लेखक एक गाँव में बीमार हो गया। बीमारी ख़तरनाक थी

डाक्टर ने उसे आश्वासन देने के लिए कहा, "घबराने की कोई बात नहीं है। कुछ साल पहले मुझे भी यही बीमारी हुई थी। अब आप देखते हैं कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ।"

लेखक— "लेकिन, डाक्टर साहब, आपका डाक्टर भी तो और था।"

*

एक संवाददाता एक महान् लेखक से मुलाक़ात करने गया। संवाददाता ने पूछा कि क्या उनकी सफलता का रहस्य प्रतिदिन बहुत अधिक समय तक मेहनत करने में है ?

महापुरुष ने उत्तर दिया— "हाँ, यदि प्रतिदिन मुझे नौ घण्टे सोने को मिल जायें तो मुझे दिन में चौबीसों घण्टे काम करने में आपत्ति नहीं है।"

*

एक नया कथा लेखक अपनी एकमात्र कहानी सात बार थोड़ा बदल बदल कर एक फिल्म-निर्माता को सुना चुका था। आठवीं बार फिल्म-निर्माता ने लेखक से कहा, "मैं, बस आखिरी बार आपसे कह रहा हूँ कि मुझे यह कहानी नहीं चाहिये। फिर कभी इसे मेरे पास मत लाना।"

लेखक ने आँखों में आँसू लाकर कहा, "मैं सिर्फ एक बार इसे पर्दे पर देखना चाहता हूँ।"

कुछ क्षण सोचकर, फिल्म-निर्माता ने कहा, "खैर, यह मैं कर सकता हूँ। अपनी अगली फिल्म में मैं एक सीन ऐसा रखूंगा, जिसमें नायक तुम्हारा नाटक फाड़ कर फेंकेगा।"

*

एक कवि— मैंने सुना है कि तुम मेरे बारे में यह कहते फिरते हो कि मैंने यह कविता चुराई है। तुम्हें माफी माँगनी चाहिये।

मित्र— हाँ भई, मैं माफी माँगता हूँ, मेरा अनुमान ग़लत निकला। क्योंकि जब मैं कवि सम्मेलन के बाद अपने घर पहुँचा तो वह कविता उस किताब में ही सुरक्षित मिली।

*

"मैं एक जासूसी उपन्यास लिख रहा हूँ।"

"उसे प्रकाशित कौन कर रहा है ?"

"यह तो जासूस ही पता लगायगा।"

*

लेखक— "आपने मेरा लेख इस मासिक पत्रिका में पढ़ा था ?"

पाठक— "जी हाँ, मैंने उसे तीन बार पढ़ा।"

लेखक ने खुश होकर कहा— "सच कहिये, आपको उसमें इतना आनन्द आया ?"

पाठक— "जी नहीं। कौन विषय है— क्या लिखा है— यही समझने के लिए मैंने उसे तीन बार पढ़ा। अन्त में उकता कर पत्रिका ही एक ओर रख दी।"

*

एक बार बंकिम बाबू अपनी सुन्दर पत्नी के साथ गाड़ी में यात्रा कर रहे थे। एक स्टेशन पर जब गाड़ी रुकी तो उनके डिब्बे के पास से एक मौलाना गुज़रे। मौलाना ने गाड़ी में बैठी एक सुन्दरी देखी तो उनकी तबियत फड़क उठी। डिब्बे के पास प्लेटफार्म पर चक्कर काटने लगे। दाढ़ी फटकार फटकार कर उनके

बार बार ताक-झाँक करने से पत्नी परेशान हुई, तो बंकिम बाबू को मज़ाक़ सूझा। उन्होंने डिब्बे से उतर कर मौलाना को बुलाया और भीतर ले गये। पत्नी से इलायची पान द्वारा उनका सत्कार कराया। फिर बोले— देखिये मौलाना, मैं मजिस्ट्रेट हूँ, दो हज़ार तनख़ा है। घर पर भी २-३ लाख की जमींदारी है, कुछ लिखता पढ़ता हूँ, थोड़ा नाम भी है, शायद आपने भी सुना हो— मेरा नाम बंकिमचन्द्र है। लेकिन इतना सब होने पर भी मेरी यह पत्नी बराबर मुँह फुलाये रहती है। मैं परेशान हूँ। १०-१५ मिनट तक ताक-झांक कर अगर आप इन्हें खुश कर सकें तो आप इन्हें ले जाइये। मेरी बला दूर होगी। आपका शुक्रगुज़ार होऊँगा।

मौलाना वहाँ से सिर पर पाँव रखकर भागे।

*

किसी मासिक पत्रिका के प्रकाशक ने एक कहानी लेखक को प्रत्येक कहानी के लिए तीस रुपए देने का वचन दिया। वह लेखक उस पत्र में छपने के लिए कहानियाँ भेजने लगा। उसकी कहानियाँ छोटी पर मज़ेदार होती थीं। एक बार प्रकाशक महोदय ने लेखक को लिखा— आगे से आपको प्रति कहानी तीस रुपए न दे कर पाँच रुपए प्रति कॉलम दिए जायंगे। लेखक भी काइयाँ था। उसने प्रकाशक का मतलब समझ कर उसे छकाने के लिए नीचे लिखे ढंग से शीघ्र ही कॉलम का कॉलम भरने लायक़ वृत्तान्त लिखना शुरु कर दिया—

"कहिए?"
"क्या?"
"कैसे आना हुआ?"
"यों ही।"
"कोई काम?"
"नही।"
"चलते हो?"
"कहाँ?"
"कही भी।"
"चलो।"

इससे प्रकाशक महोदय ने खीझ कर लेखक को लिखा— "देखिए, अब से आपको कालम के अनुसार नहीं, अक्षरों के हिसाब से रुपए मिला करेंगे। एक एक हज़ार अक्षरों पर आपको पाँच रुपए के हिसाब से लिखाई दी जायगी।"

प्रकाशक महाशय की दूसरी चालाकी की लेखक ने तनिक भी चिन्ता न कर कहानी लिखनी शुरु कर दी। अब उसने कहानी में एक हक़ले व्यक्ति को स्थान दिया। प्रकाशक के पास जो कहानी पहुँची, उसमें इस तरह की पंक्तियाँ बहुत अधिक लिखी गई थीं— "आ ···· आ ···· आ ···· आ ···· आप ब ···· ब ········ ब ········ बड़ी भू ········ भू ········ भू ········ भू ········ भूल स ········ स ········ स ········ स ········ सम सम समझ र ········ र ········ र············ र ········ रहे हैं। ह ········ ह ········ ह ········ ह ········ हम क ········ क········ क ········ क ········ कभ ········ भी ········ भी ········ इ ········ इ ········ इ ········ इ ········ इस प्र ········ प्र ········ प्र ········ प्र ········ प्रका ········ कार का क ········ का ········ का ········ का ········ काम न ········ न क ········

क ········ क ········ क ········ क ········ कर स ········ स ········ स ········ स ········ सकते हैं।

हार कर प्रकाशक महाशय फिर उन्हीं तीस रुपये पर लौट आये।

*

थियेटर मैनेजर— मैं सच कहता हूँ, यह नाटक बहुत बड़ा है। मैं इतने बड़े नाटक को स्टेज पर नहीं खेल सकता।

नाटक लेखक— मेरी बात सुनिये, क्या आप स्टेज बड़ा नहीं बना सकते?

*

कहानी लेखक ने आलोचक से कहा— "तुम्हारी आलोचना से ऐसा प्रतीत होता है कि कहानी का शीर्षक तुम्हें जँचा नहीं।"

आलोचक— "हाँ, बात तो ऐसी ही है।"

लेखक— "किन्तु मेरे विचार से तो यह शीर्षक बहुत सुन्दर है।"

आलोचक— "शीर्षक के बारे में तो मेरा विचार भी यही है। लेकिन मैं कहता हूँ, इतने सुन्दर शीर्षक की दुर्गति क्यों की जाय? उसने कौन सा गुनाह किया है?"

*

मकान-मालिक— "पिछले पांच महीनों का बक़ाया किराया आप कब दे रहे है?"

लेखक— "प्रकाशक का चैक आते ही अदा कर दूंगा।"

मकान-मालिक— "चैक कब तक आने वाला है?"

लेखक— "बस, प्रेरणा होने भर की देर है; प्रेरणा होते ही मैंने उपन्यास लिखा, प्रकाशक को भेजा, उसने प्रकाशित करना स्वीकार किया और चैक आया।'

*

कॉलिज की पार्टी में एक प्रसिद्ध साहित्यिक से मिलने पर एक छात्र गर्व से बोला, "मैं प्रसिद्ध से प्रसिद्ध साहित्यिक की रचना भी तभी पढ़ता हूँ जब कि मैं उससे पहले मिलकर सन्तुष्ट हो जाऊँ।"

'अच्छा! तो आपने महर्षि वाल्मीकि से किस प्रकार भेंट की?' साहित्यिक ने पूछा।

*

प्रसिद्ध लेखिका से किसी ने पूछा— "श्रीमती जी, आपनें शादी क्यों नहीं की? क्या इसकी कोई ख़ास वजह है?"

श्रीमती जी ने कहा-- "मेरे घर में ऐसी तीन चीज़े है जो पति से इतनी मिलती जुलती है कि मुझे उसकी ज़रूरत मालूम नहीं हुई— पहले तो मेरे पास एक कुत्ता है जो दिन भर गुर्राया करता है, दूसरे एक तोता है जो दोपहर भर गालियाँ दिया करता है, और तीसरे एक बिल्ली है जो रात भर घर के बाहर मटरगश्त किया करती है।"

*

कवि-- आपको मेरी कविता पसन्द आई ?

श्रोता — मुझे उसका अन्त ही सुन्दर लगा।

कवि— किस जगह ?

श्रोता— जब आपने कहा, 'कविता समाप्त हुई। मैं उठता हूँ।'

*

एक लड़ाकू लेखक ने कुछ दिन हुए एक प्रकाशक के पास अपनी पुस्तक की एक पांडुलिपि जमा की थी, उसी के विषय में चर्चा चल रही थी। "मानता हूँ

आपने बहुत अच्छी चीज़ लिखी है," प्रकाशक ने कहा, "लेकिन हमारी फर्म केवल बहुत प्रसिद्ध नामों की ही पुस्तकें छापती है।"

"ओह, खूब ! बहुत खूब !" लेखक खुशी के मारे चिल्ला पड़ा, "मेरा नाम प्रेमचन्द है।"

*

"यदि शेक्सपियर आज जीवित होता तो वह एक अद्भुत आदमी होता।"

"हाँ, सो तो है ही। ३५० साल की उम्र का आदमी भी क्या अद्भुत नहीं होगा ?"

*

लेखक— "मुझे ऐसा लगता है कि सम्पादको ने मेरे विरुद्ध कोई षड्यंत्र रचा हुआ है।"

मित्र— "तुम्हारे ऐसा सोचने का क्या कारण है ?"

लेखक— "क्योंकि मै एक ही कहानी को अलग अलग दस सम्पादकों के पास भेज चुका हूँ— मगर सभी ने वह सधन्यवाद वापिस लौटा दी है।"

*

सम्पादक— "क्या यह कहानी आपकी अपनी मौलिक है ?"

लेखक— "जी हाँ, इसका एक एक शब्द मैंने लिखा है।"

सम्पादक— तब तो मुन्शी प्रेमचन्द जी, आप से मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं तो समझा था कि आप को मरे काफी अरसा गुज़र चुका है।"

*

"आपकी कहानी बहुत ज़्यादा रंगदार है," सधन्यवाद कहानी को लौटाते हुए सम्पादक ने कहा।

"क्या मतलब ?" लेखक ने निराश होकर पूछा।

"मतलब यही है," सम्पादक ने कहा। "आपने उसमें दिखाया है कि बूढ़ा आदमी क्रोध के मारे लाल हो गया, शैतान डाह के मारे काला पड़ गया, नायक भय के मारे सफ़ेद पड़ गया, नायिका लज्जा के मारे अरुण हो उठी और जासूस ठंड के मारे नीला पड़ गया।"

*

"मैं दिन रात लिखता रहता हूँ। जितना भी लिखता हूँ सब मासिक पत्रों को भेज देता हूँ। पर मेरा एक भी लेख कभी तुम्हारी तरह लौट कर वापिस नहीं आया।"

"मैं जानता हूँ इसका कारण। तुम तो कभी वापिसी के लिये टिकट ही

नहीं भेजते।''

*

लेखक— ''और सब से बड़ी बात तो यह है कि मैं लिख नहीं सकता, यह जानने के लिये मुझे दस साल लगे।''

मित्र— ''फिर आपने क्या किया? लिखना छोड़ दिया?''

लेखक— ''कहाँ, साहब! तब तक तो मैं बहुत प्रसिद्ध हो चुका था।''

*

एक लेखक ने अपनी पुस्तक अपनी पत्नी को समर्पित करते हुए लिखा:—

अपनी पत्नी को—
जिसकी अनुपस्थिति के कारण ही
यह पुस्तक ख़त्म हो सकी।

*

लेखक— यह वह हस्तलिखित प्रति है जो मैंने पिछले साल आपको दिखलाई थी।

प्रकाशक (नाराजी से)— पिछले साल लौटाई गई चीज को फिर से दिखलाने का क्या विचार है, मेरी समझ में नहीं आया।

लेखक— तब से आपको एक वर्ष का अनुभव बढ़ गया है।

*

'लिखना बिल्कुल थैंकलैस (धन्यवादरहित) कार्य है।'

'कौन कहता है? जो कुछ मैं लिखता हूँ सब सधन्यवाद लौट कर आता है।'

*

दो मनुष्य एक पुस्तक के गुणों पर बहस कर रहे थे। आखिर एक मनुष्य जो स्वयं लेखक था, दूसरे से बोला— 'नहीं, पंकज। तुम नही समझ सकते। तुमने आज तक अपने आप कुछ नहीं लिखा।'

'क्या कहा?' पंकज बिगड़कर बोला। 'मै यदि आमलेट की प्रशंसा करता हूँ तो उसका अर्थ यह नहीं कि मुझ में अण्डे देने की शक्ति होनी चाहिये।'

*

एक व्यापारी ने कालिदास की प्रशंसा सुनकर उसे पढ़ने का प्रयत्न किया। एक पृष्ठ के साथ घण्टे भर तक झक मारने के बाद उसने वह पृष्ठ अपने सहकारी को दिखाया— तुम इसका क्या मतलब समझे?

सहकारी ने उत्तर दिया— बेकार है, मेरी समझ में तो धेला भर नहीं आया।

व्यापारी शान्त होकर बोला— बोलो देवी लक्ष्मी की जय! मैं तो समझा था मैं ही कुबुद्धि हूँ।

*

प्रकाशक— आपका हस्तलेख इतना गन्दा है कि कई कविताएँ मुझसे बिल्कुल नहीं पढ़ी गई। आप इन सब को टाइप कर लाइये तब मैं पुस्तक पर विचार करूँगा।

कवि— टाइप! यदि मैं टाइप करना जानता होता तो कविता क्यों लिखा करता?

*

चर्चिल सिगार पीते हैं और संसार के माने हुए चेन स्मोकर हैं। एक बार एक डाक्टर उन्हें देखने आया और बोला— "मैं धूम्रपान से होने वाली हानि को पूरी तरह बता सकता हूँ। एक सिगरेट पीने से ज़िन्दगी का एक सप्ताह कम हो जाता है।"

चर्चिल ने मुस्कराकर कहा, "ओह, तो मुझे आज पता चला कि मैं सिगार का मज़ा लेने के कारण तीन सौ साल पहले ही मर चुका हूँ।"

*

प्रशंसिका— आपके उपन्यास का अन्त बहुत सुन्दर है।

लेखक— आपका आरम्भ के विषय में क्या विचार है?

प्रशंसिका— मैं अभी उसे पढ़ना शुरु करने वाली हूँ।

*

ग्राहक— मुझे कोई पुस्तक दिखलाइये।

विक्रेता— हल्की फुल्की ?

ग्राहक— इसकी आप चिन्ता न करें। मैं कार लाया हूँ।

*

मित्र— तुम्हारी पत्नी की साड़ी क्या है बिल्कुल एक कविता है।

लेखक (बिगड़ कर)— एक कविता से क्या मतलब ? वह दो कविता और एक लेख है।

*

एक बार शॉ ने किसी फोटोग्राफर को, सपत्नीक टहलते हुये चलचित्र लेने की अनुमति दे दी। वे दोनों जब कैमरे के समीप पहुँचे तो शॉ ने अकस्मात् अपनी पत्नी का आलिंगन कर चूम लिया। श्रीमती शॉ चौंक कर बोल उठी, "आखिर, आपको यह सूझा क्या इस बुढ़ापे में ?"

"तुम जानती नहीं; आज के सभी चलचित्रों का स्वाभाविक अन्त ऐसे ही होता है।"

*

'तुम्हें अपने दूसरे उपन्यास का प्लॉट कहाँ से मिला ?'

'अपने पहले उपन्यास के फिल्मी संस्करण से।'

*

पति-पत्नी में लड़ाई हो रही थी कि कालिदास कितने हुए हैं। पति कह रहा था कि कालिदास तीन हुए हैं और पत्नी कह रही थी कि केवल एक।

'जब मैं स्वर्ग जाऊँगी,' पत्नी बोली, 'तो मैं कालिदास से पूछूंगी कि उसने

कितनी रचनायें लिखी हैं।'

'पर मान लो वह स्वर्ग में नहीं हुआ।'

'तो तुम उससे पूछ लेना।' पत्नी का उत्तर था।

❀

एक दिन एक साहब मिर्ज़ा ग़ालिब से रात को मिलने चले आये। थोड़ी देर ठहर कर वे जाने लगे तो मिर्ज़ा ख़ुद अपने हाथ में शमादान लेकर लबे फर्श तक आये, ताकि रोशनी में जूता देख कर पहन लें। मेहमान बोले—'किबला ओ काबा, आपने क्यों तकलीफ़ फरमाई? मैं अपना जूता आप पहन लेता।'

मिर्ज़ा ने कहा—'मैं आपका जूता दिखाने को शमादान नहीं लाया, बल्कि इस लिये लाया हूँ कि कहीं आप मेरा जूता न पहन जायें।'

❀

सम्पादक—यह कहानी नहीं छप सकती क्योंकि इसमें नायिका को नग्न दिखाया गया है।

लेखक—आप आगे पढ़िये। अगले ही वाक्य में मैंने उसे लज्जा से ढक

दिया है।

*

कवि— मेरी नवीनतम कविता नहीं मिल रही। कहीं चुन्नू ने उसे आग में तो नहीं फेंक दिया।

पत्नी— ऐसी बात न कहा करो। भला चुन्नू पढ़ना जानता है।

*

मित्र— तुम्हारे विवाह की सफलता की मुझे पूरी आशा है।

लेखक— हाँ। क्योंकि अपनी पत्नी के भूतकाल से मैं तीन कथानक ले चुका हूँ।

*

कहानीकार— कल रात मेरे घर में चोर घुस आये।

मित्र— अच्छा!

कहानीकार— उन्होंने हर कमरे की खाक छान मारी। फिर वे मेरे लिखने की मेज़ पर पाँच रुपये का नोट छोड़ गये।

पत्रकार

सम्पादक ने रिपोर्टर को डाट पिलाई कि वह समाचार भेजते समय नाम भूल जाता है। अब से यदि उसने नाम नहीं भेजे तो उसे निकाल दिया जायगा।

कुछ दिन बाद सम्पादक को समाचार प्राप्त हुआ—

प्रान्त के उतरी भाग में भयंकर तूफान आया। बिजली खम्भे पर गिरी और उससे सटकर खड़ी भैंस मर गई। भैंस का नाम सुन्दरिया था।

*

'हे भगवान्', एक सम्पादक बोला, 'पिछले चौबीस घण्टे में कोई काला कारनामा नहीं हुआ। सवेरे मैं अख़बार के प्रथम पृष्ठ की सुर्खी क्या दूगा?'

दूसरे ने ढाढस बंधाया, 'घबराओ नहीं रामकृष्ण! मनुष्य के स्वभाव में विश्वास रखो। कुछ न कुछ होकर रहेगा।'

*

सम्पादक— क्या तुम प्रूफरीडर होना चाहते हो?

'जी हाँ।'

'तुम अपने पद का उत्तरदायित्व भी समझते हो?'

'बिल्कुल अच्छी तरह श्रीमान्! जब भी पत्र में कोई ग़लती होगी तभी आप मुझे गालियाँ देंगे और सारा दोष मेरे पर मढ़ेंगे और मुझे चुप रहना होगा।'

*

व्यवसायी— क्या आप मुझे बता सकेंगे कि किसी पत्रिका को कैसे चलाना चाहिए ?

सम्पादक— आप ग़लत आदमी के पास आए। श्रीमान्, यह तो आप मेरे किसी भी ग्राहक से पूछिये।

*

नई देहली का एक बेरोज़गार सम्पादक अपने मित्र से बोला— देखा तुमने, मेरठ के एक आदमी ने मेरा कितना अपमान किया है। उसने मुझे अपनी पत्रिका में काम करने के लिये बुलाया है।

"तो इसमें अपमान की क्या बात है ?'

"इस काम में तो नहीं, पर तनखा देखो। वह मुझे अस्सी रुपये माहवार देने को कह रहा है।"

दोस्त बोला— "इसमें भी बुरी बात क्या है ? खाली बैठे रहने से तो अस्सी रुपये महीना कहीं अच्छा है।"

"अस्सी रुपए महीना ! इस से अधिक तो हर महीने मैं कर्ज़ ले लेता हूँ।"

*

सम्पादक (एक नवीन लेखक से)— आप ऐसे लेख लिखने की चेष्टा करें जिसकी भाषा ऐसी सरल तथा सुबोध हो कि प्रत्येक मूर्ख से भी मूर्ख मनुष्य उसे भली प्रकार समझ सके।

नवीन लेखक— तो इस लेख में आपको क्या समझ में नहीं आया महाशय ?

*

सम्पादक— पत्रकार का सबसे बड़ा गुण यही है कि उसके पत्र के ग्राहक जो चीज़ माँगे वही उनके सामने पेश करे।

दिलजला ग्राहक— तो कृपया मेरा वार्षिक चन्दा वापिस कर दीजिए।

*

पाठिका— क्या आप अपने पत्र में क्रमशः छपने वाले उपन्यास को और बड़ा नहीं कर सकते ?

सम्पादक— क्यों, क्या वह उपन्यास आपको पसन्द आया ? उसका लेखक मैं ही हूँ।

पाठिका— जी नहीं ! मेरी नौकरानी उसे पढ़ती है और जब तक वह छपता रहेगा वह मेरी नौकरी न छोड़ेगी।

*

किसी प्रसिद्ध पत्रिका के साहित्य सम्पादक के पास एक पुस्तक आलोचना के लिये आयी। तीन सौ पृष्ठ वाली पुस्तक में लेखक ने आत्मकथा लिखी थी। साहित्य सम्पादक ने पुस्तक की आलोचना में लिखा— "सचमुच लेखक ने संपूर्ण

जीवन आनन्द, उल्लास और संतोष के साथ व्यतीत किया। पृष्ठ ८६, १५७, २४३, २४४, २५४ और २५७ में वह लगभग बेहोश हो गये। पृष्ठ २६५ में उनको फालिज मार गया। पृष्ठ ७२ में उनकी बोली बन्द हो गई। पृष्ठ २७५ में वह डूबते-डूबते बचे। पृष्ठ २३ और १२१ में वह आत्म-हत्या करना चाहते थे। पृष्ठ २०३ में उन की बड़ी इच्छा थी कि वह मर जाते। पृष्ठ ३८ में वह क़रीब-क़रीब मर ही गये थे। उसी पृष्ठ में वह मरने के लिये घर चले गये। पृष्ठ ४१ में लगभग मर गये। पृष्ठ १६५ में वह सचमुच मर गये। पृष्ठ १६६ मे उनकी सांस रुक गई। पृष्ठ २५५ में वह क़तई तौर से मर गये और पृष्ठ २७३ में उनको पता चला कि उन्हें जीवन में अभी इतना काम बाक़ी है कि वह सो कर अपना एक घण्टा भी ख़राब नहीं करना चाहते। इससे अधिक लिखना व्यर्थ है।"

*

सम्पादक ने एक लेखक को, जो वादे के अनुसार समय पर कहानी देने में असमर्थ रहा था, लिखा— "प्रिय ··· यदि चौबीस घण्टे के अन्दर तुमने अपनी कहानी नहीं भेजी, तो मैं स्वयं आकर तुम्हें ठोकर मार मार कर घर से निकाल दूंगा। याद रहे मैं अपनी बात का पक्का हूँ।"

लेखक ने उत्तर भिजवा दिया— "प्रिय ······ यदि मैं भी तुम्हारी तरह

सारे काम पैरों से करता तो वादे का पक्का हो सकता था।"

*

एक संवाददाता किसी व्यक्ति से उनके ९९वें जन्मदिन पर भेंट करने के लिये गया। चलते समय बोला— "आशा है अगले वर्ष आपके १००वें जन्मदिन पर आपसे फिर भेंट करने का अवसर मिलेगा।"

संवाददाता को ऊपर से नीचे देखते हुए उस व्यक्ति ने उत्तर दिया— "आशा तो करनी चाहिए। तुम अभी काफी स्वस्थ हो। अगले वर्ष तक अवश्य जीवित रहोगे।"

*

एक सम्पादक लेखकों से पारिश्रमिक देने के वादे पर लेख मँगाया करते थे, मगर लेख पाने पर पारिश्रमिक की बात बिल्कुल भूल जाते थे। आपने एक दफे एक मशहूर लेखक को निम्नलिखित पत्र लिखा— "कृपया कोई नया लेख भेजिए। यदि लेख अच्छा हुआ तो पारिश्रमिक दूंगा।"

लेखक महाशय भी कई घाट का पानी पिए हुए थे। उन्होंने इस खत का जवाब यों दिया— "कृपया आप पारिश्रमिक भेजिए। यदि पारिश्रमिक अच्छा होगा तो नया लेख भेजा जायगा।"

*

किसी भले आदमी को एक दिन अखबार मे अपनी मृत्यु का समाचार पढ़कर बड़ा ही आश्चर्य हुआ। तुरन्त ही उसने टेलीफोन खनखनाया और सम्पादक जी से कहा, 'क्यों भाई, आपने मेरी मृत्यु का झूठा समाचार क्यों छापा?'

सम्पादक— परन्तु यह तो बतलाइए कि आप किस लोक से बोल रहे हैं?

*

एक नये सम्वाददाता ने सम्पादक के पास रिपोर्ट भेजी जिसमे एक आग का वर्णन था तथा उसने लिखा था कि फलाने आदमी ने आग लगाई है। उस पर सम्पादक ने उसे बुलाया और कहा— देखो! अभी तुम नये आये हो। रिपोर्ट में किसी का नाम नहीं दिया करते चाहे वह बिल्कुल सच हो। तुम्हें लिखना चाहिए 'यह कहा जाता है' या 'ऐसा सुना गया है' या 'जनता की यह धारणा है'।

अगली बार एक पार्टी की रिपोर्ट उसने भेजी जिसमें गवर्नर की पत्नी सम्मानित अतिथि थीं। उसने लिखा— पार्टी में श्रीमती ······· जिन्हें यह कहा जाता है कि वे गवर्नर की पत्नी हैं ·····

*

एक नए सम्वाददाता ने अपने अखबार में खबर भेजी कि शहर की

म्यूनिसिपैलिटी के सब सदस्य बेईमान तथा बदमाश हैं। वह खबर अखबार में छप गई और अखबार को सहायता तथा छपाई के विज्ञापन आदि म्यूनिसिपैलिटी से मिलने बन्द हो गए। जब प्रधान सम्पादक को पता लगा तो उसने नए सम्वाद-दाता को बुलाकर बहुत डांटा। 'तुम्हें अभी अखबार की अ, आ, इ भी नहीं आती। अगर ऐसी खबरें छपवाईं तो बस अखबार छप लिया! देखो अब मैं तुम्हारी गलती ठीक करता हूँ।'

अगले संस्करण में सम्पादक की ओर से खेद प्रकट करते हुए लिखा गया कि पिछले संस्करण में एक गलती रह गई है, म्यूनिसिपैलिटी में एक को छोड़कर बाक़ी सब सदस्य बेईमान और बदमाश हैं। अगले ही दिन अखबार को अपना पुराना सारा काम प्राप्त हो गया और म्यूनिसिपैलिटी के सब सदस्यों ने अखबार की तीक्ष्ण बुद्धि तथा पकड़ की प्रशंसा की।

*

एक दैनिक के समाचार-सम्पादक ने, यह ज्ञात होते ही कि शहर में कहीं आग लग गई है, एक रिपोर्टर को फौरन घटना-स्थल पर भेजा।

रिपोर्टर नया था, और संभल-संभलकर चलना चाहता था। घटना-स्थल पर पहुँचकर उसने समाचार-सम्पादक को फोन किया—

"जी, मैं घटना-स्थल पर आ गया हूँ!"

"तो?"

"तो, अब आप आगे बताइए मैं क्या करूँ?"

"तुम कहाँ हो?"

"जी, मैं पासवाली इमारत की चौथी मंज़िल पर हूँ।"

"तो फिर वहाँ से उस जगह कूद पड़ो, जहाँ आग सबसे तेजी से लगी है।"

*

एक लेखक ने 'कबीर के रहस्यवाद' पर एक किताब छपाई और तीन सम्पादकों को समालोचनार्थ भेजी। एक सम्पादक ने लिखा— 'यह किताब जूट के विषय में लिखी गई है। संसार में कहाँ कहाँ जूट पैदा होता है— इस बात की विशद विवेचना इस पुस्तक में है। व्यापारी लोगों के लाभ के लिए लेखक ने अकथ परिश्रम किया है।' दूसरे सम्पादक ने लिखा— 'यह पुस्तक बर्मा शैल यानी मिट्टी के तेल के विषय में लिखी गई है। दुनिया में कहाँ कहाँ और कितने गैलन तेल तैयार होता है— इस बात को नक़शे दे देकर समझाया गया है। मिट्टी के तेल के व्यापारियों के काम की चीज़ है।' तीसरे सम्पादक ने लिखा— 'यह ग्रन्थ सिनेमा के विषय में प्रणीत किया गया है। वर्तमान समस्त ऐक्टर और

ऐक्ट्रसों की संक्षिप्त और सचित्र जीवनियाँ प्रकाशित की गई हैं। सिनेमा-प्रेमियों के लिये बड़े मार्के की चीज़ है।'

*

सम्पादक ने एक महत्त्वाकांक्षी नवयुवक से कहा, "आप कोई कारण बताइये जिसके आधार पर मैं आपकी कविता प्रकाशित करूँ।"

कवि ने कहा, "मैं अपनी कविता के साथ हमेशा उसको लौटाने के लिये डाक का टिकट रख देता हूँ।"

"तो उससे क्या?"

"यदि आप कविता छापा करें तो टिकट आपके पास रह जायगा।"

*

रिपोर्टर अभी अभी इन्टरव्यू से लौटा था।

"ठीक है," सम्पादक ने कहा, "क्या क्या बातें हुई तुम्हारी मिस्टर शर्मा से?"

"कोई खास बात नहीं हुई।"

"ठीक है, इसे एक कॉलम में लिख दो।"

*

सम्वाददाता— "आज आप निराश से क्यों दिखाई दे रहे हैं!"

सम्पादक— "कल मुझे एक पत्र मिला था, जिसके अनुसार एक बहुत बड़ी पूंजी में मुझे भी उत्तराधिकार मिल रहा था; लेकिन मैंने जल्दी में स्वभावानुसार लिख दिया कि 'सधन्यवाद अस्वीकृत'।"

*

विज्ञापनदाता (चपरासी से) मैंने कल तुम्हारे अखबार में अपने खोये कुत्ते के सम्बन्ध में विज्ञापन दिया था। कोई सुराग मिला? मैंने पचीस रुपये का इनाम भी घोषित किया था।

चपरासी— कुछ कह नहीं सकता। बात यह है कि जिस समय आपका विज्ञापन मिला था उसी समय से सम्पादक, सहायक सम्पादक और सम्वाददाता सभी कुत्ते की खोज में निकले हुए हैं।

*

पत्र प्रतिनिधि (धारा सभा में भाषण देने के लिये जाते हुए प्रधान मन्त्री से)— क्या आप कोई वक्तव्य देने की कृपा करेंगे?

प्रधान मन्त्री— अभी मुझे जाकर भाषण देना है। मेरे पास फिलहाल सोचने के लिये समय नहीं है।

*

एक समाचारपत्र के सम्पादक ने, जो सनसनीपूर्ण समाचार प्रकाशित करने के लिये प्रसिद्ध थे, अपना एक सम्वाददाता लड़ाई के मोर्चे पर समाचार लेने के लिये भेजा। कुछ दिन वहाँ की स्थिति का अध्ययन करने के बाद उसने सम्पादक को यह तार भेजा— "स्थिति बड़ी नाजुक है। दुख और तकलीफ का वर्णन नहीं किया जा सकता। बढ़ा चढ़ाकर लिखना असम्भव है। लेकिन फिर भी पूरी कोशिश करूँगा।"

*

पत्रकारिता में अभिरुचि रखनेवाले एक एम० ए० ने सह-सम्पादक के लिए नवप्रकाशित दैनिक में प्रार्थनापत्र भेजा। दूसरे दिन उसके नाम पत्र की वी. पी. आ गई। उस बेचारे ने उसे छुड़ा लिया। किन्तु काफी दिन प्रतीक्षा के बाद भी जब उसके प्रार्थनापत्र का जवाब न आया तो उसने एक रिमाइण्डर भेजा। उसका जवाब आया— "आपके पत्र का तथा वी. पी. छुड़ाने का धन्यवाद! आप को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इस एक माह के बीच हमने पांच हजार उच्चकोटि के ग्राहक बनाये। प्रार्थनापत्र तो लगभग सात हज़ार आये थे, पर दो हज़ार ने वी. पी. नहीं छुड़ाई। आपके सहयोग के लिये कोटिशः धन्यवाद!"

*

एक प्रसिद्ध पत्रकार मरने के बाद जब स्वर्ग के फाटक पर पहुँचा तो उसे अन्दर जाने की इजाज़त नहीं मिली। नरक के द्वार से भी उसे निराश लौटना पड़ा क्योंकि शैतान भी उसे अपने यहाँ नहीं रखना चाहता था। मगर पत्रकार की तीव्र बुद्धि ने एक उपाय सोच निकाला। एक उजड़े हुए तारे पर जाकर उसने अगले सप्ताह एक पत्र निकाल दिया। और दूसरे दिन ही उसे स्वर्ग और नरक दोनों का प्रेस पास मिल गया।

*

एक सम्पादक को निम्न पत्र प्राप्त हुआ—

"प्रिय महोदय, पिछले कई महीनों से मैं देख रहा हूँ कि आपके पत्र में जो चुटकुले प्रकाशित होते हैं, वे बहुत बेहूदे होते हैं। यदि आपने उन्हें प्रकाशित करना बन्द नहीं किया, तो मैं आपका पत्र अपने पड़ौसी से उधार लेकर पढ़ना बन्द कर दूंगा।"

*

शेखर को शहर के सर्वश्रेष्ठ दैनिक पत्र 'न्यूज़ इण्डिया' में रिपोर्टर का काम मिल गया था और वह अपनी इस सफलता से हद से ज्यादा खुश था। इस जगह पर काम करने का स्वप्न वह महीनों से देख रहा था। अब उसको अवसर मिला था कि वह पत्रकारिता के क्षेत्र में बढ़ता बढ़ता संपादक के पद तक पहुँच जाये।

उल्लसित मन से वह पहले ही दिन समाचार-सम्पादक के पास पहुंचा कि वह उसके लिए काम बतायें। समाचार-सम्पादक ने पूछा— 'तुमने पहिले कभी रिपोर्टर का काम किया है?'

'जी नहीं, मगर मैं सब कुछ करने को तैयार हूं, जो आप मुझे करने को कहेंगे।'

समाचार-संपादक हंसा और बोला— 'मिस्टर शेखर, मैं आज शाम तक ऐसी सनसनीदार ताज़ी खबर चाहता हूं जिसका पता किसी अखबार के सम्वाददाता को न लगे। बाहर जाओ, शहर का चक्कर लगाओ, और जहाँ भी कोई अपूर्व घटना— रोमान्स, डकैती या कोई भी ग़ैर-मामूली घटना— घटते देखो, उसका आँखों देखा वर्णन लिखकर मेरे पास लाओ। आज की तुम्हारी रिपोर्ट से पता चल जायगा कि तुम अपने काम में कितनी रुचि लेते हो।'

शेखर ने तहेदिल से समाचार-संपादक का शुक्रिया अदा किया और उसे विश्वास दिलाया कि वह शाम तक एक न एक सनसनीदार कहानी लायगा।

उस दिन शेखर शहर के हर मुहल्ले, हर गली, हर कूचे में ऐसे घूमता फिरा जैसे कोई भूखा शेर अपने शिकार की खोज में जंगल में घूमता है। सर्राफे के बाज़ार में उसने कई चक्कर लगाये, इस आशा में कि शायद आज कोई सर्राफे की दुकान ही लूटने आ जाये। बैंकों के दरवाज़ों के आगे वह काफ़ी देर खड़ा रहा, यह आशा करता हुआ कि शायद आज चोरों का दल बैंक को लूटने के लिये आ जाये। जिस व्यक्ति को देखकर उसके चोर या प्रेमी होने का सन्देह होता वह उसके पीछे हो लेता था।

मगर उसकी सब कोशिशें, सब सन्देह व्यर्थ जाते थे। कोई भी उसे अनुगृहीत करने के लिए किसी भी तरह का जुर्म, प्रेम या गरमागरमी नहीं कर रहा था।

शहर के निवासियों का जीवन-क्रम रोज़ाना की तरह चालू था। वह फायर ब्रिगेड के स्टेशन पर आया। शायद कहीं से आग लगने की खबर आ जाये। आध घण्टे की प्रतीक्षा के बाद उसने आग बुझाने के एंजिन को तेज़ी से स्टेशन के अन्दर जाते देखा। शेखर उछल कर एंजिन ड्राइवर के पास पहुँचा और पूछने लगा— कहाँ आग लगी थी? मैं पत्र संवाददाता हूँ 'न्यूज़ इण्डिया' का।

ड्राइवर से बिना मुस्कराये नहीं रहा गया। उसने कहा— 'न्यूज़ इण्डिया' के आफिस में ही आग लगी थी। हमें देर से ख़बर मिली, इसलिये हम कुछ भी जलने से नहीं बचा पाये। वहाँ सब कुछ जल कर राख हो गया।

कलाकार

प्रसिद्ध कलाकार ह्विसलर की एक प्रशंसिका बड़ाई कर रही थी ।

'हां' वह बोली, 'एक दिन नदी किनारे घूमते समय मुझे आपके चित्रों का ध्यान आ गया । वायु बिल्कुल शान्त थी । पेड़ तथा हरियाली बिल्कुल ऐसे लगते थे जैसे आपने उन्हे चित्रित किया हो ।'

'आप ठीक कह रही हैं,' उत्तर मिला । 'प्रकृति भी अब मेरे व्यवसायिक भेद सीखती जा रही है ।'

*

पबलो पिकासो, संसार का प्रसिद्ध कलाकार, पेरिस के जिस भवन में रहता था, उसके रात्रि के चौकीदार ने पुलिस को एक चोर पकड़ने में सहायता दी थी ।

उसने भागते समय चोर की शक्ल देख ली थी और वह पुलिस को खींचकर दिखा दी थी।

पिकासो बड़ा प्रभावित हुआ। कुछ समय बाद उसके कमरे में भी चोरी हुई। चोर जब उसे रस्सियों से बाँध रहा था, तब पिकासो ने उसे ग़ौर से देखा और सवेरे उसका चित्र बना कर पुलिस को दे दिया। उस चित्र की सहायता से पुलिस ने २०० मनुष्य, एक घोड़ा, एक जोड़ा जूता तथा एक बोतल खोलने का स्क्रू हिरासत में लिये।

*

प्रशंसक—"अहाहाहा! कितनी सुन्दर कलाकृति है। रंगों की क्या ही सुन्दर छटा है! बहुत समय के बाद ......।"

कलाकार— "महाशय जी! वह कलाकृति नहीं मेरा रग पोंछने का कपड़ा है।"

*

आलोचक— घोड़ा तो सुन्दर है पर गाड़ी कहाँ है?

चित्रकार— गाड़ी घोड़ा खींचेगा।

*

निर्धन कलाकार— आपकी समझ मे यह नहीं आता कि कुछ वर्षा बाद लोग आपके मकान को देख कर कहा करेगे कि मै यहाँ चित्र बनाया करता था।

मकान-मालिक— यदि आज रात तक किराया नही मिला तो वह कल से ही कहना शुरू कर देगे।

*

मित्र— तुमने जनरल का ऐसा पोज़ क्यों बनाया?

कलाकार— बात यह हुई कि पहले मुझे उसको घोड़े पर सवार दिखाना था। पर जनरल को बनाने पर पता चला कि कमेटी घोड़े बनाने का व्यय नहीं सह सकती।

*

"मैं इस फोटो को बिल्कुल पसन्द नहीं करता," वह बोला। "मैं बिल्कुल बन्दर सा लगता हूँ।"

"यह तो आपको फोटो खिंचवाने से पहले सोचना चाहिये था।" फोटोग्राफर ने उत्तर दिया।

*

पिता— यह मेरी पुत्री द्वारा चित्रित सन्ध्या का चित्र है। इसे उसने जंगल में जाकर बनाया है।

आलोचक— तभी, तभी ! मैं भी तो कहूँ ऐसी सन्ध्या मैंने शहर में कहीं नहीं देखी ।

*

डरपोक पति— क्या आप मेरी पत्नी का सुन्दर, जीवन के प्रतिरूप चित्र बना सकते हैं ?

चित्रकार— इतना जीवनमय कि हर बार उसे देखने पर आप अपनी सीट से उछल पड़ें ।

*

चित्रकार— जो कुछ सफ़लता मुझे मिली है सब टेलीफोन के कारण है ।

मित्र— यह कैसे ?

चित्रकार— ठीक नम्बर पाने की इन्तज़ार करते समय मै पास रखे पैड पर पेन्सिल चलाया करता था ।

*

फोटोग्राफर— देखिये श्रीमती जी, एक मिनट के लिये मुस्कराइये । केवल एक मिनट के लिये चेहरे पर रौनक़ लाइये । फिर आप अपना स्वाभाविक भाव ला सकती है ।

*

एक धनी पर अनभिज्ञ अंग्रेज़ ने प्रसिद्ध चित्रकार टर्नर को अपना चित्र बनाने के लिये आर्डर दिया । जब वह समाप्त हुआ तो उसने उसका मूल्य देने से इन्कार कर दिया ।

'क्या कहा ! इतना सारा धन ! कैनवस के चौकोर टुकड़े तथा कुछ रंगों के लिये !'

टर्नर ने उत्तर दिया— 'मुझे क्या पता था कि आप कैनवस और रंग माँगते हैं ! देखिये, ये कुछ रंगों के ट्यूब हैं और वहाँ कोने में कैनवस पड़ा है । दोनों ले जायें और मुझे आधे दाम ही दे दें ।'

*

'मेरी समझ में नहीं आता लोग कुमारी मधु की क्यों इतनी प्रशंसा करते हैं ? स्वर के विचार से कुमारी लता का गला अधिक धनी है ।'

'पर कुमारी मधु का पिता अधिक धनी है ।'

*

दावत के समय गृहस्वामिनी की पुत्री गाना सुनाने लगी । प्रसन्नता का गीत

था। पार्टी का एक व्यक्ति सिर झुकाकर बड़े बड़े आँसू ढलकाने लगा। गृहस्वामी ने पूछा— क्या गीत से आपको कोई पुरानी घटना स्मरण हो आई ?

व्यक्ति— जी नहीं, मैं एक संगीतज्ञ हूँ।

*

कलाकार— इस बार की अखिल भारतीय चित्र प्रदर्शनी के लिये मैंने भी एक चीज़ भेजी है।

मित्र— क्या वह टाँगी गई है ?

कलाकार— हाँ, और प्रवेश द्वार के पास ही जिससे कि सब उसे देख सकें।

मित्र— बधाई है ! क्या चीज थी ? निस्सन्देह बढ़िया तस्वीर होगी।

कलाकार— एक बोर्ड, जिस पर लिखा था— किसी चित्र को हाथ न लगायें।

*

एक पेण्टर बहुत कम पैसों में काम करने के लिये प्रख्यात था। परन्तु कुछ कारण हो जाने से उसने निम्न सूचना प्रकाशित कराई—

"अब तक मै और पेण्टरों की अपेक्षा कम पारिश्रमिक लेकर काम करता रहा हूँ क्योंकि मै कुआरा हूँ और मुझे पत्नी तथा बाल-बच्चों के भरण-पोषण के लिये अतिरिक्त लाभ कमाने की आवश्यकता नही होती। अब अपने ग्राहकों को इस बात की सूचना देना मेरा कर्तव्य है कि यह सुविधा शीघ्र ही समाप्त कर दी जायगी क्योंकि मै शीघ्र ही विवाह करने वाला हूँ। अतएव अच्छा होगा कि पुरानी दरों पर ही अपना कार्य करवाने के लिये आप तुरन्त आर्डर दे दें।"

*

पिकासो को आधुनिक चित्र-कला का आचार्य कहा जाता है, किन्तु ऐसे कम ही लोग हैं जो उनके चित्रों को ठीक से समझ पाते हैं। पेरिस में पिकासो के चित्रों की प्रदर्शनी हुई। उसमें एक चित्र के पास खासी भीड़ लगी हुई थी। लोग तारीफ करते थकते नहीं थे। इसी समय घूमता घामता पिकासो वहाँ से निकला। भीड़ में पिकासो के एक मित्र थे। मित्र ने फौरन पिकासो को पकड़ लिया। अलग ले जाकर पूछा, "आपने उस चित्र में क्या दिखाने की कोशिश की है ? समझ में नहीं आ रहा, यद्यपि है ग़ज़ब का चित्र।"

"ओह! वह चित्र!" पिकासो ने धीरे से कहा, "वह तो तख़्ता है जिस पर चित्र बनाते समय मैं अपना ब्रुश छिड़कता था। नौकर ने इसे ग़लती से भेज दिया है।"

*

"ये दस रुपये आपके न गाने की फीस है।"
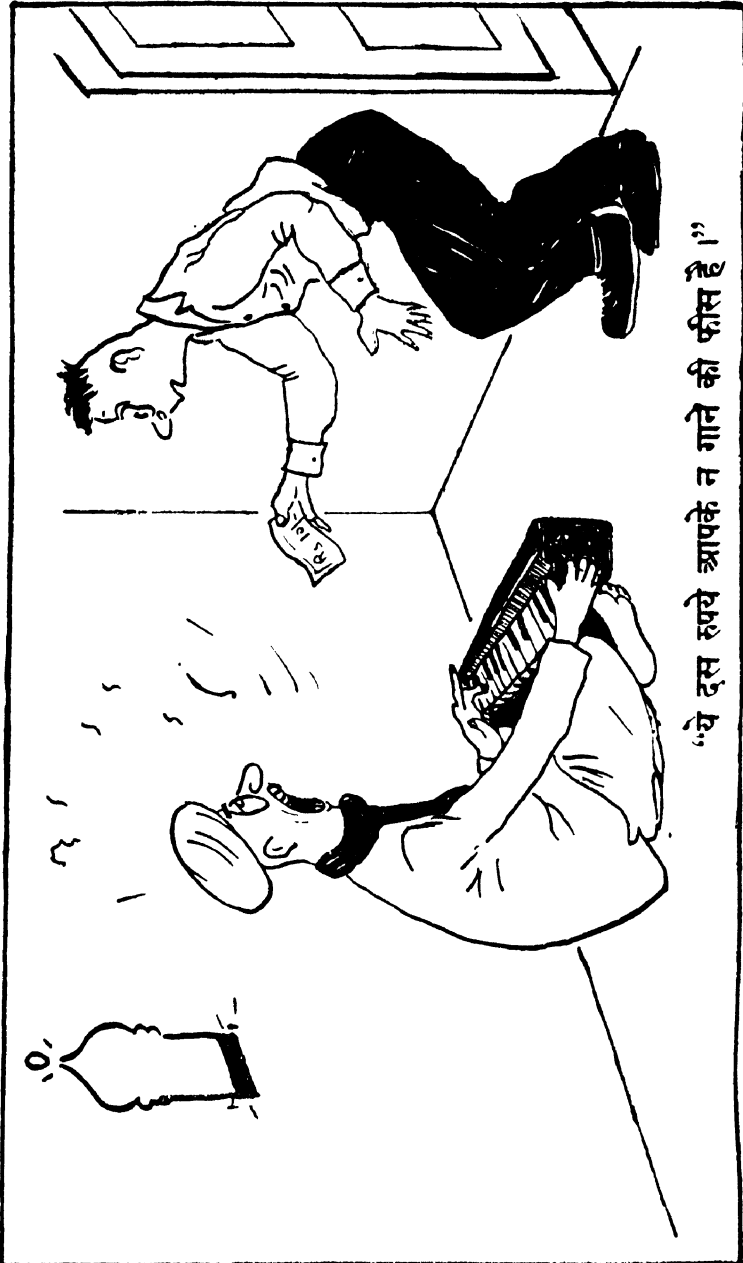
पुरुष— क्या आप अपना कुत्ता बेचने की कृपा करेंगे ? कल मेरी बेटी को अपना गाने का पाठ बीच में रोक देना पड़ा क्योंकि यह पूरे समय गुर्राता रहा।

पड़ौसी— क्षमा करें। पर आरम्भ आपकी पुत्री करती है।

*

लड़का— पिताजी ने पूछा है कि क्या आप आज के लिये अपना हारमोनियम देने की कृपा करेंगे ?

संगीतज्ञ (उत्साह से)— क्यों, आज कोई पार्टी है क्या ?

लड़का— जी नहीं, पिताजी आज आराम से सोना चाहते हैं।

*

पिकासो के चित्रों की प्रदर्शनी में एक चित्र के सम्मुख सबसे अधिक दर्शक खड़े थे। तारीफों के पुल बांधे जा रहे थे। तभी वहाँ पिकासो आया और उसने चित्र को उलट कर सीधा कर दिया। पहले चित्र उलटा लगा था।

*

एक बार एक महिला किसी प्रसिद्ध चित्रकार के यहाँ चित्र ख़रीदने गई। महिला बड़ी अमीर थी और उसके सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध था कि वे कला की बड़ी जानकार हैं।

इतनी प्रसिद्ध और अमीर महिला के स्टूडियो में आने का समाचार मिला, तो कलाकार कुछ घबरा सा गया। जल्दी जल्दी उसने अपने कपड़े ठीक किये और घबराहट में रङ्गों के डिब्बे पर बैठ गया। उसके पतलून की सीट पर कई रङ्ग लग गये। फिर वह एक कुर्सी पर रखे हुए काग़ज़ पर बैठ गया और काग़ज पर उन रंगों के निशान बन आये।

उक्त महिला ने सभी चित्र देखे, किन्तु उसको ऐसा कोई चित्र पसन्द नहीं आया जिसकी कलाकार ने तारीफ़ की। उसने एक ही चित्र पसन्द किया जिस पर क़ीमत नहीं लिखी थी।

यह चित्र वही काग़ज़ था जिस पर कलाकार रंगों के डिब्बे पर बैठने के बाद भूल से बैठ गया था।

*

कलाकार— देखिए, यह मेरी नवीनतम कृति है। यह मेरे सर्वोत्तम चित्रों में से एक है। मैंने इसे अभी समाप्त किया है। जब मैंने इसे बनाना आरम्भ किया मैं नहीं जानता था कि मैं क्या बना रहा हूँ।

मित्र— तो बना चुकने पर तुम्हें कैसे पता चला कि तुमने क्या बनाया है ?

*

कलाकार— मान्यवर ! यह चित्र घास चरती हुई गाय का है।

दर्शक— परन्तु घास कहां है ?

कलाकार-- वह तो गाय खा गई।

दर्शक— और गाय कहाँ है ?

कलाकार— आप समझते हैं कि घास खाकर भी गाय वहीं पर खड़ी रहेगी।

*

एक प्रसिद्ध कलाकार ने एक धनी आदमी की पत्नी का चित्र बनाया, लेकिन वह चित्र उस व्यक्ति को पसंद न आया। चित्रकार से शिकायत करता हुआ वह बोला— "यह तो किसी बदसूरत स्त्री का चित्र मालूम होता है।"

चित्रकार ने चिढ़कर जवाब दिया— "तो जनाब, अगर आपको सेब का चित्र बनवाना था तो मेरे सामने नाशपाती लाकर क्यों रख दी ?"

*

युवक (वृद्धा से)— माताजी, आप ग़लती कर रही हैं। मैं डाक्टर हूँ अवश्य, पर संगीत का, न कि रोगों का।

वृद्धा— तभी तो मैं आपके पास आई हूँ। मेरे कानों में गाने की हलकी हलकी आवाज गूंजती रहती है।

*

गायक-- "गाना आरम्भ होते ही एक एक कर सब श्रोता चले गये— हमारा गाना वे मूर्ख समझे ही नहीं। बस एकमात्र तुम ही ऐसे गुणज्ञ श्रोता हो जो अभी तक गाना सुन रहे हो।"

श्रोता— "मैं श्रोता नहीं, चौकीदार हूँ और इन्तज़ार कर रहा हूँ कि आप उठें तो दरवाज़ा बन्द करूँ।"

*

कहते हैं पेरिस में औसतन प्रत्येक कमरे में दो चित्रकार होते हैं। सो एक चित्रकार की प्रशंसा सुनकर मैं उसके चित्र देखने गया। ठंड का मौसम था और चित्रकार का कमरा सातवीं मंजिल पर। वहाँ पहुँचकर मैंने देखा कि अंगीठी तो थी, परन्तु उसमें आग नहीं थी; हाँ एक लकड़ी का लट्ठा अंगीठी के पास ही बाहर पड़ा था। चित्रकार एक चित्र बनाने में तल्लीन था। मैं उसके चित्र भी देखता जाता था और बीच-बीच में एक निगाह उस लकडी के लट्ठे की ओर भी डाल देता था— इस उम्मीद में कि शायद चित्रकार महोदय आग सुलगा दें। इतने में चित्रकार ने तूलिका रखी, लकड़ी का लट्ठा उठाया और खिड़की खोलकर नीचे फेंक दिया। दौड़कर नीचे गए और हांफते हुए उठा लाए। मेरे पूछने पर बताया—

"एक ही लट्ठा है, जला दूं तो दूसरा कहाँ से लाऊं। सो हर २० मिनट के पश्चात् इसे नीचे फेंककर उठा लाता हूँ— गरमी आ जाती है।"

डाक्टर

त्वचा के रोगों के विशेषज्ञ से उसके एक मित्र ने पूछा— 'तुमने त्वचा के रोगों की चिकित्सा की ही शिक्षा क्यों ली ?'

'भाई मेरे, इसमें तीन लाभ हैं— पहला यह कि मेरे रोगी मुझे रात में नहीं जगाते, दूसरा यह कि मेरे रोगी अपने रोग के कारण नहीं मरते और तीसरा यह कि उनका रोग कभी ठीक नहीं होता।'

*

रोगी ने डाक्टर से प्रश्न किया— 'डाक्टर साहब, सच सच बतलाइये मेरे अच्छे होने की क्या सम्भावना है ?'

'शत प्रतिशत,' डाक्टर ने कहा। 'आँकड़ों से पता चलता है कि इस रोग में दस में से नौ रोगियों की मृत्यु हो जाती है। मेरे इलाज से नौ रोगी इस रोग से मर चुके हैं। आप दसवें हैं।'

*

एक बार एक मनुष्य के सिर में दर्द था। उसने नौकर को एक चिट्ठी लिख कर दी जिसमें मस्तक पर लगाने के लिये एक मित्र डाक्टर के यहाँ से सिरका मंगाया था।

डाक्टर ने नौकर को काग़ज़ में जूता लपेट कर दे दिया और परचे का उत्तर लिख दिया— "सिर का तो खत्म हो गया, पैर का भेज रहा हूँ। चाहे जितना लगा लीजिए।"

*

मिस्टर कमल जब अपने एक मनोवैज्ञानिक डाक्टर दोस्त के यहाँ पहुँचे तो देखा वह अपना सिर पकड़े बैठे हैं और कह रहे हैं, "मुझे अब ज़रूर किसी मनो-वैज्ञानिक डाक्टर के यहाँ जाकर अपने आपको दिखाना पड़ेगा।"

मिस्टर कमल ने कहा, "पर आप तो स्वयं ही अच्छे मनोवैज्ञानिक डाक्टर हैं।"

डाक्टर— "भई, यह तो मैं जानता हूँ, पर मेरी फीस तो बहुत है।"

*

एक बार एक रोगी एक वैद्य के पास गया और उससे कहा, "वैद्य जी, मैं हर बात शीघ्र भूल जाता हूँ।"

वैद्य— "तो मेरी फ़ीस मुझे पहले ही दे दो, कभी बाद मे भूल जाओ।"

*
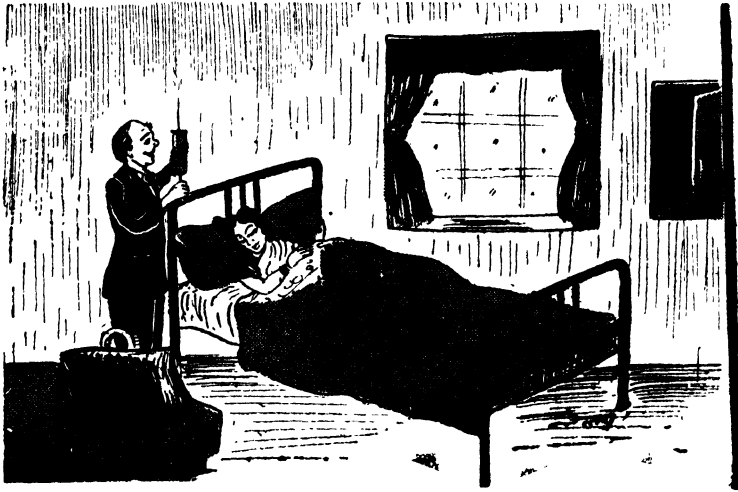
स्त्री के सुन्दर होने में एक दोष यह भी है कि डाक्टर स्त्री को शीघ्र ही रोग-मुक्त करने का प्रयत्न नहीं करता।

*

डाक्टर (रोगी से)— भई तुम बहुत ज़्यादा बीमार रहे। मैं तो यही कहूंगा कि तुम अपनी भीतरी शक्ति के कारण ही ठीक हुए हो।

'ठीक है डाक्टर साहब,' रोगी ने उत्तर दिया। 'मुझे आशा है आप अपनी फीस का बिल बनाते समय इस बात का ध्यान रखेंगे।'

*

एक आदमी डाक्टर के पास आया। 'डाक्टर, मुझे बहुत ज़ोर का ज़ुकाम और सर्दी है।'

डाक्टर बोला, 'मुझे खेद है कि सर्दी की मेरे पास कोई दवाई नहीं। लेकिन यदि आपको निमोनिया हो जाय तो उसकी रामबाण दवा मेरे पास है।'

*

मरीज़ ने परेशानी के स्वर में डाक्टर से पूछा, "सच सच बताइये, क्या मैं अच्छा हो जाऊँगा? मैंने सुना है कि डाक्टर अक्सर रोग का ग़लत अनुमान लगा लेते हैं। इलाज निमोनिया का करते हैं और जब रोगी की मृत्यु हो जाती है तो पता चलता है कि उसे टाईफायड बुख़ार था।"

"क्या बकवास करते हैं आप?" डाक्टर ने क्रोधित होकर कहा, "जब मैं

किसी रोगी का निमोनिया का इलाज करता हूँ तो उसकी मृत्यु निमोनिया से ही होती है।"

*

मरीज़— डाक्टर! मुझे बहुत पीड़ा हो रही थी। मैं उसे सहन नहीं कर सका और मैं मरना चाहता था।

डाक्टर— तुमने बहुत अच्छा किया जो मुझे बुलवा भेजा।

*

रात्रि के तीन बजे डाक्टर के टेलीफोन की घण्टी बज उठी। गहरी नींद में सोता हुआ डाक्टर लाचार होकर उठा और टेलीफोन उठाया।

'मुझे नींद नहीं आ रही डाक्टर साहब।' टेलीफोन में से एक रोगी की आवाज़ आई।

डाक्टर ने चिढ़ कर कहा, 'ज़रा टेलीफोन कान पर लगाये रखिए, मैं अभी लोरी गाना शुरू करता हूँ।'

*

डाक्टर (रोगी को आपरेशन की मेज़ पर लिटाते हुए)— मैं आप से छिपाना नहीं चाहता। असल बात यह है कि इस आपरेशन में पाँच में से चार रोगियों की मृत्यु हो जाती है। इससे पहले कि मैं आपरेशन शुरू करूँ, बतलाइये मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूँ।

रोगी— कृपया मेरी पतलून और जूता मुझे दे दीजिए।

*

डाक्टर— आप मेरी सलाह के मुताबिक़ खिड़कियाँ खोलकर सोये थे?

रोगी— जी हाँ।

डाक्टर— तब तो आपका ज़ुक़ाम ग़ायब हो गया होगा?

रोगी— जी नहीं, घड़ी और पर्स ज़रूर ग़ायब हो गये।

*

मन का इलाज करने वाले दो चिकित्सक एक दिन शाम को मिले। उनमें से एक बोला— भाई, मैं तुम्हारी तारीफ करता हूँ जो तुम शाम के समय भी इतना खुश और ताज़ा नज़र आते हो। मैं तो दिन भर अपने मरीज़ों का हाल सुनते सुनते शाम तक बिल्कुल थक जाता हूँ।

दूसरा बोला— अच्छा तो तुम दरअसल उनकी बातें ध्यान से सुनते हो।

*

एक आदमी के दाँत में दर्द था। सिवाय दाँत निकलवाने के और कोई चारा नहीं दिखाई देता था। लाचार होकर वह दाँत वाले डाक्टर के यहाँ गया

लेकिन दाँत निकलवाने की हिम्मत नहीं हुई।

दाँत के डाक्टर ने यह देखकर अपने कम्पाउन्डर से कहा, 'इन्हें थोड़ी सी ब्रांडी पिलाओ ताकि घबराहट कम हो जाये।'

जब वह ब्रांडी पी चुका तो डाक्टर ने पूछा, 'कहिये अब क्या हाल है? कुछ हिम्मत आई?'

दाँत का रोगी चुप बैठा रहा। डाक्टर ने उसे थोड़ी सी ब्रांडी और पिलवाई और पूछा, 'कहिये अब क्या हाल है?'

रोगी यह सुनते ही कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और बोला— 'देखूं, किसकी हिम्मत है कि मेरे दाँत में हाथ लगाये?'

*

एक महिला ने एक डाक्टर को रास्ते में रोक कर कहा— 'मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि इस कोने वाले मकान में रहने वाले नगरसेठ के इकलौते बच्चे के इलाज के लिये आप काफी रुपये ले रहे हैं।'

'जी हाँ।'

'तो आधे रुपये मुझे देने की कृपा करें। मेरे बच्चे ने ही उसके बच्चे को चोट पहुँचाई थी।'

*

"डाक्टर साहब, मैंने सन् ३३ में आपसे अपने जुक़ाम का इलाज कराया था?"

"फिर।"

"फिर क्या? देखते नहीं, मुझे अब भी छींकें आ रही हैं।"

*

डाक्टर ने नर्स से कहा— "तुम मुझे मरीज़ के बुख़ार के चार्ट की बजाय अपनी डायरी क्यों दिखा रही हो?"

नर्स— "इससे आपको मरीज़ की हालत का पता ज्यादा चलेगा।"

*

"डाक्टर," एक महिला ने कहा, "मुझे कुछ हरारत महसूस हो रही है, दवा दे दीजिए।"

नब्ज़ देखने के बाद डाक्टर बोला, "कोई खास बात नहीं है, श्रीमती जी। आपको थोड़ा आराम करना चाहिये। थकान है, मिट जायगी।"

लेकिन महिला के चित्त को इससे शान्ति नहीं मिली, "मेरी ज़बान भी देख लीजिए।"

डाक्टर ने चुपचाप जबान भी देख ली, फिर शान्तिपूर्वक बोला, "उसे भी आराम की ज़रूरत है।"

*

दांत निकालने वाला डाक्टर (क्रोध मे भर)— "अरे साहब, खामोश हो जाइये। आप तो व्यर्थ में चिल्ला रहे है और हाथ पाव मार रहे हैं। अभी तो मैंने आपके दाँत को हाथ तक नहीं लगाया।"

रोगी— "यह तो मुझे मालूम है डाक्टर साहब, लेकिन आप मेरे पांव का पंजा दबाये खड़े हैं।"

*

एक अधेड़ अवस्था की स्त्री एक सौन्दर्य विशेषज्ञ के पास पहुँची, और बोली, "मेरा चेहरा सुन्दर बना दीजिए। इसकी फीस क्या होगी?"

डाक्टर ने जवाब दिया, "पाँच हज़ार रुपये।"

स्त्री आश्चर्य से बोली, "यह तो बहुत ज्यादा है। कोई सस्ता सा लटका नहीं है?"

डाक्टर ने सलाह दी, "जी हाँ, है। आप घूँघट काढ़ना शुरू कर दीजिए।"

*

"डाक्टर साहब, मेरा सिर बहुत जोर से दुखा करता है, कोई इलाज बताइए।"

"आप सिगरेट बहुत पीते हैं?"

"नहीं, मैं तम्बाकू को हाथ तक नहीं लगाता, शराब नहीं पीता, सब काम नियमित समय पर करता हूँ। पिछले दस वर्षों में एक बार भी मैंने मित्रों के साथ हो-हल्ला में समय नष्ट नहीं किया।"

"तब आपकी बीमारी का कारण एक ही हो सकता है-- अपनी दुर्व्यसन-हीनता के गर्व से आपका सिर फिर गया है।"

*

एक डाक्टर आधी रात गए बहुत थक कर घर पहुँचा। सोने की तैयारी करते हुए उसने अपनी पत्नी से कहा कि चाहे किसी का टेलीफोन आए वह कोई बहाना बना कर उसे टाल दे।

थोड़ी देर में फोन की घण्टी बज उठी। पत्नी ने रिसीवर उठाकर कहा, "डाक्टर तीन दिन के लिए बाहर गये हुये हैं।"

आवाज़ आई-- "मैं श्रीमती सिंह हूँ। मेरे सिर में दर्द उठ रहा है, अब क्या करूँ?"

डाक्टर उसका इलाज कर रहे थे, इसलिए उन्होंने ज़रूरी बातें संक्षेप में अपनी पत्नी को बताई, और पत्नी ने श्रीमती सिंह को।

तब श्रीमती सिंह बोली, "बहुत बहुत धन्यवाद! परन्तु मुझे इतना बता दीजिये कि इस समय जो सज्जन आपके शयनकक्ष में मौजूद हैं वे प्रशिक्षित डाक्टर तो हैं।"

*

डाक्टर ने रोगी के सीने की स्टेथस्कोप से जाँच शुरू की ही थी कि उसके औषधालय में बैठे बालक ने अपनी माँ से पूछा— "डाक्टर साहब यह क्या कर रहे हैं?"

माँ ने उत्तर दिया-- "वह उसके शरीर के अन्दर टेलीफोन कर रहे हैं कि अन्दर क्या बात है।"

*

"बस, आप यही टॉनिक ले लीजिए। इसे लेने के बाद आपको किसी दूसरे टॉनिक की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। कहिए दूँ एक बोतल।"

"ऐसा है तो, रहने दीजिए। मैं अभी कुछ दिन और जीना चाहता हूँ।"

*

"तो इस इलाज से आपकी स्मरण शक्ति सुधर रही है। आपको अब बातें याद रहती हैं न?"

"बिलकुल तो याद नहीं रहती। लेकिन इतना सुधार हुआ है कि मुझे यह याद आ जाता है कि मैं कुछ भूल गया हूँ। परन्तु क्या भूल गया हूँ, यह याद नहीं आता।"

*

एक डाक्टर ने एक महिला की परीक्षा करके उसे परामर्श दिया— "आप उत्तेजित मत हुआ करिए। चाहे कितनी ही कठिन समस्या उपस्थित हो, मुसकराती रहिए। यदि किसी से कहा-सुनी हो जाए तो अपने कमरे में जाकर बैठ जाइए। न रोइए, न क्रोध कीजिए, अन्यथा आपको बड़ा कष्ट उठाना पड़ेगा।"

महिला के चले जाने के बाद डाक्टर के एक परिचित रोगी ने उनसे पूछा— "यह महिला क्या हृदय रोग से पीड़ित हैं?"

डाक्टर ने मुस्करा कर कहा— "उनका हृदय तो बिल्कुल अच्छा है। मैं तो अपने साथी पुरुषों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहा हूँ। मेरे परामर्श का पालन करने वाली महिलाओं के पति अधिक दिनों तक और अधिक सुखपूर्वक जीवित रह पाते हैं।"

*

मरीज़— बधाई, डाक्टर साहब, बधाई।

डाक्टर— क्यों?

मरीज़— सचमुच आपने अपने शब्द सत्य कर दिखाए।

डाक्टर— कौन से शब्द?

मरीज— आपने कहा था कि मैं एक ही महीने में खूब चलने लगूंगा। यह शब्द सचमुच सिद्ध हो गये। आपके बिल की अदायगी के लिये मुझे अपनी साइकिल बेचनी पड़ी और अब मैं पैदल ही आता जाता हूँ।

*

रास्ते में डाक्टर को रोक कर एक व्यक्ति ने पूछा, 'डाक्टर साहब, छाती में दर्द होने पर क्या करना चाहिये?'

लोग डाक्टर से कई बार इस तरह सलाह ले चुके थे और उसकी फीस मारी गई थी। इसलिये मरीज़ को दुकान पर आने का संकेत करने के लिये वह बोले— 'करना क्या चाहिये, यही, किसी अच्छे डाक्टर की सलाह लेनी चाहिये।'

'अच्छी बात है। मैं किसी अच्छे डाक्टर के यहाँ जाऊँगा, अभी जाता हूँ।'

*

'डाक्टर साहब, मैं आपको बहुत धन्यवाद देता हूँ। आपके इलाज से मेरा बहुत लाभ हुआ है।'

'लेकिन मैंने तो तुम्हारा इलाज नहीं किया। मैंने आज तुम्हें पहली बार देखा है।'

'हाँ, लेकिन आप मेरे चाचा का इलाज कर रहे थे। अब मैं उनकी जायदाद का मालिक बन गया हूँ।''

*

डाक्टर— मालूम होता है तुम्हारे मुँह में किसी प्रकार का जहर फैला है। कुछ दाँत उखाड़ने पड़ेंगे।
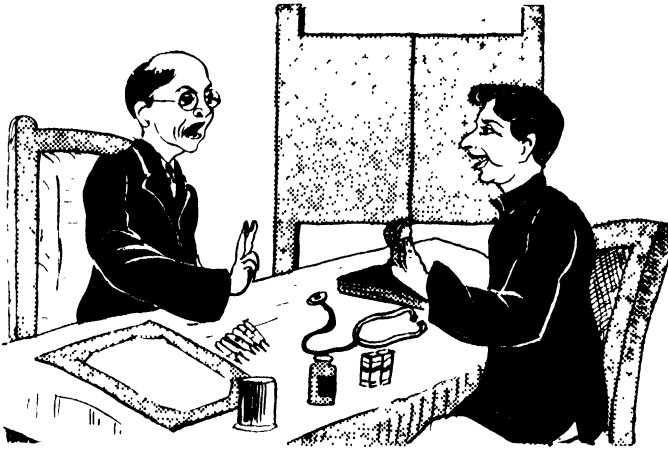
रोगी (अपने कृत्रिम दाँतों का पूरा जबाड़ा निकालते हुए)— लीजिये डाक्टर साहब, सब हाज़िर हैं।

*

रोगी— 'डाक्टर, मुझे क्या चाहिये जानते हो? मुझे कुछ वह चाहिये जिससे मैं एकदम लड़ने झगड़ने के 'मूड' में आ जाऊँ। मतलब यह कि मेरा आलस्य मुझ से छूट जाये। यानी मैं उठ बैठकर किसी को कुछ कहने-सुनने लायक़ बन सकूं। कुछ ऐसी चीज़ चाहिये मुझे, डाक्टर। नुस्खे में कुछ ऐसी चीज रखी है क्या आपने?'

डाक्टर— 'नुस्खे में नहीं है। वह चीज़ आप बिल में पायेंगे।'

*

एक डाक्टर ने अपने मरीज़ से कहा— ''तुम्हें कोई खास बीमारी तो नहीं

मालूम पड़ती। घर से बाहर निकल कर दो तीन मील घूमा करो। अच्छा बताओ, तुम क्या काम करते हो?"

व्यक्ति ने जवाब दिया— "हुजूर, मैं डाकिया हूँ।"

*

"देखिये डाक्टर, मुझे जो रोग हो, उसे साधारण शब्दों में ही मुझे बता दीजिये। उसका लम्बा चौड़ा डाक्टरी नाम बतायेंगे, तो डर के मारे मैं वैसे ही आधा मर जाऊँगा। बस, आप उसका ऐसा नाम बता दीजिये जो मेरी समझ में आ जाये। हाँ, तो मुझे क्या रोग है?"

"रोग! रोग तो तुम्हें कोई भी नहीं है। साफ साफ कहा जाये तो यही कहा जायगा कि तुम निपट आलसी हो।"

"धन्यवाद डाक्टर! अच्छा तो अब आप मुझे इसका डाक्टरी नाम भी बता दीजिये, ताकि मैं घर जाकर श्रीमती जी को बता सकूं।"

*

अध्यापक— "तेरा हस्तलेख इतना ख़राब है कि बिल्कुल भी पढ़ा नहीं जाता। आगे चलकर तेरा क्या हाल होगा?"

शिष्य— "इसकी मुझे फ़िक्र नहीं है, मास्टर साहब! पिताजी मुझे डाक्टरी शिक्षा दिलाने जा रहे हैं।"

*

एक नीम हकीम अपना नया 'टॉनिक' बाज़ार में बेचते समय फर्मा रहे थे— "भाइयो और बहनो! मैं इस टॉनिक को २५ साल से बेच रहा हूँ, और इस अरसे में मुझे इसके बारे में एक भी शिकायत सुनने को नहीं मिली।"

"मुर्दे शिकायत करने आएँगे क्या?" भीड़ में से किसी ने कहा।

*

रात के दो बजे एक डाक्टर को किसी ने फोन किया। आवाज़ उसके एक पुराने रोगी की थी जो कह रहा था— "डाक्टर साहब! कृपया आप यहाँ एकदम चले आइये। मेरी पत्नी को बड़ी तकलीफ है। मेरा ख्याल है अपैन्डीसाइटिस है।"

डाक्टर ने कुछ याद करते हुए कहा— "अच्छी बात है, घबराने की कोई आवश्यकता नहीं। शायद पेट में मामूली सी ख़राबी है। मैं सुबह को आऊँगा।"

"नहीं, डाक्टर, नहीं। आप अभी आइये। उसके अपैन्डीसाइटिस होने का मुझे पूरा यक़ीन है।"

"मगर श्रीमान् जी! मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने पिछले साल ही

आपकी पत्नी के अपैण्डिक्स निकाले थे, और यह तो आप जानते ही हैं कि उनके एक से अधिक अपैण्डिक्स नहीं हो सकते।"

"मगर आप यह भी तो जानते होंगे डाक्टर कि किसी आदमी के एक से अधिक पत्नियाँ तो हो सकती हैं।"

*

रात के क़रीब एक बजे एक अन्य डाक्टर के बंगले की घंटी बजी। गुस्से में भरे डाक्टर ने बाहर खड़े व्यक्ति से पूछा— "क्यों, क्या बात है?"

"जी, मुझे कुत्ते ने काट खाया है।"

"पर तुम्हें मालूम है कि मैं शाम के ७ बजे दवाखाने से आने के बाद किसी से नहीं मिलता।"

"जी हाँ। मगर कुत्ते को यह बात मालूम नहीं थी।"

*

एक मरीज़ को अच्छी तरह देखभाल कर डाक्टर ने कहा, "मुझे सख्त अफसोस है, मगर मुझे सच बोलना ही पड़ेगा। तुम्हारी हालत बहुत ख़राब हो चुकी है ··· अब अन्त में तुम किससे मिलना चाहोगे?"

मरीज़ ने कुछ सोचकर कहा— "किसी दूसरे डाक्टर से।"

*

"कहिये, आप अपने पति को बराबर दवा देती रहीं न?"

"जी, मैं तो बड़े चक्कर में पड़ गई हूँ। आपने गोलियों की शीशी के ऊपर लिखा है 'एक गोली दिन में तीन बार दी जाय।' मगर डाक्टर, एक गोली दिन में तीन बार कैसे दी जा सकती है?"

*

एक चीनी से पूछा गया: "क्या चीन में अच्छे डाक्टर हैं?"

"अच्छे डाक्टर!" उसने कहा, "क्यों नहीं! चीन तो अच्छे डाक्टरों से भरा पड़ा है। हैंग चांग को ही ले लो। वह चीन का सबसे अच्छा डाक्टर है। उसने एक बार मेरी जान बचाई थी।"

"जान बचाई थी! कैसे?"

"मेरी तबियत ठीक नहीं थी, इसलिये मैंने डाक्टर हैन कॉन को बुलाया। उन्होंने मुझे कुछ गोलियाँ दीं, पर उन्हें खाकर मेरी तबीयत और भी ख़राब हो गई। मैंने फिर डाक्टर सान सिंग को बुलाया। उन्होंने मुझे पीने की दवा दी, पर उससे मेरी तबीयत और भी ख़राब हो गई। मुझे लगा मैं मरने वाला हूँ। अन्त में मैंने डाक्टर हैंग चांग को बुलाया। उन्हें समय नहीं था, इसलिये वे नहीं आये।

मैं अच्छा हो गया, और मेरी जान बच गई।"

मिलटरी बैंड का एक कलाकार ख़राब गले का इलाज कराने अस्पताल गया। पूर्ण निरीक्षण के बाद डाक्टर ने उसे इलाज बता कर कुछ सलाह दी और उसके लिये सर्टिफिकेट भी दे दिया।

कुछ दिनों बाद वही कलाकार डाक्टर को बाज़ार में मिल गया। डाक्टर ने हालचाल मालूम कर पूछा, "बैगपाइप बजाने में अब तो तकलीफ नहीं होती? गला तो अब तुम्हारा बिलकुल ठीक हो गया होगा?"

"बैगपाइप! पर मैं तो बैंड में ढोल बजाता हूँ!"

*

डाक्टर (सब ओर टटोल कर)— अब पता चला आप के दाँत खराब है।

*

एक रोगी बहुत देर तक दवाख़ाने में डाक्टर की प्रतीक्षा करता रहा, परन्तु डाक्टर को न आता देखकर उनके नाम चिट्ठी लिख कर चला गया। चिट्ठी में लिखा था— 'स्वाभाविक मौत मरने के लिये लौट कर जा रहा हूँ।'

*

. दस साल के एक लड़के का दाँत निकालने के बाद डाक्टर ने उसके पिता से कहा— "लाइये पाँच रुपये!"

"पांच रुपये! मगर आपने तो पहले कहा था कि आप दाँत उखाड़ने का एक रुपया लेते हैं।"

"ठीक है, मगर आपके लड़के की चिल्लाहट ने दाँत उखड़वाने के लिये आये हुए मेरे चार मरीज़ों को जो भगा दिया।"

*

मरणोन्मुख युवक से डाक्टर ने पूछा— "तुम्हारी अन्तिम इच्छा क्या है?"

युवक ने, जो एक स्टेनोग्राफर था, कहा— "डाक्टर, मेरे मरने के बाद कृपया मेरा एक काम कर दीजियेगा। कमला को मेरी ओर से यह पत्र टाइप कराके भिजवा दीजियेगा— 'प्रिय कमला, मरते समय मुझे बस तुम्हारी ही याद थी।' और हाँ, इसकी तीन प्रतिलिपियाँ सुधा, कृष्णा, और विमला को भी भेज दीजियेगा।"

*

"क्या इस दाँत को तुमने कभी पहले भी भरवाया था?"

"जी नहीं।"

"तब तो आश्चर्य की बात है, क्योंकि मै जिस औज़ार से ड्रिलिंग कर रहा था, उस पर सोने के कण मौजूद हैं!"

"ओह डाक्टर! तब तो आपने मेरे कॉलर के सोने के बटन का भी ड्रिलिंग कर दिया है।"

*

नौकर (मालकिन से)— बीबी जी, डाक्टर साहब आये हैं।

मालकिन (झुंझलाकर)— चाहे कोई हो, उसे कह दे मेरे सिर में सख़्त दर्द हो रहा है, मुझे मिलने की फुरसत नहीं।

*

'अब तुम्हारे पिता कैसे है, शान्तिस्वरूप?' डाक्टर ने पूछा।

शान्तिस्वरूप ने उत्तर दिया, 'कल तक तो अच्छे हो गये थे। पर आज आपका भेजा फीस और दवाई का बिल देखकर फिर उन्हें गश आ गया।'

*

डाक्टर— क्यों ज्योतिषी जी, आपके अनुसार प्राचीन काल में मनुष्य सैंकड़ों वर्ष जीते थे। ऐसा क्यों था?

ज्योतिषी— क्योंकि उस समय डाक्टर नहीं होते थे।

*

मरीज़— डाक्टर साहब, क्या आपकी यह दवाई मेरे मुटापे को कम कर देगी?

डाक्टर— मुटापे की तुम चिन्ता मत करो। उसकी देखभाल तो मेरा बिल

कर लेगा ।

*

हरि— मेरे चाचा अपनी कार में थे जब वह एक ठेले से लड़ गई। उनके बहुत चोट आई। पर सौभाग्य से डाक्टर अच्छा मिल गया। उसने कहा कि घबराने की कोई बात नहीं है, मैं एक महीने में आपको सड़क पर चलने फिरने लायक बना दूंगा।

मित्र— क्या वह सचमुच ऐसा होशियार निकला ?

हरि— हाँ, क्यों नहीं! महीने के उपरान्त जब उसका बिल आया तो चाचा को अपनी कार बेचनी पड़ी।

*

डाक्टर— तुम्हारे किस कान मे दर्द है ?

मरीज़— ठहरिये, मैं अपने नौकर से पूछकर आता हूं कि मेरे किस कान में दर्द है।

*

बच्चों के एक अस्पताल में एक बच्चा लाया गया जिसके सारे शरीर पर लकवा मारा हुआ था। डाक्टरों ने बहुत परिश्रम से उसका इलाज किया। अन्त में वह दिन आ गया कि उसे चला कर देखा गया। अस्पताल के सारे डाक्टर जमा थे और बड़ी गम्भीरता से इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि बच्चा चल पाता है या नहीं। बच्चा कुर्सी से उठा और चलना आरम्भ कर दिया। लेकिन उसने दोनों हाथ कसकर अपनी कमर पर लगा लिये। डाक्टर यह देखकर घबरा गये। एक डाक्टर ने उससे पूछा, "बेटा क्या बात है, हाथ नहीं चलाते ?"

लड़का बोला, "नहीं।"

डाक्टरों ने फिर पूछा, "क्या हाथों में दर्द होता है ?"

लड़का बोला, "नहीं।"

एक बूढ़ा डाक्टर भी वहाँ मौजूद था। उसने बड़ी नम्रता से कहा, "देखो बेटा, हमारी खातिर हाथ चला कर दिखाओ।"

लड़के ने उत्तर दिया, "नहीं। मैं इनसे अपना पजामा पकड़े हुए हूँ, नहीं तो निकल पड़ेगा।"

*

एक नये डाक्टर साहब एक मौहल्ले में आकर बसे। वहाँ के एक महाशय ने उनसे इलाज कराना आरम्भ किया। लेकिन वे न तो उसकी फीस देते थे और न ही दवाई के दाम। ऐसा करते करते एक वर्ष बीत गया। डाक्टर शर्म के मारे अपने पैसे नहीं मांगता था। आखिर एक दिन तंग आकर उसने उनको पत्र

लिखा। उसमें डाक्टर ने सूचना दी थी कि बिल एक साल का हो गया है।

महाशय जी ने फौरन ही उसके पीछे कुछ पंक्तियाँ लिखी और बिल डाक्टर साहब के पास वापिस भेज दिया। इन पंक्तियों में लिखा था— "बिल की वर्षगांठ पर लाख-लाख बधाई। भगवान इसे हज़ारों वर्ष जीवित रखे।"

*

बेहोश पड़े एक मरीज़ को देखकर डाक्टर ने कहा— "यह तो मर गया है।"

यह सुन तुरन्त ही मरीज़ ने होश में आकर कहा— "पर मैं तो जीवित हूँ।"
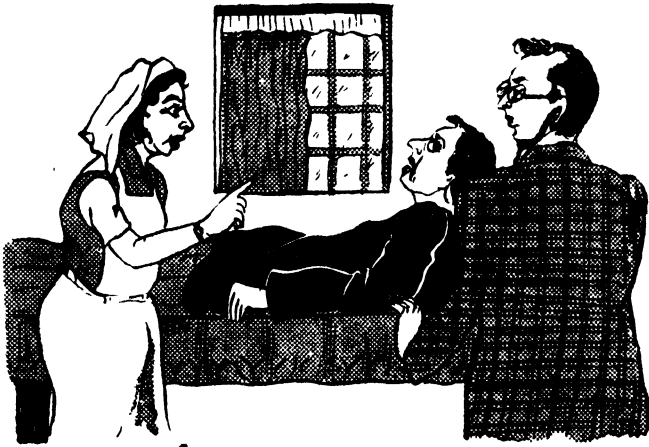
सुनकर नर्स ने मरीज़ को फटकारा— "चुप रहो जी, बको मत। डाक्टर तुमसे अधिक जानता है।"

*

मित्र— तुम अपने बूढ़े चाचा का इलाज क्यों नहीं करते? तुम तो डाक्टर हो?

डाक्टर— इसलिये कि मेरा चाचा बहुत अमीर है।

*

डाक्टर— तुम्हारा पति व्यायाम नहीं करता इसलिए मुझको डर है कहीं वह ....

स्त्री— कोई हर्ज नहीं। जब मेरा दर्ज़ी उनके पास मेरे कपड़ों की सिलाई का बिल लायगा तो वह इतना उछले कूदेंगे कि अच्छा खासा व्यायाम हो जायगा।

*

नौजवान डाक्टर सिनेमा देखने गया था और बड़ी एकाग्रता से परदे पर का दृश्य देख रहा था। इतने में एक बूढ़े मरीज़ ने पीछे से कहा— "डाक्टर साहब, मेरी तबीयत बहुत ख़राब हो गई है। मुझे सिर में चक्कर आ रहा है, पेट में दर्द हो रहा है, गले में ...."

डाक्टर बोल उठा, "ठीक है, ठीक है, मैं समझ गया। लीजिये यह टिकिया मुँह में रख लीजिये। मगर ख़बरदार! मुँह से निकालियेगा नहीं और न निगल जाइयेगा।" अंधेरे में ही उसने एक गोल टिकिया जेब से निकाल कर मरीज़ को दे दी, और फिर परदे के चलचित्र को देखने लगा।

टिकिया ने खूब काम किया। थोड़ी देर बाद मरीज़ का दर्द कम होने लगा। पर उसको आश्चर्य इस बात पर हो रहा था कि टिकिया न तो घुलती थी, न उसमें किसी प्रकार का स्वाद ही आता था। सिनेमा ख़त्म हुआ तो हॉल में रोशनी हुई।

मरीज़ ने डाक्टर से कहा, "आपने दवा तो खूब दी, डाक्टर साहब, मेरा सब कष्ट दूर हो गया। मगर यह चीज क्या है?"

उसने मुँह से टिकिया निकाल कर देखी। वह एक सीप का बटन था।

*

एक महाशय के पेट में दर्द उठा। वे दौड़े दौड़े डाक्टर के पास पहुँचे।

डाक्टर ने पूछा— "आपने रात को क्या क्या चीज़ें खाई थीं?"

महाशय ने बताया— "अचार, आइसक्रीम, प्याज़ के भजिए, रायता, अण्डे।"

डाक्टर ने उनसे कहा— "अच्छा, आप परीक्षार्थ इस ऊँची मेज पर लेट जाइये।"

महाशय आदेशानुसार लेट गये। तभी सहसा उनकी नज़र दीवार पर टंगे हुए डाक्टर के उपाधिपत्र पर पड़ी। आप बोले— "अरे, आप तो जानवरों के डाक्टर हैं!"

डाक्टर ने कहा— "हाँ, मैं घोड़ों का इलाज तो करता ही हूँ, परन्तु गधे और खच्चरों पर तरस आता है। उनका भी इलाज करना पड़ता है।"

*

डाक्टर के पास एक स्त्री आई। उसके हाथ में एक फुन्सी हो गई थी। डाक्टर ने उसको ध्यान से देखकर कहा— "बहुत अच्छा हुआ कि तुम आज ही मेरे पास आ गई।"

स्त्री— "क्यों, क्या रोग भयानक है?"

डाक्टर— "बिल्कुल नहीं, यदि तुम कल तक सन्तोष करती तो स्वयं अच्छी हो जाती। मेरी फीस का नुक़सान होता।"

*

"डाक्टर साहब, आज आकर मेरे पति को देखिये तो! उनको शायद कोई बीमारी हो गई है। कभी कभी मैं घण्टों उनसे बातें किया करती हूँ पर वे एक बार भी मुँह नहीं खोलते।"

डाक्टर— "यह बीमारी नहीं है, श्रीमती जी! इसे ईश्वरीय देन समझिये। आपके पति को थोड़ा आराम करना मुनासिब होगा। मैं आपको नींद लाने वाली एक दवा देता हूँ।"

*

डाक्टर— ख़बरदार! अपने पति को पीने के लिये गर्म पानी के सिवाय कुछ मत देना, वरना वह मर जायेंगे।

बीमार की स्त्री— मगर मुश्किल तो यह है कि उन्हें मैं गर्म पानी दूंगी, तो वे मुझे मार डालेंगे।

*

मित्र— भला, डाक्टर साहब, आपने कभी ग़लती भी की है?

डाक्टर— हाँ, जीवन में केवल एक बार।

मित्र— कब?

डाक्टर— जब मैंने एक अमीर को केवल दो ही दिन इलाज करके अच्छा कर दिया था।

*

डाक्टर (एक मरीज़ के हाथ की नाड़ी देखते हुए)— कौन कहता है कि तुम बीमार हो? तुम्हारी नाड़ी तो घड़ी की टिक-टिक की तरह खूब ठीक चल रही है।

मरीज़— मगर, डाक्टर साहब, आप तो मेरी कलाई की घड़ी पर हाथ रखे हुए हैं।

*

डाक्टर अपने मरीज़ को देखने आया था। उसने पूछा— शराब पीने के बारे में जो मैंने तुम्हारे लिए नियम बताया था, उसका पालन कर रहे हो न?

मरीज़— जी हाँ, एक दिन में छः गिलास के हिसाब से शराब पी रहा हूँ।

डाक्टर— मगर मैं तो तीन ही गिलास रोज़ाना पीने को बता गया था।

मरीज़— जी हाँ, मालूम है। मगर दूसरे डाक्टर साहब भी तीन गिलास

हर दिन शराब पीने को बता गए हैं। इसलिए उनके नियम का भी साथ ही साथ पालन करना पड़ता है।

❀
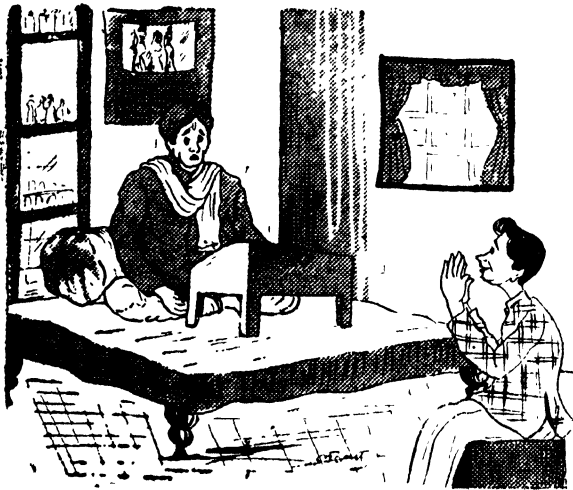
हे वैद्यराज, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम यमराज से भी बढ़ कर हो। यमराज तो केवल शरीर ही लेता है लेकिन तुम शरीर के साथ साथ धन भी लेते हो।

*

डाक्टर— कहिए, श्रीमती जी, आपके पति ठीक हैं? वही खाना खाते हैं न, जो मैंने उनके लिए बताया है?

श्रीमती जी— नहीं। वह कहते हैं कि चार दिन और ज़िन्दा रहने की खातिर मैं भूखों नहीं मरना चाहता।

*

रोगी (डाक्टर से)— डाक्टर साहब, यदि आप मेरे घर चलेंगे तो क्या फ़ीस लेंगे?

डाक्टर— चार रुपये।

रोगी— और यदि मैं आपके घर आऊँ तो मुझे क्या फ़ीस आप देंगे?

*

एक साहब की सास साहिबा को अपना अंगूठा चबाने की बुरी आदत थी। एक दिन साहब बहादुर ने उस आदत को छुड़ाने के लिए एक डाक्टर से तरकीब

पूछी। डाक्टर ने कहा, "बुढ़िया के अंगूठे में कुछ लगा दो।"

तीन चार दिन बाद जब साहब बहादुर की डाक्टर साहब से मुलाक़ात हुई, तो डाक्टर ने पूछा— "कहिये, आपकी सास साहिबा की अँगूठा चबाने वाली आदत अभी छूटी या नहीं ?"

साहब— "धन्यवाद! हमेशा के लिये छूट गई। हमने आप ही के आदेशानुसार काम किया था।"

डाक्टर— "आख़िर आपने उनके अँगूठे में क्या लगाया था ?"

साहब— "सज्जिया।"

*

एक बीमार ने डाक्टर से कहा— "आपने मुझे मौत के मुँह से बचाया। इसके लिए मै आप को बहुत धन्यवाद देता हूँ।"

डाक्टर ने जवाब दिया— "अजी, मैंने क्या किया, सब ईश्वर ने किया।"

बीमार— "तो आपने मुझसे फ़ीस क्यों ली ?"

*

किसी आदमी को दमे की बीमारी थी जिससे उसको बड़ी तकलीफ़ होती थी। एक दिन वह एक बड़े डाक्टर के पास गया और उनसे बोला— "डाक्टर साहब, मैं बहुत परेशानी में हूँ। मुझे दमे की बीमारी है।"

डाक्टर ने कहा— "घबराओ नहीं, मैं अभी दम को रोके देता हूँ।"

*

एक नये डाक्टर ने जिसने अभी अभी डाक्टरी पास की थी, एक पुराने और अनुभवी डाक्टर से पूछा— "डाक्टरी में सफल होने का रहस्य क्या है ?"

"नुस्खे ऐसे अक्षरों में लिखो जो कोई पढ़ न सके और बिल ऐसे अक्षरों में जो सब पढ़ सकें।"

*

रोगी— डाक्टर साहब, ज़रा देखिए तो मेरे सीने में दिल है या नहीं ?

डाक्टर— पहले तुम बतलाओ कि तुम्हारी जेब में पैसे हैं या नहीं ?

*

देहाती— डाक्टर साहब, ज़रा मेरी नब्ज़ देखना कैसी चल रही है।

डाक्टर— घोड़ों जैसी दौड़ रही है।

देहाती— तब तो मुझे घोड़ों के अस्पताल में जाना चाहिए।

*

एक स्त्री को अपने रुग्ण होने का सन्देह हो गया। अख़बार में एक मानसिक रोग चिकित्सक का विज्ञापन पढ़कर वह उसके पास गई।

चिकित्सक ने उसे देखकर गम्भीरता से पूछा— "सचमुच तुम भयंकर व्याधि से ग्रस्त हो। मैं अभी परीक्षा करता हूँ। इधर आओ और इस मेज़ के सामने खड़ी हो जाओ।"

औरत उस मेज़ के सामने खड़ी हो गई।

"अब अपने दायें पैर को मेज़ पर रखो।"

औरत ने ऐसा ही किया।

"अब बायाँ पैर रखो।"

औरत ने ऐसा करने की कोशिश की और धड़ाम से ज़मीन पर गिर गई।

चिकित्सक बोला— "देखो, मैं पहले ही कहता था कि तुम भयंकर व्याधि से ग्रस्त हो। कितने अर्से से तुम्हें इस तरह की मूर्छा आती है कि तुम खड़े-खड़े ज़मीन पर गिर जाती हो?"

*

डाक्टर ने रोगी की पत्नी से पूछा— "आज रात आपके पति को कैसी नींद आई? मैंने जो नींद लाने वाला पाउडर दिया था, वह आपने ठीक तरह दे दिया था न?"

पत्नी— "आपने इतना पाउडर देने को कहा था जितना एक चवन्नी पर आये। मेरे पास चवन्नी नहीं थी इसलिये मैंने एक आने पर चार बार पाउडर लेकर सब खिला दिया। बस तब से वह सो ही रहे हैं।"

*

डाक्टर— तुम्हारे पति की हालत बहुत ख़राब है। तुमने मुझे कुछ देर पहले क्यों नहीं बुलाया?

स्त्री— डाक्टर साहब, जब तक उन्हें होश रहा वह आपको बुलाने ही नहीं देते थे। कोई और डाक्टर इस इलाक़े में है नहीं।

*

डाक्टर— खेद है मैं आप के लिये कुछ नहीं कर सकता। पूरी परीक्षा करने पर मुझे मालूम पड़ा है कि आपकी बीमारी आपको अपने पुरखों से मिली है ······ हाँ मेरी फ़ीस के दस रुपये देते जाइये।

रोगी— अपनी फ़ीस का बिल भी मेरे पुरखों के पास भेज दीजिए।

*

रोगी— डाक्टर साहब, कभी कभी तो रात को सोते समय मुझे इतने ज़ोर के ख़र्राटे आते हैं कि उनकी आवाज़ से मैं खुद ही जाग उठता हूँ।

डाक्टर— तो मेरी राय में तुम दूसरे कमरे में सोया करो।

*

"उठिये, डाक्टर ने नींद लाने वाली गोलियां भेजी हैं।"
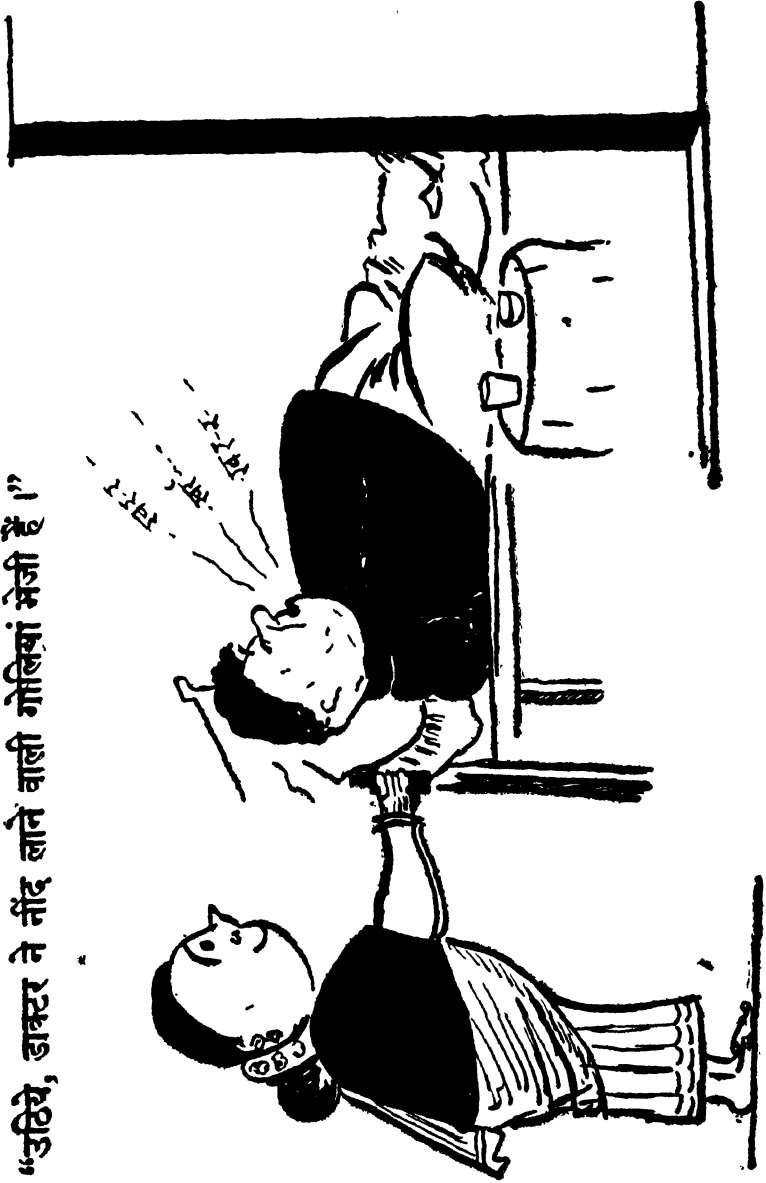
मरीज़— साहब, नर्स का हाथ मेरे शरीर के लगते ही मेरा बुखार छूमन्तर हो गया।

डाक्टर— हाँ, उस चाँटे की आवाज़ तो मुझे दफ्तर ही में सुनाई दे गई थी।

*

मेरे मित्र के पेट में दर्द था। उपनगर के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक की बादाम जितनी मोटी गोलियाँ खा लीं, घण्टे में दो-दो बार करके दर्जनों खा लीं, तब भी पेट का दर्द नहीं दबा। तब चिकित्सक ने नगर के एक महामहिम सर्जन का पता बतला कर नया उपकार कर डाला।

उन सर्जन साहब का नाम मत पूछिये। नाम क्या था, एक वाक्य का वाक्य था वह ; इतना बड़ा था कि याद करने का प्रयास ही नहीं किया। वह अवश्य ही त्रिकालदर्शी थे। रोगपरीक्षा किये बिना ही उन्होंने गहन-गम्भीर स्वर में घोषित किया, "आपरेशन कराना होगा।"

माथे से पसीना पोंछते हुए मैंने पूछा, "जल्दी से जल्दी कब?"

बोले, "बस, दिन ढलने से पहले ही।"

और फिर बिना कुछ पूछे ही उन्होंने टेलीफोन की डायल में अंगुलियाँ घुमानी शुरू कर दीं। ऐसा लगता था जैसे उनका हाथ मेरे ही मस्तक के चक्र में घूम रहा हो।

'..... क्लिनिक' शाम तक हमारे पहुंचने का फैसला सुना दिया गया।

आपरेशन की तैयारियाँ हुई। सर पर सफेद कलगी ओढ़े नर्सें इधर-उधर तैर रही थीं, जैसे चिड़िया-घर के नीले जलाशय में बत्तखे तैरती हैं।

थोड़ी देर में पास वाले कमरे से कराहने की आवाज़ आने लगी। नर्स ने बतलाया— "इस मरीज़ के पेट में पथरी होने का शक था। डाक्टर ने पेट का आपरेशन किया है।

"इस आपरेशन में ६ घण्टे लगे। डाक्टर ने पहले पेट के दायी तरफ नश्तर लगाया, पथरी नहीं मिली। फिर बायीं तरफ नश्तर लगाया, पथरी नहीं मिली। तब उसने नश्तर का रुख ऊपर किया और जिगर तक चीर दिया, लेकिन पथरी नहीं मिली, नहीं मिली।

"पथरी तो क्या पथरी के ज़र्रे भी नहीं मिले।

"आखिर डाक्टर को सिर से पैर तक सारे जिस्म को चाक करना पड़ा। उसे शक था कि यह पथरी उसके जिस्म के किसी और हिस्से में तो नहीं पहुंच गई।"

आपरेशन रूम से निकला तो मरीज़ का सारा जिस्म पट्टियों से बन्धा हुआ था।

मैंने पूछा— "आपरेशन पूरा हो गया या अभी और होने को है।"

नर्स ने कहा— "कल फिर पथरी की तलाश के लिये छानबीन की जायगी। आदमी ज़िन्दा रहे, न रहे, पथरी ढूंढ़कर दम लेंगे डाक्टर साहब।"

मेरे मित्र ने नर्स के मुख से यह कहानी सुनने के साथ ही कहा— "दोस्त, मैं आपरेशन नहीं कराऊँगा। कहीं डाक्टर साहब उसके पेट की पथरी मेरे पेट में ढूंढ़ने लगे तो ख़ैर नहीं।"

यह कह कर मेरा मित्र लिफ्ट की इन्तज़ार किये बिना नीचे उतर गया।

नर्स का कहना था कि अब मुझे ही आपरेशन कराना पड़ेगा, क्योंकि आपरेशन की फ़ीस दी जा चुकी है। डाक्टर साहब आपरेशन किये बिना न मानेंगे।

संकट देख मैं भी नर्स से आँख बचाकर वहाँ से भागा। सामने ही बस का स्टैण्ड था। बस में चढ़कर घर आया और दरवाज़ा बन्द करके दो दिन अन्दर ही रहा। इस तरह आपरेशन-संकट से मुक्ति मिली।

*

एक लेडी डाक्टर ने नया नया ही काम शुरु किया था। उसके किसी परिचित ने उससे पूछा कि काम कैसा चल रहा है।

लेडी डाक्टर ने जवाब दिया— "बहुत अच्छा काम चल रहा है। अभी हाल ही में मुझे एक केस मिला था। माँ मर गई। बच्चा भी उसके साथ चला गया। अब मैं बाप को बचाने की कोशिश में हूँ।"

*

डाक्टर— गहरी साँस लेने से बैक्टीरिया कृमि मर जाते हैं।

रोगी— लेकिन उनसे गहरी साँस लिवाने का उपाय क्या है?

*

डाक्टर— आपको कोई विशेष बीमारी नहीं है। बस, आपको चिन्ता खाये जा रही है। यही बीमारी लाला हरगोविन्द को भी थी। उन पर किसी आदमी के बीस हज़ार रुपये उधार थे, और वह उन रुपयों के लौटाने की चिन्ता में मरे जा रहे थे।

मरीज़— तो आपने उन्हें ठीक कैसे कर दिया?

डाक्टर— मैंने उनसे कह दिया कि रुपये लौटाने की चिन्ता मत करो।

मरीज़— डाक्टर साहब, मैं ही तो वह आदमी हूँ जिसके बीस हज़ार रुपये उनके पास हैं।

*

"डाक्टर साहब," वह घबराये हुए स्वर में बोला, "मुझे कोई बहुत बड़ी बीमारी लग गई है। जब शाम होती है तो मेरे मृत रिश्तेदारों की आत्माएं मेरे बगीचे के जंगले पर आकर जमा हो जाती हैं। हर रोज़ यही होता है— जंगले की हर सलाख़ पर एक न एक बैठा होता है और मेरी ओर घूर घूर कर देखता है। बताइये, मैं क्या करूँ।"

डाक्टर ने सलाह दी— "जंगले की सलाख़ों के सिरे ज़रा पैने कर दो।"

*

डाक्टर— कहिए, आपको क्या तकलीफ है?

रोगी— डाक्टर साहब, मेरी कमर में कभी कभी अचानक दर्द होने लगता है।

डाक्टर— अच्छा, तो मैं आपको यह गोलियाँ देता हूँ। दर्द शुरू होने से ठीक बीस मिनट पहले एक गोली खा लेना।

*

"जो पथ्य मैने खाने को कहा था, तुमने वह खाया?"

"डाक्टर साहब, मैने कोशिश तो की थी, लेकिन सफल न हो सका।"

"क्या बेवक़ूफी है! मैने कहा था जो खाना तुम्हारा तीन साल का बच्चा खाता है, वही खाओ। तुमसे इतना भी नहीं हुआ?"

"हाँ, डाक्टर साहब, आपने कहा तो था। लेकिन वह तो मोमबत्ती, कोयले, मिट्टी, जूते की फ़ीते, रबड़ आदि खाता है।"

*

बड़ा सफल आपरेशन हुआ था। पेट सी दिया गया था। मरीज भी होश में आ गया। सर्जन ने जल्दी कुशल होने की कामना की। तभी नर्स ने शोर मचाया— डाक्टर, आपरेशन की छोटी कैंची नहीं मिल रही है।

इतना सुनते ही मरीज़ फिर बेहोश हो गया।

*

एक आदमी— "डाक्टर साहब, मेरी स्त्री इस बीमारी से जल्दी अच्छी हो जायगी न?"

डाक्टर— 'अजी, आप जल्दी की बात कह रहे हैं, मैं कहता हूँ कल ही अच्छी हो जायँगी। मैंने अभी उनसे कह दिया है कि आपके विवाह के लिये मैंने एक अच्छी लड़की तलाश कर रखी है। देखिए, अब वह बिना दवा दारू के कल ही अच्छी न हो जायें तो मेरा नाम बदल देना।"

*

रोगी— डाक्टर साहब, आपने मुझे इस बीमारी से अच्छा किया है, आपके इस उपकार का बदला मैं किस तरह चुकाऊँ?

डाक्टर— किसी भी तरह से— चैक, मनीआर्डर, अथवा नक़द रुपये से जैसे तुम्हारा जी चाहे।

*

वैद्यराज— परन्तु आपको दवा के दाम पहले देने पड़ेंगे।

रोगी— क्यों?

वैद्यराज— क्योंकि जो हमारी दवा खाते हैं, उन्हें संसार-रोग से एकदम ऐसा आराम हो जाता है कि उन्हें फिर किसी को मुँह दिखाने में लज्जा मालूम पड़ती है।

*

एक आदमी डाक्टर से अपनी आँखों की परीक्षा करवा रहा था। उसने पूछा— "क्यों, डाक्टर साहब, चश्मा लगाकर मैं पढ़ भी सकूँगा?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं?" डाक्टर ने फुरती से जवाब दिया।

"ओह, फिर तो बड़ा अच्छा रहेगा। अब तक तो मुझे पढ़ना ही नहीं आता था।"

*

एक नये डाक्टर को डाक्टरी शुरू किये बहुत दिन हो गये थे पर मरीज़ों का पता नहीं था। एक दिन रात के नौ बजे जब वह खाना खाकर लेटने जा रहा था, टेलीफोन की घण्टी बज उठी। बड़ी आशा से भाग कर उसने चोंगा उठाया। फोन क्लब से आया था। उसके जैसे तीन नये डाक्टर क्लब में बैठे थे और ब्रिज खेलने के लिये उसे बुला रहे थे।

चोंगा रखकर उसने कोट पहनना शुरू किया तो पत्नी ने उत्सुकता से पूछा— क्यों, किसी विशेष रोग के लिये बुलाया है?

डाक्टर— रोग का तो पता नहीं। हाँ, तीन डाक्टर तो वहाँ पहले से मौजूद हैं। चौथा मुझे बुलाया गया है।

सेना

अफसर— "क्या तुमने मुझे बारूदघर की ओर बढ़ते हुए नहीं देखा?"

उसी के गाँव का एक रंगरूट, जो पहली बार सन्तरी की ड्यूटी पर आया था— "जी जनाब, देखा था।"

अफसर— "फिर तुमने आवाज़ क्यों नहीं दी कि कौन जाता है?"

रंगरूट-- "वाह जनाब, छोड़िये भी। मैं तो आपको छुटपन से जानता हूँ।"

*

सैनिक अफसर दो सैनिकों से जो आपस में झगड़ कर चुके थे, कह रहा था— "एक बात मैं साफ बताये देता हूँ। मुझे अपनी रेजीमेंट में सब कुछ मंजूर है, लेकिन मुझे लड़ाई बिल्कुल नहीं चाहिये।"

*

सैनिक न्यायालय में एक सैनिक पर अपने अफसर को गालियाँ देने के अपराध में मुक़दमा चल रहा था। अपनी सफाई पेश करते हुए सैनिक ने कहा— "जनाब, सारजेंट ने मुझसे कहा था— 'तू मुझे समझता क्या है?' और मैं उसके इस प्रश्न का उत्तर दे रहा था, गालियाँ नहीं।"

*

एक सैनिक निशानेबाजी का अभ्यास कर रहा था। लेकिन उसका कोई भी निशाना ठीक नहीं बैठ रहा था। उसके अफसर ने पूछा-- "जवान, तुम्हारी गोलियाँ आज ग़लत क्यों जा रही हैं?"

"पता नहीं, साहब! यहाँ से तो वे ठीक ही निकलती हैं।"

*

महायुद्ध की बात है, दुश्मन की चौकी पर धावा करना था। कमाण्डर ने अपने सिपाहियों को बढ़ावा देते हुए कहा, "मेरे बहादुरो, अब मौक़ा आ गया है अपनी जवाँमर्दी दिखाने का। दुश्मन की संख्या हमसे चौगुनी है। हमें तूफान की तरह धावा बोलना है और शेरों की तरह लड़ना है।"

एक सिपाही ज़रा मनचला था। वह पहले ही धावे में चौकी पर पहुँच गया। जब थोड़ी देर बाद कमाण्डर वहाँ पहुँचा, तो उसने देखा कि वह सिपाही एक पेड़ के नीचे बड़े आराम से पैर पर पैर रखे लेटा हुआ है। लड़ाई अभी ख़त्म नहीं हुई थी। तोपें चल रही थी और मशीनगनों की आवाज़ भयानक वातावरण उत्पन्न कर रही थी।

कमाण्डर ने बड़े गुस्से से पूछा— "क्यों, हज़रत, यह क्या बदतमीज़ी है? तुम लड़ क्यों नहीं रहे हो?"

"जनाब, मैं अपने हिस्से के चार दुश्मन सिपाही मार चुका हूँ।"

*

फौज के खच्चरों की देखभाल करने वाले एक सैनिक को एक खच्चर ने लात मार दी। सैनिक के साथी उसे एक स्ट्रेचर पर डालकर अस्पताल ले चले।

रास्ते में जब सैनिक को होश आया तो उसे ऊपर आसमान दिखाई दिया और स्ट्रेचर के चलने से उसने अपने आपको हिलता डुलता भी महसूस किया।

"हे भगवान," वह कराह उठा, "अभी तो मैं धरती पर भी नहीं गिरा हूँ।"

*

फौजी कप्तान— (नये रंगरूट का स्वागत करते हुए) "मेरा ख्याल है, औरों की तरह तुम भी खानदान के शैतान लड़के होगे।"

रंगरूट— "जी नहीं, आपके समय से अब हालतें बहुत बदल चुकी हैं।"

*

सार्जेन्ट— तुम्हें यहाँ ट्रेनिंग पाते हुए छः महीने हो गये हैं। इतने दिनों में तुमने क्या सीखा?

रंगरूट— यही कि सैनिक मरने से क्यों नहीं डरते।

*

एक बार एक सैनिक ने अपने उच्च अधिकारियों से इस आधार पर छुट्टी माँगी कि उसकी पत्नी को घर पर उसकी आवश्यकता है।

अधिकारियों ने उससे बुलाकर पूछा, "तुम अपनी पत्नी को देश के प्रति अपने कर्त्तव्य की अपेक्षा अधिक महत्त्व देते हो?"

सैनिक ने उत्तर दिया, "देश की देखभाल में तो इस समय लाखों व्यक्ति संलग्न हैं परन्तु जहाँ तक मुझे ज्ञात है पत्नी की देखभाल करने वाला मैं अकेला व्यक्ति हूँ।"

उसकी छुट्टी की प्रार्थना मंजूर कर ली गई।

*

एक नये तरक्क़ी पाये हुए लेफ्टिनेन्ट के पास से एक नया रंगरूट निकला पर उसने लेफ्टिनेन्ट को 'सेल्यूट' नहीं दी। इस पर लेफ्टिनेन्ट ने घुड़क कर कहा— तुम्हें फौजी क़ायदे का ज़रा भी ज्ञान नहीं। मैं तुम्हें सौ बार सेल्यूट करने का दण्ड देता हूँ।'

इतने में ही जनरल उधर से गुज़रा और उसने लेफ्टिनेन्ट से पूछा कि क्या बात है।

लेफ्टिनेन्ट— इस रंगरूट ने मुझे सेल्यूट नहीं किया। मैंने इसे सौ बार सेल्यूट करने का दण्ड दिया है।

जनरल— (मुस्कराकर) पर तुम यह क्यों भूलते हो कि तुमको भी उतनी ही बार सेल्यूट का जवाब देना होगा।

*

कर्नल की तरक़्क़ी हुई थी। इसे मनाने के लिये उसने एक शानदार दावत दी। दावत के शुरु में वह सिपाहियों से बोला, 'खाने पर बिना दया के टूट पड़ो जवानो। इसके साथ वही बर्ताव करो जो तुम अपने शत्रु के साथ करते हो।'

जब पार्टी समाप्त हो रही थी, तब कर्नल ने एक सार्जेन्ट को अपनी पोशाक में कुछ शराब की बोतलें छिपाते देखा। 'सार्जेन्ट, क्या कर रहे हो ?'

'हुजूर की आज्ञा का पालन कर रहा हूँ। जिन शत्रुओं को हम मारते नहीं उन्हें बन्दी बना लेते हैं।'

*

फौज के भावी अफसरों की एक क्लास में एक शिक्षक ने पूछा— "मान लीजिये आपके पास एक जमादार और १४ सिपाही हैं और आपको ६० फीट लम्बे एक खम्भे को, जो आँधी से नीचे आ गिरा है, खड़ा करना है, तो आप उन्हें क्या क्या निर्देश देंगे ?"

सब विद्यार्थी मानचित्र आदि बनाने लगे, पर एक विद्यार्थी काग़ज़ पर कुछ पंक्ति लिखकर आराम से बैठ गया। शिक्षक ने उसके काग़ज़ को उठाया और पढ़ा, "जमादार से कह दूंगा कि वह जल्द से जल्द काम समाप्त कर दे।"

*

'नहीं नहीं, सौ बार नहीं,' क्वार्टरमास्टर गुर्राया। 'मैंने तुमसे कह दिया है कि तुम्हें नये जूते नहीं मिल सकते। तुम्हारे पुराने जूते अभी कहाँ फटे हैं ?'

'फटे नहीं!' रंगरूट ने आह भरी। 'यदि मैं उन्हें पहन कर एक पैसे पर

खड़ा हो जाऊँ तो पता लग जाये कि हैड ऊपर है या टेल।'

*

कारपोरल (दावत के समय)— क्या आप उसे जानती हैं जो काला भुजंग उधर खड़ा है? वह मेरा अफसर है, सेना में सबसे बेहूदा।

युवती— क्या आप जानते हैं मैं कौन हूँ? मैं उन अफसर की बेटी हूँ।

कारपोरल— आप मुझे जानती हैं मैं कौन हूँ?

युवती— नहीं।

कारपोरल— भगवान् को धन्यवाद है।

*

'तुम सेना में क्यों भरती हुए?'

'बात यह है, मेरे पत्नी नहीं है और मैं युद्ध पसन्द करता हूँ। लेकिन तुम क्यों भरती हुए?'

'मेरे साथ इससे उल्टा है। मैं भरती इसलिये हुआ क्योंकि मेरे पत्नी है और मैं शांति पसन्द करता हूँ।'

*

माँ अपने बेटे से बोली— देखो बेटा, अब तुम सेना में भरती हो गये हो। वहाँ सवेरे ठीक समय पर उठा करना, कहीं नाश्ता ठण्डा हो जाया करे। वहाँ कौन गर्म करेगा?

*

कमाण्डर— मान लो, तुम एक अंधेरी रात में पहरे पर खड़े हो। यकायक एक व्यक्ति पीछे से आकर दोनों हाथों से तुम्हें बांध लेता है। तब तुम क्या कहोगे?

सिपाही— प्रिये, यहाँ नहीं।

*

'क्या कहा? तुम वायु सेना में हो गये हो? पहले तो तुम घुड़सवार सेना में थे।'

'हाँ, मैंने तबादला करा लिया।'

'क्यों?'

'बात यह है कि यदि कोई हवाई जहाज तुम्हें नीचे फेंक देता है तो वह वापिस लौटकर काटता नहीं।'

*

सार्जेन्ट— क्या तुमने आज शेव किया है?

सिपाही— जी, जनाब।

सार्जेन्ट— तो अगली बार ज़रा उस्तरे के पास खड़े होना।

*

एक बूढ़ा आदमी अपने जीवन में पहली बार फौज की चौकी के पास से गुज़र रहा था। उसने देखा कि दो सन्तरी एक दूसरे की ओर आते हैं और बिना बात किये लौट जाते हैं।

कुछ मिनट तक वह उन्हें ऐसा करता देखता रहा। अन्त में बोला— अरे, यह क्या बच्चो? गुस्सा थूक डालो और आपस में दोस्त बन जाओ।

*

कर्नल ने कड़क कर पूछा— "यह मुर्गा तुम कहाँ से लाये?

सिपाही ने डर कर उत्तर दिया— हुज़ूर! चुराया है।

कर्नल ने विजय की भावना से पास खड़े मित्र की ओर देखा और बोला— तुमने नोट किया, मेरे जवान चुरा सकते हैं, पर झूठ नहीं बोल सकते।

*

एक सैनिक अपनी माँ से युद्धस्थल पर हुई भयानक गोलाबारी का वर्णन कर रहा था। उसकी माँ ने पूछा— तुम भागकर किसी पेड़ के पीछे क्यों नहीं हो लिये?

सैनिक बोला— पेड़ तो वहाँ अफसरों के लिये ही काफी नहीं थे।

*

नाई— क्या मैंने आपकी हजामत पहले नहीं बनाई है?

सैनिक— नहीं, यह घाव तो मेरे अफ्रीका के युद्ध में लगा था।

*

अफसर के सामने खडे हुए एक नवयुवक ने कहा— "हुज़ूर, मुझे सिपाहियों में भरती कर लीजिये। मैं एक बहादुर फौजी सिपाही का बहादुर बेटा हूँ। उस साल मेरे पिता ने जर्मनी की लड़ाई में एक जर्मन कप्तान का पैर काट डाला था।"

अफसर ने घूर कर कहा— "पैर ही काट कर क्यों छोड़ दिया? सिर क्यों नहीं काटा?"

नवयुवक घबराकर बोला— "हुज़ूर, सिर तो पहले से ही कटा था।"

*

दक्षिणी अमेरिका में बहुत उलट फेर होता रहा है। बहुत सी हकूमतें बदली हैं। एक दफा एक विजयी डिक्टेटर ने हुक्म दिया कि सारे राजनैतिक

बन्दी शहर से १० मील दूर ले जाकर गोली से उड़ा दिये जायें। हारी हुई फौज का एक अफसर, जिसके दोनों हाथ पीछे बंधे हुए थे, और जिसको गोली मारने को ले जाया जा रहा था, गोली मारने वाले सिपाहियों से शिकायत करने लगा— "क्या यही काफी नहीं था कि मैं गोली से मारा जा रहा हूँ ? इसके साथ साथ इससे पहले १० मील पैदल चलाना भी आवश्यक था ?

गोली मारने वाले एक सिपाही ने उत्तर दिया— "तुम्हारे लिये तो ठीक भी है। शिकायत तो हमें होनी चाहिये। हमें तो १० मील वापिस भी आना पड़ेगा।"

*

महाजन (सिपाही से)— क्यों जी, तुम्हारे बाप तो ज़िन्दा हैं न ?

सिपाही— नहीं, उन्हें तो लड़ाई में मरे बहुत दिन हो गये।

महाजन— और तुम्हारे दादा ?

सिपाही— वे भी लड़ाई में ही मरे थे।

महाजन— तब तो यह नौकरी तुम्हारे वंश को नहीं फलती। किसी रईस की नौकरी क्यों नहीं कर लेते ?

सिपाही (कुछ सोचकर)— "क्यों सेठ जी, आपके बाप तो ज़िन्दा हैं न ?

महाजन— नहीं, उन्हें मरे कई बरस हो गये।

सिपाही— वे क्या करते करते मरे ?

महाजन— यही महाजनी करते करते।

सिपाही— और आपके दादा ?

महाजन— वे भी महाजनी करते करते ही मरे।

सिपाही— तब तो यह पेशा बहुत बुरा है। जान पड़ता है इसी में आप भी मरेंगे। छोड़िये इस पेशे को, इससे तो घास खोदना अच्छा।

पुलिस

सिपाही— तुम अपने ऊपर हमला करने वाले का हुलिया बता सकते हो ?

पिटा हुआ व्यक्ति— वाह ! मैं उसका हुलिया ही तो बता रहा था जब वह मुझे मारने लगा।

*

आमने सामने से आती हुई दो कारें आपस में टकरा गई। पास के ही चौराहे पर खड़ा हुआ सिपाही उनके पास आया और उनके मालिकों से पूछने

लगा— "सबसे बड़ी बात तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि पहले किस कार ने टक्कर मारी ?"

*

पुलिस वाला शिकार की तलाश में ही था कि बिना बत्ती जलाये एक साइकिल सवार उधर आ निकला। बड़ी उत्सुकतापूर्वक पुलिस वाले ने अपनी नोटबुक निकाली और पेन्सिल को मुँह में देकर गीली करके लिखते हुए पूछा— "तुम्हारा नाम क्या है ?"
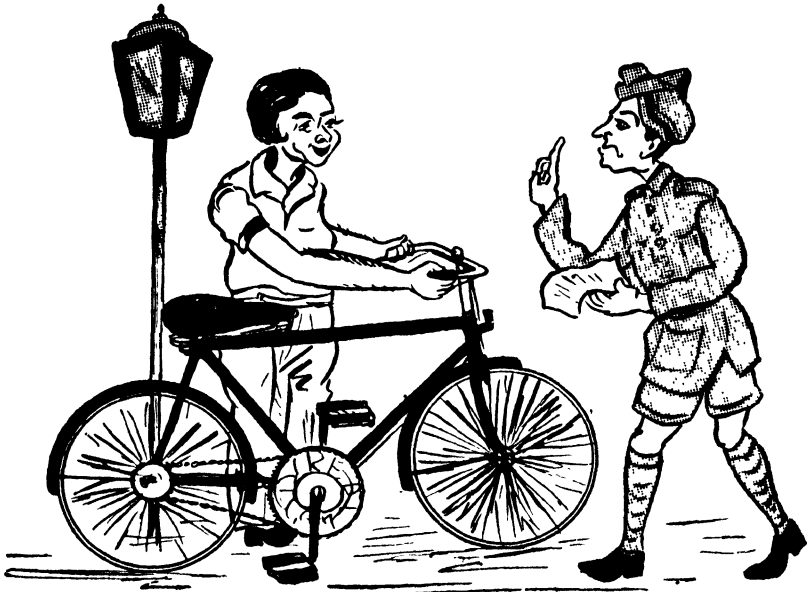
साइकिल सवार— "रमेशचन्द।"

पुलिस वाला— "अपना असली नाम बताओ।"

साइकिल सवार— "मोहनदास करमचन्द गाँधी।"

पुलिस वाला— "हाँ, यह तो ठीक मालूम होता है। तुम समझते थे मै रमेश वमेश के चक्कर में आ जाऊँगा।"

*

अंधेरी रात में पुलिसमैन ने एक चोर को गहनों की दुकान में घुसते हुए पकड़ लिया। 'आहा,' पुलिसमैन बोला, 'रंगे हाथों पकड़ लिया। अब तो बच्चू कम से कम दो साल को जेल जाओगे।'

चोर ने उत्तर दिया— 'देखो, मैं अपने वकील को बुलाना चाहता हूँ।

इसलिये मुझे इस घर में जाने दो जिससे मैं उसे फोन कर दूं और वह मुझे पुलिस स्टेशन पर मिल जाये।'

पुलिसमैन ने चोर को घर के अन्दर जाने दिया और वह पिछवाड़े से कूद कर भाग गया। पुलिसमैन ने ६ महीने बाद फिर उस चोर को दूसरी जवाहिरात की दुकान से जेवरों से हाथ भरे निकलते पकड़ा।

'आहा! इस बार तो लूट का माल भी साथ है। चल मेरे साथ।'

चोर ने फिर वकील को बुलाने के लिये आज्ञा माँगी।

'अच्छा, मुझे बिल्कुल मूर्ख समझ रखा है।' पुलिसमैन हँसा। 'ये सामान पकड़। इस बार मैं टेलीफोन करने जा रहा हूँ। तू यहीं खड़ा रह।'

*

झब्बू चमार के तेरह लड़के थे। एक दिन वह शहर से अपने गाँव को जा रहा था। वह लड़कों समेत स्टेशन पर आया और टिकट कटा गाड़ी की राह देखने लगा। गाड़ी के आते ही बाप बेटे खाली डिब्बा ढूंढने लगे। इतने में पुलिस के एक सिपाही ने झब्बू को टोका और उससे पूछा—क्यों, यह क्या गोलमाल है?

झब्बू—कुछ भी तो नहीं।

सिपाही—फिर इतनी भीड़भाड़ क्यों?

*

अधेड़ अवस्था की सुन्दरी—"पुलिस पुलिस, इस आदमी को पकड़ लो। यह मेरे कान में कह रहा था कि मैं संसार की सबसे खूबसूरत स्त्री हूँ।"

सिपाही—"इस आदमी पर इलजाम क्या लगाएं—झूठ बोलने का या पागलपन का?"

*

पुलिस ने जुआरियों के अड्डे पर धावा बोला, और वहाँ चार व्यक्तियों को बैठे पाया। ताश एक कोने में पड़ा था।

पुलिस ने बारी बारी से उन व्यक्तियों से प्रश्न करने शुरु किये।

"जनाब, मैं थोड़े ही खेल रहा था। मैं तो यहाँ केवल बैठा था।" एक ने जवाब दिया।

"तुम यहाँ कानून के खिलाफ़ जुआ खेल रहे थे। क्यों?" पुलिस ने दूसरे व्यक्ति से पूछा।

"आपको गलतफहमी हो गई है। मैं तो यहाँ अजनबी हूँ।"

"तुम जुआ खेल रहे थे?" तीसरे से सवाल किया गया।

"जी नहीं, मैं तो यहाँ एक व्यक्ति की बाट देख रहा था।"

आखिर चौथे से पुलिस ने कहा— "तुम तो अवश्य ही खेल रहे होगे— यह ताश जो पड़ा है?"

"जी, मैं खेल रहा था? मैं भला किसके साथ खेल रहा था?"

*

"जब मैंने रुकने का इशारा कर दिया था, तो भी आपने अपनी कार क्यों नहीं रोकी?" चौराहे वाला पुलिसमैन एक पुरानी कार वाले से बोला।

"देखिये, बात यह थी कि दो घण्टे में जैसे तैसे करके तो यह छकड़ा गाड़ी स्टार्ट हुई थी। गिरफ्तार होने जैसी छोटी बात के लिये इसे रोक कर फिर उतनी ही मेहनत करना मैंने ठीक नहीं समझा।"

*

पुलिसमैन— "देवी जी, आप अपनी गाड़ी एक घण्टे में साठ मील की रफ्तार से चला रही थीं। यह अपराध है।"

"लेकिन मुझे तो अपने घर से निकले अभी दस ही मिनट हुए हैं।"

*

एक आदमी गाय का बछड़ा चुराकर ले जा रहा था कि पकड़ लिया गया। पुलिस के सामने उसने अपनी सफ़ाई दी—

"मेरा इरादा चोरी का नहीं था। बात यह है कि मेरे तीन साल के बच्चे ने अब तक बछड़ा नहीं देखा है— उसे दिखाने के लिये ही मैं इसे ले जा रहा था।"

*

पुलिसमैन (गली में जाने वाले व्यक्ति से)— "क्यों, साहब, क्या आपने अभी अभी किसी ऐसे व्यक्ति को यहाँ से गुज़रते देखा है जो सूरत शक्ल से ही आवारा तथा बदमाश मालूम होता हो?"

व्यक्ति (कुछ सोचते हुए धीरे से)— "अवश्य।"

पुलिसमैन— "कृपया मुझ से उसका पूरा हुलिया तो बयान कीजिये।"

व्यक्ति (जेब से दुअन्नी निकाल कर पुलिसमैन की ओर बढ़ाते हुए)— "खेद है महाशय कि मेरे पास समय कम है। कृपया इन पैसों से एक आइना ख़रीद लीजिये।"

*

एक लड़की अपने छोटे भाई को समझा रही थी कि रविवार के दिन किसी

को काम नहीं करना चाहिए। बाइबिल के अनुसार इस दिन काम करने वाले को स्वर्ग नहीं मिलता।"

भाई ने पूछा— "क्या पुलिस वालों को भी नहीं? उन्हें तो इस दिन भी काम करना पड़ता है। क्या उन्हें स्वर्ग नहीं मिलता?"

"बिलकुल नहीं। स्वर्ग में पुलिस वालों की ज़रूरत ही नहीं है।" लड़की ने उत्तर दिया।

*

एक आदमी (पुलिस थाने में)— "मुझे अपना बटुआ मिल गया है। एक हफ़्ता हुआ मैंने इसकी चोरी की रिपोर्ट की थी।"

पुलिस इंसपैक्टर— "तुम देर से आए। हमने तो कल चोर को गिरफ़्तार भी कर लिया।"

*

एक पुलिस-अफसर ने एक अभियुक्त से पूछा— "क्या तुम लिख पढ़ सकते हो?"

अभियुक्त ने उत्तर दिया— "हुज़ूर, लिख तो सकता हूँ, पर पढ़ नहीं सकता।"

"इस काग़ज़ पर अपना नाम लिखो।" अभियुक्त की तरफ काग़ज़ और

दवात कलम बढ़ाते हुए पुलिस अफसर ने कहा।

अभियुक्त ने काग़ज़ उठाकर उस पर टेढ़ी-मेढ़ी लकीरे खींच दीं, और काग़ज़ वापिस कर दिया।

"यह तुमने क्या लिखा है ?" झुझला कर पुलिस अफसर ने कहा।

"साहब, मैंने पहले ही कह दिया था कि मैं लिख सकता हूँ, पढ़ नहीं सकता।" अभियुक्त ने उत्तर दिया।

*

थानेदार (एक व्यक्ति से)— 'देखो जी, तुम्हारे नाम वारन्ट है। मैं तुम्हें ......'

वह व्यक्ति (बीच ही में)— 'ओह ! रहने दीजिये ; मुझे अभी जरा भी फ़ुरसत नहीं' कह कर चलने लगा।

*

पुलिसमैन— "क्यों जी, तुम्हारे पास मोटर चलाने का लाइसेन्स है ?"

मोटर चलाने वाला— "हाँ, मेरी जेब में है।"

पुलिसमैन— "अच्छी बात है ! जब लाइसेन्स तुम्हारे पास है, तब मुझे उसे देखने की ज़रूरत नहीं है। अगर न होता तब अलबत्ता मैं उसे देखता।"

*

एक मोटर चलाने वाला अपनी मोटर को शहर मे बेतहाशा दौड़ाए हुए ले जा रहा था। चौराहे पर एक पुलिसमैन ने उसे रोका और शहर की सड़कों पर तेज़ी से मोटर चलाने के अपराध में चालान करना चाहा।

पुलिसमैन— "देखो, इतनी तेज़ी से मोटर चलाने का हुक्म नहीं है। तुमने इस नियम को भंग किया है। इसलिये तुम्हारा चालान करूंगा।"

मोटर चलाने वाला— "यह क्या ? मेरे मोटर का ब्रेक बिगड़ गया है। इसलिए जा रहा हूं ताकि कोई घटना घटने के पहले ही मैं जल्दी से घर पहुँच जाऊँ।"

पुलिसमैन— "तब ठीक है, ले जाओ।"

*

पुलिस थाने पर कई दिनों से कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई थी। थाने के अधिकारी सब-इन्स्पेक्टर अपने मातहतों से कहने लगे : "बड़ा ख़राब हफ्ता जा रहा है ; न चोरी, न डकैती, न हत्या, न लड़ाई-झगड़ा ; कुछ भी नहीं हो रहा है। यही हाल रहा तो अपनी नौकरी के दिन तो गिनती के ही समझो।"

हवलदार ने ढाढस बंधाते हुए कहा— "क्यों चिन्ता करते हैं ? मनुष्य के स्वभाव पर विश्वास रखिये, कुछ न कुछ होकर ही रहेगा।"

*
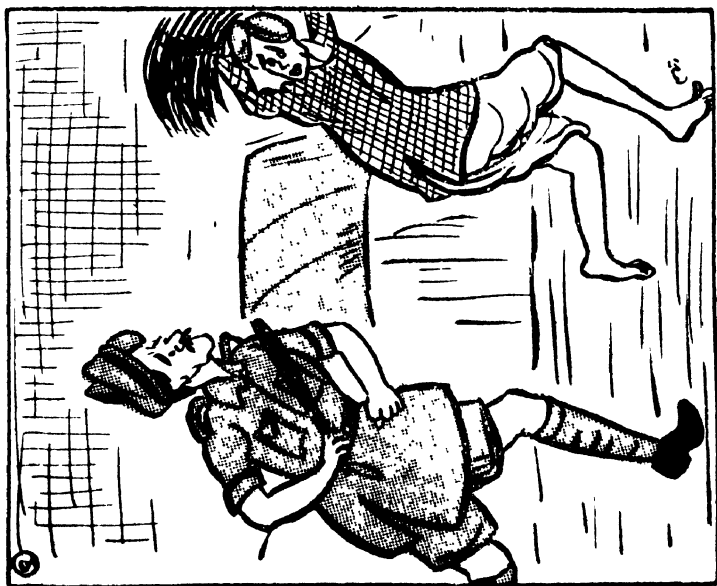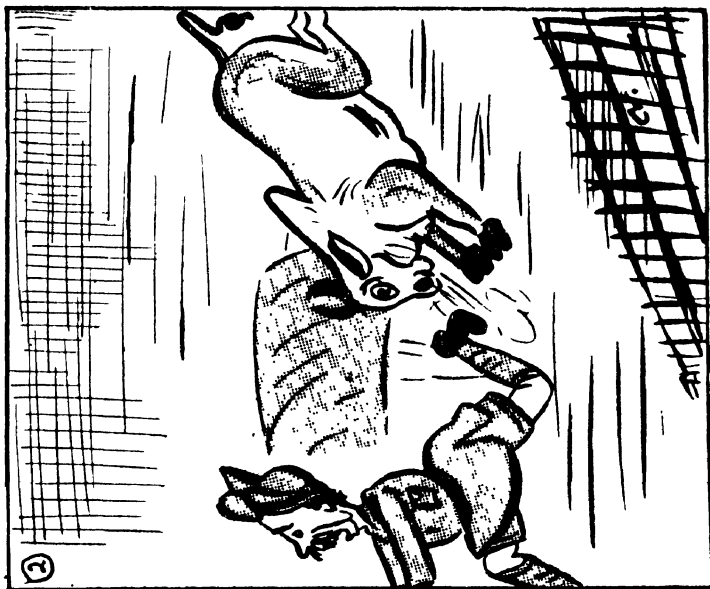
बम्बई की मद्य-निषेध पुलिस ने एक व्यक्ति को बिना परमिट शराब रखने के अभियोग में गिरफ्तार करके छः मास कारावास का दण्ड दिलवा दिया। मुक़दमे का फैसला हो जाने पर पुलिस के सब-इन्सपेक्टर ने अपराधी से पूछा—"माफ कीजियेगा, क्या आप अपना फ्लैट इन छः महीनों के लिये मुझे किराये पर दे सकते हैं?"

*

दो पुलिस-इन्सपैक्टरों में झगड़ा हो गया।

एक ने कहा—"पर क्या कभी तुमने मेरी ईमानदारी के बारे में किसी को शंका करते सुना है?"

"मैंने किसी को उसका ज़िक्र करते भी नहीं सुना।"

*

सिपाही की पत्नी—"देखो, घर में चोर घुसा है। सामान ले जा रहा है। गिरफ्तार करो!"

सिपाही—"मैं··· मैं··· मैं तो अभी ड्यूटी पर नहीं हूँ।"

*

पुलिस के कुछ अफसर अपनी जीप में बैठे हुए एक बदमाश की खोज कर रहे थे। जब कुछ पता न चला तो थाने वापिस लौटे। रास्ते में उन्होंने देखा कि एक लड़का दो गधों को लिये जा रहा है। जीप का ड्राइवर अपने को बहुत चतुर समझता था। उसने गाड़ी रोकी और लड़के से बोला, "क्यों भई, अपने दोनों भाइयों को घुमाने लिये जा रहे हो। लेकिन इन दोनों की गरदनों में रस्सी क्यों बाँधी है? क्या भाग जाने का डर है?"

लड़का बोला, "हाँ साहब, डर यही है कि कहीं छूट कर पुलिस में भर्ती न हो जायें।"

*

एक बार एक नया आदमी पुलिस में भर्ती हुआ। सब-इन्सपेक्टर उसे उसका काम बतला रहा था। दूर एक लाल बत्ती जलती दिखाई दे रही थी। उसे दिखला कर इन्सपेक्टर बोला, "देखो, उस बत्ती तक तुम्हारा क्षेत्र है। मैं जा रहा हूँ। अपना काम शुरु कर दो।"

सिपाही अपना डंडा हिलाता हुआ और सीटी बजाता हुआ बत्ती की ओर बढ़ा। इसके बाद एक सप्ताह तक उसकी सूरत नहीं दिखाई दी। अन्त में जब वह थाने में पहुँचा तो इन्सपेक्टर ने पूछा, "कहिये, कहाँ चले गये थे?"

सिपाही बोला—"हुज़ूर ने वह लाल बत्ती मुझे दिखाई थी?"

इन्सपेक्टर— "हाँ, फिर ?"

सिपाही— "हुजूर, वह एक मोटर की पिछली रोशनी थी जो मसूरी जा रही थी।"

*

एक दिन एक मेम साहब मोटर चलाते समय अपना एक हाथ बार बार खिड़की के बाहर निकाल रही थीं। यह देखकर चौराहे पर एक पुलिस वाला बोला— मेम साहब, आप बार बार अपना हाथ खिड़की के बाहर क्यों निकालती हैं जबकि आपको अपनी कार मोड़ पर मोड़नी नहीं ?

मेम साहब ने जवाब दिया— देखते नहीं, मैं अपने नाखूनों की नेल-पालिश धूप में सुखा रही हूँ।

*

वह बेचारा दो साल से नौकरी की तलाश में था, और नौकरी न मिलने के कारण काफी निराश हो गया था। एक पुलिस चौकी के सामने उसने एक विज्ञापन देखा, जिसका शीर्षक था 'चोर चाहिये।' काफी देर तक सिर खुजलाने के बाद उसने अपने आप से ही कहा— "कुछ न होने से तो यही अच्छा है। चलो इस नौकरी को ही देखा जाये।"

*

एक सिपाही ने एक आदमी को यह कहते सुना, "क्यों जी ! हमारा बम तैयार किया या नहीं ?" इसलिये उसने थाने में रिपोर्ट कर दी। इससे कई कांस्टेबिल, थानेदार तथा एक सारजेन्ट लुहार के घर पहुँचे और उसे दरवाज़े पर ही क़ैद कर लिया।

सारजेन्ट (लुहार से)— तुम बम बनाते हो ?

लुहार— जी हाँ।

सारजेन्ट— अभी कितने बम बने हुए तुम्हारे पास हैं ?

लुहार— चार तैयार हैं, दो शाम तक बन जायेंगे।

सारजेन्ट— हमें दिखाओगे ?

लुहार 'हाँ' कहकर उन्हें दूकान पर ले गया ; और ताँगे के बम देखकर पुलिस वाले बुरी तरह शरमाये।

*

पुलिसमैन ने हाथ उठाया। स्त्री ड्राइवर ने एक झटके के साथ कार रोक दी।

'जैसे ही मैंने आपको देखा, मैंने अपने दिल में कहा— कम से कम पैंतालिस।'

'नहीं, नहीं,' स्त्री बात काटकर बोली, 'यह मेरा हैट है जो मुझे इतनी वृद्ध बना देता है।'

*

पुलिस का एक दारोग़ा डाकुओं के एक दल की खोज में निकला हुआ था। ढूंढता ढूंढता वह एक पहाड़ी इलाक़े में जा पहुँचा। उसने देखा कि पहाड़ पर बनी एक झोंपड़ी से धुआं निकल रहा है। पहाड़ की तलहटी में एक लड़का बैठा हुआ था। दारोग़ा ने उससे पूछा, 'क्या इस झोंपड़ी में डाकू रहते हैं?"

लड़के ने उत्तर दिया— "हो भी सकता है और नहीं भी।"

दारोग़ा ने फिर पूछा— "कहीं तुम यहाँ बैठे उनकी चौकीदारी तो नहीं कर रहे हो?

लड़के ने फिर कहा— "हो भी सकता है और नहीं भी।"

दारोग़ा बोला— "अच्छी बात है। तुम मेरे घोड़े की रास पकड़ो, मैं ऊपर जाकर देखता हूँ।"

लड़के ने घोड़े की रास पकड़ ली और दारोग़ा ने ऊपर चढ़ना आरम्भ किया। अभी दो एक क़दम ही चढ़ा होगा कि लड़का बोला, "दारोग़ा जी, यह तो बताते जाओ कि यदि तुम वापिस नहीं लौटे तो घोड़े का क्या होगा। इसे मैं ले लूँ?"

*

मिकैनिक— 'आपकी कार को देखकर मेरी राय तो यह है कि आप इसे चलाते रहा करें।'

मोटर का मालिक— 'क्यों?'

मिकैनिक— 'क्योंकि यदि कहीं भी इसे आपने रोक दी तो वे गधे सिपाही यह समझेंगे कि कोई दुर्घटना हो गई है।'

*

सड़क पर एक मोटर बहुत तेज़ी से जा रही थी और थोड़ी थोड़ी देर में ऊपर उछल कूद कर चलती थी। सड़क के पुलिस वाले इन्सपैक्टर ने देखा तो अपनी मोटर साइकिल पर सवार हो उसका पीछा किया और उसे रोक कर गुस्से में चिल्लाकर पूछा— "इसका क्या मतलब है? तुम क्या कर रहे हो? यह उछलने कूदने वाली गाड़ी कैसी है?"

उसने उत्तर दिया, "कुछ नहीं दारोग़ा जी! गाड़ी का नहीं, मेरा अपराध है। मुझे हुचकियाँ आ रही थीं।"

न्यायालय

"तुम स्वीकार करते हो कि तुमने पाँच बार कपड़े की दूकान में चोरी की ? क्या चुराया था तुमने ?"

"अपनी स्त्री के लिये एक साड़ी, सरकार।"

"मगर एक साड़ी के लिये पाँच बार चोरी करने की क्या ज़रूरत थी ?"
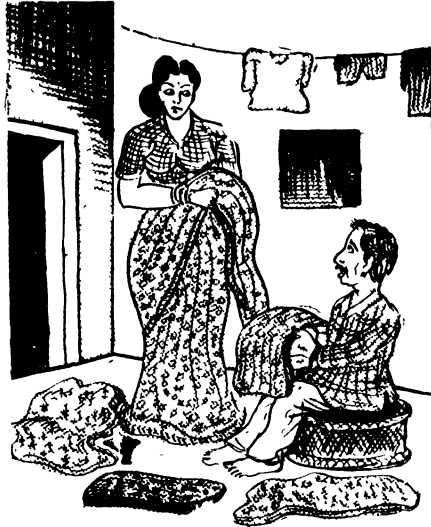
"चार बार साड़ी उसे पसन्द नहीं आई थी, सरकार।"

*

जज— तुम क़सूरवार हो या बेक़सूर ?

क़ैदी— हजूर, बेक़सूर हूँ।

जज— इससे पहले भी कभी पकड़े गये हो ?

क़ैदी— नहीं, हजूर। यह पहली बार ही मैंने चोरी की है।

*

एक पुलिस इन्सपॅक्टर ने कुछ लोगों को बीच सड़क पर लड़ने के अपराध में गिरफ्तार कर न्यायाधीश के सामने उपस्थित किया।

न्यायाधीश ने अभियुक्तों से पूछा— क्या यह सही है कि तुम लोगों को लड़ते हुए गिरफ्तार किया गया ?

अभियुक्त— नहीं साहब, हमें जिस समय गिरफ्तार किया गया उस समय

हम एक दूसरे को अलग कर रहे थे।

*

अदालत में एक पुरुष-गवाह के गवाही देने के बाद एक महिला-गवाह ने जो गवाही दी वह पुरुष-गवाह की गवाही के बिल्कुल विपरीत थी। वकील ने पुरुष-गवाह से पूछा— क्या तुम इस महिला-गवाह को झूठा करना चाहते हो?

'जी नहीं, मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि यदि इन देवी जी ने जो कुछ कहा है वह सत्य है, तो जो कुछ मैंने कहा है वह सब झूठ है।'

*

जज ने निर्णय पढ़ते हुए कहा— अभियुक्त ने इस अपराध की योजना अत्यन्त बुद्धिमानी तथा चतुराई से तैयार की थी।

अभियुक्त— धन्यवाद महोदय! मगर इतनी प्रशंसा की क्या आवश्यकता है?

*

न्यायालय में अभियुक्त से जिरह हो रही थी। परन्तु अभियुक्त पहाड़ की तरह अचल और अपनी बात पर अड़ा हुआ था। वादी का वकील झुंझला रहा था। उसने प्रश्न किया— "क्या तुम शपथपूर्वक कह सकते हो कि यह हस्ताक्षर तुम्हारे नहीं हैं?"

"हाँ।"

"यह लिखावट भी तुम्हारी नहीं है।"

"नहीं।"

"तुम्हारी लिखावट से मिलती जुलती है?"

"नहीं।"

"शपथपूर्वक कह रहे हो?"

"हाँ।"

"तुम्हें इस बात का निश्चय कैसे हुआ?"

"मैं लिख नहीं सकता।"

*

'तुम्हें पन्द्रह वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया जाता है।'

अपराधी— 'इतने वर्ष तो मैं ज़िन्दा नहीं रहूंगा हजूर।'

न्यायाधीश— 'तुम अपनी ओर से कोशिश करने में कसर मत रखना।'

*

बैरिस्टर साहब एक गवाह से जिरह कर रहे थे, जिसमें एक मृत व्यक्ति का

ज़िक्र आ गया। बैरिस्टर साहब ने गवाह से मृत व्यक्ति के चरित्र के बारे में प्रश्न किया। गवाह बयान करने लगा— "वह व्यक्ति निष्कलंक था। उससे मिलने वाले उसे चाहते थे और आदर की दृष्टि से देखते थे। उसके विचार और कार्य पवित्र .... "

न्यायाधीश ने गवाह को टोक कर पूछा— "तुम्हें यह सब कैसे ज्ञात हुआ?"

"हज़ूर, यह सब उसकी समाधि पर लिखा हुआ है।"

*

मैजिस्ट्रेट— इतनी गवाही के बाद तो तुम मानते ही होगे कि वादी के पैर में तुमने ही कटार मारी थी?

अपराधी— यह तो सही है, पर ऐसा भूल से हो गया।

मजिस्ट्रेट— क्या कहते हो? भूल से हो गया?

अपराधी— जी, हाँ। मै वादी का सिर काट लेना चाहता था, पर अफ़सोस वह सिरहाने की ओर पैर किये सो रहा था।

*

मजिस्ट्रेट— इस मुक़दमे को तो आसानी से अदालत के बाहर भी निमटाया जा सकता था।

अभियुक्त— जी, मै यही कोशिश कर रहा था। पर सिपाहियों ने आकर यह कोशिश बेकार कर दी।

*

मजिस्ट्रेट— क्या तुम सचमुच समझते हो, और कहना चाहते हो कि अपराधी तुम्हारी आँख बाहर निकालना चाहता था।

वादी— नहीं सरकार, लेकिन यह अवश्य कहता हूँ कि उसने मेरी आँख को और ज्यादा अन्दर गुसेड़ने की कोशिश की।

*

जज— तुमने चोरी क्यों की?

चोर— नहीं, सरकार मैंने तो चोरी नहीं की।

जज— तो फिर यहाँ कैसे आये?

चोर— सरकार से मिलने के लिये।

*

न्यायाधीश ने अपराधी से पूछा— "तुम्हारा कोई साक्षी है?"

अपराधी— "जी हाँ, ईश्वर।"

न्यायाधीश-- "उसको बुलाओ।"

*

जज ने गवाह से पूछा— क्या तुमने कभी इससे पहले इस क़ैदी को शराब-खाने में देखा है?

गवाह— अवश्य, जनाब, हमारी तो हमेशा मुलाक़ात वहीं होती है।

*

न्यायाधीश ने अपराधी से कहा— "तुम्हारा अपराध साबित हो चुका है। तुमने धनराम के मन पर भयंकर चोट पहुंचाई है, अतः उसके लिये तुम्हें चार मास का दण्ड दिया जाता है।

अपराधी— महाशय, आप तो उससे भी अधिक भयंकर चोट मेरे मन पर पहुँचा रहे हैं।

*

चोर चोरी करते पकड़ा गया। उसे अदालत में मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया।

मजिस्ट्रेट-- तुम्हारी जेब में जो कुछ भी हो वह सब मेज़ पर रख दो।

चोर-- यह तो सरासर अन्याय है, हुज़ूर! माल का आधा आधा किया जाए।

*

"हूँ, तो तुम्हारा कहना है कि तुमने उस होटल को इसलिये लूटा कि तुम भूखे थे।"

"जी हाँ, मैंने चार दिन से खाना नहीं खाया था।"

"तो तुम वहाँ से खाने की चीज़ें ले सकते थे, वहाँ के रुपये पैसे तुमने क्यों लूटे?"

"सरकार, मेरा यह सिद्धान्त रहा है कि जो खाया जाये, उसके पैसे अवश्य दिये जायें। इसलिये मैंने उन पैसों से दूसरे होटल में भोजन किया।"

*

वकील-- कल तुमने इस आदमी को गालियाँ दी और आज न्यायालय आते ही गूँगे बन गए हो। इससे सिद्ध होता है कि तुम अपराधी हो।

अपराधी— नहीं माई बाप, मैं तो जन्म का ही गूँगा हूँ।

*

चोर— जनाब, मेरा कोई अपराध नहीं था, मैं गृहहीन था, भूखा था, और मित्रहीन था।

जज— ओह, मुझे तुम्हारे साथ पूरी सहानुभूति है। अगले नौ महीने तुम्हें घर, भोजन तथा मित्र सब कुछ मिलेगा।

*

एक बूढ़े आदमी ने एक बार अपने पड़ौस से एक घी का कनस्तर चुराया। चोरी पकड़े जाने के बाद मुक़दमा चला और वह अदालत के सामने लाया गया। मजिस्ट्रेट ने उससे पूछा— "बाबा, तुम्हारा वकील कहाँ है?"

"हुज़ूर, मेरा कोई वकील नहीं।"

"लेकिन वकील तो होना चाहिए," मजिस्ट्रेट ने कहा। "कहो तो हम तुम्हें एक वकील दे दें।"

"नहीं, सरकार नहीं, ऐसा न कीजिए।" बूढ़े ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"क्यों?" मजिस्ट्रेट ने पूछा— "तुम्हारा तो उसमें एक भी पैसा ख़र्च नहीं होगा। तुम वकील क्यों नहीं चाहते?"

"सरकार, बात यह है," बूढ़े आदमी ने कहा, "असली घी आजकल कहाँ मिलता है। मैं बूढ़ा हो गया हूँ और घी अपने ही इस्तेमाल में लाना चाहता हूँ।"

*

जज ने प्रतिवादी से पूछा, "वादी का कहना है कि उसने तुम्हें एक सुन्दर फूलदान उधार दिया और तुमने उसे वापिस नहीं किया। अपनी सफ़ाई में तुम क्या कहना चाहते हो?"

प्रतिवादी— "हुज़ूर, पहली बात तो यह है कि मैंने वह वापिस कर दिया था, दूसरी बात यह है कि उसने मुझे वह फूलदान दिया तो उसमें कई जगह दरारें पड़ी हुई थीं, तीसरी बात यह है कि उसने मुझे कभी कोई फूलदान दिया ही नहीं।"

*

एक युवक ने एक बार मोटर चुराई। वह पकड़ा गया, और उस पर मुक़दमा चला। अच्छे ख़ानदान का युवक था। जज साहब पर उसकी सिफारिश आई। वह उसको छोड़ना चाहते थे। गवाही और बहस के बाद जज साहब ने असेसरों से पूछा— "बतलाइए, इस युवक ने अपराध किया या नहीं?"

असेसर जज साहब की बातों से समझ गए कि वह उसे छोड़ना चाहते हैं। उन्होंने आपस में परामर्श किया और एकमत होकर उत्तर दिया— "हम सबका मत है कि इस युवक ने, जिसने यह मोटर चुराई है, कोई जुर्म नहीं किया।"

*

जज ने चोर से पूछा— "क्यों, तुमने इस व्यक्ति की जेब में हाथ क्यों डाला?"

चोर ने सहम कर जवाब दिया— "जी, ……उस समय ठण्ड बहुत थी। मैंने सोचा शायद इस प्रकार ठण्ड कम लगेगी।"

*

जज ने अपराधी से पूछा— "क्या तुमने अपने लड़के को कुरसी से मारा था?"
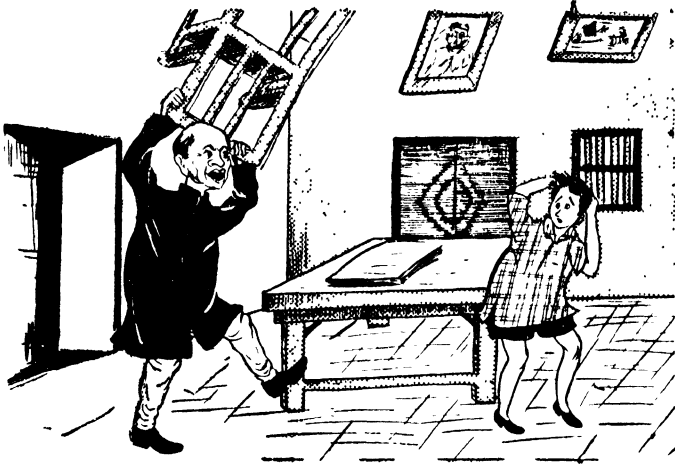
अपराधी— जी, हाँ, मेज़ बहुत भारी थी।

*

जज— तुम्हारे कितने भाई हैं?

अपराधी— एक।

जज— ग़लत बयान के अपराध में तुम पर बीस रुपये जुर्माना किए जाते है। तुम्हारी बहन ने गवाही में बताया था कि उसके दो भाई है।

*

मजिस्ट्रेट ने अपराधी से पूछा— तुमने तारघर के असिस्टेंट पर हमला क्यों किया?

अपराधी— श्रीमान जी, मैंने अपनी पत्नी को प्राइवेट तार देना चाहा, वह कम्बख़्त उसे पढ़ने लगा।

*

जज— मैं अभी फैसला सुनाता हूँ। कोई आदमी बीच में न बोले। जो बोलेगा, उसे बाहर निकलवा दूंगा।

अपराधी-- तो, हुज़ूर, मैं बोलता हूँ। मुझे बाहर निकलवा दीजिये।

*

जज— तुमने अपनी सास को खिड़की से बाहर उठा फेंका।

अभियुक्त— हुज़ूर, यह सब मैंने बग़ैर सोचे समझे किया था।

जज— तुमने यह भी नहीं सोचा कि उस समय उस रास्ते से कोई गुजर रहा होता, तो उसका क्या हाल होता?

*

जज— तुमने इस आदमी का पैन क्यों पार किया?

अपराधी-- क्योंकि इस के पैन पर 'पार कर' लिखा हुआ था।

*

जज— तुम आदतन नशेबाज़ी के जुर्म में गिरफ़्तार किए गए हो— तुम्हें अपनी सफ़ाई में कुछ कहना है?

अपराधी— हुज़ूर, अपराध मेरा नहीं, आदतन लगने वाली प्यास का है।

*

मजिस्ट्रेट— तुम्हें इस चोरी के अपराध में छः मास की सजा दी जाती है।

चोर— अच्छा। मगर हाथ जोड़ता हूँ, दो महीने तक मेरी सज़ा मुल्तवी रखिए वरना घाटा पड़ जायगा।

मजिस्ट्रेट—घाटा।

चोर— जी हाँ। क्योंकि हम लोगों के कमाने का यही मौसम है। आजकल ही लोग खूब खर्राटे भर के सोते हैं।

*

क़ैदी— लेकिन महोदय, वह मुझे हरदम तंग करती रहती थी।

जज— कैसे?

क़ैदी— वह बार बार यही कहती थी कि 'मार, मुझे एक बार मार के तो देख, ज़रा हाथ उठा तो सही, मैं भी तुझे गंजे, बुड्ढे, खूसट, खुर्राट जज के सामने पेश कर सज़ा दिलावाऊँगी।'

जज— क़ैदी बरी किया जाता है।

*

जज (मुक़दमे की कार्रवाई रोककर)— ठहरो, नौजवान! मैंने तुम्हें अपने मुक़दमे की जिरह करने की स्वतंत्रता दी थी। लेकिन तुम इतने बौड़मपन से झूठ बोल रहे हो कि सब बात साफ होती जा रही है। और मुझे विश्वास हो गया है कि तुम्हें अपने मुक़दमे की जिरह के लिए वकील ही करना पड़ेगा।

❀

जज— तो तुम स्वीकार करते हो कि तुमने दर्ज़ी के यहाँ से ओवर कोट चुराया था। तुम्हें और क्या कहना है ?

चोर— मुझे अपने ख़र्चे पर उसकी बाँहें छोटी करवानी पड़ी थीं।

*

अपराधी का पहला अपराध होने के कारण जज ने उसे माफ कर दिया था। अपराधी को सलाह देते हुए जज ने कहा, "और हमें पूरा विश्वास है कि तुम अब से बुरी संगत में रहना छोड़ दोगे।"

"हाँ, हुज़ूर !" अपराधी ने जवाब दिया, "मेरी पूरी कोशिश होगी कि फिर कभी आपके पास न आऊँ।"

*

एक नग्नवादी (जो लोग कपड़े पहनने के विरुद्ध हैं) को पुलिस ने पकड़ कर मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया।

मैजिस्ट्रेट— तुम्हारा विवाह हो गया है ?

नग्नवादी— जी हुज़ूर।

मैजिस्ट्रेट— तुम्हारे बच्चे हैं ?

नग्नवादी— तेईस।

मैजिस्ट्रेट— तेईस ! मुकदमा खारिज। तुम्हें कपड़े पहिनने का समय ही कहाँ मिलेगा ?

*

जज— जिन लोगों ने तुम पर विश्वास किया, उन्हीं को धोखा देते हुए तुम्हें शरम नहीं आई ?

अपराधी— पर हुज़ूर, आप ही सोचिए, जिन लोगों को मुझ पर विश्वास नहीं था, उन्हें मैं धोखा दे ही कैसे सकता था ?

*

"मैं तुम्हें सख़्त सज़ा देता हूँ," जज ने अभियोगी को सुनाते हुये कहा। "मैं तुम्हें जेल में डाल कर आराम से नहीं रहने दूंगा। मैं तुम्हें छोड़ता हूँ, ताकि तुम महँगाई, तंगी, राशन, बेकारी, राजनीति, लड़ाई, बम— इन सब के बारे में हमारी ही तरह चिन्तायुक्त रहो।"

*

जज (गवाह से)— जानते हो, झूठ बोलोगे तो क्या होगा ?

गवाह— हाँ, हुज़ूर, यही कि नरक में परम दुःख पाऊंगा।

जज— ठीक, और सच बोलोगे तो ?

गवाह— यही कि मेरे मित्र मुक़दमा हार जायंगे।

*

मजिस्ट्रेट— अरे, तुम फिर मेरे सामने मौजूद हो। कौन लाया तुम्हें यहाँ ?

अभियुक्त— जी, यह दोनों सिपाही।

मजिस्ट्रेट— हूँ ······ फिर पी होगी ?

अभियुक्त— बिल्कुल सच, सरकार, दोनों ही पिए हुए थे।

*

"उन शब्दों को अदालत के सामने दोहरा दो जो प्रतिवादी ने इस्तेमाल किए थे," वकील ने कहा।

"नहीं, मैं नहीं कहूँगा। किसी शरीफ़ आदमी के सुनने योग्य वे शब्द नहीं हैं।"

"तो," वकील बोला, "जज के कान में कह दो।"

*

"अदालत को बताओ तुमने यह कार क्यों चुराई?"

"हुजूर, यह कार मरघट के बाहर खड़ी थी। मैंने समझा कि इसका मालिक अब इस संसार में नहीं है।"

*

अदालत में एक चोर पर रिस्टवाच चुराने का मुक़दमा चल रहा था। उसका वकील बड़ी होशियारी से उसकी पैरवी कर रहा था। वकील जूरी के सदस्यों को सम्बोधित करके बोला, "जनाब, मैं पूछता हूँ कि मुलज़िम ने घड़ी छिपाई कहाँ होगी? जेब में? नहीं, क्योंकि जब पुलिस ने उसकी तलाशी ली, तो घड़ी वहाँ नहीं थी। जूते में भी वह घड़ी नहीं रख सकता था, वहाँ वह टूट जाती, और इतनी बड़ी घड़ी जूते में आ भी नहीं सकती।"

जूरी पर अपनी बात का प्रभाव देखने के लिए वकील रुका, इतने में ही चोर बोला, "मैंने वह घड़ी अपनी टोपी के नीचे रख ली थी।"

*

जज— "छः आदमी गवाही दे चुके कि तुमने उनके सामने कार चुराई। फिर भी तुम अपने को निर्दोष बता रहे हो?"

अभियुक्त— "इससे क्या होता है! मै आपके सामने ऐसे हज़ारों आदमी पेश कर सकता हूँ जिन्होंने मुझे कार चुराते नहीं देखा।"

*

एक प्रसिद्ध जेबकतरे को सज़ा देते हुए मजिस्ट्रेट ने कहा— "आख़िर तुम जैसे लोगों से दुनिया को क्या फ़ायदा है?"

"जी, मेरे ही कारण दो तीन पुलिसमैनों का पेट पलता रहता है।" जेबकतरे ने जवाब दिया।

*

जज— यह तो तुम इक़बाल ही करते हो कि तुमने सिगार चुराया है। अच्छा, अब तुम अपनी सफ़ाई में कोई वजह भी बयान कर सकते हो?

अभियुक्त— जी हाँ।

जज— क्या?

अभियुक्त— यही कि एक सिगार पीकर आप खुद ही देख लीजिए।

*

जज— क्यों, इन जेवरों को तुमने चुराया है?

मुलज़िम— क्या बताऊँ, धोखे में ग़लती हो गई।

जज— कैसी ग़लती?

मुलज़िम— मैंने समझा ये सोने के है, मगर निकले कमबख़्त पीतल के।

*

मजिस्ट्रेट— क्यों, जिस ईंट से तुमने वादी को मारा, वह इतनी बड़ी थी जितनी बड़ी मेरी खोपड़ी है।

अपराधी— थी तो इतनी ही बड़ी, मगर इतनी मोटी नहीं थी।

*

अपराधी जब अदालत में हाज़िर किया गया तो मजिस्ट्रेट को उसकी सूरत पहचानी हुई सी लगी। उन्होंने अपराधी से पूछा— इसके पहले तुम कितनी बार सज़ा पा चुके हो?

अपराधी— हुज़ूर, पाँच बार।

मजिस्ट्रेट— पाँच बार! तब तो इस बार तुम्हे सबसे अधिक सज़ा मिलनी चाहिये।

अपराधी— यह क्या! स्थायी ग्राहकों के साथ तो हुज़ूर, सब जगह कुछ रियायत की जाती है।

*

एक पुराने अपराधी से मजिस्ट्रेट ने कहा— "मैं क्यों रियायत करूँ— तुम कई बार के सजायापता हो। अगर तुम्हारा यह पहला अपराध होता तब शायद मैं तुम्हे छोड़ देता।"

अपराधी ने बात काटकर कहा— "मगर सरकार, हमारे वकील साहब का तो यह पहला ही मुकदमा है।"

*

एक खिलाड़ी गॉल्फ खेल रहा था। कमबख़्ती के मारे उसकी गोली से एक स्त्री की नाक टूट गई। उस स्त्री के पति ने खिलाड़ी पर दावा ठोक दिया। जब खिलाड़ी साहब अदालत में पकड़ कर लाये गये तो उनकी स्त्री भी मुक़दमे की पैरवी में आई। मुक़दमा पेश हुआ। अपराधी ने अपने अपराध को इक़बाल किया, मगर कहा— "हम वादी से सुलह करने को तैयार हैं।"

अदालत— अच्छी बात है। मगर किस शर्त पर सुलह करना चाहते हो?

अपराधी— हमारी गोली से वादी की स्त्री की नाक टूट गई है। तो मैं भी वादी को अख़्तियार देता हूँ कि वह शौक़ से मेरी स्त्री की नाक तोड़ दे। यह खड़ी है। बस झगड़ा ख़त्म हो।

*

क़त्ल का मुक़दमा अदालत में पेश था। गोली चलाने के सिलसिले में एक

गवाह पेश हुआ। मजिस्ट्रेट ने पूछा — क्या तुमने गोली चलती देखी थी ?

गवाह— नहीं हुज़ूर ! मैंने सिर्फ गोली चलने की आवाज़ सुनी थी।

मजिस्ट्रेट— तुम्हारी गवाही पर विश्वास नहीं किया जा सकता। तुम जा सकते हो।

गवाह कटहरे से बाहर निकला। जब मजिस्ट्रेट की तरफ उसकी पीठ हो गई तो उसने हँसना शुरु कर दिया।

मजिस्ट्रेट को उसके हँसने पर बड़ा गुस्सा आया, क्योंकि यह अदालत का अपमान था। उसने गवाह को वापिस बुलाया और पूछा— तुम्हें इस तरह अदालत के सामने हँसने का दुस्साहस क्यों कर हुआ ?

गवाह ने तुरन्त पूछा— क्या हुज़ूर ने मुझे हँसते देखा है ?

मजिस्ट्रेट— नहीं, मैंने तुम्हारी हँसी की आवाज़ सुनी है।

गवाह— बेशक हुज़ूर ने आवाज़ सुनी होगी, लेकिन यह शहादत तो विश्वसनीय नहीं।

मजिस्ट्रेट के अतिरिक्त अन्य सब लोग हँसने लगे।

*

एक स्त्री मजिस्ट्रेट के सामने गवाही देने के लिए हाजिर हुई। मजिस्ट्रेट ने पूछा— तुम्हारी उम्र क्या है ?

स्त्री— पेंतीस साल।

मजिस्ट्रेट— मुझे खूब याद है पांच वर्ष हुए जब तुम इसी इजलास में एक और मुक़दमे में आई थीं, उस समय भी तुमने अपनी उम्र पेंतीस वर्ष बतलाई थी। आज पाँच साल बाद भी तुम कहती हो कि मेरी उम्र पेंतीस वर्ष की है। यह क्या बात है ?

स्त्री— मै उन लोगों में नहीं हूँ, जो एक बार कुछ कहते है और दूसरी बार कुछ और।

*

जज— देखो, तुम दोनों क़सूरवार पाये गये हो। तुम दोनों को सज़ा होगी, पर सज़ा सुनने के पहले तुम दोनों में से कोई कुछ कहना चाहता है ?

अपराधी— जी हाँ, हुज़ूर, मेरी एक प्रार्थना है। मेरी स्त्री की सज़ा अभी रोक रखी जाए। जब मैं अपनी सज़ा भोग कर जेल से निकल आऊँ तब इसकी सज़ा शुरू की जाए।

*

मजिस्ट्रट— क्यों, तुम्हारी क्या शिकायत है ?

स्त्री — हुजूर ! यह मेरा पति है। यह मुझको बराबर धमकाया करता है कि तू मेरा हुक्म न मानेगी तो मैं तेरा सिर काट डालूंगा।

मजिस्ट्रेट— तो अभी तक तो ऐसा नहीं हुआ।

स्त्री— वाह, करता तो मैं पुलिस में रिपोर्ट न कर देती।

*

जज— तो तुमने अपने पति को धोखा दिया ?

अपराधी स्त्री— जी नहीं, हुजूर, इसने मुझ को धोखा दिया। इसने मुझसे कहा था कि मैं दो रोज़ बाद आऊँगा, मगर आ गया उसी रात को।

*

जज— तुम इस बात को स्वीकार करते हो कि रात को दो बजे पिछले दरवाज़े के रास्ते से तुम वादी के मकान में घुस गए। वहाँ तुम्हारा उस वक्त क्या काम था ?

अपराधी— सरकार, मैंने समझा था कि यह मेरा घर है।

जज— तो जब वादी की स्त्री तुम्हारे सामने आई तो तुम भागे क्यों ? तुम खिड़की से कूद नीचे वाले खण्ड में आए और गुसलखाने में छिपे रहे।

अपराधी— सरकार, मैंने समझा कि वह मेरी स्त्री है।

*

जज— अपने सीधे हाथ में गंगाजली लेकर कहो कि जो कुछ कहूँगा सच कहूँगा।"

अपराधी अपने उल्टे हाथ में गंगाजली लेकर बोलने वाला ही था कि जज ने चिल्ला कर कहा— मैं कहता हूँ सीधे हाथ में लेकर सच सच बोलो।

अपराधी— सच-सच बोल दूँ, हुज़ूर।

जज— हाँ।

अपराधी— तो, हुज़ूर, मेरा सीधा हाथ है ही नहीं।

*

मजिस्ट्रेट— तुम पर जाली दस्तख़त करने का अपराध लगाया गया है। तुम्हें अपनी सफ़ाई में कुछ कहना है ?

अपराधी— हुज़ूर, मैं तो अपना नाम तक नहीं लिख सकता, मैं पढ़ा लिखा नहीं हूँ।

मजिस्ट्रेट— तुम पर अपने दस्तख़त करने का नहीं, मोहन के दस्तख़त करने का अपराध लगाया गया है।

*

जज, वादी और प्रतिवादी तीनों ही बहरे थे। वादी ने कहा: "हुजूर, इस आदमी से मेरी ५००) की रक़म दिलवाइये।"

जज (प्रतिवादी से)— "तुम्हें इस बारे में क्या कहना है?"

प्रतिवादी— "सरकार, मैं उस दिन घर पर था ही नहीं। चोरी कैसे कर सकता था?"

जज (अन्त में)— "मामले पर पूरी तरह ग़ौर करने के बाद मै इस निश्चय पर पहुंचा हूँ कि इन दोनों ही भाइयों को अपनी माँ की सहायता करनी चाहिये।"

*

मैजिस्ट्रेट — "जाओ, तुम्हें रिहा किया जाता है।"

"जी, क्या सच आप मुझे रिहा कर रहे हैं?"

"हां। क्योंकि तुम पर घड़ी चुराने का जो अभियोग था, वह सिद्ध नहीं हो सका।"

"धन्यवाद। ··· पर, हाँ, वह घड़ी तो अब मेरी ही होगई न?"

*

एक महिला ने अदालत में एक व्यक्ति के विरुद्ध मुक़दमा दायर करते हुए कहा, "इस व्यक्ति ने मेरा दिल तोड़ा है। इसने मुझसे विवाह करने की प्रतिज्ञा करने के बाद दूसरी स्त्री से विवाह कर लिया। मै हर्जाने के तौर पर १ हज़ार रुपये चाहती हूँ।"

उसे हर्जाना मिल गया।

इस मुक़दमे के बाद एक और मुक़दमा पेश हुआ, जिसमें एक स्त्री ने एक अन्य व्यक्ति के बारे मे कहा— "इस व्यक्ति की कार मुझसे टकरा गई, जिससे मेरी कुहनियाँ टूट गई हैं। मुझे हर्जाने के तौर पर ३००) रु० चाहियें।"

अदालत ने उसे भी हर्जाना दिला दिया।

पहले व्यक्ति ने अपना जुर्माना अदा करते हुए कहा— "इससे तो मैं उसकी कुहनियाँ ही तोड़ देता तो अच्छा होता।"

*

जिरह करने वाले एक लम्बे चौड़े वकील ने एक गवाह से जिरह करते हुए पूछा— "अच्छा तो आप वकील हैं?"

"जी!"

"पर आप तो बहुत छोटे हैं, श्रीमान् जी! मेरी जेब में आसानी से समा जायँगे।"

"अगर ऐसा हुआ, तो आपकी जेब में आपके दिमाग़ की अपेक्षा अधिक

क़ानूनी ज्ञान समाया होगा।"

*

नगर की एक सुविख्यात महिला को एक प्रेम सम्बन्धी मुक़दमे में गवाही देने के लिये आना पड़ा। विरोधी पक्ष का वकील बहुत कुरेद कुरेद कर प्रश्न पूछने का आदी था और आशा थी कि वह महिला से बेहूदा प्रश्न पूछ कर उसे तंग करेगा। इसलिये अदालत में स्त्रियों की, जिनमें से अधिकांश उस महिला को द्वेष की दृष्टि से देखती थीं, भीड़ थी।

जज ने उस भीड़ को देखकर, मुक़दमा आरम्भ करने से पूर्व, ऊँचे स्वर में कहा— "मैं यहाँ उपस्थित सब प्रतिष्ठित स्त्रियों से निवेदन करता हूँ कि वे यहाँ से चली जायें।"

कोई स्त्री नहीं गई।

कुछ देर चुप रहने के बाद जज ने फिर कहा— "अब, जबकि सब प्रतिष्ठित स्त्रियाँ बाहर चली गई हैं, पुलिस के सिपाही अन्य स्त्रियों को बाहर निकाल दें।"

*

"मैं जूरी में सम्मिलित नहीं हो सकता, जज साहब! उस आदमी को देखते ही मुझे लगता है कि वह हत्यारा है।"

"वह आदमी ······· शि शिः शिः, वह तो विरोधी पक्ष का वकील है।"

*

मजिस्ट्रेट— "तो तुमने अपना मोटर लाइसेंस अन्तिम तिथि बीत जाने के दो महीने बाद तक भी नहीं बदलवाया। हैं?"

"जी, असल में बात ·······"

"बात-वात कुछ नहीं! यह बहुत गम्भीर जुर्म है, और मैं ऐसा जुर्म करने वालों को कभी नहीं बख़्शता। समझे?"

"जी! पर ······"

"बस, सफाई की ज़रूरत नहीं! तुमने जुर्म किया है, और उसका दण्ड भुगतना पड़ेगा। २० रुपया जुर्माना।"

और अपराधी को बड़े शांत भाव से जुर्माना अदा करते देखकर मजिस्ट्रेट साहब ज़रा पिघल कर उसे समझाने लगे— "देखो भई तुम्हें एक ज़िम्मेदार नागरिक की भाँति सब काम करने चाहियें। हम सबका यही कर्त्तव्य है। मुझे देखो, मैं अपना मोटर लाइसेन्स हमेशा वक्त पर बदलवा लेता हूँ। यह देखो (जेब से मोटर लाइसेंस निकालकर) यह है मेरा मोटर लाइसेंस। मगर हैं ·······! यह तो तीन महीने पहले बदला जाना चाहिये था।"

और मजिस्ट्रेट ने तुरन्त अपने को अपराधी घोषित करके स्वयं पर २५ रुपया जुर्माना कर दिया।

*

न्यायालय में प्रतिवादी ने स्वीकार किया कि पिछले दो वर्ष से उसने अपनी पत्नी से बात नहीं की है।

न्यायाधीश ने कठोरतापूर्वक पूछा, "किस कारण से तुमने दो वर्षों से अपनी पत्नी से बात नहीं की?"

पति ने कहा— "माननीय न्यायाधीश, मैं अपनी पत्नी के भाषण में विघ्न नहीं डालना चाहता था।"

*

न्यायाधीश के सामने बन्दी—मैंने हर बात सही कहने की प्रतिज्ञा की थी परन्तु जब भी मैं सच बोलने की कोशिश करता हूँ कोई न कोई वकील मुझे बीच में टोक देता है।

*

एक मज़दूर ने, जिसके पैर में दुर्घटना के कारण चोट आ गई थी, जज की अदालत में कम्पनी के विरुद्ध हर्जाने का दावा किया।

'तुम बिना लाठी की सहायता के नहीं चल सकते?' जज ने पूछा।

'मैं भी इसी शशोपंज में हूँ, क्योंकि मेरा डाक्टर कहता है कि मैं चल सकता हूँ और मेरा वकील कहता है कि मैं नहीं चल सकता।'

*

अदालत में किसी अभियुक्त पर चोरी का मामला चल रहा था। जब वह आदमी अदालत में लाया गया तो हाकिम ने उससे पूछा—तुमने उस दूकान से कपड़े की चोरी की है या नहीं?

अभियुक्त— हुज़ूर, मैंने चोरी नहीं की है। दूकान से यह कपड़े लेकर मैं भागा ज़रूर था।

हाकिम ने नाराज़ होकर कहा— बदमाश कहीं का! यह चोरी नहीं तो क्या साहूकारी है? अच्छा, फिर क्या हुआ?

अभियुक्त— जब मैं कपड़े लेकर भागा तो तीन आदमियों ने दौड़कर मुझे पकड़ लिया।

हाकिम को उसकी सच्चाई पर रहम आया। उसने पूछा— अच्छा, तुम कपड़ा लेकर क्यों भागे थे?

मुलज़िम ने कहा— हुज़ूर, दूकान के पास ही एक मकान था। उसकी

दीवार पर छपा हुआ एक बहुत बड़ा काग़ज़ लगा था। उसमें मोटे मोटे अक्षरों में यह लिखा था कि 'लूट लो ! मौक़ा न चूको !' फिर क्या था। मैंने भी कपड़े पर अपना हाथ साफ कर दिया।

वकील

अदालत में किसी मामले में एक छोटे बच्चे की गवाही थी। बच्चे की ओर देखते हुए न्यायाधीश ने प्रश्न किया-- 'क्या तुम्हें अदालत में गवाही का बयान देने के लिये किसी ने कुछ सिखा-पढ़ा कर भेजा है ?'

'जी हाँ।' बच्चे ने उत्तर दिया।

विरोधी पक्ष का वकील चिल्ला उठा— 'मान्यवर ! मैं तो पहले ही कह रहा था। ज़रूर इसे सिखा-पढ़ाकर यहाँ लाया गया है।'

न्यायाधीश ने बच्चे से पूछा-- 'तुम्हें किसने सिखाया है ?'

'मेरे पिता ने।'

पुनः विरोधी वकील चिल्लाया-- 'बिल्कुल ठीक कह रहा है यह।'

न्यायाधीश ने वकील की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। बच्चे से पूछा— 'क्या सिखाया गया है तुम्हें ?'

'यही कि अदालत में विरोधी पक्ष का वकील तुम्हें तरह तरह से परेशान

करेगा, ऊटपटांग प्रश्न पूछेगा, परन्तु तुम सच्ची बात ही कहना।'

*

वकील—— बचपन में मेरी इच्छा लुटेरा बनने की थी।

मुवक्किल—— आप भाग्यवान हैं, वकील साहब। जिस तरह आपकी इच्छा पूरी हुई, उस तरह किसी की ही होती है।

*

एक आदमी एक मुक़दमे में गवाही दे रहा था। प्रतिवादी के वकील ने उससे सवाल किया—— "क्या तुमने मेरे मुवक्किल से यह नहीं कहा था कि यदि वह तुम्हें वादी से अधिक पैसे दे, तो तुम उसकी तरफ से गवाही देने के लिए तैयार हो?"

आदमी ने जवाब दिया—— "हाँ, कहा था। लेकिन इसमें बुरा क्या किया? अगर तुम्हें वादी ज़्यादा फ़ीस देता तो क्या तुम उसकी तरफ से पैरवी करने के लिए तैयार न हो जाते?"

*

एक प्रसिद्ध वकील अपने मोहर्रिर को हमेशा उपदेश दिया करता था। एक दिन उसने अपने आफिस में बैठे-बैठे मोहर्रिर को एक दूसरे मोहर्रिर से बातें करते सुना। दूसरा मोहर्रिर पूछ रहा था—— "तुम्हें यहाँ कितना मिलता है?"

"५००) महीना।"

"क्या कहते हो?"

"६०) महीना तो तनख़ा है, और ४४०) महीने की क़ानूनी सलाह।"

*

एक युवक को रास्ते में गिरा हुआ दस रुपये का नोट मिला। कुछ देर बाद उसे एक आदमी मिला जिसको उसने वह नोट दिखाया।

आदमी ने नोट देखकर कहा—— "हाँ, नोट ठीक है।"

और उस युवक को सात रुपये अपनी सलाह की फीस काट कर बाक़ी तीन रुपये दे दिए, क्योंकि वह वकील था।

*

वकील अपने मुवक्किल से एक हत्या के मामले में सलाह मशवरा कर रहा था।

वकील—— तुम कहते हो कि तुम्हारे पास इस बात का जवाब है कि तुमने अपनी पत्नी की हत्या की।

मुवक्किल—— हाँ, हाँ। वह जवाब बड़ा सीधा और साफ है कि वह मेरी

पत्नी नहीं थी।

*

एक नया वकील अपने मुवक्किल को, जिसके ऊपर ६ गधों को मारने का अभियोग था, बचाने का प्रयत्न कर रहा था। जूरी के १२ सदस्य उसका भाषण सुन रहे थे।

वकील कह रहा था— "छ गधे ,महाशयो, ६ गधे! जूरी-बॉक्स में आप जितने हैं, उसके आधे ······"

*

एक कसाई ने एक वकील के कार्यालय में उत्तेजनापूर्वक घुसकर प्रश्न किया, "यदि कोई कुत्ता मेरी दुकान से मांस का टुकड़ा उठा ले जाय तो क्या उसका मालिक मूल्य चुकाने के लिये ज़िम्मेदार होगा ?"

वकील ने कहा, "हाँ।"

"तो तुम्हारा कुत्ता मेरी दुकान से पाँच मिनट हुए लगभग एक रुपये का मांस उठा लाया है।"

वकील ने कहा, "ठीक है, मुझे एक रुपया और दे दो। परामर्श देने की मेरी फीस पूरी हो जायगी।"

*

नया वकील (अदालत में अपने मुक़दमे की पैरवी करते हुए)— "और महोदय, यदि आप समझते हैं कि मेरी इस दलील में कोई दम नहीं है तो मेरे पास एक दूसरी दलील भी है, जो इतनी ही दमदार है।"

*

एक प्रसिद्ध अङ्गरेज़ वकील ने मरने से पहले अपनी वसीयत लिखी। वसीयत में उन्होंने अपनी सारी जायदाद बेवक़ूफों और पागलों के नाम कर दी।

जब उनसे इस विचित्र वसीयत का कारण पूछा गया तो वे बोले, "मुझे इन्हीं से दौलत मिली थी और इन्हीं में बाँट भी रहा हूँ।"

*

एक चिन्तित अपराधी ने अपने वकील से प्रश्न किया, "क्या आपको विश्वास है कि मेरे प्रति न्याय किया जायगा ?"

वकील ने बड़ी शान्ति से कहा— "शायद नहीं हो सकेगा। जूरी में दो व्यक्ति ऐसे हैं जो मृत्यु-दण्ड के विरोधी हैं।"

*

एक बार स्वर्ग और नरक के बीच का दरवाज़ा टूट गया। शैतान ने एक

रोज़ उस टूटे दरवाज़े पर खड़े होकर कहा, "ओ इन्द्र, यह दरवाज़ा टूट गया है। तुम बनवा देना।"

इन्द्र ने कहा, "भई, पिछली बार हमने बनवाया था ; इस बार तुम बनवाओगे।"

शैतान— "मैं तो नहीं बनवाता, जो जी चाहे करो।"

इन्द्र— "क्यों मुक़दमेबाज़ी पर उतरते हो ? तुम्हीं बनवा दो। इन्साफ़ से बारी तो तुम्हारी ही है।"

शैतान— "वाह, वाह ! तुम क्या मुक़दमा करोगे, सारे वकील तो मेरे यहाँ हैं।"

※

एक प्रसिद्ध डाकू एक वकील से अपने मुकदमे में परामर्श लेने के बाद बोला, "अच्छा वकील साहब, मैं जाता हूँ। फिर कभी आपके यहाँ आऊँगा।" वकील साहब ने उसकी भयानक मूछों को देखते हुए कहा, "ज़रूर तशरीफ लाइए, लेकिन याद रखिए, दिन के समय ही आइएगा।" इस पर डाके डालने वाला प्रसिद्ध डाकू भी मुस्कराए बिना न रह सका।

※

एक नवयुवक एक वकील के पास गया और कहा, "वकील साहब, मेरे घर आकर मेरे दो मित्र परस्पर लड़ पड़े और उन्होंने मेरे ही घर से कुर्सियाँ

उठा कर एक दूसरे के मारनी आरम्भ कर दीं।"

वकील ने पूछा, "तुमने बीच बचाव नहीं किया ?"

नवयुवक ने उत्तर दिया, "मेरी मर्ज़ी तो ज़रूर थी परन्तु मेरे पास तीसरी कुर्सी ही न थी।"

*

एक बार एक मुक़दमे में दो वकील जिरह कर रहे थे। एक वकील ने अभियुक्त से पूछा, "जब आप श्रीमती दास को उसके घर बुलाने गये तो उसने आपसे क्या कहा था ?"

इस पर दूसरे वकील ने अदालत से कहा, "हज़ूर, इस प्रश्न का मुक़दमे के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह प्रश्न न पूछा जाये।"

पहले वकील ने कहा, "श्री दास की पत्नी का इससे गहरा सम्बन्ध है। जब तक इस बात का उत्तर न दिया जावेगा बहुत सा मामला अन्धेरे में रहेगा।"

पूरा एक घण्टा बहस होती रही और अन्त में मजिस्ट्रेट ने प्रश्न पूछने की आज्ञा दे दी।

पहले वकील ने बड़े रोब से पूछा, "क्यों साहब, जब आप श्रीमती दास को उसके घर से बुलाने गये तो उसने आपसे क्या कहा था ?"

गवाह ने उत्तर दिया, "कुछ नहीं हज़ूर, वह तो उस समय घर पर ही न थीं।"

*

एक बार अदालत में वकील साहब की गर्मागर्म बहस ने मजिस्ट्रेट को इस बात पर बाध्य कर दिया कि वह अभियुक्त को बरी कर दे। जब अभियुक्त अदालत से बाहर आया तो वकील साहब ने उससे पूछा, "अब तो तुम बरी हो चुके हो, क़ानून भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। इसलिये मुझे सचमुच बता दो कि तुमने चोरी की थी या नहीं।"

अभियुक्त ने कहा, "हज़रत, अदालत में आपकी बातें सुनकर तो मेरा भी यही विचार हो गया है कि मैंने चोरी नहीं की।"

*

एक बार एक अभिनेता गवाह के तौर पर अदालत में पेश हुआ। वकील ने कहा, 'अच्छा, तो आप अभिनेता हैं और अधिकतर मज़ाकिया काम करते हैं।'

अभिनेता ने उत्तर दिया, 'जी हाँ।'

वकील साहब बोले, 'यह बहुत ही घटिया व्यवसाय है। क्या इसके लिए आपको कभी शर्म महसूस नहीं हुई ?'

अभिनेता ने कहा, 'जी नहीं, मुझे तो अपने व्यवसाय पर बड़ा अभिमान है, परन्तु मेरे पिता जी का पेशा बहुत ही ज़लील और घटिया था।'

'क्या काम करते थे वह' वकील साहब ने पूछा।

अभिनेता ने उत्तर दिया, 'वे वकील थे।'

*

एक आदमी किसी वकील के पास गया और जाकर कहा— "वकील साहब, जो लोग आपके पास मुक़दमे लाते हैं, उनको आप क्या कमीशन देते हैं ?"

वकील साहब कई दिनों से बेकार बैठे थे। कोई मुक़दमा ही न आया था। समझे आज यह आदमी ज़रूर कोई मुक़दमा लाया है। खुश होकर बोले— "चौथाई कमीशन देते है। कहिये, कहां है मुक़दमा ?"

उस आदमी ने कहा— "अभी तो नहीं है। कुछ पेशगी दीजिये तो आपके लिए मुक़दमा लाऊं। फिर कमीशन में काट लीजियेगा।"

वकील ने मुस्कराकर कहा— "हम दुनिया को लूटने बैठे हैं, तुम हमको लूटने आये हो ?"

*

एक वकील साहब शाम को कचहरी से लौट रहे थे। रास्ते में उनकी कलम गिर गई। एक राहगीर कलम उठाकर उनसे बोला, "वकील साहब, यह आपकी छुरी गिर गई है।"

वकील साहब चकित होकर उससे कहने लगे, "अबे! पागल है क्या? कलम को छुरी बतलाता है।"

उसने जवाब दिया— "जनाब, बातें न बनाइये, इसी की बदौलत तो आपने न जाने आज तक कितने मुक़दमेवालों के गले काटे है।"

*

एक बूढ़ा— नहीं, वकील साहब, यह झूठी बात तो हम नहीं कहेगे। यमराज की अदालत में हम क्या जवाब देंगे ?"

वकील— पागल कहीं का! तुमने जब तक यह मामला चलेगा, तब तक के लिये मुझे वकील कर लिया है न ?

बूढ़ा— हाँ, और शुकराना देने को भी कहा है।

वकील— बस, तो फिर डरने की क्या बात है ? हम यमराज की अदालत में भी जवाबदेही कर लेंगे।

*

जगदीश— क्यों मित्र, आप अपने लड़के को वकील ही क्यों बनाना चाहते

हैं? यदि उसे मास्टर बनाते, तो बेहतर होता।

मित्र— भाई, बात यह है कि उसे बचपन से ही झूठ बोलने की बुरी आदत पड़ गई है, इसलिए मैंने उसे वकील बनाना ही ठीक समझा। कहिए, बेजा तो नहीं है।

*

एक मालदार व्यक्ति के यहाँ एक बावर्ची नौकर था जिसने एक दिन मालिक के कमरे में से एक क़ीमती फूलदान चुराया। उस पर मुक़दमा चलाया गया। वकील ने उसकी तरफ से बहस करते हुए, अदालत को यह दिखलाना चाहा कि बावर्ची अन्दर घुसा ही नहीं, इसलिये उस पर चोरी का इलज़ाम नहीं लग सकता। उसने कहा, "हुज़ूर, यह मकान में बिल्कुल नहीं घुसा, वह तो केवल दरवाज़े के बाहर खड़ा हो गया। खुले हुए दरवाज़े के अन्दर अपनी टांग बढ़ाई और उससे फूलदान पकड़ कर बाहर खींच लिया। हाँ, उसकी टांग कमरे में जरूर घुसी। अगर आप उचित समझें, तो उसकी टांग को चोरी करने के लिये अवश्य सज़ा दे सकते हैं।"

जज ने चतुराई से मुस्कुराते हुए कहा— "आप ऐसा कहते हैं, तो ठीक है। मैं इसकी चोरी करने वाली टांग को एक साल क़ैद की सजा देता हूँ। अगर बावर्ची महाशय चाहें, तो टांग के साथ साथ खुद भी जा सकते हैं।"

"नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं होगी।" वकील साहब ने जल्दी से बावर्ची

की लकड़ी की टांग निकाल कर सिपाहियों को देते हुए कहा।

*

चोर— यह काम पूरा होने में कितनी देर लगेगी?

वकील— मुझे दो घण्टे, तुम्हें दो बरस।

*

एक प्रसिद्ध वकील ने बुढ़ापे के कारण वकालत बन्द कर दी थी। अब उसके बदले उसका बेटा काम करता था। एक दिन अदालत से लौट कर बेटा अपने पिता से बोला— "पिता जी, मुझे बधाई दीजिए। मैंने जायदाद का वह मुक़दमा जो आपके पास कई साल से था, आज निबटा दिया है।"

"क्या!" कोधित होकर पिता बोला, "उस मुक़दमे से तो तुम्हारी ज़िन्दगी भर की रोटी चल सकती थी। बेवकूफ!"

*

एक पुराने वकील साहब को अपनी फोटो खिचवाने का शौक हुआ। दूसरे ही दिन वे फोटोग्राफर की दुकान पर गये और अपनी फोटो खिचवाई। उस फोटो में वह अपने कोट की जेब में हाथ डाले खड़े थे। शाम को जब कुछ दोस्त इकट्ठे हुए तो उन्होंने अपने बेटे से कहा कि बेटा मेरा नया फोटो तो ले आ, ज़रा ये लोग भी देखें कि कैसा अच्छा है। लड़का दौड़ कर फोटो उठा लाया और कहने लगा कि यह तो बाबूजी की फोटो बिल्कुल ग़लत है।

दोस्तों ने कहा कि इसमें ग़लत क्या है, ठीक तो है।

लड़के ने उत्तर दिया— "वाह, बिल्कुल ग़लत है। भला देखिये बाबूजी का हाथ अपनी जेब में है, यह तो दूसरों की जेब में होना चाहिये था।"

*

जब रामदीन बैसाखी के सहारे चलता हुआ घर में आया, तो उसकी पत्नी क्रोध में आकर बोली, "अभी तक तुमने इन बैसाखियों को नहीं छोड़ा? मोटर से तो तुम्हारी टक्कर चार महीने पहले हुई थी, और डाक्टर ने भी कह दिया है कि उनकी अब कोई ज़रूरत नहीं है। फिर भी तुम इन्हें क्यों नहीं छोड़ते?"

"हां, डाक्टर ने तो कह दिया है," रामदीन शान्त भाव से बोला, "कि मुझे अब इनकी ज़रूरत नहीं। लेकिन वकील की सलाह है कि मुझे अभी कुछ दिनों के लिये और इनका इस्तेमाल करना चाहिये।"

*

एक मुवक्किल ने वकील को सब दास्तान सुनाने के बाद पूछा— "वकील साहब, अगर इसमें दावा करने वाली पार्टी अपील करे तो?"

वकील— "महाशय, वह तो ज़रूर जीत जायेगी। पर यदि आप 'केस' मुझे दे दें, तो मैं आपको जिता सकता हूँ।"

इतना सुनकर मुवक्किल उठकर जाने लगा।

वकील— "अरे, जनाब, आपने तो कुछ कहा ही नहीं।"

मुवक्किल— "कहूँ क्या! मैं तो विरुद्ध पार्टी का हूँ।"

*

एक चोर को चोरी के अपराध में छः महीने की सज़ा दी गई। चोर मजिस्ट्रेट से बोला, "हुज़ूर! यह सज़ा तो मेरे वकील साहब को मिलनी चाहिये।"

वकील साहब आँखें फाड़ कर उसकी ओर देखने लगे।

मजिस्ट्रेट ने बड़े अचरज से चोर से पूछा— "क्यों?"

चोर— "क्योंकि मैंने जितना रुपया चुराया था सब का सब मेहनताने के नाम पर वकील साहब हड़प कर चुके हैं।"

*

बहुत दिनों बाद दोनों दोस्त मिले। एक उखड़ा उखड़ा सा था, बोला— "फिर मिलेंगे, मुझे अभी हवा बदलने जाना है।"

अचरज हुआ दूसरे को— "हवा बदलने। भले-चंगे तो लगते हो।"

चलते चलते पहिले ने स्पष्ट किया— "बुद्धू, डाक्टर का नहीं, वकील का आदेश है।"

*

"तुम घटनास्थल से कितनी दूर थे?" वकील ने पूछा।

"ठीक बीस फुट साढ़े छः इंच।"

इस उत्तर से वकील चकरा गया। "तुम्हें इतना ठीक फासला कैसे मालूम हुआ?"

"मैंने तभी सोच लिया था कि कोई न कोई मूर्ख मुझ से ऐसा सवाल ज़रूर पूछेगा, इसलिए मैंने तभी फासला नाप लिया था।"

*

एक वकील की पत्नी को अपने पति से बहुत शिकायत थी कि उनका घर ठीक तरह नहीं सजा हुआ है। 'हमें एक सोफा लेना है, फर्श पर दरी चाहिये तथा द्वार पर परदे।'

वकील ने समझाया— 'देखो, चिन्ता न करो। मेरे पास एक तलाक़ का मुक़दमा है। मुझे उनका घर बिगाड़ लेने दो, फिर तुम अपना घर सजा लेना।'

*

मुक़दमा यह था कि लड़के का हाथ रेल दुर्घटना में बुरी तरह घायल हुआ था जिससे वह उसे अपने कन्धे से ऊपर नहीं उठा सकता था। अदालत में रेलवे कम्पनी का वकील जिरह कर रहा था। 'अच्छा बेटा! तुम्हारा हाथ रेल दुर्घटना में घायल हुआ था?'

'जी हाँ' लड़के ने उत्तर दिया।

'और तुम अपना हाथ ऊँचा नहीं उठा सकते?'

'जी नहीं।'

वकील ने बड़ी नम्रता से कहा, 'क्या तुम एक बार अपना हाथ उठाकर दिखा सकते हो जितना अब दुर्घटना के बाद उठता है?'

लड़के ने बड़ा परिश्रम कर धीरे धीरे उसे कन्धे तक उठा दिया।

'और दुर्घटना से पहले कितना उठा सकते थे?' वकील ने बड़े भोलेपन से पूछा।

लड़के का हाथ फौरन सिर के ऊपर उठ गया।

*

एक वकील तथा जज में बहुत अनबन रहती थी। जब वकील ने बहस करनी आरम्भ की तो जज महोदय यह दिखाने के लिये कि वकील जो कुछ कह रहा है वह बेकार है, अपने पास बैठे कुत्ते की ओर देखने लगे। वकील ने जब जज महोदय को कुत्ते की ओर देखते हुए पाया तो वह चुप हो गया। जज ने कहा—'बहस जारी रखिये।'

चतुर वकील ने आदरपूर्वक उत्तर दिया, "क्षमा कीजिये श्रीमान, मैं समझा था आप परामर्श कर रहे हैं।"

*

एक जज ने वकील की बहस को रोकते हुए कहा, 'तुमने जो बातें कहीं हैं यदि वे क़ानून हैं तो मेरे विचार में कानून की सारी पुस्तकें जला देनी चाहियें।'

"नहीं श्रीमान्, पढ़नी चाहियें," चतुर वकील ने उसी क्षण उत्तर दिया।

व्यापारी

चोर— बताओ, तुम्हारे ज़ेवर और नक़दी कहाँ हैं?

बनिया— यदि मैं बता दूं तो क्या मुझे छोड़ दोगे?

चोर— सच सच बताना, नहीं तो मार डालूंगा।

बनिया— नक़दी बैंक में है, और ज़ेवर महाजन के यहाँ गिरवी रखे हैं।

*

"बब्बू, ओ बब्बू कहां गया तू ?"

*

एक बड़े व्यापारी ने अपने मुंशी को बुला कर कहा— 'श्याम, तुम्हें हमारी नौकरी करते हुए चालीस साल हो गये हैं ?'

'जी सरकार ।'

'हम तुम्हारी स्वामिभक्ति से बहुत खुश हैं और तुम्हारे लिये कुछ करना चाहते हैं ।'

श्याम की आँखें आशा से चमक उठीं ।

'हमने सोचा है कि भविष्य में तुम्हें श्याम न कह कर श्याम बाबू पुकारा करेंगे ।'

*

रामनाथ-- क्या बताऊँ इस साल मुझे २५ हज़ार का घाटा हो गया है।

महेश— कैसे यार ? यह तो बुरा हुआ ।

रामनाथ-- सेठ धन्नामल ने अपनी लड़की का विवाह पिछले सप्ताह रमेश से कर दिया ।

*

एक युवक अपनी होने वाली पत्नी के लिये अंगूठी खरीदने जौहरी के यहाँ पहुंचा । केस में लगी एक अंगूठी की ओर इशारा कर उसने दाम पूछे ।

उत्तर मिला— एक हज़ार रुपये ।

आश्चर्य से युवक के मुख से सीटी निकल पड़ी । खैर, उसने बगल वाली अंगूठी के दाम पूछे ।

जौहरी ने नम्रता से उत्तर दिया— उससे दो सीटी और अधिक ।

*

एक चश्मे का व्यापारी अपने पुत्र को ग्राहकों से अधिक क़ीमत वसूल करने की तरकीब बता रहा था— 'बेटा, जब तुम ग्राहक का चश्मा तैयार कर चुको और ग्राहक तुमसे उसकी क़ीमत पूछे तो तुम कहना-- दस रुपये । यदि दस रुपये सुनकर ग्राहक नहीं चौंकता तो कहना-- यह तो हुई फ्रेम की क़ीमत और दस रुपये ······ यदि इससे भी ग्राहक नहीं चौंकता तो कुछ रुक कर कहना ········ एक शीशे के ।'

*

मोटर एजेंट— (धनी किसान से), तुम एक मोटर कार अवश्य खरीदो ।

किसान— इससे अच्छा है कि मैं एक गाय और खरीद लूं ।

एजेंट— तुम्हें गाय की पीठ पर सवार देखकर लोग तुम्हारी खिल्ली उड़ायंगे ।

किसान-- परन्तु मोटर से दूध दुहते समय तो वे हँस हँस कर पागल हो जायंगे ।

*

ग्राहक— यह सिगरेट पहिले से कुछ छोटे है।

दुकानदार— हाँ, इनके बनाने वाले ने देखा कि लोग सिगरेट पीकर एक इञ्च के लगभग अन्तिम भाग यों ही फेंक देते हैं। इसी कारण वह एक इञ्च छोटे सिगरेट बनाने लगा है।

*

ग्राहक — क्या यह जूते मज़बूत हैं?

दुकानदार— हाँ जी, बहुत मज़बूत। बहुत चलते हैं।

ग्राहक— बहुत चलते हैं इसका क्या प्रमाण है ?

दुकानदार— जिन लोगों ने यह जूते ख़रीदे थे, वे आज तक दूसरा जोड़ा ख़रीदने के लिये नहीं आये।

*

युद्ध आरम्भ होने पर दिल्ली पर हमले का बहुत डर था। सो एक व्यापारी ने अपने बच्चों तथा पत्नी के लिये देहात में एक मकान ख़रीद लिया। युद्ध तो बन्द हो गया, पर अणु बम की स्मृति सबके लिये छोड़ गया। अख़बारों में निकला कि यदि दिल्ली पर अणु बम डाला गया तो कितनी दूर तक उसका असर होगा। उनका नया घर भी ख़तरे के घेरे में था, सो उन्होंने उसे बेच दिया और अधिक दूरी पर नया ख़रीदा।

फिर हाइड्रोजन बम का अन्वेषण हुआ। इस बार के नक़्शों के अनुसार उनका नया घर भी ख़तरे से घिरा था। सो उन्हें फिर एक नया घर लेना पड़ा।

जब वे अपने नये घर की देखभाल करने गये तो बग़ल के मकान से एक प्रौढ़ निकलता दिखाई दिया। पड़ौसी को मित्र बनाने के लिये उन्होंने नमस्ते की और बातचीत आरम्भ की। उन्होंने अपनी जेब से अख़बार निकाला और नक़्शा निकाल कर दिखाया। 'आपको भी विश्वास हो गया होगा कि यहाँ तक हाइड्रोजन बम का असर नहीं पहुँचेगा।'

प्रौढ़ ने नक़्शे को देखा और गम्भीरता से बोले, 'पर आपने आगरे के अख़बार कब पढ़े हैं?'

*

"आपका यह सूट तो अब फट चला। इससे बर्तन ख़रीद लूँ?" पत्नी ने पूछा।

"नहीं, रहने दो, इन्कमटैक्स में कटौती कराने के समय मैं इसे ही पहन कर जाऊँगा।"

*

व्यापारी— 'तुम इतनी जिद्द कर रहे हो तो तुम्हारे बिल के भुगतान मे मैं तुम्हें ६४ रुपये का चैक दे रहा हूँ। पर फिर बतलाये देता हूँ कि बैंक में मेरे नाम इस समय केवल सात रुपये आठ आने हैं।'

*

पत्नी—"आप कमजोर हो गये हैं।"

*

सेठ हिरण्यक होटल में ठहरे थे। वहाँ से चलते समय बटुए से एक रुपया गिर गया। बहुत ढूँढा लेकिन मिला नहीं।

सेठ जी ने वेटर को कहा— "देखो यहाँ दो रुपये गिर पड़े हैं। अगर तुम उन्हें खोज लो तो एक रुपया तुमको इनाम में देंगे।"

एक रुपया इनाम के लालच से वह रुपये की खोज करने लगा। रुपया उसे मिल गया। उसे सेठ जी को देने के बाद वेटर दूसरे की तलाश में लग गया। सेठ जी का काम पूरा हो गया, इसलिये आप वहाँ से यह कहते हुए खिसक आये। "दूसरा रुपया तुम्हें इनाम में ही दे दिया। जब मिले अपने पास ही रख लेना।"

*

सेठ जी ने अपने सेक्रेटरी से पूछा— मेरी पेन्सिल कहाँ है ?

उत्तर था— आपके कान में लग रही है।

'ओह ! जल्दी करो।' करोड़पति बोला, 'मैं इतना व्यस्त हूँ। किस कान के पीछे ?'

*

'तुमने उस आदमी को खज़ांची क्यों रखा ? वह बहंगा है, उसकी नाक कुछ टेढ़ी है और कान पूरे पंखे हैं।'

'मैं जानता हूँ और इसीलिये उसे रखा है कि यदि कभी वह कुछ लेकर भाग जाये तो उसे आसानी से पहचाना जा सके।'

*

मैनेजर— मैंने सोचा कि एक दिन ठीक समय पर पहुँच कर दफ्तर के अपने सब कर्मचारियों को चौंका दूँ।

मित्र— सब बातचीत करते हुए पकड़े गये होंगे।

मैनेजर— नहीं, वहाँ कोई पहुँचा ही नहीं था।

*

एक रईस की मोटर से एक मुर्गी दब कर मर गई। रईस ने मुर्गीवाले को दो रुपये देकर पूछा, 'ठीक है ?'

'चार रुपये कर दीजिये।' मुर्गीवाला बोला।

'क्यों ?'

'घर पर एक मुर्गा है। वह भी इस मुर्गी के वियोग में जीवित नहीं रहेगा।'

*

एक बार एक व्यक्ति अपने मकान के पास वाले धाबे में भोजन करने गया।

वहाँ का भोजन बहुत ख़राब था। उसने क्रोधित होकर धाबे के नौकर से कहा—'यहाँ इतना ख़राब भोजन बनता है। मैं तुम्हारे मालिक से इसकी शिकायत करूँगा। उन्हें यहाँ बुलाओ।'

नौकर— 'थोड़ी देर ठहरिये, वे पास वाले धाबे में खाना खाने गये हैं।'

*

व्यापारी (अपने मित्र से)— यदि मेरे व्यापार में दस हज़ार रुपया लगाने वाला कोई व्यक्ति मिल जाये तो कुछ फायदा हो जाये।

मित्र— क्यों भई, दस हज़ार रुपया लगवा कर तुम्हें कितना लाभ हो सकता है?

व्यापारी— पूरे दस हज़ार का।

*

एक अंधेरी रात को सूनी गली में एक उजड्ड आदमी ने चुपचाप जाते हुए सेठ को रोक कर कहा— "सेठ जी, आपके पास एक पैसा हो तो मुझे उधार दे दीजिये।

सेठ— पैसा तो नहीं है भाई, इकन्नी है, चाहो तो ले लो।

आदमी— अच्छा, इकन्नी ही सही। मुझे और मेरे साथी को तो सिक्का उछाल कर तय करना है कि आपको मारने के बाद आपका कोट कौन ले और आपकी घड़ी कौन।

*

एक सुन्दर और ईमानदार ग़रीब लड़का मोहल्ले के एक सेठ के यहाँ बचपन से आया करता था। सेठ के घर के लोग उसे बहुत चाहते थे।

एक बार उसने सेठ से पूछा, "आपके पास तो बहुत धन होगा, सेठ जी?"

"हाँ, मेरे दस लाख रुपये बैंक में जमा हैं।"

"क्या आप अपनी पुत्री का विवाह मुझ से कर देंगे?"

"नहीं, यह असम्भव है।"

"मैं यह जानता था।" युवक ने निराश होकर कहा।

"फिर तुमने ऐसा प्रस्ताव ही क्यों किया?" सेठ ने पूछा।

"यही अनुभव करने के लिये कि जिसे दस लाख का नुक़सान हो जाता है उसे कैसा लगता है।"

*

अमेरिका के आयकर विभाग की कार्यपद्धति हमारे देश के आयकर विभाग की कार्यपद्धति से सचमुच बहुत भिन्न है।

अमेरिका के एक बड़े व्यापारी को आयकर का फार्म भर कर भेजने वाली तारीख़ बीतने के दो दिन बाद एक पत्र मिला कि उसे यह फार्म भर कर रुपये के साथ भेजना है। अन्तिम तिथि बीतने के बाद आयकर का पांच प्रतिशत जुर्माना अलग देना पड़ता है। व्यापारी ने फार्म के साथ एक चिट्ठी लिखी जिसमें लिखा था— देर में फार्म भर कर भेजने के लिये मैं कोई बहाना पेश नहीं कर सकता। मैं बस भूल गया था। मैं आयकर जुर्माने के साथ भेज रहा हूँ।

कुछ दिन बाद उसे एक सरकारी पत्र मिला जिसमें उससे आयकर भेजने की देरी को, स्पष्ट रूप से लिखने को कहा गया था। उसने उत्तर दिया— कुछ स्पष्ट नहीं लिख सकता। जुर्माना अदा कर दिया गया है।

चार पांच दिन बाद फिर एक पत्र आया जिसमें लिखा था कि स्पष्ट रूप से और शपथपूर्वक लिखिये कि आप स्पष्ट रूप से देरी का कारण क्यों नहीं लिख सकते।

*

लक्ष्मी, मेरे उलाहने को क्षमा करना— तेरी पूजा करने वाला अन्धा हो जाता है, तभी तो कमल के पत्ते के समान विशाल नैन वाले नारायण सर्प के फन की सेज पर सोते हैं।

*

एक दुकान ने विज्ञापन निकाला कि उनके यहाँ घड़ियाँ ख़रीद से भी सस्ती बेची जाती हैं। एक ग्राहक ने पूछा— ख़रीद से कम में माल बेचने पर दुकान से फ़ायदा किस तरह होता है?

"घड़ियों की मरम्मत से," दुकानदार ने बताया।

*

पेरिस के एक कपड़ा व्यापारी ने अपने एक ग्राहक को लिखा— "साथ में लगे हुए नमूने का कपड़ा मैं आपको नौ फ्रैंक प्रति गज के हिसाब से दे सकता हूँ। यदि मुझे कोई उत्तर न मिला तो मैं समझूंगा कि आप इस कपड़े को आठ फ्रैंक प्रति गज के हिसाब से लेना चाहते हैं। समय बचाने की इच्छा से मैं आठ फ्रैंक ही मंजूर किये लेता हूँ।"

*

एक बड़े व्यापारी का मंत्री— "श्रीमान जी, कोई साहब टेलीफोन पर आपकी उन्नति का भेद पूछ रहे थे।"

व्यापारी— "यह तो बताओ कि वह व्यक्ति किसी पत्र का संवाददाता था या सरकारी गुप्तचर?"

*

पत्र-प्रतिनिधि— क्या आप अपनी सफलता का रहस्य बता सकते हैं?

मिलमालिक— हाँ, परिश्रम, अध्ययन, अध्यवसाय और अपनी पत्नी, जिसके पिता यह मिल कृपा कर मुझे दान दे गये।

*

एक गुस्सैल व्यापारी ने अपने पत्र में लिखा— "महोदय, मेरी स्टेनोग्राफर महिला है, इसलिये जो कुछ मैं आपको लिखना चाहता हूँ, वह लिख नहीं सकता, और क्योंकि मैं एक सभ्य पुरुष हूँ, उतनी भद्दी बात सोच भी नहीं सकता, आशा है आप, जो न महिला हैं, न सभ्य पुरुष, मेरा आशय समझ गये होंगे।"

*

आख़िर एक दिन यह पता चल ही गया कि मुनीम ने लगातार कई वर्ष से हिसाब में गोलमाल किया था और यह रक़म १०,००० तक पहुँच गई थी।

क्योंकि मुनीम जी की नौकरी बहुत पुरानी थी, इसलिये उन्हें पुलिस के हवाले तो नहीं किया गया, पर बरख़ास्त कर दिया गया।

इस पर मुनीम जी ने जवाब दिया— "देखिये, सेठजी, मुझे बरख़ास्त करने से आपको क्या लाभ? मेरे पास सभी कुछ है— मकान है, मोटर है, कपड़े हैं, ज़ेवर है, पैसा है, अब मुझे कुछ नहीं चाहिये। नया आदमी रखकर उसे यह सब जमा करने के लिये क्यों न्यौता देते हैं?"

*

व्यापारी— यह देखिये, यह कंघा कितना मज़बूत है! कभी नहीं टूटेगा,

चाहे तो इसे दोहरा कर दीजिये, ऊपर से नीचे फेंक दीजिये, हथौड़ी से इस पर चोट कीजिए या ····

ग्राहक— इससे बाल भी बनाये जा सकते हैं?

*

फलों का एक आढ़ती एक माली से बात कर रहा था— "तुमने पिछली बार जो बारह मन आम मुझे बेचे थे, उन्हें मैंने तोला तो तीन मन कम निकले।"

"कम तो होने नहीं चाहिएँ, मैने तुम्हारे ही बाटों से तोले थे," माली ने उत्तर दिया।

"क्या!" आढ़ती सकते में आकर बोला, "ओह, मुझ से कहीं ग़लती हो गई होगी। लो, बीड़ी पियो।"

*

धनी व्यापारी ने अपने पिछले जीवन की गाथा सुनानी आरम्भ की— "पहले मैं बहुत ग़रीब था। मेरी समृद्धि का कारण एक पिन था। मै एक व्यापारी के यहाँ नौकरी की तलाश में गया था। उसने मुझे नौकरी देने से इन्कार कर दिया। मै निराश होकर लौटने लगा। निकलते ही मेरी निगाह एक पिन पर पड़ी। मैंने उसे उठा लिया ··· "

"बस, बस, आगे की बात रहने दो," धनी व्यापारी के मित्र ने कहा, "तुम्हें पिन उठाते देखकर व्यापारी तुम्हारी किफायतशारी से बहुत प्रभावित हुआ और उसने तुम्हें नौकर रख लिया, फिर ······ "

"नहीं, मैंने वह पिन उठाकर बेच दिया। वह सोने का जड़ाऊ पिन था। उसकी क़ीमत से मैंने दुकान खोल ली।"

*

"बेटे, व्यापार और जीवन में सफल होने के लिये दो बातों का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है।"

"कौन कौन सी बातें?"

"ईमानदारी और चतुराई।"

"ईमानदारी क्या होती है?"

"हमेशा कुछ भी क्यों न हो जाये, अपने वादे का पालन करो।"

"और चतुराई?"

"कभी कोई वादा करो ही मत।"

*

एक सज्जन ने मधु के एक व्यापारी से कहा— "महाशय, आपके यहां से

एक मधुमक्खी आकर मेरे पुत्र को काट गई है।"

मधु का व्यापारी बोला, "आप बतायें, किस मक्खी ने काटा है। मै अभी उसे ठीक कर दूँगा।"

❀

सौदागर— "तुम्हे चीनी के बर्तनों के विषय में भी कुछ अनुभव है?"

उम्मीदवार— "मै कई साल तक यह अनुभव कर चुका हूँ।"

सौदागर— "अच्छा, कोई बर्तन यदि टूट जाये तो क्या करते हो?"

उम्मीदवार— "मै वैसे ही जोड़कर किसी ऐसे स्थान पर रख देता हूँ कि ग्राहक से बर्तन अटक कर गिर पड़े और टूट जाये।"

सौदागर— "ठीक है, काम कर सकते हो।"

*

एक व्यापारी ने अपने से अधिक बुद्धिमान व्यापारी से पूछा— "आपकी इस बुद्धिमत्ता का रहस्य क्या है?"

"एक मछली। मैं वह मछली रोज़ खाता हूँ।"

"यदि ऐसा है तो कल मुझे भी वह मछली ला दीजिये।"

"मगर उसकी क़ीमत २५) है।"

२५) लेकर अगले दिन 'बुद्धिमान' व्यापारी ने एक छोटी-सी मछली दूसरे व्यापारी को लाकर दे दी।

उसने कहा— "अरे! २५) में इतनी सी मछली! यह तो कहीं भी एक आने में मिल जायगी।"

"देखिये, इतनी बुद्धि तो आप में इस मछली को देखकर ही आ गई।"

*

मित्र (दफ्तर के अधिकारी व्यापारी से)— "आज आपके कर्मचारी बड़े प्रसन्न दिखाई देते हैं। उनकी कुछ तरक़्क़ी की जा रही है क्या?"

व्यापारी— "नहीं तो। बात यह है कि आज मेरी पत्नी यहाँ आई थीं और मालिक पर जब कोई रोब जमाता है तो कर्मचारियों को आनन्द आता ही है।"

*

कार की खूबियां समझाते हुए सेल्समैन ने कहा— "इससे बढ़िया कार आपको नहीं मिलेगी। और तेज़ चलने की बात यह है कि इसमें रात को ८ बजे बैठिये, और अगले दिन सुबह ४ बजे आप बंगलौर पहुँच जायंगे।"

ग्राहक ने कहा— "अच्छी बात है। मैं सोचकर आपको उत्तर दूंगा।"

अगले दिन ग्राहक ने आकर कहा— "मैंने काफी सोच लिया है, और काफी सोचने के बाद भी मुझे बंगलौर पहुंचने का कोई कारण नहीं सूझा।"

*

एक नये पत्रकार को एक व्यापारी से भेंट करने के लिये भेजा गया। व्यापारी बहुत धनी था और पत्र का उद्देश्य आम दिलचस्पी की ऐसी कथा प्रकाशित करने का था कि जिससे और लोग भी उस व्यापारी के समान अधिक धनोपार्जन के लिये प्रयत्न करें।

व्यापारी ने पत्रकार से कहा— "यह बड़ी लम्बी कहानी है। जितनी देर मैं तुम्हे यह कहानी सुनाऊँ उतनी देर के लिये बिजली बुझाये देता हूँ।"

पत्रकार ने कहा— "कहानी सुनाने की अब ज़रूरत नहीं है; मैं समझ गया।"

*

बेटा— "पिता जी, आज मैं बहुत खुश हूँ। हिन्दी के पर्चे में मैंने १०० नम्बर मे से ८० नम्बर पाये है।"

पिता जो एक व्यापारी थे नाराज होकर बोले— "तो तुमने कौन बहादुरी का काम किया? नुक़सान ही तो रहा। १०० में ८० मिले। २० घर के भी गये। हम होते तो १५० लाते।"

*

एक धनी व्यापारी एक अमीर युवती विधवा स्त्री से प्रेम करने लगा। मामला यहाँ तक पहुँच गया कि विवाह की तिथि भी निश्चित हो गई। पर व्यापारी विधवा के चरित्र तथा पूर्व इतिहास के विषय में निश्चिन्त होना चाहता था, इसलिये उसने एक जासूस एजेन्सी को इन बातों की जाँच करने के लिए नियुक्त किया। दो सप्ताह बाद एजेन्सी ने जो रिपोर्ट दी, उसमें लिखा था, "इस स्त्री के वर्तमान और भूत के चरित्र पर सन्देह नहीं किया जा सकता पर इधर कुछ दिनों से सन्दिग्ध चरित्र वाला एक व्यापारी उसके पीछे पड़ा है।"

*

एक व्यक्ति बाहर से बम्बई में आकर बसा। मकान किराये पर लिया और व्यापार की खोज करने लगा। पड़ौसियों से उसकी मित्रता हो गई। वे सब उसको नौकरी दिलाने की कोशिश करने लगे। एक पड़ौसी उसे अपने एक परिचित के दफ्तर में ले गया और वहाँ एक क्लर्क की जगह दिलवानी चाही। लेकिन वह व्यक्ति पढ़ना लिखना नहीं जानता था इसलिये उसे नौकरी न मिल सकी। लेकिन वह निराश नहीं हुआ और काम देखता ही रहा। कुछ दिनों बाद उसे एक बड़ी

जायदाद देखने-भालने का काम मिल गया। और समय बीतने पर वह एक बहुत धनवान व्यक्ति हो गया। एक बार किसी व्यापार के लिये उसे बहुत बड़ी रक़म की ज़रूरत हुई। वह एक बैंक में कर्ज़ लेने गया। बैंक का मैनेजर उसे और उसकी हालत को खूब जानता था। वह रुपया देने को तैयार हो गया। वह बोला, "आप रुक्क़ा लिखकर हस्ताक्षर कर दीजिये। मै रुपया मंगवाये देता हूँ।"

व्यक्ति बोला, "मैं लिखना पढ़ना कहाँ जानता हूँ ? आप ही ख़ानापुरी कर दीजिये। मै अंगूठा लगा दूंगा।"

बैंक का मैनेजर आश्चर्यचकित रह गया और प्रशंसा करते हुए बोला, "आपको लिखना-पढ़ना नहीं आता, लेकिन फिर भी आप करोड़पति बन गये। अगर लिख पढ़ सकते तो न जाने अब तक आप क्या होते।"

व्यक्ति ने हँसकर उत्तर दिया— "जी, कुछ नहीं, केवल दफ्तर का बाबू।"

*

बड़ी दुकान के अतीव व्यस्त मैनेजर के पास एक ग्राहक शिकायत करने पहुंचा, "आपके आदमी बड़े बेहूदे हैं।"

मैनेजर ने ताज्जुब से कहा, "बेहूदे ! क्या बात है ?"

वह आदमी बोला, "मैंने एक कर्मचारी से कुछ पूछा तो वह मुझसे कहता क्या है कि "कहाँ से आ रहे हैं आप ?" भला बताइए यह भी कोई सवाल है।"

मैनेजर ने पूछा, "आपने उससे क्या बात पूछी थी ?"

जवाब मिला, "बिल्कुल सीधी साधी बात ! मैंने उससे पूछा कि दाहिनी तरफ का दूसरा मोड़ यही है क्या।"

*

दुकान मालिक— "मुझे अफसोस है, मैं आपको और अधिक उधार नहीं दे सकता। आपका बिल अभी ही आवश्यकता से अधिक बड़ा है।"

"यह मुझे मालूम है। तो फिर ऐसा कीजिये कि उसे इतना छोटा कर दीजिए कि मैं उसका भुगतान कर सकूँ।"

*

टाइयों को छाँटते हुए एक पुरुष ने दो टाई घृणा से एक ओर को रख दीं। अन्य ख़रीद लेने के पश्चात् उसने देखा कि सेल्समैन ने भी उन्हें अलग रखा है, बाक़ी टाइयों में नहीं मिलाया। 'इनका क्या होगा ?' उसने पूछा।

सेल्समैन ने उत्तर दिया, "हम इन्हें उन स्त्रियों को बेच देंगे जो पुरुषों के लिये टाई ख़रीदने आती हैं।'

*

दुकानदार

ग्राहक— भाई, यह चीज़ है तो बड़ी अच्छी पर किसी बड़े आदमी को दिखाओ।

दुकानदार— वाह जनाब, आप जैसा साढ़े छः फुट लम्बा, इतना बड़ा, इतना ऊँचा आदमी और कौन होगा ?

*

*

एक छोटे लड़के ने एक दुकान से दियासलाई खरीदी और थोड़ी देर बाद आकर दुकानदार से कहने लगा— "लीजिये, अपनी दियासलाई ! अम्मा कहती हैं यह जलती नहीं।"

दुकानदार— "कैसे नहीं जलती ?"

यह कहकर उसने एक दियासलाई खींचकर झट से जला दी।

लड़का दियासलाई की डिब्बी लेकर चला गया, मगर फिर तुरन्त आकर बोला— "अम्मा कहती हैं कि मुझे हर बार आकर आपसे दियासलाई जलवाने की फ़ुरसत नहीं है ?"

*

ग्राहक— इस पुरानी साइकिल को न खरीदने के कई कारण हैं। अव्वल तो मेरे पास उतने रुपये नहीं, दूसरे ······

दुकानदार— बस, बस, रहने दो। यही एक कारण काफी है।

*

ग्राहक— क्यों जी, यह टोपी कब तक चलेगी ?

दुकानदार— जब तक न फटे, तब तक।

*

खरीदार— तुमने कहा था कि मेरी दवा एक ही रात में फायदा करती है। मगर कल मैने उसे खाया, कुछ भी फायदा न हुआ।

दवा बेचने वाला— मगर यह मैंने कब कहा था कि यह किस रात को फायदा करती है ?

*

एक व्यक्ति ने एक दुकान पर जूते पसन्द कर लिये। लेकिन कुछ रुपये कम होने पर उसने दुकान के नौकर से कहा, "बाक़ी रुपये मैं कल आकर दे जाऊँगा।"

नौकर ने उत्तर दिया— "कोई हर्ज़ नहीं।" और जूते बाँधकर उस व्यक्ति को दे दिये।

जब दुकानदार को पता लगा तो वह नौकर पर बिगड़ने लगा कि अब वह अपरिचित व्यक्ति रुपये देने भला क्यों आयेगा। नौकर बोला— "आयेगा क्यों नहीं मालिक ? मैंने एक ही पैर के दोनों जूते उसे दिये हैं।"

*

एक सड़क पर एक ठेले वाला खड़ा खड़ा चिल्ला रहा था, 'हर माल चार चार आने, हर माल चार चार आने।' पर कोई खरीदार न आता था। तभी एक दूसरा ठेले वाला आया। उसके पास भी वही चीजें थीं पर संख्या में बहुत अधिक थीं। उसने आवाज़ लगानी शुरु की, 'लुटो मत भाइयो! हर चीज़ दो दो आने है। अधिक पैसे मत देना भाइयो।'

पहले वाले ने दूसरे को गाली दी। दूसरे ने जवाब में गाली दे आवाज़ लगानी जारी रखी। पहले भीड़ तमाशा देखने इकट्ठी हो गई, फिर दो दो आने वाले का ठेला खाली होने लगा। बीच बीच में वे पहले ठेले वाले को जो सबको घूर रहा था, लुटेरा भी बताते जा रहे थे।

भीड़ निबटने पर दूसरा ठेले वाला आगे चल दिया। थोड़ी देर में पहला भी बढ़ा। उसने दो गली पार कर दूसरे को पकड़ लिया। दोनों ने बड़े तपाक से

हाथ मिलाया और पहले वाले ने अपने ठेले का आधे से अधिक सामान दूसरे के ठेले पर रख दिया और बोला, 'यह तो बिल्कुल जादू था जादू। अब हम शहर के दूसरे भाग में चलें।'

*

३०० पौंड से अधिक वज़न वाला एक पहलवान तैयार कपड़ों की दुकान के आगे खड़ा तैयार कमीज़ों, पैन्टों, पाजामों आदि को देख रहा था। इतने में दूकान के मालिक ने बाहर आकर कहा— "आइये, जो ख़रीदना हो वह अन्दर आकर ख़रीदिये।

"अरे साहब कहाँ! मैं तो बस देख भर रहा था। तैयार कपड़ों में तो बस रुमाल ही मुझे फिट आता है।"

*

एक सस्ती घड़ी का मालिक उस घड़ी को ठीक कराने के लिये एक घड़ी-साज़ की दुकान पर गया।

"असल में ग़लती मेरी ही थी। मैंने इसे गिरा दिया था।"

"मगर आपने दूसरी ग़लती तब की जब इसे फिर उठा लिया।"

*

वह उन स्त्रियों में से थी जो दुकान की हर चीज देखना चाहती हैं। जब काउण्टर पर सब साइज़, सब रंग, सब स्टाइल के मोजों का ढेर लग गया तब घबराया हुआ दुकानदार बोला— बस बहन जी, इतना ही माल हमारे पास है।

बहन जी ने बड़े निराशा भरे स्वर में पूछा— केवल इतना ही तुम्हारे पास है?

दुकानदार कुछ रुका, फिर शान्ति से बोला— हाँ बहन जी, सिवाय एक जोड़ी के जो मैंने पहन रखी है।

*

ग्राहक (वापिस आकर)— आपके हिसाब में कुछ गड़बड़ है।

दुकानदार— अब मैं कुछ नहीं कर सकता। आपको तब ही कहना चाहिये था।

ग्राहक— अच्छा, तो कोई बात नहीं। आपने साबुन के पैसे न लगाकर मुझे सात आने अधिक दे दिये थे।

*

ग्राहक— आपके विज्ञापन में तो लिखा था कि कपड़ा क़तई ऊनी है, लेकिन यह तो बिल्कुल सूती मालूम होता है।

दुकानदार— जी हाँ, यही तो बात है। ये अख़बार वाले इतने झूठे होते

हैं कि इनकी बातों का विश्वास नहीं किया जा सकता।

*

पुस्तक-विक्रेता— इस पुस्तक को ख़रीदने से हिसाब में सौ में से पचास नम्बर की गारन्टी है।

विद्यार्थी— तो कृपया पुस्तक की दो प्रतियाँ दे दीजिये।

*

घण्टाघर की सुई में कुछ ख़राबी हो गई थी। घड़ीसाज़ बड़ी मेहनत करके ऊपर चढ़ा। सुई ठीक करके वह काँखता कूखता जब नीचे उतरा तो एक उत्सुक व्यक्ति ने पूछा, 'क्यों कुछ, ख़राबी थी क्या ?'

'जी नही,' घड़ीसाज ने झुंझलाते हुए उत्तर दिया, 'मेरी बीनाई कमज़ोर है। समय देखने के लिये ऊपर चढ़ा था।'

*

"तुमने तो मुझे लूट लिया, कैसी दियासलाई दी है जो जलती ही नहीं।"

"क्यों, इसमें क्या ख़राबी है ?"

"मुझे क्या पता? अभी एक मिनट पहले तो ठीक जल गई थी, लेकिन अब नहीं जल रही।"

*

किसी छोटे क़स्बे का रहने वाला एक आदमी किसी काम से दिल्ली आया हुआ था। वहाँ एक कैमिस्ट की दुकान में जाकर उसने गंजे सिर पर बाल उगाने की दवा मांगी। दुकानदार ने कहा कि उसके पास एक बहुत अच्छी दवा है जो चौबीस घण्टे में काले घने बाल उगा देती है।

क़स्बे के रहने वाले ने जवाब दिया— 'बहुत अच्छी बात है, तो आप अभी अपने सिर पर यह दवा लगा लें। कल सुबह जब मैं इधर से गुज़रूँगा तो यदि आपके सिर पर बाल हुए तो दवा ख़रीद लूँगा।"

*

ग्राहक— भाई, यह टोपी मैं दो रुपये में ले सकूँगा।

दुकानदार— नहीं, साहब ले लीजिये। इतनी अच्छी और इतनी सस्ती टोपी आपको बाजार भर में नहीं मिलेगी। यही टोपी मैंने चार चार रुपये में बेची है। आपके लिये दो रुपये कम कर दिये। इसमें मुझे कुछ नफ़ा नहीं है, एक रुपये का टोटा पड़ता है।

ग्राहक— तब तो मैं इसे दो रुपये में न लूँगा। क्योंकि मैं नहीं चाहता कि आप एक बिना जान पहचान के आदमी के पीछे एक रुपये का

नुक़्सान उठायें।

*

ग्राहक— तो यह हीरा बिल्कुल खरा है?

जौहरी— इसके खरेपन के विषय में, महाशय, मै अब अधिक कुछ न कह कर आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह ख़ास हमारे कारख़ाने का बना हुआ है।

*

ग्राहक— क्यों, आज का दूध इतना पतला क्यों है?

ग्वाला— कल सब भैंसें पानी में भीग गई थी।

*

पश्चिमी पंजाब से आये हुए एक शरणार्थी ने एक छोटे शहर में दुकान खोली, और उस पर लिख दिया— "स्थापित सन् १८९५।"

दूसरे दिन सुबह उसकी दुकान के सामने वाले प्रतिद्वंद्वी दुकानदार ने दुकान के बाहर लिखवा दिया— "अभी कल ही खुली है। कोई भी पुराना माल दुकान में नही है।"

*

ग्राहक – "यह जूता कितने का है?"

दुकानदार— "सिर्फ दस रुपये का।"

ग्राहक— "और फीते?"

दुकानदार— "मुफ्त।"

ग्राहक— "ठीक है, एक जोड़ा फीता ही दे दीजिये।"

*

एक महिला दुकानदार से— "यह तो आपने ५५) का बिल दिया। आपने तो इसकी क़ीमत ५०) बताई थी?"

दुकानदार— "जी हाँ, श्रीमती जी, ५५) का बिल है। ५०) तो नक़द दाम देने वालों के लिये हैं।"

*

एक दुकानदार का लड़का अपने पिता से दुकानदारी का काम सीख रहा था। एक दिन वह अपने पिता के पास आया और पूछने लगा— वह ग्राहक पूछ रहा है कि यह ऊनी बे सुकड़ने वाली बनियान सुकड़ेगी तो नहीं।

पिता— क्या यह उसके ठीक आती है?

लड़का— नहीं, यह उसके बहुत बड़ी है।

पिता— बस तो बेटा, कह दो यह अवश्य सुकड़ेगी ।

*

हलवाई (अपने नौकर से)— "अरे वह रात का बचा दूध कौन ले गया ?"

"आपके पड़ौसी लाला खुशीराम जी ।"

"और वह मावा जो खट्टा पड़ गया था ?"

"वह भी लाला खुशीरामजी को दे दिया ।"
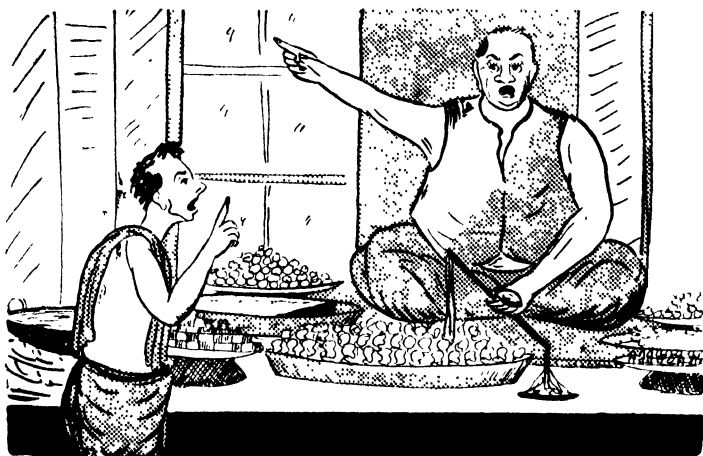
"वह दही जिसमें छिपकली कूद पड़ी थी ?"

"वह भी उन्हीं को। ...... यह क्या ? आपकी तबीयत कुछ ख़राब है क्या, लाला जी ?"

"नहीं, तबीयत ख़राब तो नहीं है पर मुझे लाला खुशीराम जी के यहाँ दावत खाने जाना है ।"

*

एक दिन एक महाशय फल वाले की दुकान पर पहुँचे और बोले— "मुझे दवाई के लिये एक सेर कच्चे अमरूदों की ज़रूरत है। इनमें से जो बिल्कुल कच्चे हों वह दे दो ।"

फल वाला बहुत प्रसन्न हुआ और टोकरे में से बिल्कुल कच्चे ख़राब अमरूद तोल कर ग्राहक के सामने रख दिये ।

इसके बाद ग्राहक बोला, "आपका बहुत बहुत धन्यवाद । अब कृपा करके इस टोकरे में से मुझे एक सेर अच्छे अमरूद तोल दीजिये ।"

*

माँ ने जाकर हलवाई से शिकायत की—— "मैंने अपने बेटे को तुम्हारे यहाँ से १।। सेर मिठाई लेने भेजा था, पर वह तोल में तो केवल सेर भर है।"

हलवाई बोला—— "माँ जी, मैंने तो मिठाई ठीक से तोल कर भेजी है। आप ज़रा अपने बेटे को तो तोल लें।"

*

एक शर्मीला नौजवान ग्राहक नई दिल्ली की एक बड़ी दुकान में घुस गया और एक अलमारी के सामने जाकर खड़ा हो गया। अलमारी के पास दुकान के तीन सेवक खड़े आपस में बातें कर रहे थे। एक ने भी ग्राहक से नहीं पूछा कि उसे किस वस्तु की आवश्यकता है। नौजवान भी बिचारा शर्म के मारे किसी से न बोला। जब इस तरह खड़े खड़े उसे दो चार मिनट बीत गये तो दुकान का मालिक जो दूर बैठा हुआ यह सब देख रहा था, क्रोधित होकर वहाँ आया और सेवकों से बोला, "मैंने तीन तीन आदमी रखे हुए हैं लेकिन सब बातों में लगे हुए हैं और एक भी कमबख्त ग्राहक को सौदा नहीं दिखा सकता।"

*

ग्राहक— तुम तो कहते थे कि यह कमीज़ बिल्कुल ऊनी है। देखो इसके अन्दर एक टिकट लगा हुआ है। इस पर छपा है, 'सूती माल'।

दुकानदार—श्रीमान जी, आप समझे नहीं। यह टिकट तो कीड़ों को धोखा देने के लिये लगा दिया गया है।

*

एक दुकानदार ने जिसे हर विशेषावसर पर ग्राहकों को "कम दामों में भेंट" कह कर बेचने की आदत थी, अपनी प्रेमिका से विवाह का प्रस्ताव करते हुए, अन्त में कहा— "और याद रखो प्रिये, यह इस शानदार भेंट का अन्तिम दिन है।"

*

दूधवाला— कल से दूध का भाव एक आने सेर बढ़ गया है।

ख़रीदार— क्यों ?

दूधवाला—क्योंकि म्युनिस्पैलिटी ने कल से पानी का टैक्स बढ़ा दिया है।

*

एक ग्राहक (अपने ग्वाले से)— आज इतनी देरी से दूध क्यों लाया ?

ग्वाला— बाबू जी, आज नल देरी से आया और घर में पानी नहीं था।

*

'आपने अपनी दुकान में यह ऐंचाताना नौकर क्यों रखा है ?'

'क्या आप उसकी आँख देखकर बता सकते हैं कि वह किधर देख रहा है ?'

'नहीं।'

'बस, इसीलिये। अब दुकान में चोरी नहीं होती।'

*

दुकान का क्लर्क महंगाई से बहुत परेशान था। उसने मालिक से अपनी तनख़ा बढ़ाने को कहा।

मालिक-- क्या कहा ! जब मैं तुम्हारी उम्र का था तब इससे कम तनख़ा में अपना काम बख़ूबी चला लेता था।

क्लर्क— उन दिनों हिसाब रखने की प्रथा नहीं थी।

*

'बेचारे रामनाथ को सुनाई देना बन्द हो गया है। अब उसे काम से निकाल दिया जायगा।'

'नहीं जी, उसे तो शिकायत विभाग में भेज दिया गया है।"

*

व्यक्ति दुकान में घुसा, एक सिगार ख़रीदा और चला गया। पाँच मिनट बाद वह फिर लौटकर आया और चिल्ला कर बोला— 'यह सिगार ! बिल्कुल वाहियात है !'

दुकानदार बोला— 'आप तो एक लेकर इतना शोर मचा रहे हैं, मेरी दुकान में तो इस वाहियात चीज़ के बीसियों बक्स हैं।'

*

उसने अपनी नई दुकान में किसी व्यक्ति को प्रवेश करते देखा। वह पहला ग्राहक था। उस पर अधिक से अधिक प्रभाव डालना चाहिये।

तेज़ी से उसने टेलीफोन का चोंगा उठाया और उस पर लाखों का व्यारा न्यारा करने की बातें करने लगा। अन्त में मिलने का समय तय करने पर उसने चोंगा नीचे रख दिया और आगन्तुक से पूछा— कहिये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?

हँसी रोकता हुआ आगन्तुक बोला— मैं टेलीफोन कम्पनी से आपका टेलीफोन लाइन से जोड़ने आया हूँ।

*

स्त्री बिस्कुट वाले की दुकान में घुसी। उसके हाथ में मक्खन की बड़ी टिकिया थी जो वह अभी मोल ले गई थी। बोली— मुझे बड़ा खेद है कि मक्खन मेरे हाथ से गन्दे पानी की तश्तरी में गिर पड़ा। वैसे मैंने इसे साफ कर लिया है

फिर भी तुम मेरा एक काम कर दो। मैं जानती हूँ इसमें कोई गड़बड़ नहीं है, फिर भी तुम इसे वापिस ले लो और मुझे दूसरा दे दो। तुम्हारा यह मक्खन कोई और ले जायगा। जो चीज़ कोई जानता नहीं वह बुरी क्या लगेगी ?

बिस्कुट वाले ने 'अच्छा' कहकर टिकिया ले ली। वह दुकान के अन्दर गया और बक्स खोल झूठमूठ को हाथ डाल वही टिकिया लिये फिर बाहर आ गया। स्त्री जब खुश खुश जाने लगी तो वह बोला— बहन जी, आपने ठीक कहा था, जो चीज़ कोई जानता नहीं वह बुरी क्या लगेगी।

दफ्तर

अफसर— तुम्हें अपनी रिपोर्ट इस तरह लिखनी चाहिए थी कि बुद्धू से बुद्धू आदमी भी उसे समझ ले।

क्लर्क— इसका कौन सा भाग आपकी समझ में नहीं आया ?

*

बहुत देर ग़ायब रहने के बाद जब चपरासी दफ्तर पहुँचा, तो मालिक को बड़ा क्रोध आया।

"आखिर इतनी देर तुम थे कहाँ ?"

"डाकख़ाने गया था।"

"एक चिट्ठी डालने में तीन घण्टे लगते हैं ?"

"नहीं, साहब, तीन चिट्ठियाँ थीं।"

*

अफ़सर— "मेरा संदेश तुमने आदेश के अनुसार सही-सही क्यों नहीं दिया ?"

कर्मचारी— "जी, मैंने अपनी ओर से जितनी अच्छी तरह हो सकता था, आपका संदेश उतनी अच्छी तरह पहुँचाया।"

अफ़सर— "बहुत बढ़िया है तुम्हारी 'अच्छी तरह'! मुझे ज्ञात होता कि यह कार्य मैं किसी मूर्ख को सौंपने वाला हूँ तो मैं स्वयं ही न कर लेता।"

*

टाइपिस्ट— "मैं यहाँ पिछले तीन साल से तीन आदमियों का काम कर रहा हूँ। अब तो कृपा करके मेरे वेतन में वृद्धि कर दीजिये।"

मैनेजर— "मुझे दुःख है कि वेतन में कोई वृद्धि तो मैं फिलहाल नहीं कर सकता, पर जिन अतिरिक्त दो आदमियों का काम आप पिछले तीन साल से कर रहे हैं, उनके नाम बताइये, मैं आज ही उन्हें निकाल दूंगा।

*
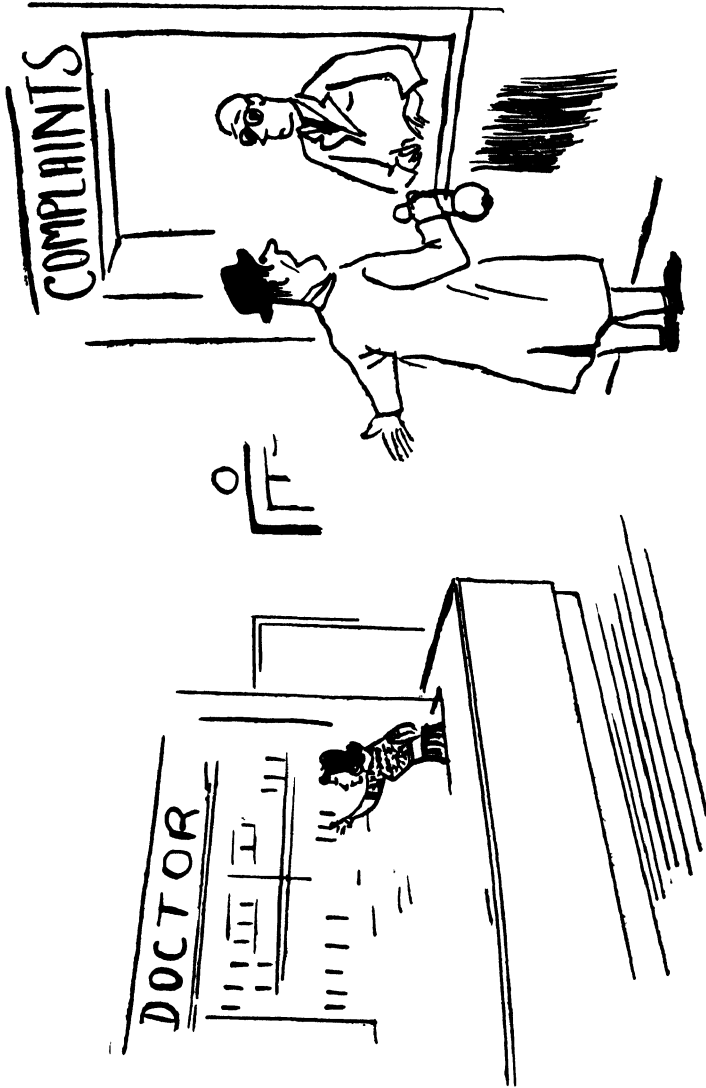
"आपकी पत्नी हर समय मुझे परेशान करती है!"

*

एक दिन दफ्तर में साहब ने स्टेनो को कुछ पत्रों के उत्तर लिखवाये। पत्र महत्त्व के थे, उत्तर भी। स्टेनो तो स्टेनो था। बारीकियाँ समझा नहीं; यहाँ वहाँ कुछ भूलें कर गया।

और वैसे ही टाइप करके दस्तख़तों के लिए ले गया। देखते ही तो साहब खौल गये। "यहाँ लाने से पहले पढ़ा भी नहीं ?"

स्टेनो ने सहज विनम्र उत्तर दिया— "मैंने समझा कॉन्फ़िडेन्शल हैं।"

*

एक बड़े सरकारी कार्यालय में दो क्लर्क कई साल से आमने-सामने बैठते थे, पर उनमें आपस में कभी बातचीत नहीं हुई थी। उनमें से एक क्लर्क तीन बजे ही अपना काम पूरा कर लेता था तथा दूसरा बेचारा ऑफिस समय के बाद भी पिसता रहता था।

एक दिन देर तक काम करने वाले क्लर्क ने जल्दी काम समाप्त करने वाले क्लर्क से पूछा, "आप इतनी जल्दी अपना काम कैसे समाप्त कर लेते हैं ?"

"इसका एक रहस्य है, पर वह अपने तक ही सीमित रखना। जब कोई ऐसी फाइल मेरे पास आ जाती है, जिससे पार पाने के लिए मैं समझता हूँ काफी देर लगेगी, तो उस पर मैं लिख देता हूँ, 'मिस्टर विमल', यह सोचकर कि इतने बड़े कार्यालय में कोई न कोई विमल तो होगा ही। और वाकई ऐसी कोई फाइल फिर मेरे पास लौटकर नहीं आई।"

एक दो मिनट चुप रह कर, दूसरे क्लर्क ने कहा, "श्रीमान् जी ! अब आप सम्भल जाइये। मैं ही विमल हूँ।"

*

एक सज्जन की जब पुरानी नौकरी छूट गई तो नई की तलाश में नये अफसर के पास गये।

नये अफसर ने कहा— "यह तो ठीक है कि तुम तजुर्बेकार हो, वह तो तुम्हारी उम्र ही बता रही है। लेकिन तुम्हारी समझदारी की भी परीक्षा करनी पड़ेगी। तुम्हें मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर देना होगा।"

सज्जन ने कहा— "हाँ, हाँ, ज़रूर देंगे। आप पूछिये।"

"तुम, जैसा मैं डिक्टेट कराऊँ, वैसा कर सकते हो ?"

सज्जन— "जी नहीं, इसीलिये अपनी पत्नी से मेरी रोज़ चखचख होती है।"

"लम्बी बात शॉर्टहैंड में लिखना जानते हो ?"

"जी हाँ, ज़रूर जानता हूँ, वक्त ज़रा लांग लगता है।"

"तुम्हें टाइप करने का अभ्यास है ?"

"जी हाँ, ज़रूर करता हूँ, लेकिन एक अंगुली से।"

अफसर ने भी उन्हें एक अंगुली के इशारे से बाहर भिजवा दिया।

*

नौकरी का उम्मीदवार (ऑफिस के सिपाही से)-- "मैनेजर का ऑफिस किधर है ?"

सिपाही— "सीधे चले जाओ, गैलरी के अन्त में एक दरवाज़े पर तुम्हें एक नोटिस मिलेगा— 'अन्दर जाने की मुमानियत है।' उस दरवाज़े के अन्दर सीधे चले जाना; आगे तुम्हें एक और दरवाजा मिलेगा, जिसके बाहर लिखा होगा— 'बाहर ही रहो।' उस दरवाज़े के अन्दर जाने पर अन्त में तुम्हें एक केबिन दिखाई देगा, जिसके बाहर लिखा होगा— 'प्राइवेट' (व्यक्तिगत)। उस केबिन में बेधड़क घुस जाना, वही मैनेजर का केबिन है।"

*

आगन्तुक-- "आप इतनी बड़ी फर्म के मैनेजर हैं, इसलिये आपकी मेज़ पर रखा मछलियों और पानी से भरा यह 'फ्लास्क' बड़ा अजीब सा लगता है।"

मैनेजर— "मेरे पास जो आता है, वह या तो तनखा बढ़ाने की प्रार्थना के लिये या कुछ बेचने के लिये। केवल ये मछलियां ऐसी हैं जो मुँह तो खोलती हैं, मगर कुछ माँगती नहीं।"

*

'तुमने अपने अफसर को खूब फटकार सुनाई थी। अब तो वह बदल गया होगा ?'

'जी हां, अब मेरा अफसर बिल्कुल बदल गया है।'

'और आप ?'

'मैं तब से नई कम्पनी में नौकरी कर रहा हूँ।'

*

युवक (दफ्तर में घुसते हुए)— पिताजी, मैं यहाँ से गुज़र रहा था। सोचा आपसे नमस्ते करता चलूं।

मैनेजर-- बेटा, तुम देर में पहुँचे। अभी तुम्हारी माँ नमस्ते करने आई थी और मेरी नंगाझोली ले गई है।

*

क्लर्क— कल मुझे अपनी पत्नी के साथ बाज़ार जाना है। दीवाली ·······

मैनेजर— नहीं, नहीं। दफ्तर में बहुत काम है।

क्लर्क— धन्यवाद ! मै पत्नी से कह दूंगा।

नाई

एक महाशय नाई से हजामत बनवा रहे थे। नाई झगड़ालू था। हजामत

बनाते बनाते एक बार उसका हाथ बहक गया और महाशय का गाल कट गया।

महाशय— "देखो जी, यह भंग पीने का नतीजा है।"

नाई— "हाँ, सरकार! यह खाल बहुत मुलायम कर देती है।"

*

एक मियाँ जी ने एक नाई को हजामत बनाने के लिए बुलाया। मियाँ जी के कुछ बाल सफ़ेद हो गये थे। जब वह मियाँ के सिर के बाल कतर चुका तो मियाँ ने उससे कहा— "देखो, ज़रा मेरी दाढ़ी के सफ़ेद बाल चुन दो।"

मियाँ की बात का कोई जवाब न देकर नाई ने उनकी दाढ़ी के सब बाल बना डाले, और उनको मियाँ जी के सामने रखकर बोला, "हुज़ूर, मेरे पास वक्त नहीं है। इसलिए मैंने आपके सामने ये बाल रख दिए हैं। अब आप जैसे चाहें सफ़ेद या काले बाल चुन लीजिए।"

*

एक महाशय नाई से बाल बनवा रहे थे। नाई बाल बनाते बनाते सोचने लगा — "ज़रूर पहले भी कभी मैंने इनके बाल बनाए हैं।"

आखिर जब उससे न रहा गया, तो पूछ ही बैठा— "हुज़ूर, आपने पहले भी कभी मुझसे बाल बनवाए हैं?"

महाशय— "हाँ।"

नाई— "पर मुझे तो याद नहीं आता।"

महाशय— "याद करो, जब मुझे यहाँ उस्तरा लग गया था और मैंने तुम्हें कसकर तमाचा लगाया था।"

*

एक दिन एक आदमी बाल बनवा रहा था। नाई की असावधानी से उस्तरा उसके गाल पर लग गया, और खून बहने लगा। उस आदमी ने बिगड़कर नाई से कहा— "क्यों बे, यह क्या किया?"

नाई— "हुज़ूर! आप चिन्ता न करें। आपको केवल बालों की बनवाई ही देनी पड़ेगी।"

*

एक आदमी हाँफता हुआ नाई की दुकान में घुसा और बोला— "जल्दी से मेरे बाल बना दो। मुझे अभी कहीं जाना है।"

"लीजिये, अभी लीजिये," नाई ने कहा, "आइये, इस कुर्सी पर बैठिये और अपनी टोपी तो उतारिये।"

"नहीं, मैं खड़ा ही रहूँगा और टोपी भी नहीं उतारूँगा।"

"क्यों ?"

"भई, मैंने कहा न कि मैं जल्दी में हूँ ।"

*

एक साहब (नाई से)— मुझे तूफान मेल में जाना है, इसलिये मेरी हजामत शीघ्र बनादो ।

नाई— लो बाबू जी, हजामत बन गई ।

साहब (शीशे में देखकर)— यह बाल क्यों छोड़ दिये हैं ?
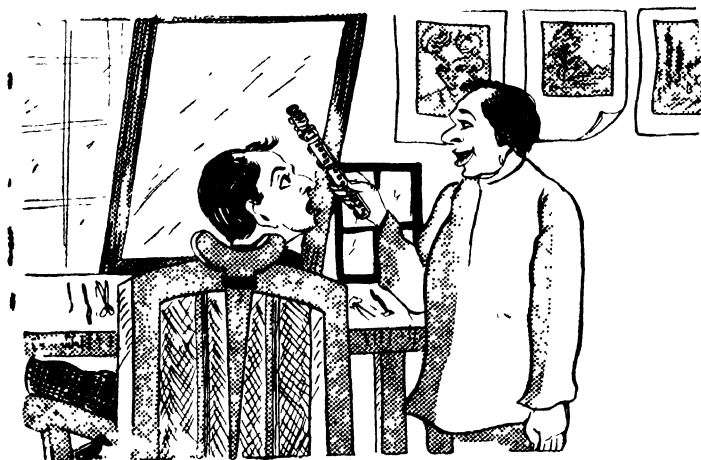
नाई— मेरा उस्तरा भी तूफान मेल की तरह जा रहा था, इसलिये छोटे छोटे स्टेशन छोड़ गया ।

*

"सुना आपने ? बेचारे कंचन को पागलखाने भेज दिया गया ।"

"कंचन। कंचन कौन है ?" कुर्सी पर बैठे ग्राहक ने पूछा ।

"कंचन को नहीं जानते आप ? वह मेरा भाई है, साहब। बेकार था बहुत दिनों से बेचारा। और चिन्ता भी बहुत करता था।"

"ऐसा ?"

"जी। पहले वह यहाँ मेरे साथ काम भी करता था, इसी दुकान में। वह यहाँ भी बहुत चिन्ता किया करता था ; और ठीक भी है, साहब। इस धन्धे में अब कोई लाभ नहीं रहा।"

"क्यों ?"

"मन्दी। और क्या ? अब यह देखिये कि ग्राहक जब तक शैम्पू भी न लें,

तब तक सिर्फ उसके बाल कटवाने या हजामत कराने से हमें कोई लाभ नहीं होता। एक बार मैंने देखा, कंचन के एक ग्राहक ने शैम्पू लेने से मना कर दिया। इस पर क्या सूझी उसे, वह उस्तरे से उसका गला काटने चला। मजबूर हो मुझे उसे एक कोठरी में बन्द करना पड़ा। पर बाद में मैं सोचने लगा, क्या हर्ज था, अगर वह अपने जी की निकाल ही लेता। अब सोचता हूँ उसके पागल बनने में इस घटना का भी भारी हाथ होगा। ख़ैर, जाने दीजिये। हाँ, आप शैम्पू लेंगे?"

"हां। ज़रूर!"

*

एक सेल्समैन थे, नया शहर। सैलून में गये। शेव कराई, पूछा—"कितना?"

उत्तर मिला—"आठ आने।"

दिये, मगर कसक गये। एकाएक चमक कर बोले, "बड़ी मक्खियाँ हैं तुम्हारे यहाँ, इसका तो धन्धे पर असर पड़ता होगा?"

हज्जाम ने सिर हिलाया—"ज़रूर साहब, पर ये जातीं ही नहीं।"

बड़े क़ायदे से सेल्समैन साहब ने कहा—"एक रुपया लगेगा, मैं दवा बता सकता हूँ।"

हज्जाम ने हाज़िर किया। रुपया जेब के हवाले करके दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए साहब ने सुझाया—"हर एक की शेव करके आठ आना वसूल करो। सब भाग जायंगी और फिर इधर मुंह न करेंगी।"

*

"नवाब साहब भी मेरे पिता के सामने झुका करते थे।"

"कौन थे वह?"

"शाही हज्जाम।"

*

नाई—"मैंने एक बार पहले और आपकी शेव बनाई थी शायद?"

ग्राहक—"नहीं, मेरे गाल पर का घाव एक मोटर दुर्घटना में हुआ था।"

*

नाई की दुकान की भीड़ घट गई थी। दुकान में काम करने वाले एक छोकरे ने दूसरे से कहा—"नत्थू, उस बुड्ढे के गाल पर तो तुमने काफी बड़ा घाव कर डाला।"

"हाँ, असल में उसकी नौकरानी से मैं छिपकर मिला करता हूँ। यह घाव

इसलिये किया था कि नौकरानी को मालूम हो जाये कि आज मै कुछ देर से आऊँगा।"

*

गंजा आदमी (नाई से)— मेरे सिर पर तो बहुत कम बाल है, आपको हमसे तो बहुत कम पैसे लेने चाहियें।

नाई— साहब! मैं आपसे बाल काटने के पैसे थोड़े ही लेता हूँ, बाल ढूंढ़ने के पैसे लेता हूँ।

*

एक आदमी एक नाई की दूकान पर गया और उसने पूछा— तुमने कभी गधे की हजामत की है?

नाई ने कहा— नहीं, मैंने कभी नहीं की। तुम बैठो, मै कोशिश करता हूँ।

*

एक नाई (हजामत बनाते हुए)— महाशय जी, आप कितने भाई हैं?

महाशय जी— अभी तो तीन समझो। अगर तुम्हारे उस्तरे से बच जाऊँ तो चार हो जायंगे।

*

नाई— क्यों साहब! खाने के साथ आपने क्या टिमाटर का रस पिया है?

साहब— नहीं तो।

नाई— ओह! तो उस्तरा लग गया होगा।

धोबी

एक आदमी धोबी से बोला— "तुम बड़ी बुरी तरह कपड़े धोते हो। यहाँ तक कि कपड़े फाड़कर एक एक के दो दो कर लाते हो।"

धोबी ने जवाब दिया— "लेकिन हुजूर, एक एक कपड़े के दो दो कर लाने पर भी धुलाई तो एक की ही लेता हूँ।"

*

एक धोबी कपड़ों पर पहचान के लिये निशान नहीं लगाता था, फिर भी वह कपड़े धोकर सबके यहाँ ठीक ठीक पहुँचा देता था। कभी कपड़े बदले नहीं जाते थे। सबको उसकी याददाश्त पर आश्चर्य होता था। उसके ग्राहकों में से एक जज भी था। धोबी की याददाश्त की परीक्षा लेने के लिये एक बार जज बोला— "तुम्हें पक्का भरोसा है कि यह पतलून, जो तुम वापिस लाए हो, मेरी

ही है?"

"नहीं, हुज़ूर," धोबी ने शान्त चित्त से उत्तर दिया।

धोबी के उत्तर से चकरा कर जज ने फिर पूछा— "तो तुम यह मुझे क्यों दे रहे हो?"

"क्योंकि यह आपने ही धुलने के लिये दी थी।"

*

एक व्यक्ति को अपना चित्र खिचाने के लिए साफ़ पतलून की ज़रूरत पड़ी। उसने एक लांडरी में जाकर पूछा— पतलून की धुलाई आप क्या लेते हैं?

मालिक— रेशमी हो तो एक रुपया, नहीं तो ६ आने।
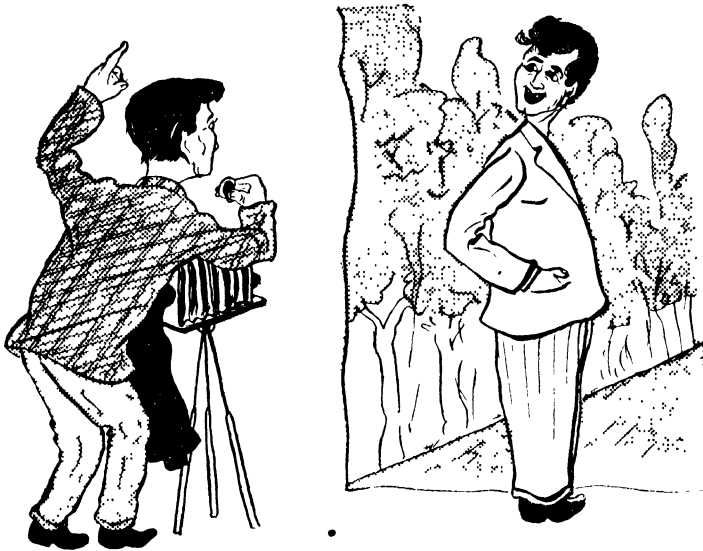
व्यक्ति— अच्छा, तो लीजिए तीन आने, मेरी पतलून का दाहिना पायचा साफ़ कर दीजिये। मैं केवल दाहिनी ओर से ही चित्र खिचवा लूंगा।

दर्ज़ी

दर्ज़ी— "सचमुच, आपकी यह कमीज़ बहुत तंग सिल गई।"

ग्राहक— "अरे भई, यह मेरी खाल से भी ज्यादा तंग है।"

"लेकिन कोई कपड़ा आपकी खाल से भी ज्यादा तंग कैसे हो सकता है?"

"भाई साहब, मैं बिना इस कपड़े के आराम से बैठ-उठ सकता हूँ, पर

इस कमीज़ में तो हिल भी नहीं सकता ।"

*

"मैंने दर्ज़ी से इस कमीज़ में कोई भी जेब न लगाने को कहा था, और उसने तीन जेबें लगा दी हैं। कमाल है इन दर्ज़ियों को।"

"कमाल नहीं जी, उसने कुछ सोचकर ही यह तीन जेबें लगाई हैं।"

"क्या ?"

"उसने सोचा होगा, इतनी सस्ती कमीज़ सिलवाने वाला सब कुछ जेबों में ही रखता होगा।"

*

"क्या मेरा लड़का रमेश यहीं अपने कपड़े सिलवाता है ?"

"जी हाँ।"

"और क्या यह सच है कि उसने आपसे सूट सिलवाये, और उनके पैसे आपको पिछले ६ महीने से नहीं दिये ?"

"जी हाँ, यह भी सच है। आप क्या उनकी सिलाई देने आये हैं ?"

"नहीं, सिलाई तो वही देगा। पर मैं भी इन्हीं शर्तों पर दो सूट सिलवाना चाहता हूँ।"

*

"नये सिले कपड़ों का चित्त पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। नये कपड़ों में आप अपने को अपने से बेहतर व्यक्ति समझने लगते हैं।" ऐसा एक डाक्टर का कथन है।

उस डाक्टर को शायद आज की सिलाइयों का पता नहीं है।

*

एक महिला ने एक दर्ज़ी से कुछ मेज़पोश सिलवाये। सिले मेज़पोशों को देखकर महिला ने कहा–– "ऊंहूं, पसन्द नहीं आये। आपने नये फैशन के नहीं सिये।"

"अजी, एकदम नये से नये फैशन के सिये हैं। देखिये न, नये फैशन के अनुसार इन मेज़पोशों का सेन्टर एकदम बीच में है, और चारों कोने चारों ओर फैले हैं।"

महिला ने फिर कुछ नहीं कहा।

*

एक दर्ज़ी ने अपनी दुकान के साइन बोर्ड पर 'भारत का सबसे अच्छा दर्ज़ी' लिखवा दिया। उस दर्ज़ी के पड़ोस में एक और दर्ज़ी था। पड़ोसी दर्ज़ी ने एक

क़दम और आगे बढ़ने के लिये अपनी दुकान के आगे लिखवाया— 'दुनिया का सबसे अच्छा दर्ज़ी।' अब मौहल्ले के तीसरे दर्ज़ी की समझ में नहीं आया कि अपनी दुकान के आगे क्या लिखवाये। कई दिन के सोच विचार के बाद उसने लिखवाया— 'मौहल्ले का सबसे अच्छा दर्ज़ी।'

*

"क्या तुम्हारे पिताजी घर में हैं, बच्चे?'

"अगर तुम वही दर्ज़ी हो, जिसके दाम देने बाक़ी हैं, तो पिताजी घर में नहीं हैं।"

*

एक दर्ज़ी एक मोटे आदमी से— "आप फीते का एक छोर पकड़ लीजिये। मै चटपट आपके चारों ओर चक्कर लगा आऊँ।"

*

ग्राहक (दर्ज़ी से)— अब की बार मेरी कमीज़ मुफ्त सी दो। बोलो

कितना कपड़ा लाऊँ।

दर्ज़ी— कोई बात नहीं, पाँच गज़ ले आओ।

ग्राहक— वाह, पिछली बार तो तुमने तीन गज़ में बनाई थी।

दर्ज़ी— आपने उस वक्त मुफ्त बनाने को कब कहा था।

*

एक दिन रामचन्द्र नई पोशाक पहन कर अपने एक मित्र के घर गये और पूछा— "दोस्त, इस नये सूट के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

मित्र ने कहा— "आपका दर्ज़ी कमाल का है। मेरे ख़्याल में अगर वह लकड़ी के ठूंठ को भी सूट पहना दे तो वह आदमी जँचने लगे।"

*

एक बाबू साहब ने अपने दर्ज़ी से पूछा— "तुम्हें इतने दिन कपड़े सी कर दिये हो गये, फिर भी न तुमने बिल पेश किया और न ही पैसे के लिये तक़ाज़ा किया। क्या बात है?"

दर्ज़ी ने उत्तर दिया— "मैं किसी शरीफ आदमी से पैसे नहीं माँगता।"

बाबू जी (आश्चर्य से)— 'तो फिर तुम्हारा काम कैसे चलता होगा?'

दर्ज़ी— "जब मुझे अपने आप पैसा नहीं मिलता तो मैं समझ लेता हूँ कि वह शरीफ नहीं है। फिर माँग लेता हूँ।"

नौकर

'तूने पिछली नौकरी क्यों छोड़ दी?' मालकिन ने अपने नौकर से पूछा।

'पहले बाबूजी और बीबीजी की तू तू मैं मैं सुन कर मैं परेशान हो गया था।'

'क्यों? क्या वे बहुत लड़ाका थे?"

'जी हाँ। जब तक बाबूजी घर में रहते वह मुझ पर बिगड़ते रहते, और उनके दफ्तर जाते ही बीबीजी धौंस जमाने लगतीं।'

*

"क्यों जी", रामजीदास से एक व्यक्ति ने पूछा, "आप अपने दफ्तर में केवल विवाहित पुरुष ही क्यों रखते हैं?"

"इसलिए कि जब मैं उन पर झाड़ लगाता हूँ, तो उन्हें इतना बुरा नहीं लगता।"

*

मालिक— आज तुम देरी से क्यों आए हो?

नौकर— अलार्म घड़ी की ग़लती हो गई। घर में मेरे सिवाय सब ठीक समय पर जग गए।

मालिक— क्यों ?

नौकर— हम घर में आठ जने हैं। अलार्म सात के लिए लगाया गया था।

*

दो कामचोर मज़दूर नज़र बचाकर भागने की कोशिश में थे। उन्हें धमकाता हुआ मालिक बोला, "काम क्यों नहीं करते ?"

एक मज़दूर ने उत्तर दिया, "मालिक काम ही तो कर रहे हैं। हम यह तख़्ता बढ़ई से कटवाने के लिये ले जा रहे हैं।"

"तख़्ता !" मालिक ने चकरा कर पूछा, "कौन सा तख़्ता ? मुझे तो तुम्हारे पास कोई भी तख़्ता नहीं दिखाई दे रहा है।"
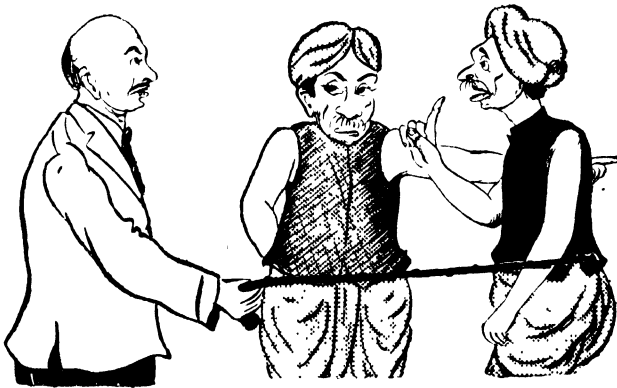
इस पर वह मज़दूर बड़ा भोला मुख बनाकर बोल उठा, "अरे, रामू, तख़्ता तो हम गोदाम में ही भूल आये।"

*

"तुम्हें काम का अनुभव भी नहीं है। फिर तुम किस बात के लिए इतनी अधिक तनख़ा माँगते हो ?"

"पहला अनुभव न होने के कारण मुझे अधिक मेहनत जो करनी पड़ेगी।"

*

नशे का सामान बेचने वाली दुकान के मालिक ने एक नशेबाज़ को नौकर रख लिया। नशे में वह नया नौकर एक ग़लती कर बैठा जिससे दूकान को बड़ी हानि हुई।

"जानते हो, तुम्हें इसकी सज़ा मिलेगी।" मालिक ने क्रोध से कहा। "तुम्हारी तनख़ा में से प्रति मास तिहाई हिस्सा काट लिया जाएगा, जब तक हमारा घाटा पूरा नहीं हो जाता।"

"लेकिन इसमें तो बहुत साल लगेंगे।"

"नहीं, मैं तुम्हारी तनख़ा उसी हिसाब से बढ़ा दूंगा जिससे कि मेरा घाटा शीघ्र ही पूरा हो जाए।"

*

फोरमैन— तुमने इस कारखाने में कितने दिन काम किया है ?

कारीगर— पैंसठ साल।

फोरमैन— तुम्हारी उम्र क्या है ?

कारीगर— चालीस साल।

फोरमैन— जब तुम चालीस साल के हो, तो पैंसठ साल काम तुम किस प्रकार कर सकते हो ?

कारीगर— ओवर टाइम बहुत होता है यहाँ।

*

गृहस्वामिनी (दासी को नौकर रखते समय)— अच्छा, तुम मेहमानों की ख़ातिर भी कर सकती हो ?

दासी— जी हाँ, दोनों तरह से।

गृहस्वामिनी— दोनों तरह कैसे ?

दासी— इस तरह भी कि वे एक बार आकर फिर कभी न आएँ और इस तरह भी कि फिर कभी वे यहाँ से जाने का नाम न लें।

*

मालिक— मैं तुम्हारे काम से बहुत खुश हूँ। अब तुम कम्पनी के मैनेजर बना दिये जाओगे और तुम्हारी तनख़ा भी दुगनी हो जायगी।

कर्मचारी— नहीं, मुझे उससे कोई लाभ नहीं होगा। मुझे आप ख़ज़ांची ही बना रहने दीजिये।

*

मालकिन नई नौकरानी रख रही थी। पिछली नौकरी के बारे में पूछताछ करने के बाद उसने नौकरानी से पिछली मालकिन का दिया हुआ सर्टीफिकेट दिखाने के लिए कहा।

नौकरानी ने अपने बटुए में खोजते हुए कहा, "राजकुमारी इन्द्रकौर का सर्टीफिकेट तो खो गया। पर यह देखिए, उनका नाम खुदे हुए ये चम्मच हैं। अब आपको तसल्ली हो जायगी कि मैंने वहाँ काम किया था।"

*

पलंग पर लेटते हुए मालिक ने नौकर को आवाज़ दे कर कहा— "कल हमें जल्दी ही दफ्तर जाना है। इसलिये सात बजे उठा देना।"

नौकर— "हुज़ूर, मुझे घड़ी देखनी नहीं आती। आप मुझे जब सात बजें तब बता दीजिए, मैं आपको जगा दूँगा।"

*

मालिक (नौकरी के लिए आए हुए उम्मीदवार से)— "तुमने यह नहीं बताया कि तुम अपने पिछले काम पर से क्यों निकाले गये।"

उम्मीदवार— "हां। आपने भी मुझे यह नहीं बताया कि आपका पहला नौकर आपको छोड़कर क्यों चला गया।"

*

"देखो, तुम ठीक काम करो। वरना मुझे कोई और नौकर रखना पड़ेगा।"

"हाँ, मालिक, यह ठीक रहेगा। मै और वह मिलकर सारा काम आसानी से कर सकेंगे।"

*

मालिक अपने मकान के चिकने व हाल ही में धुले हुए फर्श पर फिसल पड़ा। यह देखकर नौकर को हँसी आ गई। अपनी झेंप मिटाते हुए मालिक ने नौकर को डाट कर कहा— "हँसता क्यों है?"

नौकर ने सिटपिटा कर कहा, "मै तो इस बात की खुशी मना रहा था कि आपके चोट नहीं लगी।"

*

मालिक— "इस काम के लिए मुझे ज़िम्मेदार आदमी की आवश्यकता है।"

नौकर— "तब तो मुझसे बढ़कर अच्छा नौकर आपको नहीं मिलेगा। जहाँ भी मैंने काम किया वहाँ कुछ न कुछ गड़बड़ी हो गई, और लोगों ने मुझे ही ज़िम्मेदार ठहराया।"

*

नौकर— "मैं पाँच वर्ष से आपके यहां नौकरी कर रहा हूँ; और अभी तक मुझे वही तनखा मिल रही है।"

मालिक— "हाँ, मुझे मालूम है। मगर क्या करूँ, मैं अपने दिल को सख्त बना नहीं पाता; क्योंकि हर बार जब मैं तुम्हें निकालने का इरादा करता हूँ, तब मुझे तुम्हारे बाल बच्चों का ख़्याल आ जाता है।"

*

एक बाबू साहब ने एक नया नौकर रखा। उस नौकर को अंगरेज़ी तरीके

मालूम नहीं थे। एक दिन बाबू साहब ने नौकर से पीने के लिये एक गिलास पानी माँगा। नौकर बेचारा एक गिलास पानी ले आया।

बाबू साहब— अजीब बेवकूफ आदमी हो। मालूम होता है अभी तक तुमने किसी ऐरे गैरे के यहाँ ही नौकरी की है।

नौकर— हुज़ूर, क्या कसूर हुआ ?

बाबू साहब— पानी इस तरह से नहीं लाया जाता। इसे तश्तरी में रखकर लाओ।

नौकर— बहुत अच्छा सरकार। आप खफा न हों, मैं अभी लाता हूँ।

नौकर लौट गया और एक तश्तरी में पानी भर लाया।

नौकर— लीजिये हुज़ूर! पानी ले आया, आप इसे चम्मच से पियेंगे या यों ही चाट लेंगे ?

*
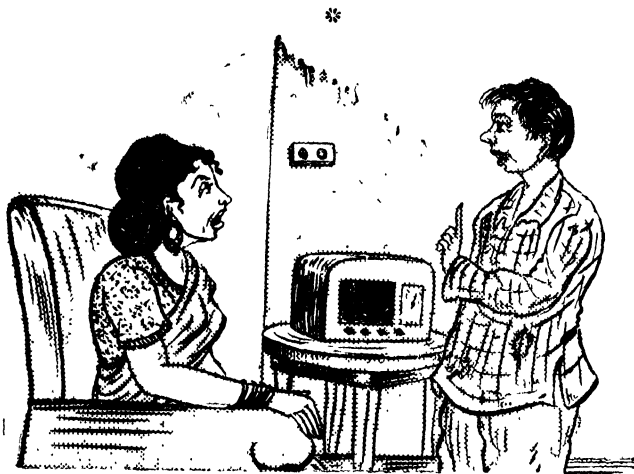
नौकर— यदि आप बाज़ार से सामान मंगायेंगी तो बीस रुपये रोटी लूंगा, नहीं तो पच्चीस रुपये रोटी।

*

एक धनवान पासी ने बहुत से सुअर और मुर्गियाँ पाल रखी थीं। उसने उनकी देखभाल के लिए एक नौकर रखा। जब नौकर पहले पहल काम पर आया तो पासी ने उससे पूछा— "क्यों, हमारे यहाँ तो तुम्हारी अच्छी तरह निभ जायेगी न ?"

नौकर— "मालिक, आप इसकी कुछ चिन्ता न करें। पहले भी मुझे बहुत से सुअरों से काम पड़ चुका है।"

*

एक डाक्टर ने रोगी के नौकर को ताक़ीद की कि तुम्हारा मालिक बीमार है। बीमारी के कारण वह बहुत कमज़ोर हो गया है और बहुत घबराता है। इसलिए तुम ऐसा किया करो कि यह जो कुछ कहे, तुम हाँ कह दिया करो। ऐसा करने से उसे कुछ प्रसन्नता रहेगी।

डाक्टर के कहे अनुसार उस दिन से नौकर मालिक के कुछ भी कहने पर 'हाँ सरकार' कह दिया करता था।

एक दिन मालिक उकता कर बोला— "बीमारी क्या आई, सभी मुझसे दूर दूर रहते हैं। अब तो मैं मर जाता तो बहुत अच्छा होता।"

नियम के अनुसार नौकर बोला— "हाँ सरकार।"

*

मालिक ने क्रोध में भर कर नौकर से कहा— "क्या तुम यह समझते हो कि मैं बेवक़ूफ हूँ ?"

नौकर ने जवाब दिया— "यह मैं कैसे कह सकता हूँ हुज़ूर ? मै तो कल ही आया हूँ।"

*

एक बार दो अमीर आदमी अपने एक नौकर को लेकर शिकार खेलने के लिये जंगल को गए। जाड़े के दिन थे। दोपहर के समय उन दोनों ने अपने गर्म कपड़े उतार कर नौकर के कंधों पर लाद दिये। कपड़े लादने के बाद एक ने नौकर से मजाक़ में कहा— "अरे, तेरे ऊपर तो एक गधे का बोझ लदा हुआ है।"

नौकर भी बड़ा मज़ाक़िया था। उसने तुरन्त जवाब दिया— "अजी साहब, एक गधे का नहीं, दो गधों का बोझ है।"

*

एक बार एक ज़मींदार ने अपने नौकर को किसी काम से गंगा पार भेजा। रास्ते के ख़र्च के लिए उन्होंने उसे चार पैसे दिए और कहा— "देखो, दो पैसे गंगा पार जाने के लिए नाव वाले को देना और दो पैसे तुम खा लेना।"

नौकर चल दिया। जब कई मील चला गया और गंगा किनारे पहुँचा तो कुछ सोचकर एकदम वहाँ से लौट पड़ा। लौटकर घर आया और ज़मींदार के पास गया।

जमींदार उसे देखते ही बोला— "तू लौट क्यों आया ?"

नौकर— "मालिक, आपने चार पैसे दिए थे। पर यह तो बताया ही नहीं कि कौन से दो पैसे मेरे खाने के हैं और कौन से दो पैसे नाव वाले को देने के लिये दिये हैं। इसीलिए मुझे रास्ते से लौटना पड़ा।"

*

किसी अङ्गरेज़ के बंगले के पीछे बहुत बड़ी जगह पड़ी थी। उसमें हरी हरी घास खड़ी थी। एक दिन उसमें किसी की गाय आकर घास चरने लगी। यह देखकर साहब ने अपने नौकर से कहा— "देखो, यह घास हमारी घोड़ी के वास्ते है। हमारी घोड़ी के सिवाय इसमें किसी को मत जाने देना।"

नौकर ने कहा— "बहुत अच्छा, हुज़ूर।"

एक दिन उस साहब से मिलने के लिए एक मेमसाहिबा आ रही थीं और जब उस बंगले के क़रीब आईं तो वे घास पर से होकर जाने लगीं। यह देखते ही नौकर ने जाकर मेमसाहिबा को घास पर जाने से रोका। मेमसाहिबा इस पर बहुत बिगड़ीं और कहने लगीं, "तुम हमको जानता नहीं, मूर्ख, हम कौन हैं?"

नौकर ने सिर हिलाते हुए कहा— "तुम कोई भी हो, हम यह जानते हैं कि तुम हमारे साहब की घोड़ी नहीं हो।"

*

एक लाला जी को किसी ऐसे नौकर की जरूरत थी जो कंजूस हो। एक दिन एक नौकर उनके पास नौकरी को आया।

लालाजी ने कहा— "हमें नौकर की तो सख़्त ज़रूरत है, लेकिन हम ऐसा नौकर चाहते हैं जो कंजूस हो।"

नौकर ने कहा— "इसी कंजूसी के कारण मैं एक जगह से निकाल दिया गया हूँ।"

लालाजी ने पूछा— "वह कैसे?"

नौकर ने जवाब दिया— "हुज़ूर, मैं अपने कपड़े फटने और गन्दे होने के डर से कभी नहीं पहनता था, मालिक के ही कपड़े उठा कर पहन लिया करता था।"

*

एक लाला जी बड़े लोभी आदमी थे। उनके एक नौकर था। उसके कपड़े बहुत फट गए थे। नौकर ने जब देखा कि लाला जी अपनी तरफ से कुछ कहते ही नहीं तो उसने एक दिन खुद ही लाला जी से कहा— "सरकार, कपड़े बहुत फटे पुराने हो गए हैं, हमें अब नई वर्दी मिलनी चाहिए।"

लाला ने मुंह बनाते हुए कहा— "वर्दी जितनी ज़्यादा फटी पुरानी हो, उतनी ही नौकर की कद्र होती है। जो लोग देखेंगे वे कहेंगे, यह लालाजी का पुराना नौकर है।"

नौकर चुप हो गया। एक दिन लालाजी के दरवाज़े पर एक फ़क़ीर भीख

माँगने आया। वह बड़ी खराब हालत में था। उसके फटे पुराने कपड़ों को देखकर एक दम घिन लगती थी। लालाजी उस समय अपने चार दोस्तों के साथ कमरे में बैठे हँसी मज़ाक़ कर रहे थे। लालाजी का नौकर लालाजी के पास गया और कहने लगा—"सरकार आपका एक बहुत पुराना नौकर आया है।"

लालाजी ने कहा—"कौन है, उसको यहाँ लिवा लाओ।"

नौकर ने उस फकीर को ले जा कर लालाजी के सामने खड़ा कर दिया। उसे देखकर लालाजी ने कहा—"यह कौन है? क्या तू मुझसे मज़ाक़ करता है?"

नौकर ने कहा—"इसके कपड़े बहुत फटे पुराने थे। मैंने समझा कि शायद यह आपका सबसे पुराना नौकर हो।"

*

लालाजी ने अपने नौकर से बिगड़ते हुए कहा—"तू दिन पर दिन सुस्त होता जा रहा है। जिस काम के लिए भी भेजा जाता है उसी में दिन गुज़ार देता है। आदमी वह है जो तेज़ी के साथ अपना काम करे। एक काम को भेजा जाय तो दो काम करके लौटे।"

लालाजी सख्त बीमार हो गये। एक दिन हकीम को बुलाने के लिए लालाजी ने अपने नौकर को भेजा। वह हकीम को बुलाने के साथ साथ लालाजी की बिरादरी के कितने ही आदमियों को भी बुला लाया।

*

एक पंडित जी ने एक गंवार नौकर रखा। उसे उसका खाना बनाने के लिए आटा दाल अलग दे दिया करते थे। पंडितजी रोज़ बढ़िया बढ़िया चीज़ें बनाकर खाया करते थे।

एक दिन पंडितजी ने खूब बढ़िया चीज़ें बनाईं और थाली में परोस कर खाने बैठे। उधर नौकर ने भी अपनी दाल बाटी तैयार की थी। नौकर ने एक बाटी लेकर पंडितजी की परोसी हुई थाली में जाकर डाल दी और बोला, "पंडितजी आज तो हमारी बाटी खाकर देखिये, कैसी लगती है।"

पंडितजी एक दम चिल्लाकर बोले, "अरे पाजी, यह तूने क्या किया? मेरी बनी बनाई रसोई तूने झूठी कर दी। अब मेरे काम की भी न रही। ले, इसे ले जा, और खाले।"

पंडितजी की बात सुनकर नौकर बड़ा प्रसन्न हुआ और मज़े से ले जाकर खाने लगा।

दूसरे दिन फिर पंडित जी रसोई बनाकर खाने बैठे। नौकर पंडितजी को थाली पर बैठते देखकर झट चौके में घुस गया और पंडितजी के पैर पकड़

कर बोला—"महाराज, मेरा कल का क़सूर माफ़ कर दीजिए। मेरे कारण आप कल भूखे रहे।"

पंडितजी के क्रोध का कुछ ठिकाना न रहा। वे बोले— "अबे, नमकहराम, तूने तो आज भी वही किया, आज फिर मैं भूखा मरा।"

*

वह होटल की तीसरी मंज़िल पर रहती थी। सुबह उठकर उसने लिफ़्ट के लिए घंटी बजाई। लिफ़्ट आ गया। जब वह उसमें बैठी तो लिफ़्ट नीचे उतरने की बजाय चौथी मंज़िल पर जाने लगा। उसने लिफ़्ट के नौकर से कहा— "यह तुम क्या कर रहे हो ? मैं नीचे जाना चाहती हूँ।"

नौकर— "मैं कल ही से इस नौकरी पर लगा हूँ। मैंने अभी लिफ़्ट को ऊपर चढ़ाना ही सीखा है, नीचे उतारना नहीं जानता।"

*

मालिक— (नौकर से) मोहन, बंसी तो एक साथ दो बक्स ले जा रहा है, तुम एक ही ले जाओगे ?

मोहन— हजूर, बंसी तो कामचोर है। वह दुबारा नहीं आना चाहता।

*

मालिक— "तो तुम्हें फिर एक दिन की छुट्टी चाहिए ? इस बार तुम किस बात की छुट्टी माँगते हो ? इस साल में अब तक चार बार तो तुम अपने दादा के मरने की छुट्टी ले चुके हो।"

नौकर—"आज मेरी दादी फिर विवाह कर रही है।"

*

'मेरे मालिक ने यदि अपने शब्द वापिस नहीं लिये तो मैं उनकी दुकान पर काम नहीं करूँगा।'

'क्यों, ऐसा क्या कह दिया उन्होंने ?'

'यही कि कल से दूसरी जगह तलाश करो।'

*

मोहन अपने मित्र के साथ बैठा चाय पी रहा था। उसने अपने नौकर को आवाज़ दी— जगपति, कुछ चीनी ले आओ।

जगपति बोला— चीनी तो चीन में रहते हैं, मैं कैसे लाऊँ ?

*

मालकिन— अरी सुन्दरिया, तूने इस कोठरी को साफ नहीं किया। धूल इतनी जमी है जैसे हफ्ते भर से इसमें झाड़ू न दी हो।

सुन्दरिया— मालकिन, इसमें मेरा क्या दोष! मुझे तो आपके यहाँ आये केवल चार दिन हुए हैं।

*

नौकर— "हुज़ूर, मेरी तनखा में तरक्क़ी होनी चाहिये, क्योंकि हाल ही में मेरा विवाह हुआ है।"
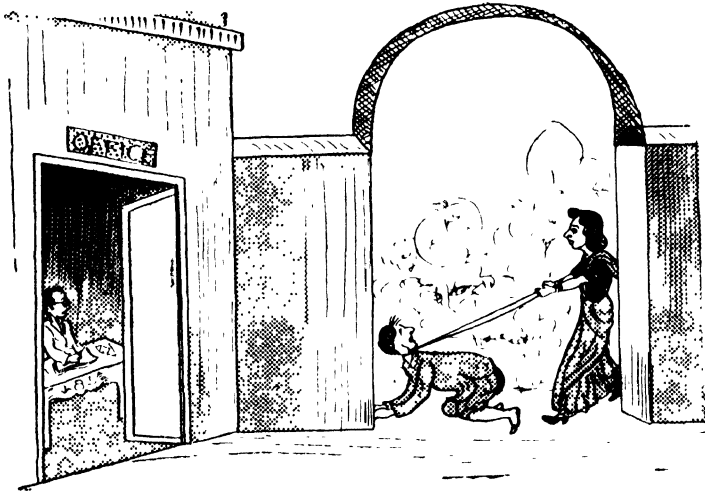
मालिक— "कारखाने के बाहर होने वाली दुर्घटनाओं के लिए हम उत्तरदायी नहीं हैं।"

*

एक कम्पाउण्डर, जिसे एक डाक्टर के यहाँ काम करते एक सप्ताह ही हुआ था, अपने एक मित्र के साथ घूमने जा रहा था। मार्ग में एक सार्वजनिक टेलीफोन-बूथ देखकर वह उसमें घुस गया, और अपने मालिक डाक्टर का नम्बर मिलाकर आवाज़ बदल कर उससे बातें करने लगा। उसने पूछा— "आपने एक कम्पाउण्डर के लिए इश्तहार दिया था?"

"हाँ, दिया तो था।"

"क्या मैं उस जगह के बारे में आपसे मिलने आऊँ?"

"नहीं, मैंने एक आदमी रख लिया है।"

"क्या आप उसके काम से सन्तुष्ट हैं? कोई तबदीली नहीं चाहते?"

"हाँ, मैं उससे पूरी तरह सन्तुष्ट हूँ। कोई तबदीली नहीं चाहता।"

जब वह बाहर आया तो उसके मित्र ने पूछा— "क्या बात है भई, क्या तुम्हारी नौकरी छूट गई है ?"

"नहीं, नौकरी तो है, पर मैं जानना चाहता था कि मेरा मालिक मेरे काम से खुश है अथवा नहीं।"

*

मालकिन– मेरी पिछली नौकरानी से पुलिसवाले बहुत परिचित थे, इसीलिए मैंने उसे नौकरी से अलग कर दिया। मेरा ख्याल है, तुम्हारे साथ ऐसी कोई समस्या नहीं है। क्या मै तुम पर विश्वास कर सकती हूँ ?

नई नौकरानी— जी अवश्य, मुझे स्वयं पुलिसवालों से नफरत है। मुझे बचपन से ही पुलिसवालों के साये से भी नफरत करना सिखाया गया है क्योंकि मेरे पिता नगर के मशहूर सेंधमार थे।

*

छः मंज़िल के भवन के प्रवेश द्वार पर दरबान को सोता देखकर आगन्तुक ने उसे जगा कर पूछा, "श्री शिवकुमार जी कहाँ रहते हैं ?"

दरबान को जगाया जाना बुरा लगा था ; आगन्तुक को ऊपर से नीचे तक देखकर बोला, "छठी मंज़िल के फ्लैट नं० ५३ में।"

आगन्तुक महोदय थोड़ी देर में बुरी तरह हाँफते हुए नीचे वापिस आये और उस लड़के से बोले, "उसमें तो कोई नहीं है। शिवकुमार जी को कहीं जाते देखा था तुमने ?"

दरबान बोला, "वह तो सामने वाले होटल में चाय पी रहे हैं।"

*

बैंक के एक अफसर ने नये दरबान को बुलाकर कहा, "दरबानी की तुम्हारी यह सर्वप्रथम नौकरी है ?"

"जी हाँ !"

"देखो, अपने मैनेजर बहुत ही सज्जन और ईमानदार तथा कर्त्तव्यनिष्ठ आदमी हैं। फिर भी दरबान की हैसियत से तुम्हें उन पर नज़र रखनी होगी और उनकी हर हरकत की सूचना मुझे देनी होगी।"

"लेकिन सरकार मैं दो दो आदमियों और बैंक पर एक साथ कैसे निगरानी रख सकता हूँ ?"

"दो दो आदमी !"

"जी हाँ। कल अपने मैनेजर बाबू ने बुलाकर ठीक यही बात आपके बारे में कही थी।"

*

बहुत दिनों से बेकार एक व्यक्ति को आख़िर कांच के बर्तन की दुकान में सेल्समैन की जगह मिली। वेतन ६०) प्रति माह था।

एक सप्ताह बाद उससे एक बड़ा क़ीमती 'टी-सेट' जिसकी क़ीमत ५००) थी, टूट गया। मैनेजर ने उसे अपने कमरे में बुलाकर खूब डाटा और कहा—"तुम्हारी तनख़ा में से २५) प्रति माह तब तक कटते रहेंगे, जब तक कि इस 'सेट' की क़ीमत वसूल नहीं हो जाती।"

"बड़ी खुशी से काटिये, हुजूर।"

"क्यों तुम्हें इसमें खुशी क्यों हो रही है?"

"जी, अब कम से कम मेरी नौकरी २० महीने के लिए तो स्थायी हो गई।"

*

वकील (नये नौकर से)-- रामचरन! ज़रा पीकदान तो लाना।

नौकर-- यहाँ नहीं है।

वकील-- तुम नये ही देहात से आये हो। पीकदान भी नही पहचानते। वही मेज़ के नीचे रखा है।

नौकर— मैं इस बर्तन को नहीं छू सकता।

वकील— क्यों?

नौकर-- इसमें तो किसी पागल ने थूक दिया है।

*

संतरी के काम के लिए एक व्यक्ति ट्रेनिंग ले रहा था। उसे बताया गया कि वह केवल ऐसी ही कारों को जाने दे जिन पर एक प्रकार का लेबिल लगा हो। सहसा एक बग़ैर लेबिल की कार आती दिखाई दी। पर संतरी के रोकने पर भी उसमें बैठे उच्च अधिकारी ने कार आगे बढ़ाने की आज्ञा दी। 'एक मिनट, साहब,' नया सन्तरी सेल्यूट कर बोला, "मैं इस काम के लिए बिल्कुल नया हूँ। यह तो बताते जाइये कि गोली मैं आप पर चलाऊँ या ड्राइवर पर।'

*

मालिक ने नौकर से कहा— तुम हरेक काम अपनी मरज़ी से किया करते हो। ख़बरदार जो तुमने कोई भी काम मेरे से बिना पूछे किया।

दो चार दिन बाद नौकर ने मालिक से कहा— आप जो परसों नया कोट सिलाकर लाये थे उसे टौमी फाड़ रहा है। अगर आप आज्ञा दें तो छुड़ा लाऊँ।

*

मालिक (नौकर से)— तू बहुत सुस्त काम करता है। मकान को साफ़ तक नहीं करता। हर ओर जाले लगे हैं।

नौकर— सरकार मैं जानबूझ कर साफ़ नहीं करता, क्योंकि मक्खियाँ आप को सताती हैं, अब इन जालों में आकर अटक जाया करेंगी।

*

सेठ जी (नौकर से)— काम दिल लगाकर किया करो, नहीं तो नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा।

नौकर— अच्छी बात है, साबुन के पैसे बच जायेंगे।

*

नौकर— बाबूजी, आप मुझे नौकर रख लीजिये।

बाबूजी— देख, कहीं दो चार दिन रह कर ही न भाग जाना।

नौकर— हज़ूर, मुझे तो एक ही जगह रहने की आदत है। तीन साल से मै एक ही जगह था।

बाबूजी— कहां ?

नौकर— जेलख़ाने में।

*

मालिक— अलमारी की चाबियाँ कहाँ है?

नौकर— हुज़ूर, अलमारी में।

मालिक— वहाँ क्यों रखी हैं?

नौकर— जिससे कोई चुरा न सके।

*

मालिक— १० तारीख़ का अख़बार ले आ।

नौकर— हज़ूर, दस तारीख़ का नहीं है। एक छ: और एक चार तारीख़ का ले आया हूँ।

*

एक आदमी ने एक फर्म में नौकरी के लिये प्रार्थनापत्र भेजा। उस फर्म के मैनेजर ने लिखा कि उनके पास आजकल कोई जगह नहीं है और ज़रूरत से अधिक आदमी फर्म में लगे हुए हैं। उस आदमी ने उत्तर लिखा, "महाशय, थोड़ा बहुत काम आप मुझे शुरू करने को ज़रूर दे सकते हैं। थोड़ा सा काम जो मैं करूँगा वह तो आप लोगों की नज़रों में भी नहीं आवेगा।"

*

एक अजायबघर में दो रखवाले धाड़ें मार मार कर रो रहे थे। एक

आदमी ने उनसे उनके रोने का कारण पूछा। उनमें से एक ने जवाब दिया—"हाथी मर गया है।"

"ओह, तुम उसे बहुत चाहते होगे, तभी तो इतनी ज़ोर से रो रहे हो।"

"नहीं, हम उसे चाहते नहीं थे। अफसर ने हम से उसके लिए क़ब्र खोदने को कहा है।

*

"आज मुझे जल्दी घर जाना है, हमारी नौकरानी की रजत जयन्ती है।"

"क्या तुम्हारी नौकरानी को तुम्हारे यहाँ काम करते पच्चीस साल हो गये?"

"नहीं, इस साल में हमने यह पच्चीसवीं नौकरानी रखी है।"

*

वह बस कन्डक्टर की नौकरी के लिये अर्जी दे रहा था।

"इस काम के लिये तुम्हारी क्या क़ाबलियत है?" बस कम्पनी के मैनेजर ने पूछा।

"जी, मैं अब तक डिब्बों में मछलियाँ बन्द करने की एक फैक्ट्री में काम करता रहा हूँ।"

*

मालिक— "अरे, तुम वहाँ खाली बैठे क्या कर रहो हो? चलो, काम करो। तुमने तो मुझसे कहा था कि तुम थकते ही नहीं हो।"

नौकर— ठीक ही तो कहा था। मैं थकने से पहले ही आराम करने लगता हूँ, थकूंगा कैसे?"

*

साहब का अन्धेरे में किसी ने मुँह चूम लिया, उन्होंने पूछा— "कौन है?"

मालूम हुआ नौकर है।

साहब— "क्यों बे गधे, यह क्या हरकत?"

नौकर— "हज़ूर, माफ कीजिये, मैंने मेमसाहब समझी थीं।"

*

गृहस्वामिनी (मिसरानी से)— देखो अगले रविवार को मैं एक डिनर पार्टी दे रही हूँ। उसके अन्दर लगभग पन्द्रह सोलह मेहमान आयेंगे। खाना ऐसा बने कि सब मेहमान उंगली चाटते और तुम्हारी तारीफ करते घर जायें।

मिसरानी (ओंठ भींचकर)— यदि आप मुझे मेरे घर के पते से एक पत्र डाल दें कि पार्टी कैसे निमटी तो बड़ा अच्छा हो।

*

"तुम अपने पहले मालिक के यहाँ क्या काम करते थे?" दुकानदार ने रमेश से पूछा।

"जी, मैं कार्यकर्त्ता था।"

"कार्यकर्त्ता! यह कार्यकर्त्ता क्या बला होती है?"

"जी, ऐसा था कि जब मालिक को कोई काम कराना होता था तब वह सीधे ख़ज़ांची से कहते थे, खज़ांची मुनीम से कहते, मुनीम क्लर्क से कहते और क्लर्क मुझसे कहता था।"

"फिर?"

"फिर क्योंकि कोई और ऐसा आदमी नहीं था जिससे मैं काम करने के लिए कहता, इसलिए काम आख़िर में मुझे ही करना पड़ता था।"

*

एक साहब को घर के कामों के लिये एक नौकर चाहिये था। एक दिन एक अजनबी नौकर ने आकर घण्टी बजाई। दरवाज़ा खुला तो अजनबी बोला, "साहब, नौकरी है?"

उन्होंने कहा— "नौकरी तो है लेकिन तुझे कैसे रख लूँ? जान न पहचान।" यह कह कर वे दरवाज़ा बन्द कर ही रहे थे कि अजनबी फिर से दरवाज़ा खोलते हुए कहा— "साहब, जान पहचान अभी कैसे हो? आप नौकर रख लीजिये, धीरे धीरे जान पहचान भी हो जायगी।"

*

मालकिन अपनी नई नौकरानी को खुश करना चाह रही थी। 'हमारे यहाँ तुम्हें बहुत कम काम करना पड़ेगा। हमारे कोई बच्चा नहीं है।'

नौकरानी (दयालुता से)— 'मुझे तो बच्चे बड़े प्यारे लगते हैं। आप मेरे कारण अपने को बन्धन में न समझें।'

*

"मैं एक चित्रकार को जानता हूँ। एक बार उसने छत पर इतना सचमुच का मकड़ी का जाला बनाया था कि नौकर घण्टों तक उसे छुटाने का प्रयत्न करता रहा।'

'मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता।'

'क्यों? कलाकार तो आसानी से ऐसा काम कर सकते हैं।'

'कलाकार से मतलब नहीं! मुझे नौकर वाली बात का भरोसा नहीं।

ग्रामीण

एक गंवार को मोटर पर चढ़ने का शौक़ पैदा हुआ। इसलिये एक मोटर चलाने वाले से दोस्ती करके एक दिन मोटर पर उसे चढ़ने को मिला। मोटर की तेज़ चाल से वह बहुत खुश हो रहा था। एकाएक मोटर सड़क की पटरी पर से बहक कर एक पेड़ से भिड़ गई। मोटर रुक गई, और किसी को चोट न लगी।

गंवार मोटर से उतर कर मोटर वाले से बोला— "हाँ, है तो बड़ी तेज़ गाड़ी ; मगर जहाँ पेड़ नहीं होता, वहाँ भला तुम कैसे रोक पाते होगे ?"

*

दो जाट इस विषय पर बहस कर रहे थे कि उनके पास जो रुपया था, वह असली था या खोटा।

थोड़ी देर बाद एक बोला— "यार, मैं बताऊँ तरकीब। इसे कुएं में फेंक दो, अगर डूब जाये तो असली, वरना जाली।"

*

गोबर— मैंने चार पाँच दिन हुए मक्का बोया था।

लोटन— तब क्या हुआ ?

गोबर— मक्का की जगह कबूतर पैदा हो गये और सब दाने खा कर

उड़ गये ।

*

एक गंवार बम्बई में पहुँचा। बाल बढ़ गये थे। उसने नाई से पूछा— "क्या हमारी हजामत कर सकते हो ?"

नाई— "क्यों नहीं, दूसरों की हजामत करना ही तो मेरा धन्धा है ।"

गंवार— "एक हजामत का क्या लेते हो ?"

नाई— "इसकी कुछ न पूछो । जैसा काम वैसा दाम, एक आने से लेकर आठ आने तक की बनाता हूँ ।"

गंवार— "अच्छा तो एक आने वाली बनाओ ।"

नाई ने बाल छील दिये और कहा— "लो बन गई, पैसे लाओ ।"

गंवार— "बस, एक आने वाली बन गई। तो अब दो आने वाली बनाओ।"

यह सुनकर नाई घबराया ।

तब गवार खीसा बजा कर बोला— "अबे, घबराता क्यों है ? अभी तो आठ आने वाली तक बनवाऊंगा ।"

*

एक देहाती आदमी ने शहर में सड़कों पर पानी छिड़कने वाली गाड़ी देखी । कुछ देर तक तो वह चुप रहा । फिर एक आदमी से बोला— "देखिये साहब, आप लोग गाँव वालों को बेवकूफ़ कहा करते हैं । पर ज़रा शहर वालों की अक़्ल तो देखिये। इसमें इतने छेद हैं कि घर पहुँचते पहुँचते एक बूंद भी पानी न रहेगा ।"

*

टूरिस्ट आये थे और सारा देश देखते पहिचानते घूम रहे थे ।

एक दिन सब एक देहात में पहुँचे । भारी भरकम टूरिस्ट नेता ने मोटर से उतरते ही आँखें गोल गोल घुमाते हुए पूछा— यहाँ भी कोई बड़ा आदमी जन्मा कभी ?"

भोले मुँह से एक देहाती ने उत्तर दिया— "बड़ा आदमी ! यहाँ तो सदा बच्चे ही जन्मते हैं ।"

*

"दो फुट की गहराई पर बीज बोने से कोई लाभ न होगा ।"

"हाँ, यह तो ठीक है, लेकिन उससे चिड़ियों को बीज चुगने में बड़ी दिक्कत भी तो उठानी पड़ेगी ।"

*

एक किसान एक तोता ख़रीद कर लाया। तोते की दोनों टाँगों में सुतली का एक एक टुकड़ा बंधा देखकर किसान की पत्नी ने पूछा— "ये धागे किसलिये बांधे गये हैं ?"

"एक को खींचकर देखो।"

जब किसान की पत्नी ने एक टाँग के धागे को पकड़ कर खींचा, तो तोता बोला, "सीताराम।" दूसरा धागा खींचने पर तोता बोला, "राधेश्याम।"

अब किसान की पत्नी की समझ में यह न आया कि दोनों धागे एक साथ खीचने पर तोता क्या कहेगा। उसने यह जानने के लिये दोनों धागे खींच लिये।

तोता बोला— "मूर्ख, मैं गिर पड़ूँगा।"

*

ठेठ देहात का एक आदमी पहली बार बम्बई गया और उसने एक होटल में पहुँच कर दूध की माँग की। आधा पाव दूध का प्याला उसके सामने आ गया। उसे देखकर वह बिगड़कर बोला, 'अबे, नमूने का क्या करना है ? नमूना किसने मंगाया था, दूध लेकर आ।'

*

रामसिंह की स्त्री बहुत सख़्त बीमार पड़ी। जब सारे इलाज करने के बाद भी आराम नहीं हुआ, तो उसने मानता मनाई कि अगर मेरी स्त्री ठीक हो जाये, तो मैं अपनी भैंस बेचकर जो रुपया मिलेगा उससे भूखों को खाना खिलाउँगा। यह बड़ी सुन्दर भैंस थी, और रामसिंह के पास सिवाय इस भैंस के कुछ बचा भी नहीं था।

मानता मनाने का असर फौरन हुआ, और धीरे धीरे रामसिंह की स्त्री अच्छी हो गई। अब रामसिंह को अपनी भैंस से बिछुड़ने का बड़ा दुःख हुआ। पर मानता तो मानता ही थी। उसे तोड़ा कैसे जा सकता था।

ख़ैर, रामसिंह ने भैंस खोली और साथ में एक मुर्ग़ा भी लिया। और बाज़ार चल दिया। वहाँ पहुँच कर जब ख़रीदारों ने भैंस के दाम पूछे, तो उसने पाँच रुपये बताये। पाँच सौ की भैंस के पाँच रुपये ! लोगों ने समझा यह पागल हो गया है। लेकिन फिर भी जैसे ही एक ख़रीदार ने बटुए से नोट निकाला, तो रामसिंह ने कहा— "भैंस के साथ यह मुर्ग़ा भी लेना पड़ेगा। इसकी क़ीमत चार सौ रुपये होगी।"

मुर्ग़े के चार सौ रुपये— लेकिन फिर भी दोनों मिलाकर चार सौ पाँच रुपये में सौदा महँगा नहीं था। और इस प्रकार अन्त में मुर्ग़ा और भैंस दोनों बिक गये।

जो पाँच रुपये भैंस को बेचने पर मिले, उसका रामसिंह ने भोजन खरीद कर भिखमंगों को बाँट दिया। और मुर्गे के चार सौ रुपये से एक और भैंस लेकर वह घर वापिस आ गया।

*

गाँव में रहने वाला व्यक्ति, जो कुछ कुछ अंगरेज़ी पढ़ा हुआ था, एक शहर में आया। उसने एक जगह बहुत बड़ा बोर्ड देखा जिस पर लिखा हुआ था, 'एम्पलायमेंट एक्सचेंज'। दफ़्तर के अन्दर घुसने पर उसने एक बोर्ड देखा, जिस पर लिखा हुआ था 'विमैन्स एक्सचेंज'। वह काफी देर तक इस बोर्ड की ओर घूरता रहा।

अन्दर घुसने पर उसने एक मोटी स्त्री को बैठे देखा और उससे पूछा, "क्या यही विमैन्स एक्सचेंज है?"

उसी स्त्री ने उत्तर दिया, "हाँ।"
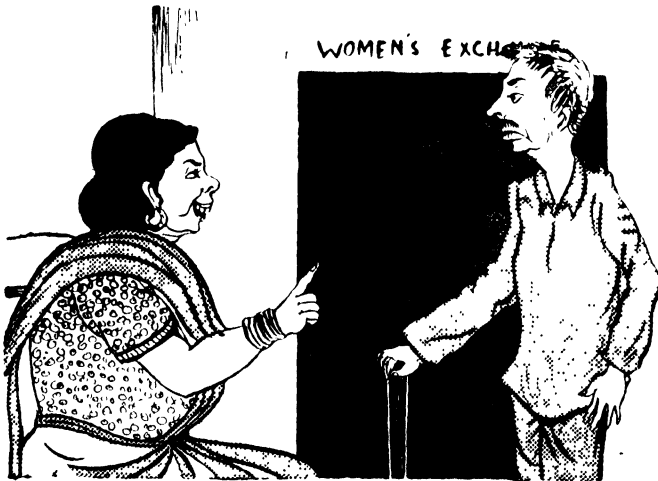
"क्या आप ही एक्सचेंज पर हैं?"

"हाँ, कहिये।"

"धन्यवाद! मैं अपनी बीवी के साथ ही रहना पसंद करूँगा।"

*

राजस्थान के घोर रेगिस्तान की एक ग्रामीण स्त्री नौकरी के लिए नगर में आयी। उसे मज़बूत और काम करने को उत्सुक देख कर एक गृहिणी की इच्छा उसे नियुक्त करने की हुई।

गृहिणी ने पूछा, "तुम्हें खाना पकाना आता है ?"

उसने नकारात्मक ढंग से अपना सिर हिलाया ।

"तुम बच्चों की देख भाल कर सकती हो ?"

उसने फिर सिर हिला दिया ।

"तुम घर की सफाई, देख-भाल कर सकती हो ?"

उसने उसी ढंग से सिर हिला दिया ।

"कपड़े धो सकती हो ?"

उसके सिर हिलाने के ढंग में अन्तर नहीं पड़ा ।

झुझला कर गृहिणी ने कहा— "तब तुम कर क्या सकती हो ?"

उसने गर्व से उत्तर दिया, "मैं मांउनी (ऊंटनी) दुह सकती हूँ ।"

*

एक दिन बहुत बूढे किसान का दरवाजा समीप के गांव के दो व्यक्तियों ने खटखटाया । "क्यों भई, कैसे हो रामू ? हम गांव से आ रहे थे, रास्ते में एक लाश पड़ी हुई मिली । हम समझे वह लाश कहीं तुम्हारी ही न हो ।"

"देखने में कैसी थी ?" रामू ने पूछा ।

"बिलकुल तुम्हारे जैसा ही डील-डौल था ।"

"क्या वह सफेद गाढ़े की मिर्जई पहन रहा था ?"

"हां ।"

"और उस पर काला चारखाना था ?" रामू ने फिर पूछा ।

"नही, वह तो बिल्कुल सादी थी ।"

दरवाजा बन्द करते हुए रामू बोला, "नहीं, तो फिर वह मैं नहीं हूँगा ।"

*

एक वर्ष फसल ठीक न होने के कारण बहुत से ग्रामीण बम्बई नगर में आये । उनमें से एक ने काम दिलाऊ कार्यालय में अपना नाम लिखाया । वहाँ उसे बताया गया कि हंस लाण्ड्री में जगह खाली है ।

ग्रामीण बोला, "मुझे नौकरी की बड़ी सख्त ज़रूरत है । पर साहब मैंने हंसों को धोने और स्नान करवाने का काम पहले कभी नहीं किया है ।"

*

डाक्टर— (एक देहाती से) एक गोली सवेरे, एक शाम को खाना ।

देहाती— अगर गोली ही खानी होती तो फौज में न भरती हो जाता ।

*

एक इत्रवाला एक देहाती जाट के मकान पर गया । जाट का लड़का बाहर

आया और बोला— 'दिखलाओ इत्र!'

इत्रवाले ने गुलाब की फुरेरी लगाकर जो दी तो लड़के ने वह फुरेरी मुँह में डाल ली। कड़वाहट के कारण फुरेरी थूक कर बोला— 'इत्र सड़ गया है।'

तब तक जाट बाहर आया। उसने भी इत्र देखने का आर्डर दिया।

इत्रवाले ने कहा— 'आप लोग यह भी नहीं जानते कि इत्र का क्या किया जाता है? मैंने आपके लड़के को एक फुरेरी दी तो उसने मुँह में डाल ली।'

जाट बोला— 'लड़का बेवकूफ है। इत्र यों ही नहीं खाया जाता। इत्र से तो अरहर की दाल बघारी जाती है।'

*

इङ्गलैंड के राजा एडवर्ड डेनमार्क की एक शाही गुप्त सभा में शामिल होने गये थे। एक दिन वे अकेले ही घूमने निकल पड़े। वे काफी दूर निकल गये। लौटते वक्त उन्हें एक भूमे की गाड़ी अपने डेरे की तरफ जाती दिखाई दी। वह झपट पर उस पर जा चढ़े। और बोले— "मुझे राजा साहब के डेरे के फाटक पर उतार देना।"

गाड़ी हाँकने वाले किसान को इस अजनबी की बात पर गुस्सा आ गया। उसने जोर से पूछा— "कौन हो तुम?"

एडवर्ड सप्तम ने सादगी से जवाब दिया— "मैं इङ्गलैंड का एडवर्ड सप्तम हूँ।"

"ज़रूर होगे," किसान ने कहा। "पर जानते हो, मैं भी पोप हूँ।"

खैर, डेरे के फाटक पर एडवर्ड उतर गये। अब किसान ने एक नौकर से पूछा— "क्यों भाई, यह कौन शख्स था, जो अभी-अभी मेरी गाड़ी पर से उतरा है?"

नौकर ने बताया कि वह एडवर्ड सप्तम थे।

भौचक्का सा होकर किसान थोड़ी देर अपनी खोपड़ी खुजलाता रहा। फिर बोला— "भाई तुम उनसे कह दो कि मैं पोप नहीं हूँ, मैंने तो यों ही मज़ाक़ किया था।"

*

ग्रामीण— क्यों बाबूजी, दिल्ली तक का कार्ड कितने में आवेगा?

बाबू— तीन पैसे में।

ग्रामीण— और बम्बई भी तीन पैसे में चला जायगा?

बाबू— हाँ।

ग्रामीण— यह तो बड़ी मज़ेदार बात है। तो मेरी चिट्ठी दिल्ली की जगह

बम्बई भेज देना।

*

एक ग्रामीण (रेलवे बाबू से)-- "बाबूजी, जनता ऐक्सप्रेस कै बजे आती है ?"

बाबू— "६ बजे।"

"और तूफान मेल कै बजे आती है ?"

बाबू-- "५-३५ पर।"

"और देहरा एक्सप्रेस कितने बजे आती है ?"

बाबू-- "३ बजे।"

"और बाबू, बम्बई की गाड़ी कै बजे आती है ?"

बाबू— "४-३० पर।"

"और बाबू मदरास की गाड़ी कै बजे आती है ?"

बाबू— "क्या सभी गाड़ियों से तुम्हारे मेहमान आने वाले हैं ?"

"नहीं बाबू, मुझे पटरी पार करनी है।"

*

बदलू अपने खेत में घास छील रहा था कि डाकिये ने आकर एक कोना कटा पोस्ट कार्ड उसके हाथ में दिया। कोना कटा देखते ही वह घबरा गया। डाकिये ने कहा, "घबराइये नहीं, बुरी ख़बर नहीं होगी। कोना यों ही फट गया होगा।"

बदलू ने उत्तर दिया-- "घबराऊँ कैसे नहीं, मेरे भाई की मृत्यु हो गई

होगी। मैं उसकी लिखावट जो पहचान रहा हूँ।"

*

एक प्रसिद्ध कलाकार एक बार एक गांव से गुज़र रहा था। रास्ते में उसे एक बैल नज़र आया, जिसे देखकर वह चित्र बनाने की लालसा न रोक सका। बैल के देहाती मालिक से उसने उसका चित्र बनाने की इजाज़त ले ली। चित्र उसने बना लिया।

बैल का यह चित्र उसने किसी कला-प्रेमी को एक हज़ार रुपये में बेच दिया। एक वर्ष पश्चात् बैल का मालिक उसे फिर मिला। उसने जब उसे यह बात बताई, तो वह चकित होकर बोला, "एक हज़ार में! किस बेवकूफ ने ख़रीदा? इतनी रक़म में तो मैं उसको दो असली बैल बेच सकता था।"

*

देहाती— घी कितने का हुआ?

दुकानदार— सवा रुपये का।

देहाती— ठगना चाहते हो? मेरी स्त्री ने कहा था कि बीस आने का घी है।

*

देहाती — टूंडला स्टेशन का टिकट कितने में मिलता है?

टिकट बाबू— आठ आने में।

देहाती— सात आने ले लीजिये।

बाबू— नहीं, सरकारी रेट कम नहीं होता।

देहाती— तो लाइये अपनी तराज़ू।

बाबू— तराज़ू।

देहाती— जी हाँ। मेरे पास दाम नहीं हैं, गेहूँ हैं। तोल लीजिये।

*

एक देहाती ने पोस्टमास्टर से पूछा— बाबूजी, मेरी कोई चिट्ठी है?

पोस्टमास्टर— अपना पता बताओ।

देहाती— मेरा पता मेरी चिट्ठी पर लिखा होगा।

*

एक देहाती चलती गाड़ी पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। गार्ड ने हाथ पकड़ कर खींच लिया और कहा— "चलती गाड़ी पर चढ़ने का हुकम नहीं है।"

जब गार्ड का डिब्बा आया तो गार्ड उसमें चढ़ने लगा। देहाती ने कमर पकड़ कर गार्ड को खींच लिया और कहा— "चलती गाड़ी पर चढ़ने का हुकम

नहीं है ।''

*

सिनेमा चालू होने का समय होने पर हॉल की लाइट बुझा दी गई तो एक गंवार चिल्ला उठा, ''हम क्या उल्लू हैं जो हमें अंधेरे में खेल दिखाते हो ?''

*

एक जाट एक छोटे रेलवे स्टेशन पर उतरा । उसके साथ उसकी बहन भी थी । स्टेशन पर उन्हें कोई इक्का नहीं मिला । जेठ की चिलचिलाती धूप पड़ रही थी, थोड़ी दूर पैदल चलने पर दोनों थक गये और एक पेड़ की छाँव में बैठ गये । भाग्य मे एक इक्के वाला उधर से जा रहा था । उसने उन्हें गांव तक पहुँचाने का एक रुपया माँगा । पर जाट ने बारह आने देने चाहे । मामला न पटने पर इक्का आगे चल दिया ।

कुछ दूर चलने पर इक्के वाले ने बारह आने लेने ही ठीक समझे । उसने इक्का रोककर आवाज़ लगाई— ओ मेहरिया वाले, चल बैठ, बारह आने ही दीजो ।

बहन को मेहरिया सुन जाट को बड़ा क्रोध आया । वह कड़क कर बोला— 'अबे उल्लू के पट्ठे, मेहरिया यह तेरी होगी, मेरी तो बहन है ।'

*

एक ग्रामीण बाढ़ से हुई हानि का अनुमान लगाकर रो रहा था । उसके चौधरी ने कहा— 'रोते क्यों हो ? रामू की भैंस भी बह गई है ।'

'और कुन्दन का घर ?'

'वह भी बह गया है ।'

ग्रामीण हँसने लगा— 'तब तो बड़ा अच्छा हुआ ।'

*

एक हट्टे कट्टे वृद्ध ग्रामीण को देखकर रिपोर्टर ने पूछा— 'आपके ऐसे अच्छे स्वास्थ्य का क्या कारण है ?'

'मैं तब पैदा हुआ था जब बीमारियों के कीटाणुओं की खोज नहीं हुई थी।''

*

गाँव के बाग़ के पास से निकलते हुए दो शहर वाले कार रोककर उतर पड़े । दीवार फाँद कर उन्होंने कुछ सेब चुन लिये और फिर मोटर में आकर बैठ गये । मोटर स्टार्ट करते समय उन्हें पास ही रखवाला खड़ा दिखाई दिया । एक बोला— ''टा-टा ! थोड़े से सेब लिए हैं हमने ।''

''तुम जब बाग में थे तब मैंने तुम्हारे मारे औज़ार निकाल लिये थे ।''

वक्ता

कल की मीटिंग के बारे में रिपोर्ट— 'जब माननीय मन्त्री बोल रहे थे, तब हमारे विशेष रिपोर्टर ने हाल में सोने वालों के सिर गिनने आरम्भ किये। वह अठारह तक पहुँचा था कि स्वयं सो गया।'

*

एक बंगाली वक्ता बोल रहे थे। वे बोलते रहे, बोलते चले गये। धीरे धीरे सुनने वाले उठकर जाने लगे। अन्त में केवल एक व्यक्ति उनके सामने बैठा रह गया। वक्ता बोले, 'अन्त में मैं यह कहना चाहता हूँ कि आप ही केवल एक भले व्यक्ति थे जो ....

व्यक्ति— 'जी, अगला वक्ता मैं हूँ।'

*

विषय था 'आज की शिक्षा'। बोलने वाले थे एक साहित्यकार।

"हमारी आज की शिक्षा इतनी एकांगी बन गई है कि हमें दूसरे विषयों के बारे में कुछ भी मालूम नहीं होता। अब मुझे ही देखो न— साहित्य का तो मुझे अधिक ज्ञान है, लेकिन विज्ञान का कुछ भी नहीं। मुझे यह भी नहीं मालूम कि रेडियो कैसे बजता है।"

"वाह, इसमें क्या बात है। तुम तो पूरे बुद्धू मालूम पड़ते हो। रेडियो की घुंडी घुमा दो, और वह बजने लगता है।" एक आदमी चिल्लाया।

*

एक सभा में वक्ता उत्साहपूर्वक वक्तव्य दे रहा था। विषय था— प्रगति और विकास के लिये मानव की सामर्थ्य।

"सब जीवों में से केवल मानव ही प्रगति कर सकता है। उदाहरण के लिए गधे को लीजिए। शुरू से अब तक उसने कुछ भी प्रगति नहीं की। न ही वह भविष्य में कर सकता है ....

इसी समय पीछे बैठे हुए श्रोताओं में से कोई बोला— "आपकी इस प्रगति का हाल तो हम अपनी आंखों देख रहे हैं।"

*

एक वक्ता भाषण दे रहे थे— "आज के समाज में हमारी आकांक्षाएँ और आशाएँ पूरी नहीं हो सकतीं।" अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए उन्होंने एक आदमी को खड़ा करके पूछा— "क्या तुम्हारे बचपन की कोई आकांक्षा अब तक पूरी हुई है?"

"हाँ, हुई है," उस आदमी ने उत्तर दिया। "बचपन में जब मास्टर जी मेरे बाल पकड़कर खींचा करते थे तो मैं चाहता था कि मेरे बाल न रहें। देखिए, अब मै बिल्कुल गंजा हूँ।"

*

एक तूफानी नेता स्पीच दे रहा था। स्पीच देते हुए उसे काफी देर हो गई थी। इस पर भी उसके भाषण के शीघ्र ही समाप्त होने की कोई आशा न थी। वह कह रहा था— "दोस्तो, भाइयो, साथियो, मेरी अपील आप से ही नहीं है, सारी दुनिया के सारे लोगों से है। इस पीढ़ी से ही नहीं, होने वाले बाल बच्चों और उनके बच्चों से भी है ·······

एक श्रोता— "तब तो मै चला, अपने लड़के को भेजता हूँ जाकर।"

*

एक वक्ता इस बात के लिए प्रसिद्ध था कि उसका व्याख्यान बिल्कुल ठीक बीस मिनट तक होता था, और उसे कभी घड़ी देखने की आवश्यकता नहीं होती थी। पर एक दिन भाषण बयालीस मिनट मे समाप्त हुआ। इस पर उसके एक मित्र ने पूछा— "भई, यह क्या हुआ?"

वक्ता बोला, "यार, इसका असली भेद तो यह है कि बोलते समय मैं अपनी ज़बान के नीचे खाँसी की एक गोली डाल लिया करता हूँ, जो पूरे बीस मिनट में जाकर ख़त्म होती है। बस जैसे ही गोली ख़त्म हुई मेरा भाषण भी समाप्त हो गया। लेकिन आज मैं बोलता ही रहा और जब चालीस मिनट हो गये तो मुझे पता चला कि वह गोली नहीं थी, कमीज़ का बटन था, जो मैं मुह में दबाये था।"

*

बक्की— "क्या बताऊं, साहब, मैं अजीब परेशानी में हूँ। सैंकड़ों रुपये की दवाइयाँ पी डालीं; डाक्टर, हकीम, वैद्य सबका इलाज किया; मगर न जाने क्यों मुझे कोई भी दवा फायदा नहीं करती। रात रात भर करवटें बदलता रहता हूँ। नींद बुलाने की हज़ारों तरकीबें करता हूँ; मगर किसी तरह से भी

आंख नहीं लगती। बस यही शिकायत है। पेटेंट दवाइयाँ, जड़ी-बूटी की दवाइयाँ, घरेलू दवाइयाँ, सभी करके थक गया …………

श्रोता— (उकता कर) "अच्छा, आप एक काम कीजिये तो आपको नींद अवश्य आने लगेगी ।"

बक्की— "क्या ?"

श्रोता— "आप ख़ुद अपने आप से बातें किया कीजिये ।"

*

एक महाशय एक व्याख्यानदाता से बोले, "जब आपका व्याख्यान होता है, तब मैं सुनने ज़रूर आता हूँ ।"

व्याख्यानदाता— "क्यों, क्या मेरे व्याख्यान में कोई ख़ास बात है ?"

श्रोता— "बात यह है कि आपके व्याख्यान के दिन बैठने के लिये जगह खूब मिलती है ।"

*

एक आदमी कहीं जा रहा था। रास्ते में उसका एक मित्र मिला। उसने पूछा— "कल की सभा में तुम गये थे? सुनते हैं चौबे जी का भाषण बहुत अच्छा रहा ।"

उस आदमी ने जवाब दिया— "जी हां, इसमें कोई शक नहीं कि उनका भाषण अच्छा था। जितने लोग आये थे सभी मज़े में सोते रहे ।"

*

वक्ता ने कहा — "आज गधों की मंडली में मेरा व्याख्यान हुआ ।"

यह सुन कर एक साहब बोले —"वहां पर जैसे ही आपने उनसे 'भाइयो' कहा था, वैसे ही मैं यह बात समझ गया था ।"

*

मोहन— आज भाषण किस बारे में था ?

सोहन— नींद के ।

मोहन— तो फिर उसका नतीजा क्या निकला ?

सोहन— सारे सुनने वाले भाषण के दौरान में ही सो गये ।

*

एक कृषि-शास्त्री को कृषि के नये-नये अनुसंधानों के विषय में ग्रामीण कृषकों के समक्ष भाषण करने के लिये आमंत्रित किया गया। सुन्दर और मँजी हुई भाषा में भाषण करने के पश्चात् अन्त में आपने कहा, "अब आप लोग मुझसे सवाल पूछ सकते हैं। मैं आपको संतुष्ट करने का प्रयत्न करूंगा ।"

पीछे बैठे एक वृद्ध किसान ने धीरे से उठकर कहा, "आपका लेक्चर सुनकर हम बड़े कृतज्ञ हुए। पर यह बता दीजिये कि विषय क्या था आपके लेक्चर का ?"

*

एक पार्लियामेंट हाउस की खिड़की सड़क की तरफ खुलती थी। एक दिन, सड़क पर खड़ा होकर एक गधा, खिड़की से मुंह लगाकर, 'हें-चू, हें-चू' का नारा लगाने लगा। स्पीकर बोला— 'गधा क्या कह रहा है ?'

एक मेम्बर ने खड़े होकर कहा— 'अपनी जाति वालों से नमस्ते कहता है।'

*

एक सभा में वक्ता महोदय ने कहा— "कम्यूनिज़म, फासिज़म एवं ऐसे अन्य वाद घृणा पर आधारित होने के कारण कदापि सफल नहीं हो सकते।'

एक कम्यूनिज़म-समर्थक से नहीं रहा गया और वह अपने पास बैठे कम्यूनिस्ट से बोला, "मेरा ख्याल है कि कम्यूनिज़म का मूलभूत आशय है अपनी सम्पत्ति को अपने पड़ौसी के साथ बाँट लेना।"

कम्यूनिस्ट ने झुंझला कर कहा— "हर्गिज़ नहीं। कम्यूनिज़म का मूलभूत आशय है पड़ौसी की सम्पत्ति में अपना हिस्सा बंटा लेना।"

*

किसी पार्टी की एक सार्वजनिक सभा हो रही थी। श्रोताओं में कुछ विरोधी पक्ष के व्यक्ति भी बैठे हुए थे। एक विद्वान वक्ता अपना जोशीला भाषण दे रहे थे। उनके बढ़ते हुये प्रभाव से खीझकर विरोधी पक्ष का वृद्ध नेता बोला— "वाह ! तुम भला क्या बोलोगे ! तुम्हारे पूर्वज तो पशु हाँका करते थे। तुम्हें राजनीति का क्या पता !"

इस पर वे सज्जन मुस्कराते हुए बड़ी नम्रता से बोले— "हो सकता है कि वे पशु हाँकते रहे हों। वे तो अब नहीं हैं, किन्तु हाँ, वे पशु अवश्य दिखाई दे रहे हैं, जिनको हमारे पूर्वज हाँका करते थे। वे पशु भी अब बूढ़े हो चुके हैं तथा चाहते हैं कि अब उन्हीं का कोई वंशज उन्हें हाँके।"

*

भाषणकर्त्ता चीन के विषय में भाषण करते करते बोले :—

"............ और आबादी तो चीन की इतनी है कि बस, कुछ पूछिये मत। और इसीलिये वहाँ आदमी की जान की कोई क़ीमत नहीं। फांसी की सज़ा पाये लोग वहाँ कुछ रक़म देकर अपनी जगह पर किसी और को मरने के लिये तैयार कर लेते हैं। और हज़ारों लोग वहां अपना जीवननिर्वाह इसी प्रकार करते हैं।"

*

चुनावों के दिन थे। एक व्यक्ति एक उम्मीदवार के पक्ष में भाषण कर रहे थे। वे उसकी लम्बी-चौड़ी तारीफ करते हुए बोले, "भाइयों, इन्हीं सब कारणों से आपको मेरे उम्मीदवार को मत देने चाहियें। क्या आप कोई और सुझाव देना चाहते हैं?"

यह सुनकर एक व्यक्ति खड़ा हो गया और गला साफ करते हुये बोला, "मेरा एक सुझाव है। वह आपको पसन्द आयगा। यदि हम दोनों मिलकर क्षेत्र का दौरा करें तो मुझे विश्वास है कि हमसे अधिक झूठ बोलने वाला कोई भी जोड़ा संसार में नहीं मिलेगा और सब से बड़ी बात तो यह होगी कि मुझे अपने मुंह से एक शब्द भी कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

*

एक प्रसिद्ध आदमी अपने जन्म-ग्राम में गया। वहाँ उससे अपने पुराने मित्रों और पड़ौसियों की सभा में बोलने को कहा गया। यह दिखाने के लिये कि अपनी सफलता के कारण वह घमण्डी नहीं हो गया है और अभी तक अपने को उन्हीं में से एक समझता है उसने अपना भाषण इस प्रकार आरम्भ किया।

"प्रिय मित्रो, मैं आपको 'देवियो और सज्जनो' कह कर इस लिए संबोधित नहीं कर रहा, क्योंकि मै आप लोगों को खूब अच्छी तरह जानता हूँ।"

*

निगम— "क्यों, गुप्ता, आज भाषण करते समय छात्र सभा के सभापति का मुंह क्यों लटका हुआ था?"

गुप्ता— "क्योंकि उनके गले में सिर्फ एक ही माला पड़ी थी।"

निगम— "तो एक माला क्या कम है?"

गुप्ता— "पर सभापति ने दोस्तों को चार मालाओं के पैसे जो दिये थे।"

*

व्याख्यान के बाद व्याख्यानदाता ने अपने पड़ोस में बैठे व्यक्ति से पूछा— "कहो भाषण कैसा लगा?"

"जैसे समुद्र की तरंग।"

"ओह, तुम्हारा मतलब है कि उसमें अनन्त प्रवाह था, अनन्त विस्तार और अनन्त शक्ति ·········

"नहीं, मेरा मतलब है उन तरंगों में झूलते हुए जी मचलाता था।"

*

सभा में भाषण करते हुए एक भाषणकर्ता ने घंटे भर के लम्बे भाषण के बाद थके हारे श्रोताओं को सम्बोधन करते हुए कहा, "यदि अब भी अपनी बात

आपको नहीं समझा सका तो आप प्रश्न करें, मैं उत्तर दूंगा।"

एक आदमी ने कुछ कहने को अपना हाथ उठाया।

"आपको मेरी बात पूरी तरह समझ नहीं आई ?" भाषणकर्ता ने उसकी ओर देखकर पूछा।

"आप क्या कह रहे थे, आप यही बता दें।'

*

डेवनशायर के ड्यूक अपने मित्र को एक स्वप्न का वर्णन कर रहे थे जिसमें वे हाउस ऑफ लार्ड्स में भाषण दे रहे थे।

मित्र ने बीच में टोका— 'तो इसमें विशेष बात क्या थी ?'

'यही कि जब मैं जागा तो मैं वास्तव में भाषण दे रहा था।'

राजनीतिज्ञ

एक इटालियन अमेरिकन नागरिक बनने के लिये परीक्षा दे रहा था।

'यूनाइटेड स्टेट्स का राष्ट्रपति कौन है ?' उससे पूछा गया।

'आइक।' ठीक उत्तर था।

'क्या तुम भी राष्ट्रपति हो सकते हो ?'

'नहीं, नहीं।'

'क्यों ?'

'क्योंकि मैं खाली नहीं बैठा हूँ।'

*

कॉफी हाउस में राजनीतिज्ञों पर बातचीत चल रही थी। एक ऐसे नेता का प्रसंग आ गया जो बात बात में भड़क उठता था और पार्लियामेंट में दूसरों के भाषण देते समय भी बोल पड़ता था। वह नेता दिन भर में चार वक्तव्य जारी करता था।

उसका प्रसंग छिड़ने पर सिगरेट पी पीकर अपने को दार्शनिक समझने वाला एक कॉफी पियक्कड़ बोला— "उस नेता की बात मैं बताता हूँ। उसे टाइफाइड हो जाये तब भी उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। निमोनिया हो जाने पर भी वह ठीक हो जायेगा। एक बार उसकी कमर भी टूट जाये तो चिन्ता की बात नहीं। लेकिन कहीं उसकी आवाज़ बन्द हो जाये, तो वह ज़िन्दा नहीं रह सकता।"

*

लघु कथा— शंकर के दो लड़के थे। एक तो राजनीति में है, और दूसरे का हाल भी शोचनीय ही है।

*

भारत से भ्रमण के सिलसिले में गये एक धनी व्यक्ति की भेंट लन्दन के एक होटल में वहाँ के किसी सम्पन्न परिवार के व्यक्ति से हो गई। ब्रिटिश नागरिक ने भारतीय यात्री पर ब्रिटिश साम्राज्य का सिक्का जमाना चाहा। बातचीत के दौरान में उसने कहा— 'ब्रिटिश साम्राज्य में सूर्य कभी नहीं डूबता। आप बता सकते हैं क्यों?'

'जी हाँ,' भारतीय यात्री ने बड़ी तत्परता से उत्तर दिया, 'वह इसलिये कि परमात्मा को डर है कि अंधेरे में आप लोगों पर विश्वास कर कहीं वह धोखा न खा जाये।'

*

एक राजनीतिज्ञ से एक बार उसके एक मित्र ने पूछा कि क्या उसे पुस्तकें पसन्द हैं।

उसने उत्तर दिया— "भई, यह तो पुस्तक पर निर्भर है। पुस्तक की जिल्द अच्छी हुई तो मैं उसे उस्तरा तेज करने के काम में लाता हूँ। पतली पुस्तक मेज़ या पलंग के पायों के नीचे लगाने के लिये सर्वश्रेष्ठ वस्तु है। मोटी पुस्तक तंग करने

वाले फेरी वालों को भगाने के लिए सर्वोत्तम हथियार है ।"

*

पार्लियामेंट के चुनावों में एक उम्मीदवार से किसी व्यक्ति ने पूछा— "यदि तुम चुने गये तो क्या करोगे ?"

"सवाल तो यह है," उम्मीदवार ने जवाब दिया, "यदि मै नहीं चुना गया तो क्या करूँगा ?"

*

पत्नी— "यह आपने कैसे कहा कि हमारा रमेश बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ बनेगा ?"

पति— "यह अभी से ऐसी बातें करता है कि जो बहुत बड़ी और सुहावनी लगती हैं पर जिनमें तत्व ज़रा भी नहीं होता ।"

*

चुनाव के सिलसिले में एक सभा हो रही थी, और एक कम्युनिस्ट भाषण दे रहे थे— "सज्जनो, आप जानते हैं मज़दूरों को जगाकर खड़ा करने में सबसे अधिक हाथ किसका है ?"

"उस व्यक्ति का जिसने अलार्म टाइमपीस का आविष्कार किया ।" सुनने वालों की पीछे की पंक्तियों से एक आवाज़ आई ।

*

किसी राजनीतिक दल के नेता ने अपना भाषण समाप्त करने के बाद श्रोताओं से प्रार्थना की कि चुनाव लड़ने के लिये चन्दा दें । कुछ वालंटियर मोहर-बन्द डिब्बे लेकर भीड़ में घुस गये ।

जब वे लोग वापिस आये, तो किसी भी डिब्बे में एक भी पैसा नहीं था । नेता ने कहा, "शुक्र है, मेरे वालंटियर तो मय अपने डिब्बों के सही सलामत लौट आये ।"

*

हास्य अभिनेता ओमप्रकाश का ज़िक्र जब बातचीत में आया तो एक महिला बोल उठी— "मैंने सुना है कि ओमप्रकाश एक साल में इतना कमा लेता है, जितना हमारे लोक सभा के सदस्य पाँच साल में भी नहीं कमा पायेंगे । क्या यह बात सच है ?"

एक जानकार महोदय ने बताया कि यह सच है ।

महिला क्रोधित हो कर बोली— "लेकिन यह जुल्म है, अन्याय है, सरासर अन्याय है । ऐसा नहीं होना चाहिये ।"

और फिर कुछ सोचकर बोली— "और जहाँ तक लोगों को हँसाने की बात

है, लोकसभा के सदस्यों की बातें कभी कभी लोगों को ज़्यादा हँसाती हैं।"

"कभी कभी क्यों, हमेशा कहिये," किसी ने कहा।

*

अमेरिका में चुनाव से पहले एक पार्टी के प्रधान ने अपनी पार्टी के नेताओं की एक सभा में कहा— "मित्रो, हमारे पास डेढ़ करोड़ डालर चन्दे में जमा हैं। अगर हम इसका ठीक उपयोग करे, तो हमें बहुत से वोट मिल सकते हैं।"

"क्यों न हम मिसिसिपी नदी पर एक शानदार पुल बनवा कर नागरिकों को प्रभावित करें," एक नेता बोला।

"लेकिन एक पुल बनवाने में यह सारा धन तो नहीं लगेगा।"
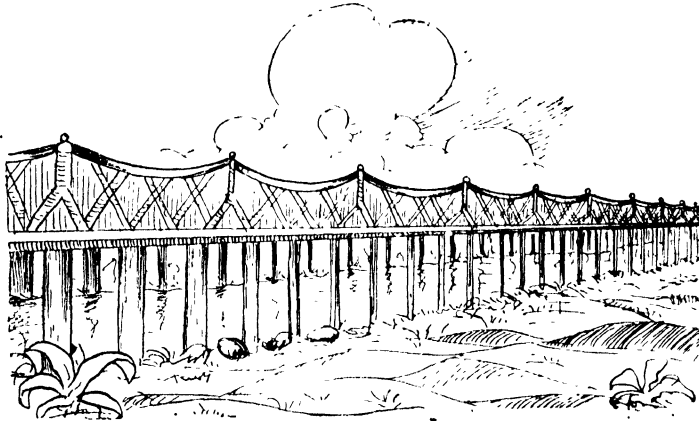
"तो पुल नदी की चौड़ाई में नहीं, लम्बाई में बनवा दो।"

*

पार्लियामेण्ट का नया सदस्य एक पुराने सदस्य से— "चुनाव में जनता से किये गये वादे कहां दबाए जाते हैं ? मैं भी अपने वादे वहीं दबाना चाहता हूँ।"

*

एक गांधीवादी सज्जन अपने घर में बैठे कात रहे थे। उनके एक प्रगतिवादी मित्र सिगरेट का धुआ उड़ाते हुए आ पहुँचे और चरखे को देख कर बोले— "तुम्हारे कातने से क्रांति हो जायगी क्या ?"

कातते ही कातते उन्होंने कहा— "ना, क्रांति मेरे कातने से नहीं, तुम्हारे सिगरेट पीने से होगी।"

*

पार्लियामेण्ट का शिष्टाचार है कि कोई सदस्य पहली बार भाषण देता है

तो दूसरे सदस्य टोकाटाकी नहीं करते। उस भाषण को चलाऊ भाषा में कुमारी स्पीच कहा करते हैं।

केन्द्रीय असेम्बली में श्री एम. सी. राजा अपने पहले ही भाषण में कांग्रेस पर बुरी तरह बरसे, तो उन्हें कई बार टोका गया।

माननीय अध्यक्ष ने कहा — कुमारी स्पीच में सदस्यों को शान्त रहना चाहिये।

श्री श्रीप्रकाश जी बोले— माननीय अध्यक्ष, यह ठीक है कि हम कुमारी के साथ छेड़ छाड़ न करें, पर कुमारी से भी तो कहिये, कि वह हमें छेड़ती न चले।

*

पिछले बड़े चुनाव में आसाम विधान सभा के उम्मीदवार श्री रवीन्द्र नाथ आदित्य ने नामज़दगी के पर्चों की जांच के दौरान में अपने प्रतिद्वन्दी उम्मीदवार श्री वैद्यनाथ मुकर्जी के बारे में आपत्ति उठाई कि इनका नाम मतदाता सूची में एक औरत की तरह लिखा है।

श्री मुकर्जी ने ठहाका मारकर संशोधित सूची पेश करते हुए कहा— "मेरे दोस्त, तुम तो हमेशा औरतों को ही पहले देखते हो।"

*

एक संसदीय सदस्य मोटर में दिल्ली जा रहे थे। राजधानी से कुछ पहले ही आपको एक ग्रामीण व्यक्ति मिल गया। उसे आपने अपनी गाड़ी में बिठा लिया।

थोड़ी देर में ग्रामीण ने पूछा, "आपका पेशा क्या है? आपके पास दवाइयों का डिब्बा नहीं इसलिये आप डाक्टर नहीं हैं। आप अब तक झूठ नहीं बोले इसलिये आप वकील भी नहीं हैं। आप करते क्या हैं?"

संसद के सदस्य बोले— "मैं? मैं राजनीतिज्ञ हूँ।"

ग्रामीण— "यह पेशा थोड़े ही है, यह तो बीमारी है।"

महापुरुष

लायड जार्ज ट्रेन से सफर कर रहे थे, और उनके डिब्बे में उनके अतिरिक्त केवल दो चपल युवतियाँ ही और थीं। लायड जार्ज ने देखा कि वे दोनों भांति-भांति की मुखाकृति बनाकर उनका मज़ाक़ बना रही हैं।

अकस्मात् डिब्बे की बिजली गुल हो गई और तभी लायड जार्ज ने चुम्बन लेने की आवाज़ करते हुए अपनी हथेली को चूम लिया। थोड़ी ही देर में बिजली फिर जल उठी और वह स्टेशन भी आ गया जहाँ लायड जार्ज को उतरना था।

"अच्छा, अलविदा कृपालु महिलाओ! किन्तु क्या मैं यह भी जान सकूँगा

कि बिजली गुल होते ही जो मेरे लिये अत्यधिक आनन्दपूर्ण तथा स्मरणीय घटना घटित हुई उसके लिये आप दोनों में से मुझे किसका कृतज्ञ होना चाहिये ?"

लायड जार्ज ने चलते चलते देखा कि दोनों युवतियाँ एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देख रही हैं।

*

पण्डित मोतीलाल नेहरू वियना के एक डाक्टर को दुभाषिये द्वारा अपने रोग का इतिहास सुना रहे थे।

पण्डित जी बातचीत के मूड में थे और डाक्टर जल्दी में। १–२ बार उसने पण्डित जी से संक्षेप में अपनी गाथा कहने की प्रार्थना की, पर मोतीलाल नेहरू तो अपनी राय के बादशाह थे। वे अपने ही ढंग पर अपनी बात कहते रहे।

हल्की-सी झल्लाहट के मूड में डाक्टर ने कहा— "ईश्वर के लिए महाराज, अपनी इस कहानी को रोक कर यह बताइये कि इस समय आप किस रोग से पीडित हैं ?"

"इस समय ?" पण्डित जी ने कुढ़ कर पूछा।

"जी हाँ, इस समय !" ऊब कर डाक्टर ने कहा।
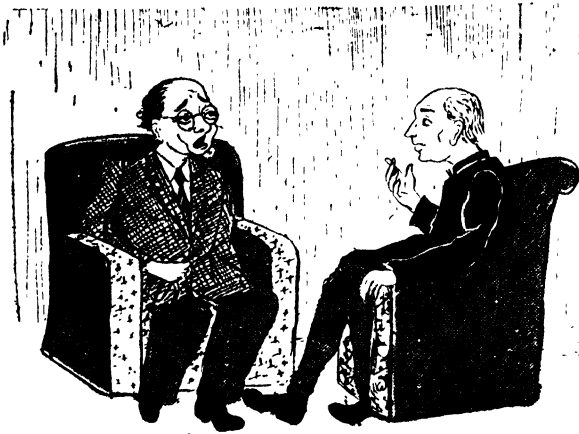
नहले पर दहला सा मारते हुए पण्डित जी बोले— "महाशय, इस समय तो मैं एक डाक्टर की जल्दबाज़ी से पीडित हूँ।"

*

लन्दन में गोल मेज़ परिषद् के समय एक हिन्दू छात्र अपनी अमरीकन धर्मपत्नी को साथ लेकर गाँधी जी से मिलने आया। गाँधी जी ने एक दृष्टि उसकी पत्नी पर डाली और युवक से प्रश्न किया, "क्या तुम अपनी धर्मपत्नी को भारत

ने जाने का विचार करते हो ?"

उसके स्वीकारात्मक उत्तर में कुछ घबराहट के चिह्न स्पष्ट थे। परन्तु उसकी अमरीकन दुल्हन निष्कपट उल्लास और उमंग से भरी थी।

"महात्मा जी, आप अमरीका कब जा रहे है ?" उसने पूछा।

"अभी नहीं ·· ····"

"वहाँ तो आपके लिये सब पागल हो रहे हैं।"

महात्मा जी ने आँखें टिमकारते हुए कहा— "मेरे जानकार मित्रों का तो कहना है कि मुझे वहाँ वे चिड़ियाघर में रख देंगे।"

❀

आगरा में काँग्रेस महासमिति का अधिवेशन हुआ, तो कहते हैं पं० जवाहरलाल नेहरू एक दिन समय निकाल कर वहाँ का प्रसिद्ध पागलखाना देखने गये।

पागलखाने में एक पागल ने उनसे पूछा— "आप कौन हैं ?"

"मै जवाहरलाल नेहरू हूँ।" उत्तर मिला तो ज़ोर से हँस कर पागल ने कहा— "तब तो तुम्हें कम से कम एक साल लगेगा।"

ज़रा चकराकर नेहरू जी ने पूछा— "किस बात में लगेगा एक साल ?"

गम्भीरता से उसने उत्तर दिया— "कोई दो साल पहले मैं यहाँ आया तो महात्मा गाँधी था।"

*

एक बार संगीत में रुचि रखने वाला एक महत्वाकांक्षी युवक सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री मोज़र्ट के यहाँ गया और उनसे पूछने लगा कि सिम्फनीज़ (लम्बे लम्बे गीतों) के नोटेशन कैसे लिखे जाते हैं।

मोज़र्ट ने कहा— अभी तुम लड़के हो। पहले बैलट (छोटे गीत) के नोटेशन लिखो। जब उसमें सफल हो जाओ तब आगे बढ़ना।

'क्यों, आप तो दस वर्ष के थे जब सिम्फनीज़ के नोटेशन लिखने लगे थे।'

'हाँ, ठीक कहते हो। पर मैं किसी से पूछने नहीं गया था।'

*

बापू पांच रुपये लेकर अपने हस्ताक्षर दिया करते थे। एक दिन उनके पास एक अमरीकन स्त्री उनके हस्ताक्षर कराने के लिये आई। उसने बापू को पाँच रुपये का नोट दिया। बापू ने मुस्कराते हुए कहा— बस! तुमने मेरा मूल्य पाँच रुपये ही आंका?

अमरीकन महिला कुछ लज्जित हुई। उसने बापू को पाँच रुपये और दिये। बापू ने ज़ोर से हँसते हुए कहा— ओहो! मैं समझ गया। तुम पाँच रुपये से आगे नहीं बढ़ सकती।

*

विश्वविख्यात चरित्र-अभिनेता चार्ल्स लॉटन की कार्यव्यस्तता की एक घटना बड़ी प्रसिद्ध है जो यह बतलाती है कि आजकल कामकाजी लोग अर्थ-सञ्चय में इतने व्यग्र रहते हैं कि अपनी सन्तान को भी नहीं पहचान पाते। लॉटन एक बार अपने एक मित्र के साथ घूमने जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने एक नर्स को एक बच्चे को गाड़ी में ले जाते देखकर कहा— "बच्चा सुन्दर है, है न?"

"हाँ! इसकी उम्र तुम्हारे बच्चे के बराबर ही होगी।" मित्र ने कहा।

लॉटन ने कुछ क्षण उस ओर देखकर फिर स्तम्भित होकर कहा— "मगर यह तो कमाल है भई! यह बच्चा तो मेरा ही है।"

"इतनी देर में पहचाना अपने बच्चे को आपने?"

"बच्चे को नहीं, नर्स को पहचाना है।"

*

स्व० दीनबन्धु एण्ड्रयूज़ एकदम बालकों की तरह सरल थे। उनका चश्मा अक्सर ही खो जाया करता था। एक बार जब गाँधी जी कलकत्ते की स्पेशल

कांग्रेस के बाद शान्ति निकेतन पधारे थे, नियमानुसार मि० एण्ड्रयूज़ का चश्मा खो गया। घबराते हुए वे गांधीजी के कमरे में आये और बोले, "मैं आप से बात करने आया था। कहीं मेरा चश्मा तो नहीं रह गया ?"

मौलाना शौकतअली के चश्मे का घर वहीं रखा हुआ था। गांधीजी ने मि० एण्ड्रयूज़ से कहा— "देखिये, यह तो नहीं है ?" मि० एण्ड्रयूज़ ने चश्मा निकाल कर लगा लिया और कहा— 'हाँ, बस यही है।" फिर आपने उस चश्मे के घर में रखा हुआ एक तार देखा, जो मौलाना के नाम था। तब आप बोले— "यह तो
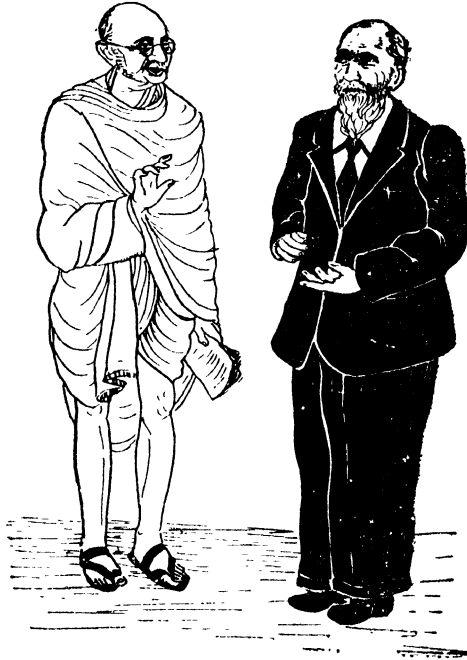
मौलाना शौकतअली का होगा।" गांधीजी और पूज्य कस्तूरबा इत्यादि जो भी व्यक्ति वहाँ उपस्थित थे, खूब खिलखिला कर हँसने लगे। फिर बा ने एक चश्मे का घर देते हुए कहा — "देखो, इसमें तो नहीं है तुम्हारा चश्मा ?"

श्री एण्ड्रयूज़ ने चश्मे का घर खोला तो उसमें कोई चश्मा था ही नहीं। वह खाली था। श्री एण्ड्रयूज़ लज्जित हो गये, और फिर अट्टहास हुआ। गाँधीजी को खूब हँसते हुए देखकर मि० एण्ड्रयूज़ बोले, "मेरा तो चश्मा खो गया है और आप हँस रहे हैं। इसमें हँसने की कौन-सी बात है ?" गांधीजी ने फिर हँस कर कहा— "चश्मा तुम्हारा खो गया है, हमारा नहीं। हमारे लिये तो यह हँसी

ही की बात है।"

*

बर्नर्ड शॉ बीमार थे। उन्होंने एक डाक्टर को बुला भेजा। डाक्टर बहुत मोटा था। ह्वाइट हॉल कोर्ट का, जिसमें शॉ रहते थे, लिफ़्ट ख़राब था। सो शॉ के कमरे तक पहुँचते पहुँचते डाक्टर खूब हांप गया।

शॉ ने डाक्टर को सब से आरामदेह कुर्सी पर बैठने को कहा और बिस्तर से उठकर थकान दूर करने के लिये एक गोली दी। 'यह तुम्हें फौरन आराम पहुँचायगी। लेकिन तुम्हारे कष्ट का असली कारण अधिक भोजन है। मांस खाना बन्द कर दो और साग और फल खाओ। मैं तुम से अवस्था में दुगना बड़ा हूँ, फिर भी सौगुना चुस्त हूँ। तुमने देखा कि मै किस तेज़ी से खाट से उठ बैठा हूँ।'

डाक्टर ने शॉ की चुस्ती की प्रशंसा की। फिर शॉ ने डाक्टर से पूछा कि क्या वह नृत्य कर सकता है। डाक्टर नृत्य से अनभिज्ञ था। तब शॉ ने नृत्य का संगीत रेडियो पर खोल दिया और नाचने लगे। उन्होंने डाक्टर को सलाह दी—'प्रतिदिन कम से कम पन्द्रह मिनट तक नाचा करो, तब तुम मेरे समान पतले और चुस्त हो जाओगे। तुम डाक्टर लोग ऐसी सलाह बहुत देते हो जो मरीज़ के अनुपयुक्त होती है। तुम एक डाकिये से अधिक घूमने फिरने को कहोगे जब कि घूमने फिरने में ही वह अपनी शक्ति व्यय करता है। ऐसे ही तुम मुझे लिखने को मना करोगे जब मैं लिखने से ही स्वस्थ रहता हूँ। अच्छा, अब यह अनुभवी सलाह देने के तुम मुझे पाँच शिलिंग दो।'

डाक्टर मुस्कराया, 'हाँ, हाँ! उन्हें काट कर आप मुझे २ पौंड दे दें।'

शॉ ने पूछा, 'ये क्यों?'

'क्योंकि मैंने आपको अच्छा कर दिया है। मुझे मरीज समझकर आप अपने कष्ट भूल गये। आप ने नृत्य किया और अपने को चुस्त बतलाया।'

शॉ खूब खुलकर हँसे।

मित्र

एक मियाँ जी अपने किसी बीमार दोस्त को देखने गये। जाकर उन्होंने हाल पूछा। बीमार दोस्त बोला— "तीन चार घंटे हुए बुखार तो टूट गया है। पर कमर में दर्द बहुत है।"

मियाँ जी— घबराइये नहीं, खुदा ने चाहा तो कमर भी टूट जायगी।"

*

दो आदमियों में बड़ी दोस्ती थी। एक बार एक मित्र दूसरे मित्र से अलग

होकर परदेश जाने लगा। जाते समय उसने मित्र से कहा— "मैं तो परदेश जा रहा हूँ। मुझे अपनी अंगूठी बतौर निशानी के दे दो जिससे जब भी मैं अंगूठी देखूं, तभी तुम्हारी याद आ जाये।"

मित्र ने जवाब दिया— "अरे भई, अंगूठी की कोई ज़रूरत नहीं है। जब तुम्हें अपनी उँगली खाली दिखाई देगी तो तुम्हें मेरी याद आ जायगी कि मित्र से अंगूठी माँगी थी, परन्तु उसने नहीं दी।"

*

एक मित्र— इस बार मुझे यदि आप पाँच रुपये दे देंगे तो मैं जन्म भर आपका ऋणी बना रहूँगा।

दूसरा मित्र— इसीलिये तो मैं नहीं देता।

*

केतकी— हाँ, हाँ! मैं शादी करूँगी। मगर मैं चाहती हूँ कि मुझे ऐसा मर्द मिले कि जिसके बिना मैं एक सायत भी न रह सकूं।

चपला— मगर मेरी प्यारी केतकी, ऐसा आदमी मिलना मुश्किल है जिसके साथ तुम रह सको।

*

नगर का सबसे ग़रीब आदमी मरा तो नगर के सबसे अमीर आदमी को उसकी मृत्यु पर बड़ा खेद हुआ। लोगों ने अमीर से पूछा कि आप उसका बहुत ही आदर करते होंगे जो आपको इतना दुःख हो रहा है।

"हाँ, मैं उसका बहुत आदर करता था," अमीर आदमी ने उत्तर दिया। "वह मेरा सबसे अच्छा मित्र था। वह भूखा मर गया पर उसने मुझसे कभी एक धेला भी उधार नहीं माँगा।"

*

मृत्यु शैया पर एक आदमी पास बैठे हुए अपने मित्र से बोला— "अब अन्तिम समय मैं अपने सब अपराधों को स्वीकार कर लेता हूँ, ताकि मेरी आत्मा को शान्ति मिले। मैंने अपने मालिक की दुकान से एक हज़ार रुपये चुराये थे। दुकान का सामान चोरी चोरी बेचकर दो हज़ार रुपये मैंने अपने पास रखे थे। और तुम्हारी पत्नी को तुम्हारे विरुद्ध भड़का कर मैंने ही तुम दोनों की लड़ाई करवाई थी।"

"भूल जाओ उन बातों को। मैंने भी तो तुम्हें जहर देकर इस स्थिति को पहुँचा दिया है।" मित्र ने इतमिनान से उत्तर दिया।

*

'तुम्हारी तबियत अच्छी नहीं मालूम होती।'

'मैं रात को एक मिनट नहीं सो सका। कारण यह है कि अगले मंगलवार तक यदि मुझे १०००० रुपये नहीं मिले तो मुझे अपने को दिवालिया घोषित करना पड़ेगा।'

'तो तुम्हें मेरे पास आना चाहिये था।'

'क्यों, क्या तुम मुझे इतना रुपया दे सकते हो ?'

'रुपया तो नहीं, पर मेरे पास नींद लाने की एक बढ़िया दवाई है।'

*

प्राचीन रोम के एक योद्धा की बात है। वह लड़ाई पर जा रहा था। अपनी युवा और सुन्दर पत्नी की सुरक्षा की आशंका के कारण उसने उसे कवच में जकड़ दिया और अपने घनिष्टतम मित्र को बुलाकर कवच की चाबी उसके हवाले कर दी।

"मेरे मित्र," उसने कहा, "यदि मैं छः महीने तक नहीं लौटूं तो तुम इस चाबी को काम में लाना। यह चाबी मैं तुम्हें और केवल तुम्हें सौंप रहा हूँ।'

तत्पश्चात् वह घोड़े पर चढ़ कर युद्ध के लिये रवाना हो गया।

अभी वह मुश्किल से १० मील गया होगा कि उसने पीछे की ओर धूल का बादल उड़ता हुआ देखा। उसका मित्र तेज़ी से घोड़ा दौड़ाता चला आ रहा था।

"ठहरो," उसने पुकार कर कहा, "तुमने मुझे ग़लत चाबी दी है।"

*

हरि के दफ्तर में उससे मिलने एक नवयुवक आया। हरि उससे परिचित नहीं था, इसलिये उसने बड़े ही नम्र स्वर में आगन्तुक से कहा, "मैं आपका परिचय जान सकता हूँ ?"

नवागंतुक ने कहा, "जी, मुझे शामलाल जी ने भेजा है।'

"शामलाल शर्मा ?' हरि ने पूछा।

"जी नहीं, शामलाल बंसल, जो कालिज में आपके साथ पढ़ते थे," उत्तर मिला।

"ओह ! ठीक है। कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?" हरि ने पूछा।

नवागन्तुक बोला, "मैंने सुना है, आपके दफ्तर में कुछ जगहें खाली हैं। आप मेरी कुछ सहायता कर सकते हैं ?"

हरि ने टका सा उत्तर दिया, "क्षमा कीजिये, यहां इस समय कोई जगह खाली नहीं है।"

नवागंतुक चला गया।

कुछ दिन बाद हरि को शामलाल मिला और मिलते ही गुस्से से बोला, "तुम्हारा दिमाग इतनी जल्दी चढ़ गया है; मुझे तुमसे ऐसी आशा नही थी कि तुम मेरा इतना अनादर करोगे।"

हरि ने नम्र स्वर में कहा, "दोस्त ! तुम कुछ समझने की भी कोशिश करो। दिमाग से ....

शामलाल ने बीच में टोककर कहा, "तुमने मेरे आदमी को नौकरी नही दिलवाई। अब याद रखो, तुम्हारा यही ढंग रहा तो भविष्य में तुम्हारे पास नौकरी के लिये मैं कोई आदमी नहीं भेजूंगा।"

*

रामदास के नाम दो लाख की लॉटरी आई। खबर सुनकर रामदास खुशी के मारे एकदम मर न जाये, इस डर से उसके दोस्त मोहन ने इस खबर को धीरे धीरे सुनाने का फैसला किया। उसने कहा—'दोस्त ! कभी लाख रुपये की रक़म लॉटरी में तुम्हारे नाम आ जाये तो क्या करोगे ?'

लापरवाही से रामदास ने उत्तर दिया, "इसमे क्या पूछना है ? आधी तुम्हारे नाम कर दूगा।"

यह सुनते ही बेचारा मोहन दिल की धड़कन रुकने से तुरन्त मर गया।

*

'यदि तुम्हें पागल कुत्ता काट ले तो तुम पहला काम क्या करोगे ?'

'कागज़ और कलम दवात लेकर बैठ जाऊंगा।'

'वसीयत लिखने के लिये ?'

'नहीं, उन व्यक्तियों की सूची बनाने के लिये जिन्हें मै काटूंगा।'

*

"मेरे मित्र मुझे भूखों मरता नहीं देख सकते।"

"तो क्या करते हैं वे ?"

"वे मुझसे अपनी आँखें बन्द करके बातें करते हैं।"

*

दो मित्र कहीं जा रहे थे। एक मित्र दूसरे से बोला, "यार, कहीं मेरे ऊपर कोई विपत्ति आ जाये, तो क्या तुम उसमें हिस्सा लेकर मेरी मदद करोगे ?'

मित्र ने जवाब दिया, "नहीं भाई, दूसरे की चीज़ में मैं कभी हिस्सा नहीं बँटाता।"

*

एक व्यक्ति ने अपने मित्र से कहा— "मैं किसी की भी मोटर में नहीं चढ़ सकता।"

मित्र ने पूछा— "क्यों ?"

"क्योंकि जिसकी मोटर मेरी मोटर से खराब है उसकी मोटर में बैठ कर मेरी हड्डियाँ टूटेंगी और जिसकी मोटर अच्छी है उसमें बैठकर मेरा दिल टूटेगा।"

*

कुछ मित्रों में खाना खाने की प्रतियोगिता आरम्भ हो गई। देखना यह था कि कौन सब से अधिक खाना खाता है। अन्त में एक व्यक्ति विजयी रहा। उसने २० चपातियाँ, १६ लड्डू, २ सेर सब्जी खाकर सब को मात दे दी।

सभी मित्र उसकी प्रशंसा करने लगे परन्तु वह अपनी प्रशंसा सुन कर भी अधिक प्रसन्न नहीं नज़र आ रहा था। मित्रों में से एक ने उससे उसकी चिन्ता का कारण पूछा तो वह बोला, "मैं इस चिन्ता में हूँ कि अगर मेरी पत्नी को यह मालूम हो गया कि मैंने यहाँ खाना खा लिया है तो वह मेरे लिये खाना नहीं पकायगी।"

*

एक हवाई जहाज़ चलाने वाले ने कुछ हवाई करतब दिखाने के बाद, अपने साथ बैठे हुए अपने मित्र से कहा— नीचे के आधे लोग समझते रहे होंगे कि हमारा जहाज़ दुर्घटना का शिकार हो रहा है।

उसके मित्र ने नम्र स्वर में कहा— ऊपर के आधे लोगों का भी यही

ख़्याल था।

*

दो मित्र एक कमरे में सो रहे थे। आधी रात बीते उठ कर एक मित्र परेशान सा कमरे में चक्कर लगाने लगा। दूसरे की आँखें खुल गयीं। उसने पूछा — "इस वक्त चक्कर क्यों लगा रहे हो ?"

पहले ने बताया— "मुझे कल महाजन के १०० रुपये चुकाने हैं किन्तु मेरे पास १०० पैसे भी नहीं हैं।"

"तो तुम क्यों चक्कर लगा रहे हो ? आराम से खर्राटे लो। चक्कर लगायगा महाजन।"

*

"तुमने मेरे पत्र का उत्तर क्यों नहीं दिया ?"

"मुझे तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला और फिर जो कुछ तुमने उसमे लिखा, वह मुझे पसन्द भी नहीं था।"

*

मोहन पैर फिसल जाने से कीचड़ में गिर पड़ा। सोहन हँसकर बोला, "वाह क्या कहना है! कीचड़ में खूब गिरे।"

मोहन— "अजी नहीं, कीचड़ में क्यों गिरूँगा? मै तो अपने पैर की चिकनाई आज़मा रहा था।"

*

"रमेश, आज तुम्हें अपनी साइकिल तो नहीं चाहिये ?"

"चाहिये क्यों नहीं ? अभी मुझे एक काम जाना है।"

"अच्छा, तो मुझे अपनी इतिहास की किताब दे दो। मैं वही लेने आया था।"

*

राकेश— "क्यों, क्या हुआ ? तुम बड़े चिन्तित दिखाई दे रहे हो।"

महेश— "क्या करूँ दोस्त, बड़ी मुसीबत में हूँ। मेरा चश्मा खो गया है, और जब तक चश्मा मिल न जाये मैं उसे अच्छी तरह ढूँढ भी नहीं सकता।"

*

एक आदमी को मज़ाक़ करने की आदत थी। उसने अपने एक मित्र को बैरंग चिट्ठी लिखी, जिसमें लिखा था— "मैं बिल्कुल ठीक हूँ। चिन्ता मत करना।"

कुछ दिन बाद उस आदमी को एक बैरंग पार्सल मिला जिसे छुड़ाने के लिये उसे कई रुपये देने पड़े। यह पार्सल उसके मित्र ने भेजा था। पार्सल खोलने

पर उसमें एक भारी पत्थर मिला। उस पत्थर पर एक चिट चिपकी थी, जिस पर लिखा था— "तुम्हारे ठीक होने की बात से मेरे मन पर से इतना भारी बोझ उतर गया है।"

*

दो आवारा लड़के आपस में बात कर रहे थे। "मै बारह वर्ष का भी नहीं हुआ था कि मैंने उकता कर स्कूल छोड़ दिया। बात यह हुई कि मै भूगोल के अलावा और सब विषयों में फेल था।"

"तो तुम भूगोल में ही कैसे पास हो गये? मै तो सब विषयों में फेल था।"

"मैंने भूगोल लिया जो नहीं था।"

*

वे बहुत दिनों बाद मिले थे।

"हाँ! तुम कहते हो कि पिछले सप्ताह तुम उसी शहर में थे, जहाँ मै रहती हूँ।" श्यामा बोली।

"हाँ।"

"वहाँ तुम्हें मेरी याद आई या नहीं?"

"हाँ, आई तो थी," कृष्ण ने उत्तर दिया, "पर मैं सोच ही नहीं पा रहा था कि यहाँ मेरी जान पहचान की कौन सी लड़की रहती है।"

*

एक मित्र दूसरे मित्र से— "जानते हो इस सूट का कपड़ा मैंने दस दुकानें देखने के बाद पसन्द किया था?"

दूसरा मित्र— "हो सकता है कि केवल दसवां दुकानदार ही तुम्हें उधार देने को राज़ी हुआ हो।"

*

किशोर— "अहमद ने कहा था कि मैं कुदज़हन हूँ।"

कैलाश— "इसका अर्थ क्या हुआ?"

किशोर— "पता नहीं, पर मैंने उसे दो धूंसे तो जमा ही दिये।"

*

"तो उसने तुमको पीछे के दरवाज़े से खदेड़ा? अच्छा फिर क्या हुआ?"

"मैंने उससे कहा कि मै एक प्रतिष्ठित परिवार का हूँ, ऐसा वैसा आदमी नहीं हूँ।"

"फिर क्या हुआ?"

"उसने मुझसे क्षमा माँगी, अन्दर बुलाया, फिर मुख्य द्वार से बाहर निकाला।"

*

'दिनेश जैसे मित्र से बचकर रहना ही अच्छा है।'

'क्यों, क्या बात हुई ?'

'अजी, उसने मौक़े पर मुझे बड़ा धोखा दिया।'

'कैसे ?'

'एक समय था जब मेरी पत्नी श्रीमती दिनेश होने जा रही थीं पर वह साफ निकल भागा।'

*

"तुम्हारा बच्चा कैसे है अब ?"

"ठीक हैं, दो महीने हुये उसने पैदल चलना शुरू कर दिया था।"

"अच्छा ! तब तो वह अब तक बहुत दूर पहुँच गया होगा।"

*

कामेश्वर की साइकिल टूट गई थी और उसे किसी आवश्यक काम से जाना था। उसने सोचा अपने मित्र नरेश्वर की साइकिल माँग ले। रास्ते में उसने मन ही मन पूछा— "वह मुझे अपनी साइकिल दे भी देगा ?" फिर कुछ देर बाद उसने सोचा कि नरेश्वर अपनी साइकिल शायद ही दे। जब वह उसके घर से

थोड़ी दूर रह गया, तो उसने मन में कहा— वह अपनी साइकिल मुझे नहीं देगा। नरेश्वर के घर के किवाड़ खटखटाते हुए उसने निश्चय कर लिया कि नरेश्वर उसे अपनी साइकिल कभी नहीं देगा।

किवाड़ खोल कर नरेश्वर ने पूछा— "कहो, कैसे आना हुआ ?"

"कुछ नहीं, मैं बस यही कहने आया था कि मैं तो तुम्हारी साइकिल पर थूकता भी नहीं।"

*

"क्या रुपये की तंगी का असर तुम पर भी पड़ा है ?"

"हाँ, पड़ा तो है, पहले तो मेरी नौकरी छूट गई और मुझे अपना मकान छोड़ना पड़ा। अपने बच्चों को मैंने अनाथालय भेज दिया। मेरी पत्नी अपने मायके चली गई। अपने कुत्तों को मैंने गोली मार दी।"

"यह तो बड़ा बुरा रहा।"

"जी हाँ। अगर हालत यों ही बिगड़ती चली गई तो मुझे अपनी कार भी बेचनी पड़ेगी।"

*

राज— पाँच साल हुए। जब से मैंने यह कार खरीदी है एक पैसा मरम्मत का नहीं दिया।

भारती— हाँ, जहाँ गाड़ी बनती है वह भी यही कह रहा था।

*

लड़ाई में एक व्यक्ति का पुत्र मारा गया। उसके मित्र ने पूछा— "गोली कहाँ लगी थी ?"

"आँख के नीचे।"

"ग़नीमत हुई, आंख बच गई।"

*

लक्ष्मण अपना गधा बेचना चाहता था। उसने अपने मित्र को पत्र लिखा— "मित्र यदि तुम्हें अच्छे गधे की आवश्यकता पड़े तो मुझे याद करना।"

पड़ौसी

एक भद्दी, बदशक्ल और बदमिज़ाज औरत एक दिन अपनी पड़ौसिन से बोली— "मेरा पति बड़ा ही भाग्यवान है। लड़कपन में कुएँ में गिरा, उसमें से जिन्दा निकल आया। जवानी में घोड़े पर से गिरा, उसे कुछ नहीं हुआ। और हाल ही में दरिया में उसकी नाव उलट गई और भाग्य की बलिहारी कि डूबने से बच गया।"

पड़ौसिन ने हां में हां मिलाकर कहा— "क्यों नहीं, भाग्य की बलिहारी तो है ही। मगर सबसे अचरज की बात तो मुझे यह मालूम होती है कि तुम्हारे साथ शादी हुए बीस बरस हो चुके और अब भी वह जिन्दा है।"

*

एक औरत ने हाल ही में सौ रुपये की एक भैंस मंगाई थी। संयोग से वह भैंस बीमार हो गई। बहुत उपाय किये गये लेकिन वह अच्छी न हुई और एक दिन मर गई।

इस स्त्री के पड़ौस में एक और स्त्री रहती थी। जब उसने अपनी पड़ौसिन की भैंस के मर जाने का समाचार सुना तो बड़े रंज के साथ अपनी पड़ौसिन के घर जाकर कहने लगी— "बहन, तुम्हारी काली भैंस मर गई और हमारी काली हँडिया टूट गई। हमें तुम्हें काली चीज़ नहीं पड़ती। हम तुम दोनों बराबर हैं।"

*

खुदाबक्स और कल्लू पास ही पास रहा करते थे। दोनों में बहुत दिनों से लड़ाई चल रही थी। कल्लू के पास एक बैल था। खुदाबक्स उसके बैल को देख जला करता था। वह अक्सर कहा करता था— "ऐ खुदा, मेरे दुश्मन कल्लू का बैल मर जाए।"

संयोग से कल्लू का बैल तो न मरा, खुदाबक्स का घोड़ा मर गया। यह देखकर खुदाबक्स को बड़ा ताज्जुब हुआ। वह कहने लगा— "ऐ खुदा, सभी लोग तुझे परवरदिगार कहते हैं। तू सभी कुछ जानने वाला है। तुझसे कुछ भी छिपा नहीं है। लेकिन मैं तो देखता हूँ कि तुझे बैल और घोड़े की भी पहचान नहीं है।"

*

पड़ोसी— मिस्टर बैजनाथ, धन्यवाद!

बैजनाथ— धन्यवाद की कोई ज़रूरत नहीं।

पड़ौसी— वाह साहब, बड़ी ज़रूरत है।

बैजनाथ— क्यों, मैंने ऐसा क्या काम किया है?

पड़ौसी— बड़ी बहादुरी का काम किया है। आपको धन्यवाद लेना ही पड़ेगा।

बैजनाथ— अच्छा भाई, स्वीकृत है। पर वह बहादुरी का काम तो बताओ?

पड़ौसी— "क्यों, क्या आप कल अपनी पत्नी को धमाधम नहीं पीट रहे थे ?

*

एक महिला अपनी पड़ौसिन से कह रही थी, "हमें जल्दी ही अच्छा पड़ौसी मिल जायगा।"

"हमें भी मिल जायगा।"
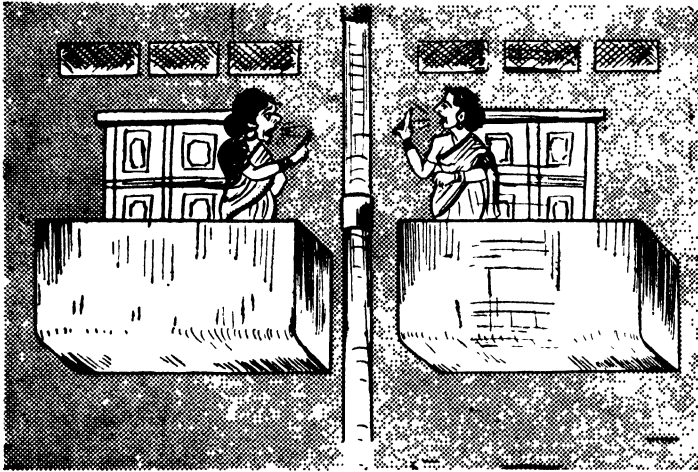
"क्यों, तुम भी यहाँ से जा रही हो ?"

'नहीं, हम यहीं रहेंगे।"

*

ग्राहक— मुझे 'सौन्दर्य' की तीन प्रतियाँ दे दीजिये।

दुकानदार— तीन प्रतियों का आप क्या करेंगे ?

ग्राहक— दो मेरे पड़ोसी हैं न, मेरे घर पहुँचते ही माँगने आयेंगे।

*

फेरी वाला— "बीवी जी, आपको बिजली की इस्तरी लेनी है ?"

घर मालकिन— "नहीं, लेकिन पड़ौसिन को दे दो। उनकी पुरानी इस्तरी ख़राब हो गई है। हम तो उन्हीं से मांग कर काम चला लेते हैं।"

*

पुराने सामान की दुकान पर एक अनाड़ी संगीतज्ञ ने अपना बैंजो दिखाते हुए पूछा— "इसका क्या दोगे ?"

उस टूटे फूटे बैंजो को देखकर रद्दी वाला बोला— "एक रुपया।"

"बस! इसे बजाना बन्द करने के लिये पाँच रुपये तो मेरे पड़ौसी ही दे रहे हैं।"

ꕥ

"तो तुम्हारी पड़ौसी से लड़ाई हो गई है?"

"हाँ। एक दिन सुबह ही सुबह मेरी पत्नी मशीन पर सिलाई कर रही थी। मेरे पड़ौसी ने मशीन के तेल की एक शीशी भिजवाई कि मशीन में डाल लें ताकि शोर कुछ कम हो।"

"फिर क्या हुआ?"

"मैंने वह शीशी ज्यों-की-त्यों वापिस करवा दी और कहलवा दिया कि इसे वह अपने रेडियो में डाल दें। रात को ग्यारह बजे तक वह बोलता रहता है तो नींद हराम हो जाती है।"

*

सदस्यों की यह आदत थी कि अपने पड़ौसियों के बारे में क्लब में बैठकर नुक़्ताचीनी किया करते थे। उस दिन भटनागर परिवार के बारे में, जो कुछ दिन हुए मौहल्ले में आया था, बातें हो रही थीं।

रामनाथ बोला-- भटनागर परिवार तो निश्चय ही लेखक परिवार है। पुत्री कविता करती है जिन्हें कोई नहीं छापता। पुत्र नाटक लिखता है जिन्हें कोई नहीं खेलता। पत्नी उपन्यास घड़ती है जिन्हें कोई नहीं पढ़ता।

बूढ़े रंगीलाल ने पूछा— और पिताजी!

'ओह, वे। वे चैक लिखते हैं जिन्हें कोई नहीं भुनाता।'

भिखारी

एक फ़क़ीर भीख माँगता हुआ एक सेठ के दरवाज़े पर गया। सेठजी बाहर ही खड़े थे। फ़क़ीर बोला-- "हुज़ूर, भूखा हूँ, कुछ खाने को मिल जाए।"

सेठजी— "जाओ, घर पर सेठानी नहीं है।"

फ़क़ीर-- "हुज़ूर, आप यह क्या कह रहे हैं? मैं सेठानी थोड़ी माँग रहा हूँ। मैं तो भूखा हूँ, खाने को मांगता हूँ।

*

एक भिखारी किसी आदमी के दरवाज़े गया। उस को बाहर खड़ा देख वह बोला— "सरकार, कुछ पुण्य हो जाए।"

वह आदमी बोला— "जाओ, इस वक्त घर पर कोई आदमी नहीं है।',

भिखारी— "ख़ैर, थोड़ी देर के लिये आप ही आदमी बन जाइये।"

*

एक आदमी ने एक फ़कीर से कहा— "अरे, तू जो दर दर माँगता फिरता है उसके बदले ऐसा क्यों नहीं करता कि कहीं मेहनत मज़दूरी करके ही अपना पेट पाल ले।"

फ़कीर— "क्या मै मेहनत नहीं करता? दिन भर तो मारा मारा फिरता हूँ और दर दर चिल्लाता हूँ, तब कहीं जा कर कुछ मिलता है। बिना घूमे मुझे कौन देता है?"

*

एक भिखारी भीख मांगता हुआ एक सेठ जी के पास पहुँचा और हाथ जोड़कर पैसा माँगने लगा। सेठजी ने उसको ऊपर से नीचे तक देख कर कहा— "क्या तुम को पैसा माँगते शर्म नहीं आती?"

भिखारी ने कहा— "शर्म क्यों नहीं आती। मगर करूँ क्या? एक दफ़ा बिना माँगे ले लिया था तो छः महीने जेल की हवा खानी पड़ी।"

*

सड़क पर एक बाबू साहब बड़े सपाटे से जा रहे थे। इतने में एक भिखारी
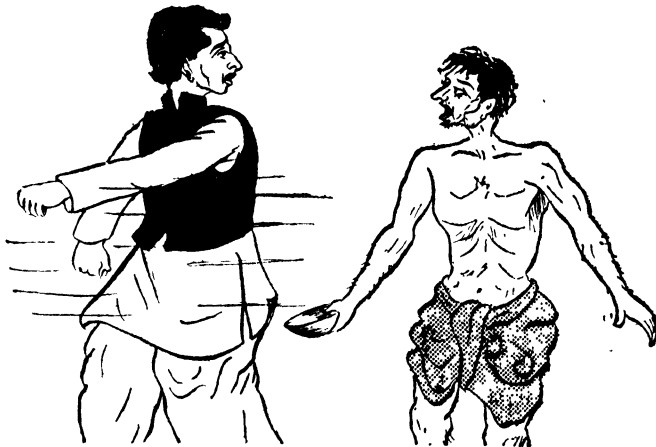
ने उनसे पूछा— "आपका बटुवा तो नहीं गुम हो गया?"

बाबू साहब ने अपनी जेब में हाथ डाल कर देखा और बोले— "नहीं तो।"

भिखारी— "तो कृपा कर मुझे कुछ दान दे दीजिए।"

*

भिखारी— बाबू, एक पैसा! ईश्वर तुम्हें बहुत देगा।

बाबू— क्यों? तुम्हारा कर्ज़ वही अदा करता है?

भिखारी— जी हाँ, तभी तो उसके नाम पर माँगता हूँ।

*

"लूले पति को ठेले में डालकर दिन भर खींचते हुए भीख माँगना तो वाक़ई बड़ी मुसीबत का काम है।" इकन्नी दान देते हुए एक व्यक्ति ने कहा।

"जी, हाँ। लेकिन हम बारी बारी से ऐसा करते हैं। सुबह को मेरा पति मुझे ठेले में डाले घुमाता है, शाम को मै उसे।"

*

"तुम भीख माँग माँग कर अपना पेट पालते हो। कहीं काम क्यों नहीं करते?"

"काम किस लिए? क्या अपने जैसे बेकार आदमी का पेट पालने के लिए?"

*

स्त्री— (एक लंगड़े फ़कीर से) ले लंगड़े, एक पैसा ले। तेरे लंगड़ेपन पर मुझे तरस आता है। खैर, फिर भी अन्धे होने से तो लंगड़ा होना अच्छा है।

लंगड़ा— आप ठीक कहती है, क्योंकि जब मै अन्धा था तो लोग मुझे खोटा पैसा दे दिया करते थे।

*

पहला फ़कीर— "तुमने उस स्त्री से कुछ माँगा क्यों नहीं? क्या उसने तुमको पहले से ही कुछ दे दिया था?"

दूसरा फ़कीर— "मै अपने काम में तुमसे अधिक चतुर हूँ। मैंने उसको इसलिये नहीं पुकारा कि वह अकेली है। मै औरतों से उस समय माँगता हूँ जब उनके साथ कोई दूसरी औरत भी होती है। तब उन्हें यह डर होता है कि फ़कीर को कुछ न देने से कहीं दूसरी औरत उसे मक्खीचूस न समझ ले।

*

एक यात्री गाड़ी के पायदान पर खड़ा था। इतने में एक भिखारी भीख माँगता हुआ आ पहुँचा। कहने लगा— "बाबू जी मुझे एक पैसा दो। तुम्हें भगवान स्वर्ग में जगह देगा।"

बाबू जी (झुंझलाकर)— "अरे यार, गाड़ी में तो जगह मिल नहीं रही है, स्वर्ग का किसने देखा है!"

*

चौराहे पर गुज़रते हुए एक व्यक्ति ने भिखारी के बर्तन में इकन्नी फेंकी,

लेकिन वह छिटक कर दूर जा गिरी। पर काले चश्मे वाले भिखारी ने तुरन्त ही उसे लपक कर पकड़ लिया।

"मैंने तो समझा था कि तुम अन्धे हो," इकन्नी देने वाला बोला।

'नहीं साहब, मैं यहाँ रोज़ बैठने वाला अन्धा भिखारी नहीं हूँ। वह तो आज सिनेमा देखने गया है।'

किरायेदार

मकान खाली था। एक आदमी उसे किराये पर लेने से पहले देखने आया हुआ था। उसने मकान मालिक से पूछा— 'इस मौहल्ले के लोग कुछ हैसियत वाले नहीं दिखाई देते।'

'क़तई नहीं।' मकान मालिक ने मौहल्ले की प्रशंसा करते हुए कहा। 'आप देखेंगे कि कोई न कोई पड़ौसी रोज़ आपसे कम से कम पचास रुपये उधार माँगेगा।'

*

किसी आदमी को एक मकान की ज़रूरत थी। एक दिन उसने एक मकान देखा। दिखाने के बाद मालिक मकान ने उससे पूछा— "कहो, मकान पसन्द है?"

उस आदमी ने कहा— "इस मकान में सीलन बहुत है। यही एक बुरी बात है और तो सब ठीक है। मकान में सीलन का होना अच्छा नहीं।"

मालिक मकान— "मकान में सीलन का होना बड़ा ही अच्छा होता है। सीलन के कारण आग लगने का डर नहीं रहता।"

*

किसी मकान में एक किरायेदार रहता था। उसे तीन महीने रहते हो गये थे, पर उसने किराया अभी तक नहीं दिया था। एक दिन मालिक मकान ने कहा— "इस मकान में तुम्हें रहते तीन महीने हो गये पर तुमने अभी तक किराया क्यों नहीं दिया?"

किरायेदार— "वाह साहब, आप भी खूब है। आपने तो कहा था कि इसे अपना ही घर समझना।"

मकान मालिक— "तो उससे क्या हुआ? वह तो मैं अब भी कह रहा हूँ।"

किरायेदार— "कुछ हुआ ही नहीं! अपने मकान का तो कोई किराया नहीं देता।"

*

"हमारा मकान मालिक किराये के लिये हमसे तकाज़े करता करता इतना तंग आ गया कि आख़िर वह मकान उसने हमें भेंट में दे दिया।"

"तो फिर यह कहो कि तुम्हारी तक़दीर खुल गई।"

"पहले हमने भी ऐसा ही सोचा था। पर अब देखते हैं, विद्युतकर, भूमिकर, नगरपालिका-कर, पानी-कर और न जाने कितने कर देते देते ही सारी तनखा खत्म हो जाती है।"

*

एक बाबू साहब किराये का मकान खोज रहे थे। एक तो खाली मकान न मिलते थे, दूसरे जो मिलते थे, वे अच्छे न थे। बड़ी मुश्किल से एक मकान मिला, जो पसन्द आया। मकान का किराया पूछा तो मकान मालिक ने कहा— "पचास रुपये महीना।"

पचास रुपये किराये को सुनकर बाबू साहब को बड़ा ताज्जुब मालूम हुआ। उन्होंने बड़ी तेज़ी से पूछा-- "अस्तबल कहाँ है ?"

मकान मालिक के बोलने से पहले ही उनके साथ के एक आदमी ने कहा-- "आपके पास घोड़ा तो है ही नहीं, अस्तबल का क्या कीजियेगा ?"

बाबू साहब— "अस्तबल घोड़े के लिये नहीं, उस गधे के लिये जो इस छोटे से मकान का किराया पचास रुपये माँगता है।"

*

मकान मालिक-- जनाब, मकान तो किराये के लिए खाली है। मगर आपका शरीफ़ होना उसके लिये बहुत ज़रूरी है।

किरायेदार— यह तो आपको उसी रोज़ मालूम हो जायगा जब आप किराया माँगने के लिये आयेंगे।

*

गाइड (यात्रियों से)— देखिये, यह क़िला दो सौ वर्ष से इसी प्रकार खड़ा है। इसका एक पत्थर भी नहीं हिला है। न ही इसमें रत्ती भर मरम्मत कराई गई है।

एक यात्री— तो इसका मालिक भी मेरे मकान मालिक का सगा भाई मालूम होता है।

*

एक नया किरायेदार— इस मकान में भूत बहुत तंग करते हैं, क्या यह बात सच है ?"

मकान मालिक— "हाँ, किराया न देने पर ज़रूर तंग करते हैं।"

*

किरायेदार— "अब देखिये, हद होती जा रही है। कल रात भर चूहे उस कमरे में लड़ते रहे ....

मकान मालिक— "२०) महीना किराया देकर आप और क्या चाहते हैं— बैलों की लड़ाई ?"

*

भावी किराएदार— कमरे की खिड़की बहुत छोटी है। आवश्यकता पड़ने पर उसका उपयोग नहीं किया जा सकता।"

मकान मालिक— ऐसी आवश्यकता का अवसर मिलेगा ही नहीं। मैं किराया पेशगी लिया करता हूँ।"

*

एक किरायेदार— "सच मानिये, इसके पहले मैं जिस मकान में रहता था, उसका मालिक मेरे घर खाली करने पर एकदम रो पड़ा।"

नया मकान मालिक— "आप चिन्ता न करें, मुझे रोना नहीं पड़ेगा। मैं हर महीने का किराया पेशगी वसूल करता हूँ।"

*

मकान मालिक— आपको मुझे ६ महीने का किराया देना है। अच्छा होता यदि आप किसी नये मकान का इंतज़ाम कर लेते।

किरायेदार— नया मकान ! मैं कदापि आपका किराया दिये बिना, आपका मकान नहीं छोड़ सकता।

*

एक मकान वाला एक नये किरायेदार को अपना मकान दिखाने के लिये लाया। वापिस जाते समय पड़ौसी के मकान में किसी मरियल से व्यक्ति को खाट पर बैठे हाय हाय करते देखकर उसने पूछा, "आप तो कहते थे कि इस मुहल्ले की

जलवायु बहुत अच्छी है और यहाँ पर कभी कोई व्यक्ति बीमार नहीं हुआ। पर इस व्यक्ति को देखो कि कितना हड्डियों का ढांचा रह गया है।"

मकानवाला— "अरे भई ! यह तो इस मुहल्ले का डाक्टर है जो भूखों मर रहा है।"

महाजन-क़र्ज़दार

महाजन— दस रुपये जो आपने मुझसे क़र्ज़ लिये थे, उसे क्या आप एकदम भूल गये ?

क़र्ज़दार— नहीं तो। क्या आपने देखा नहीं कि आपको देखते ही मैंने आँख बचाकर भागने की कोशिश की थी।

*

एक आदमी क़र्ज़ लेने की नीयत से एक महाजन के पास आया। बोला, "मेरे दोस्त तो बहुतेरे हैं, मगर मैं दोस्तों से कुछ माँगना पसंद नहीं करता।"

महाजन— "फिर क्या, हाथ मिलाइए। आज से हम और आप भी दोस्त हुए।"

*

एक आदमी को क़र्ज़ लेने की बहुत बुरी आदत पड़ गई थी। वह न जाने कितने आदमियों का ऋणी था, फिर भी जहाँ तक पाता था और कर्ज़ा लेता जाता था।

उसकी यह दशा देखकर उसके कितने ही मित्र और रिश्तेदार उसको समझाने आये। वे सब कहने लगे— "देखो, ऋण बुरा होता है। जो किसी एक का भी ऋणी होता है, उसको बड़ी चिन्ता रहती है। फ़िक्र के मारे किसी काम में जी नहीं लगता और रात रात भर नींद नहीं आती। किसी समय कुछ अच्छा नहीं लगता। फिर जो बहुत आदमियों का ऋणी हो उसके लिये क्या कहना है ?"

उस ऋणी आदमी ने जवाब दिया — "यह सब सही है। लेकिन यह फ़िक्र, चिन्ता और बेचैनी उसी को होती है, जिसको ऋण लेकर फिर देना हो।"

*

महमूद— अहमद, तुमको याद है तुम्हें मेरे दस रुपये देने हैं ?

अहमद— जी हाँ, मुझे खूब याद है और मैं मरते दम तक न भूलूंगा।

*

महाजन— राय साहब घर में हैं क्या ?

नौकर— नहीं।

महाजन— मैंने तो उन्हें अभी घर में जाते देखा है, और तू कहता है नहीं।

नौकर— उन्होंने भी तो आपको देख लिया है, हुजूर।

*

चपरासी— "साहब, बाहर कोई सक्सेना बाबू आए हैं। क्या उन्हें अन्दर भेज दूं?"

कर्लक रामनाथ— "नहीं, नहीं, मुझ पर उनके दस रुपये उधार हैं।"

अकाउण्टेंट मोहन— "उन्हें फौरन अन्दर बुला लाओ। उन्हें मेरे चालीस रुपये देने हैं।"

*

बाप— बेटी, यदि तू अच्छे वर से ब्याह करना चाहती है तो मिस्टर रंगीन से ब्याह कर ले। वह बहुत ही नेक, सीधा और तेरा प्रेमी है।

बेटी— यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

"मैं छः महीने से उससे उधार पर उधार लिये जा रहा हूँ, पर उसने अब तक घर पर आना कम नहीं किया।"

कंजूस

एक कंजूस चीनी ने दीवार में ईंट निकाल कर उसके पीछे रुपये रख दिये, और धन को और भी सुरक्षित बनाने के लिये उसने इस अनोखी 'सेफ़' के ऊपर काग़ज़ पर लिखकर लगा दिया— "इस दीवार में धन नहीं है।"

उसके पड़ौसी वौंग ने यह देख लिया। उसने धन चुरा लिया, और ईंट वहीं लगाकर ऊपर से लिखा, "यहाँ का धन वौंग ने नहीं चुराया है।"

*

एक कंजूस बाज़ार से पंखा ख़रीद कर चला आ रहा था। रास्ते में उसकी भेंट एक मित्र से हो गई, जिसने कंजूस महाशय से पूछा— "क्या पंखा ख़रीद कर ला रहे हो? भला इसे कितने दिन तक चलाओगे?"

कंजूस— "इस पंखे में पच्चीस पंखियाँ हैं, इसलिये यह और नही पच्चीस साल तो चलेगा ही। मै फ़िज़ूलख़र्चो के समान पूरा पंखा कभी नहीं खोलता, बस एक पंखी खोल कर हवा कर लिया करता हूँ, जो एक बरस तक चलती हैं।"

मित्र ने अचरज से कहा— "इतनी फिजूलख़र्ची! हमारे यहाँ तो एक पंखा दो तीन पीढ़ी तक मज़े से चल जाता है।"

कंजूस ने बेचैन हो कर पूछा— "सो कैसे?"

मित्र—"मै पूरा पंखा खोलता हूँ लेकिन लापरवाही से उसे हिलाकर तोड़ नहीं डालता। पंखे को एक लकड़ी में बाँध कर दीवाल में खोंस देता हूँ। जब ज़रूरत होती है, तब जाकर उसके सामने कूद कूद कर हवा ले लिया करता हूँ।"

*

एक आदमी ग़रीबों की सहायता के लिये चंदा जमा कर रहा था। चलते चलते वह एक सेठ की दूकान पर पहुँचा और उनसे चन्दा माँगा।

सेठजी थे एक नम्बर कंजूस, पूरे मक्खीचूस। जवाब दिया— "मै ग़रीब आदमी भला क्या चन्दा दूँ?"

उस आदमी ने कहा— "अच्छा तो आप इसमें से कुछ ले लीजिये क्योंकि यह गरीबों के लिये ही तो है।"

*

एक कंजूस को उसका एक मित्र किसी सभा में ले गया। वहाँ दान पुण्य की बड़ी बड़ाई हुई इस मतलब से कि वह कंजूसी छोड़ दे। सभा से लौटते समय कंजूस ने अपने मित्र से कहा— "भाई, आज की बातों से मैं बहुत प्रसन्न हुआ। उनकी बातें सुनकर मुझे दान पुण्य ऐसे अच्छे मालूम हुए कि मेरे मन में आता है कि कल से ही मैं भी दान माँगने लगूँ।"

*

एक सेठ सेठानी के सन्तान नहीं थी। वे एक अनाथालय में बच्चा गोद लेने के विचार से गये। उन्होंने एक लड़का पसन्द कर लिया। बस, काग़ज़ों पर हस्ताक्षर करना ही बाक़ी था। अचानक सेठ जी बोल उठे, "अजी, सुनती हो?

लड़का नही, लड़की गोद लो। याद है पार्क में हमें लड़की की चुन्नी पड़ी मिली थी। अब वह काम आ जायगी।"

*

लाला दमड़ीलाल बहुत बीमार थे। बचने की आशा नहीं थी। घर के सभी आदमी उनकी खाट घेरे खड़े थे। अचानक ही उनके होंठ हिले। उनकी पत्नी उनके मुंह से कान लगा कर बात सुनने लगी।

"क्या सब लोग यही हैं ?"

"हाँ, हम सब हैं," पत्नी ने सुबकी लेते हुए उत्तर दिया।

"सब ही हैं ? लक्ष्मीचन्द , धनीराम, गोविंदसहाय हैं ? और छोटा बालकिशन भी है ?"

"हाँ, सब हैं ?"

लालाजी कराह उठे, "बस, जैसा मैंने सोचा था वही हुआ। अभी तो मैं मरा भी नहीं और उन्होंने दुकान की देखभाल करनी छोड़ दी।"

*

एक कंजूस रास्ते में जाता हुआ सोच रहा था कि अगर मुझे अभी राह में एक रुपया पड़ा हुआ मिल जाये तो मैं चार आने का प्रसाद चढ़ाऊँ। संयोग से उसे एक रुपया मिल गया।

रुपया लेकर वह एक दुकान पर उसे भुनाने गया। दुकानदार ने, रुपया

ज़रा खोटा था, इसलिये बारह आने दिये ।

पैसे लेकर कंजूस ने मन ही मन में कहा— "वाह रे भगवान् ! तूने सोचा कंजूस है, पता नहीं प्रसाद चढ़ाये या नहीं चढ़ाये । अतः पहले ही चवन्नी काट ली ।"

*

कुली— लाइये, सेठ जी, सामान उठाऊँ ?

सेठ— रहने दे, भाई ! अगर इसी तरह सामान उठवाता रहता, तो मैं आज कुली हो गया होता ।

*

दोस्त— "वह आदमी जो तुम्हारी लड़की को लेकर भाग गया है, तुम्हारा मोटर ड्राइवर था न ?"

मालदार कंजूस— "हाँ । परमात्मा का शुक्र है कि वह उन्हीं दोनों चीज़ों को ले गया जो अधिक ख़र्चीली थीं— मेरी लड़की और मोटर ।"

*

एक बार एक कंजूस आदमी बीमार पड़ा । इलाज से कोई लाभ न होता देख उसने अपने जीवन की पहली मिन्नत मानी और अपने आराध्य देव हनुमान जी से प्रार्थना की कि यदि वह अच्छा हो गया तो हनुमान जी के नाम पर ५०० रुपये स्थानीय हनुमान अखाड़ा को दान देगा ।

हनुमान अखाड़े वालों को भी इसकी सूचना दे दी गई ।

बजरंगबली की कृपा से वह तीन चार दिन बाद ही ठीक हो गया ।

उसके ठीक होते ही हनुमान अखाड़े वालों ने आकर उसे ५०० रुपये के दान की याद दिलाई । कंजूस ने चकित होकर उन लोगों से पूछा, "क्या मैंने वाक़ई इतने दान का वादा किया था ।"

"जी हाँ, अभी तीन चार दिन पहले की ही तो बात है ।"

"ओह, बीमारी के दौरे में मैंने ऐसा कह दिया होगा । आप लोग मेरी इस बात से अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि मैं उस समय कितना बीमार था ।"

*

नींबू के अचार की चर्चा हो रही थी । एक सज्जन बोले, "भाई, नींबू का अचार तो जितना पुराना हो, उतना ही अच्छा, गुणकारी होता है । अगर ५ साल पुराना नींबू हो तो बात ही क्या है !"

"मेरे पास १६ वर्ष पुराने नींबू हैं ।" एक व्यक्ति ने तुरन्त बात काट दी ।

"तो फिर तनिक चखाइये ।" सब लोग एक साथ बोल पड़े ।

"यह भी खूब कही । दिखाने को तो दिखा दूँ, परन्तु चखाऊँगा नहीं ।

अगर इसी तरह चखाता रहता, तो फ़िर वह १६ वर्ष पुराना कैसे हो पाता।"

*
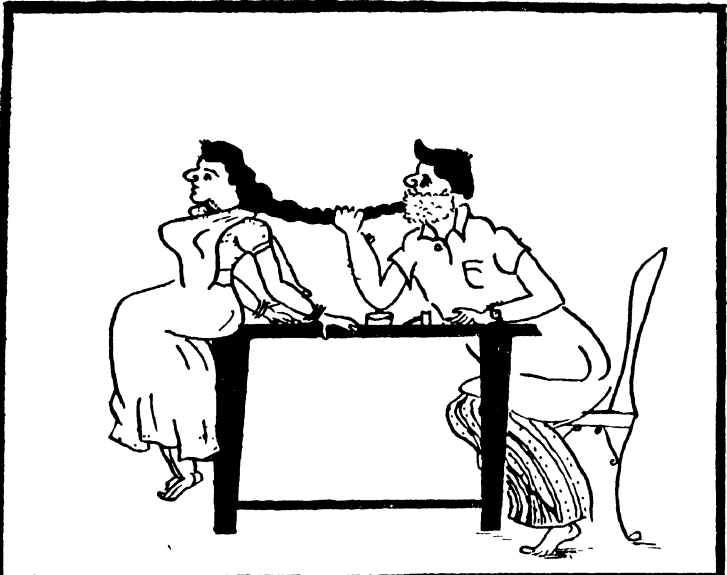
मितव्ययता के लिये सहयोग

*

एक कंजूस व्यक्ति बस में दिल्ली से गाज़ियाबाद जा रहा था। रास्ते में किराये के ऊपर कन्डक्टर से उसका झगड़ा हो गया। कंडक्टर ने कहा— "दिल्ली से गाज़ियाबाद का किराया १२ आने है।"

कंजूस ने कहा— "मैं आठ आने से ज़्यादा नहीं दूँगा।"

कन्डक्टर बोला— "बारह आने।"

"नहीं आठ आने।"

वे इसी तरह दस मिनट तक झगड़ते रहे। अन्त में बस जब यमुना के पुल पर पहुँची तो कन्डक्टर इतना क्रोधित हो गया कि उसने कंजूस का बक्स उठाकर पानी में फेंक दिया।

कंजूस पागलों की तरह चिल्ला उठा और बोला, "तुमने हद कर दी। बस हद हो गई। पहले तुमने मुझे किराये में धोखा देने की कोशिश की। जब तुम्हें उसमें सफलता न मिली तो अब मेरे छोटे लड़के को डुबाना चाहते हो।"

*

एक कंजूस लखपति से उसके मित्र ने कहा— "तुम इतने बड़े आदमी हो, कपड़े तो ढंग के पहना करो।"

लखपति ने कहा— "परन्तु मेरे कपड़े ख़राब ही कहाँ हैं?"

मित्र ने कहा— "ख़राब नहीं हैं तो क्या है? तुम्हें अपने पिता की याद है? वे हमेशा बढ़िया से बढ़िया कपड़े मशहूर से मशहूर दर्ज़ी के हाथ के सिले पहना करते थे।"

कंजूस लखपति खुश होकर बोला— "और ये अपने पिता के कपड़े ही तो मैंने पहन रखे हैं।"

*

एक बहुत कंजूस व्यक्ति मर कर स्वर्ग के दरवाजे पर पहुचा। दरवाज़े के रखवाले ने उसे अन्दर प्रवेश कराते हुए कहा— "हमारे यहाँ सब बातें बहुत बड़े पैमाने पर होती हैं। यहाँ का एक क्षण एक हज़ार वर्ष के बराबर होता है। और एक पाई का मूल्य १० करोड़ रुपये के बराबर होता है।

कंजूस बोला, "ऐसा है तो मुझे एक पाई उधार दे दीजिये।"

रखवाले ने उत्तर दिया— "अच्छी बात है, आप एक क्षण ठहरिये।"

भिन्न जातियाँ

स्काटलैंड का एक किसान मृत्युशैया पर पड़ा हुआ था। उसकी पत्नी भी जानती थी कि वह अपने अंतिम क्षण गिन रहा है। घर में खाने को कुछ रहा

नहीं। उस किसान की पत्नी को मजबूरन घर से बाहर जाना पड़ा।

घर से बाहर जाते समय वह अपने पति से बोली, "मैं जल्दी ही लौट आऊंगी। लेकिन अगर मेरे लौटने से पहले मरने लगो, तो मोमबत्ती बुझाना न भूलना।"

*

एक बार एक शार्क मछली ने एक जहाज़ का पीछा किया। जहाज़ के मल्लाहों ने उससे पीछा छुड़ाने के लिये एक कुर्सी उठाकर उसकी ओर फेंकी। शार्क उसे निगल कर फिर जहाज़ की ओर दौड़ी। मल्लाहों ने इस बार नारंगियों से भरा एक बड़ा झाबा फेंका। शार्क उसे भी निगल कर झपटी। मल्लाहों ने सोचा बिना किसी आदमी को खाये यह छोड़ने वाली नहीं। अतः सबकी जान बचाने के लिये किसी न किसी को बलि चढ़ाना आवश्यक है।

चिट्ठी डाली गई तो एक यहूदी का नाम निकला। जहाज़ वालों ने उसे उठा कर समुद्र में फेंक दिया। शार्क ने यहूदी को भी पेट के हवाले किया और दुगने वेग से जहाज़ की ओर लपकी। किसी तरह जान बचते न देख मल्लाहों ने इस बार हिम्मत से काम लिया और बर्छों के सम्मिलित आक्रमण से उस शार्क को मार डाला। मछली को जहाज़ पर खींचा गया। एक मल्लाह उसके अन्दर घुसा तो उसने एक अनोखा ही दृश्य देखा। पहले के निगले हुए बहुत से मनुष्यों की भीड़ जमा थी और बीच में यहूदी महोदय कुर्सी पर बैठे झाबे से नारंगियां निकाल कर एक आने की दो दो बेच रहे थे।

*

एक अंग्रेज़ की खोपड़ी गंजी हो गई, उसने हज़ारों रुपयों की औषधियां प्रयोग की, परन्तु सब बेकार। एक स्कॉच की खोपड़ी गंजी होनी आरम्भ हुई, उसने प्रातः उठते ही अपना कंघा, शीशा, तेल आदि सब कुछ बेच दिया।

*

एक धनवान यात्रा करता हुआ रात्रि में छोटे से क़स्बे में पहुँचा। वहाँ एक छोटी सराय थी। उसने दरवाज़े पर जाकर भटियारी को आवाज़ दी। भटियारी ने पूछा— तुम कौन हो ? धनी को अपनी इज्ज़त और धन का बहुत ख़्याल था, बोला, "अब्दुल बशीर कजातमीजुद्दीन मुहम्मद अहमद खां इल्पमी चिश्ती कादरी ...."

बीच में ही भटियारी ने उत्तर दिया— "आप जाइये, आज इतने मुसाफिरों के लिये हमारे यहाँ जगह नहीं है।"

*

एक वृद्ध आइरिश सड़क पर चलता चलता चक्कर खाकर गिर पड़ा। उसके

चारों ओर भीड़ खड़ी हो गई। सब अपनी अपनी हाँक कर सहायता करने की युक्तियां बता रहे थे।

एक लड़की उस भीड़ में चिल्ला रही थी, 'बेचारे बूढ़े को ह्विस्की पिलाओ।' पर कोई उसकी नहीं सुन रहा था।

अन्त में बेहोश बूढ़े की रौबदार आवाज़ सबके ऊपर सुनाई पड़ी। 'सब अपनी बकवास लगाये हैं, कोई उस युवती की बात नहीं सुनता।'

*

बेचारा हबशी पकड़ कर अदालत में लाया गया। जज ने पूछा— "तुम ने इस आदमी को क्यों मारा ?"

"क्योंकि इसने मुझे काला बदमाश कहा था।"

"ठीक है, तुम क्या हो नहीं ?"

"जी हाँ, मैं हूँ। लेकिन जज साहब, यदि आपको कोई काला बदमाश कहे तो क्या आप उसे नहीं मारेंगे ?"

"लेकिन मैं हूँ कहाँ ? क्या मैं काला दिखाई देता हूँ ?"

"नहीं, जनाब, नहीं। लेकिन जिस तरह के भी बदमाश आप हैं उसी तरह का कोई कहे, फिर आप क्या करेंगे ?"

*

कोहेन सन्ध्या समय बाग़ में से गुज़र रहा था जब उसने रास्ते में एक बड़ा सुन्दरी कुत्ता खड़ा देखा। एक आयरिश पास की बेंच पर बैठा हुआ था। यहूदी ने उससे कहा— "कितना सुन्दर कुत्ता है ? क्या यह तुम्हारा है ?"

"हां," आयरिश ने उत्तर दिया।

"इस कुत्ते की नस्ल क्या है ?"

आयरिश ने मज़ाक़ करने की सोची। सो उसने बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया— "यह हिब्रू और स्पेनियल की मिलावट है।"

कोहेन ने हँसते हुए कहा— "तब तो यह हम दोनों का सम्बन्धी है।"

*

आयरिश और फ्रांसीसी में अपने एक मित्र के देश के बारे में बहस हो गई।

"मुझे मालूम है उसका जन्म फ्रांस में हुआ था," फ्रांसीसी ने कहा, "इसलिये फ्रांस के नियमों के अनुसार वह फ्रांसीसी हुआ।"

आयरिश बोला, "वाह, खूब रही ! अगर कोई बिल्ली भट्टी में अपने बच्चे दे दे तो उन्हें बिस्कुट कहने लगोगे !"

*

“मुस्करा तो रहा हूँ।”

*

एक अंग्रेज़ अपने भारतीय मित्र से बोला—‘तुम लोग भी अजीब गड़बड़ घोटाला हो। कोई काला है, कोई गोरा, और कोई गेहुँआ।’

मित्र ने उत्तर दिया— "मियाँ, घोड़े ही हर रंग के पाये जाते हैं। गधों का एक ही रंग होता है, भूरा।'

*

उपदेशक— क्या तुम्हारे पड़ौसी ईमानदार हैं ?

आदिवासी— जी हाँ।

उपदेशक— फिर तुम मुर्गों के दड़बे के पास भरी बन्दूक क्यों रखते हो ?

आदिवासी— उन्हें ईमानदार रखने के लिये।

*

शिकारपुरी— क्या किसी ने मेरी जाकट देखी है ?

मित्र— हाँ, हाँ, क्यों नहीं, तुम पहने तो हो।

शिकारपुरी— ठीक है। तुम ने बड़ा अच्छा किया, जो मुझे बता दिया, नहीं तो आज घर में बिना जाकट के पहुंचता।

*

एक सरदारजी किसी वैज्ञानिक के नौकर थे। वैज्ञानिक रात को दूरबीन से आकाश का निरीक्षण किया करता था। एक दिन सरदारजी रात में उसकी अनुसन्धानशाला की सफाई कर रहे थे और वैज्ञानिक आकाश देख रहा था, तभी एक तारा टूट कर गिरा। सरदारजी ने आकर बड़ी ज़ोर से वैज्ञानिक की कमर ठोक दी और कहा— "आप कैसा अच्छा निशाना मारते हैं !"

*

बनिये की पत्नी मर गई। बनिये ने बड़ी ज़ोर से मिसरानी को आवाज़ लगाई। मिसरानी रोती हुई आई, "क्या है मालिक ?"

"आज एक आदमी के लिये ही खाना बनेगा।"

*

दुकानदार— मैं आपके सूटकेस को बांधे देता हूँ। मुझे दीजिये।

मारवाड़ी— रहने दीजिये। धन्यवाद ! कागज़ और सुतली मुझे दे दीजिये, मैं सूटकेस में रख लूंगा।

*

"कल सड़क पर बड़ी दुर्घटना हो गई।"

"क्यों, क्या हुआ ?"

"दो रिक्शायें लड़ गई और बारह मुसलमानियाँ घायल हो गईं।

बुद्धि के चमत्कार

एक आदमी डींग हांक रहा था— मैं इस शहर के हर अस्पताल में रह चुका हूँ।

उसका साथी बोल उठा— अच्छा, शर्त लगा लो। तुम ज़नाने अस्पताल में कभी नहीं रहे होगे।

पहले आदमी ने विजय गर्व से मुस्कराकर कहा— वाह, वहाँ तो मैं उत्पन्न ही हुआ था।

*

पिता— "देखो तो, आजकल के लड़के कितने कृतघ्न हो गये हैं। मैंने अपने लड़के को पढ़ने के लिये विलायत भेजा हुआ है, और वह मेरे पत्रों का जवाब तक नहीं देता।"

एक मित्र— "यों करो। उसे पत्र लिखो कि तुम पत्र के साथ चैक भेज रहे हो, लेकिन चैक साथ में मत रखो। देखो, आप से आप वह तुम्हें खत लिखेगा।"

*

बहुत दिन तक बहरापन न सह सकने के कारण एक धनी वृद्ध ने अपने कानों में आवाज़ ऊँची करने वाला एक अदृश्य बटन लगवा लिया। एक सप्ताह बाद वह डाक्टर के यहाँ उसमें कोई कमी दूर करवाने गया। डाक्टर ने पूछा कि बटन कैसा काम दे रहा है।

"बहुत अच्छा," वृद्ध ने जवाब दिया। "अब मैं सारी बातें अच्छी तरह सुन सकता हूँ।"

"तो आपके रिश्तेदारों को तो इससे बहुत प्रसन्नता हुई होगी।"

"मैंने उन्हें बताया ही नहीं है। मैं पहले की तरह ही बैठा रहता हूँ और वे लोग मुझे बहरा समझ कर बातचीत करते रहते हैं। पिछले हफ्ते में मैं अपनी वसीयत पाँच बार बदल चुका हूँ।"

*

एक दरवाज़ेदार घोड़ा गाड़ी बड़ी ऊँची चढ़ाई चढ़ रही थी। रास्ते में दो बार उसका दरवाज़ा खोला गया और ज़ोर के धमाके के साथ बन्द किया गया। अन्दर बैठे हुए व्यक्तियों ने पहले तो इस पर ध्यान नहीं दिया, परन्तु जब तीसरी बार फिर यह प्रक्रिया की गई तो उन्होंने क्रोधित होकर गाड़ीवान को डाँटा।

गाड़ी वाला फुसफुसा कर बोला— "इतने ज़ोर से मत बोलिये, वह सुन लेगा।"

"कौन सुन लेगा?"

"घोड़ा। आहिस्ता बोलिये। मैं उसे चरका दे रहा हूँ। हर बार जब दरवाज़ा खुलकर बन्द होता है, वह समझता है कि कोई व्यक्ति गाड़ी से उतरा है और वज़न हल्का हो रहा है। इससे वह प्रोत्साहित होकर और शक्ति लगाकर चलता है।"

*

"........अच्छा बेटा, बड़े होने पर तुम क्या करोगे ?"

*

पहला मित्र — मुझे अब इस चीज़ का अनुभव हो गया है कि सच्चाई से बढ़कर कोई चीज़ नहीं है।

दूसरा मित्र— किस प्रकार ?

पहला मित्र— तुम्हें वह कुत्ता तो याद होगा, जो मै चुरा कर लाया था।

दूसरा मित्र— हाँ, अच्छी तरह याद है।

पहला मित्र— मैं दो दिन तक उस कुत्ते को लिए घूमता रहा परन्तु कोई उसकी क़ीमत एक रुपया देने को भी तैयार न था। आख़िर मैं कुत्ता लेकर उसके मालिक के पास लौटाने चला गया। उसने प्रसन्न होकर मुझे पाँच रुपये दे दिये।

*

"आज तुमने शेव क्यों नहीं किया ?"

"मेरा ख्याल है, मैंने शेव किया तो था। दिक्कत यह थी कि हम एक ही शीशे पर छः सात व्यक्ति शेव कर रहे थे। शायद ग़लती से मैं किसी और का शेव कर गया।"

*

एक दिन दो झक्की आदमी हथौड़ा और कील लेकर अपने कमरे में कील ठोकने पर जुट गये। एक व्यक्ति कील दीवार पर उल्टी रखकर ठोकने लगा। कुछ देर तक नोक पर हथौड़ा पड़ता रहा। कील का मोटा हिस्सा दीवार में जब न धँसा, तो वह अपने साथी से बोला— "यार, जिसने यह कील बनाई है, वह बिल्कुल औंधी खोपड़ी का रहा होगा। देख तो, उसने कील की नोक उल्टी तरफ बनाई है ?"

दूसरा बोला— "अबे, वह नहीं, तू है औंधी खोपडी का। देखता नहीं, यह कील सामने की दीवार में ठोकने के लिये बनाई गई है।"

*

एक आदमी (अख़बार के दफ्तर के क्लर्क से)— आपकी पत्रिका में मौत की खबर देने का क्या ख़र्चा आता है ?

क्लर्क— ३ रुपये प्रति इंच।

आदमी— राम ! राम !! वह तो पूरा पौने ६ फीट का था।

*

श्यामा— आज नौकरों की जेब की तलाशी क्यों ली जा रही है ?

मनोरमा— क्योंकि आज मेरी कुर्सी खो गई है।

*

"जनाब, मैं बार-बार आपके मुंह से 'बेवकूफ' शब्द सुन रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप यह शब्द मेरे लिये प्रयोग नहीं कर रहे हैं।"

"आप तो खामखा अपने को ज़रूरत से ज्यादा अहमियत दे रहे हैं। दुनिया में बेवकूफों की कमी नहीं है भाई साहब ! आप अकेले थोड़े ही हैं।"

*

"बुद्धिमान कभी यह नहीं कहते कि बस यही अन्तिम सत्य है। मूर्ख ही

विश्वासपूर्वक कहते हैं ।"

"क्या आप यह विश्वासपूर्वक कह रहे हैं ?"

"निस्संदेह ।"

*

एक प्रसिद्ध व्यक्ति के पास एक मनुष्य आया जिसे वह बिल्कुल नहीं जानता था। पर वह आदमी उससे मित्रता जता रहा था ।

प्रसिद्ध व्यक्ति ने कहा, 'माफ कीजिये, लेकिन मुझे बिलकुल ध्यान नहीं आ रहा है कि मैं आपसे कहाँ मिला हूँ ।'

"ओह ! आपको याद नहीं रहा। आपको ध्यान होगा जब आप मसूरी कान्फ्रेंस में भाग लेने जा रहे थे। सूरत के स्टेशन पर आपकी गाड़ी का स्वागत पचास हज़ार की भीड़ ने किया था ।'

'हाँ, हाँ, मुझे बखूबी याद है ।'

'बस, वहीं तो मैं था, दो डिब्बे छोड़कर, काले चारखाने की कमीज़ में आपके दर्शनों को खड़ा था ।'

*

एक स्कूल इन्सपेक्टर बच्चों की परीक्षा ले रहा था। उसने सुन्दरी शिक्षिका से पूछा— "बच्चे अपनी बुद्धि भी काम में लाते हैं ?"

"हाँ श्रीमान् ।"

"अच्छा ! बच्चो, अपनी आँखें बन्द करो और शान्त बैठो ।" इन्सपेक्टर ने चिड़िया के चहचहाने की ध्वनि की और पूछा— "क्यों बच्चो, मैंने क्या किया ?"

"बहन जी को चूम लिया ।" एक बच्चा बोला ।

*

"बेरोज़गारी की समस्या मैं हल कर सकता हूँ ।"

"बड़े बड़े आदमी तो थक कर हार गये, तुम क्या करोगे ?"

"क्यों ? सब पुरुषों को एक महाद्वीप में रख देंगे और स्त्रियों को दूसरे में। फिर सब व्यस्त हो जायेंगे ।"

"किस काम में ?"

"जहाज़ बनाने में ।"

*

"आज तुम मंगेतर के घर से जल्दी कैसे चले आये ?"

"मुझे बैठे पाँच मिनट हुए थे कि शान्ता ने बिजली बुझा दी। मैं संकेत समझ गया और चला आया ।"

*

"तो भगवान भी कब देख रहे हैं कि मेरा मुंह किधर है !"

*

एक व्यक्ति के कानों में 'भिन भिन' हुआ करती थी। चिकित्सा कराने के लिये देश के दूसरे छोर से विमान द्वारा एक विशेषज्ञ को बुलाया गया। उसने गले

की ग्रन्थियां (टान्सिल्स) निकलवा देने की सिफारिश की।

आपरेशन किया गया किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। तब रोगी एक प्रसिद्ध क्लिनिक में गया। वहाँ उसे अपने सब दाँत उखड़वा देने की सलाह दी गई। दाँत तो निकलवा लिये गए किन्तु कानों की 'भिन भिन' बनी रही।

परेशान होकर वह यूरोप गया। वहां उसने वियना के सबसे बड़े डाक्टर की सलाह ली। डाक्टर ने तीन दिनों की परीक्षा के बाद कह दिया, "मैं कुछ नहीं कर सकता। तुम छः महीने से ज़्यादा ज़िन्दा नहीं रहोगे।"

अभागे रोगी ने जीवन के शेष दिन खूब मौज से बिताने का निश्चय कर लिया। घर लौट कर उसने एक बढ़िया मोटर खरीदी, भड़कीली वर्दी वाला ड्राइवर रखा, नगर के सर्वश्रेष्ठ दर्जी से एक दर्जन सूट सिलवाये और कमीज़ें भी बढ़िया सिलवा कर पहनने का निश्चय किया।

"ठीक है," कमीज़ बनाने वाले ने कहा, "आपकी नाप लिये लेता हूँ। बाँह ३६, कॉलर सोलह ....

"पन्द्रह," उस व्यक्ति ने कहा।

"नहीं सोलह," कमीज़ बनाने वाले ने नाप लेते हुए दुहराया।

"किन्तु मैं तो हमेशा १५ नाप का कॉलर ही पहनता हूँ," उस व्यक्ति ने ज़ोर दिया।

"तो सुनिये," कमीज़ बनाने वाले ने कहा, "मैं आपको सावधान किए देता हूँ कि यदि आपने १६ का कॉलर काम में नहीं लिया तो आपके कानों में 'भिन भिन' होने लगेगी।"

*

सहारा रेगिस्तान के मध्य में एक व्यक्ति को अकेले घूमते देख कर एक हवाई जहाज़ का पायलट हवाई जहाज़ को नीचे लाया और उससे पूछा—— 'क्या आप यहां किसी वस्तु को ढूंढ रहे हैं ?'

'हूँ।'

'किसे ?'

'यूरेनियम को।'

'यह क्या वस्तु है ?'

'मैं कैसे बताऊं जब मैंने स्वयं इसे नहीं देखा।'

'तो फिर जिस वस्तु को आपने कभी नहीं देखा, उसकी खोज आप कैसे कर सकते हैं ?'

'कोलम्बस की कहानी नहीं सुनी मालूम पड़ती। क्या मैं कोलम्बस नहीं

बन सकता कि यूरेनियम ढूंढते ढूंढते कुछ और खोज डालूं।'

*

*

पति का मित्र आया था। सीढ़ी पर चढ़ते हुए उसने पूछा— कुछ सीढ़ियों पर हल्के निशान कैसे लगे हैं?

पति फुसफुसाया— ये रात को काम आते हैं। निशान से मतलब है वह पैड़ी चरमराती है।

*

"तुमने अपने पति को वर्षगांठ पर क्या भेंट दी?"

"वे बहुत दिनों से डायरी को कह रहे थे। सो एक ताले वाली डायरी ले दी है।"

"तुमने अपने लिये भी तो कुछ लिया होगा?"

'उसकी डुप्लीकेट ताली।"

पागल

पागलखाने का डाक्टर एक पागल से बातें कर रहा था जिसे धोखा था कि वह राजा है।

"मुझे पक्का भरोसा है कि मैं राजा हूँ।" पागल बोला। "मुझसे भगवान ने कहा था।"

तभी बगल की कोठरी से एक क्रोधित ग़ुर्राहट सुनाई दी, "मैंने कोई इस तरह की बात तुझ से नहीं कही थी।"

*

एक व्यक्ति को यह पागलपन सवार था कि उसके पेट में एक बिल्ली है। वह पागलख़ाने के नौकरों से कहता कि वह अपने पंजों से उसका पेट फाड़ रही है। एक बार उसके पेट में सचमुच एपेन्डिसाइटिस का दर्द उठा। आपरेशन करते समय सर्जन ने उसका पागलपन ठीक करने की सोची। उसने एक काली बिल्ली मंगाई और मरीज़ के होश में आने पर कहा— देखो, अब तुम ठीक हो। यह बिल्ली तुम्हारे पेट में थी।

मरीज़ ने दृष्टि डाली, अपना पेट पकड़ा और ठंडी सांस लेकर कहा— तुम ने ग़लत बिल्ली निकाली, डाक्टर साहब। मुझे तो चितकबरी तंग कर रही है।

*

पागलख़ाने में नए डाक्टर आए थे। उनसे पहली बार बात करते हुए एक पागल ने कहा— "पिछले डाक्टर के मुक़ाबले में हमें आप ज़्यादा पसन्द हैं। वह तो जैसे कोई बाहर के आदमी थे। लेकिन हमें लगता है कि आप तो हम में से ही एक हैं।"

*

पागलख़ाने मे से दो मरीज़ किसी तरह बच निकले थे, और रेल की पटरी पर चलते हुए अपने गांव जा रहे थे। एक पागल बोला— "इतना लम्बा ज़ीना मैंने अब तक नहीं चढ़ा।"

दूसरा पागल कुछ देर तक सोचने के बाद बोला— "हाँ, और चढ़ते समय पकड़ने की छड़ियाँ किसी और ज़ीने में इतनी नीची नहीं देखीं।"

मूर्ख

एक मित्र— "क्यों जी, रोज़ रात को सोते समय तुम दियासलाई जलाकर क्या देखते हो?"

दूसरा मित्र— "बात यह है, यार, कि राशन के कारण तेल बहुत कम मिलता है। इसलिये दियासलाई जला कर देख लेता हूँ कि कहीं लालटेन जलती तो नहीं रह गई है।"

*

एक साहब, जो तैरना नहीं जानते थे, नदी में कूद पड़े, और लगे गोते खाने। किसी प्रकार किनारे के आदमियों ने उन्हें बाहर निकाला, तो क़सम खाते हुए बोले, "कान पकड़े, अब जो तैरना सीखने से पहले पानी में पैर दिया तो।"

*

तीन मूर्ख रेल का पुल देखने गये। पुल देखकर पहला मूर्ख बोला— "भाई, इतना बड़ा पुल कैसे बनाया गया होगा?"

दूसरा— "वाह, तुम इतना भी नहीं जानते? पहले यह ज़मीन पर बनाया गया था, फिर उठाकर यहाँ डाल दिया गया। अब इस पर रेल चलने लगी।"

तीसरा— "कैसी बेवकूफी की बात करते हो? इसे यहीं बनाकर यह लम्बा चौड़ा गड्ढा खोदा गया है, जिसमें पीछे से पानी भर आया। बस, अब उस पर रेल चलने लगी।"

*

तीन मूर्ख थे। एक ने कहा— "यदि नदी में आग लग जाये तो मछलियाँ कहाँ जायेंगी?"

दूसरे ने कहा— "पेड़ों पर चढ़ जायेंगी।"

तीसरे ने कहा— "क्या वे गाय भैंस हैं जो पेड़ पर चढ़ जायेंगी?"

*

एक मूर्ख रात को घर के बाहर सो रहा था। उसको मच्छरों ने काटना शुरु किया। जब वह तंग आ गया तो उसने चादर मुंह पर ओढ़ ली और सोचने लगा कि अब तो मैं मच्छरों को दिखाई नहीं पड़ता हूँगा।

थोड़ी देर बाद एक जुगनू उड़ता हुआ दिखाई पड़ा। उसे देखकर वह कहने लगा— "देखो, अब मच्छर लालटेन लेकर आ रहा है।"

*

दो मूर्ख मनुष्यों में से एक ने घड़ी बाँध रखी थी। रास्ते में जाते जाते घड़ी की तरफ ध्यान गया तो घड़ी बन्द थी। उस मूर्ख ने घड़ी खोली तो देखता क्या है कि एक मरी हुई मक्खी उसके भीतर पड़ी है। उसने झट उसे निकाल कर एक ज़िन्दा मक्खी बीच में डालकर घड़ी बन्द कर दी।

दूसरे मूर्ख ने पूछा— "भई वाह, यह क्या किया तुमने?"

पहला बोला— "रहे न बुद्धू के बुद्धू! अरे, इसका ड्राइवर मर गया था तभी तो बन्द थी।"

*

एक मूर्ख ने सूर्य को देखकर कहा— "यह सूर्य भी अजीब है। रात को जब अंधेरा रहता है तब तो निकलता नहीं; दिन में जब उजाला रहता है तब निकल

आता है ।

*

एक बार एक मूर्ख ने दूसरे मूर्ख से पूछा कि यदि तुम बतादो कि मेरे थैले में क्या है तो सबके सब अण्डे तुम्हें दे दूंगा और अगर यह भी बतादो कि कितने हैं तो बारह के बारह अण्डे तुम्हारे हो जायेंगे ।

दूसरा मूर्ख बोला— "सवाल तो कठिन है मगर अता पता बतादो ।"

पहले ने जवाब दिया— "ऊपर से सफेद, बीच में पीली ।"

दूसरे मूर्ख ने तपाक से उत्तर दिया— "तो मूली में गाजर होगी ।"

*

एक बार पागलखाने का एक कर्मचारी दो व्यक्तियों को पकड़ कर डाक्टर के पास लाया ।

डाक्टर ने पूछा— "इन्हें यहाँ क्यों लाया गया है ?"

कर्मचारी ने कहा— "ये दोनों पागल हैं, हुजूर । मैं सड़क से गुज़र रहा था । मैंने देखा कि इनमें से यह मोटा आदमी अपने मकान की दहलीज पर बैठा है, और थैली में से पाँच पांच दस दस के नोट निकाल कर सड़क पर फेंक रहा है और कह रहा है— ले जाओ, मुझे रुपयों की आवश्यकता नहीं है ।"

डाक्टर— "ठीक है। और दूसरा व्यक्ति कौन है ?"

कर्मचारी— "हजूर, यह उसको रुपये फेंकते देख कर वहां आ गया और सारे नोट उठा-उठा कर उसको वापिस देता गया और कहता गया— अरे भई, पागल हो गये हो। कोई ऐसे सड़क पर रुपये फेंकता है।"

*

"कल रात तो मैं बाल-बाल बचा।"

"वह कैसे ?"

"आधी रात को मेरी नींद उचट गयी। मैंने अपने कमरे में कोई सफेद सफेद वस्तु देखी। मैंने अपनी बन्दूक उठाई और दाग दी। जब मैंने बत्ती जलायी तो देखा कि वह तो मेरी कमीज़ थी।"

"तो इसमें बाल-बाल बचने की कौनसी बात थी ?"

"मान लो, रात्रि में मैं अपनी कमीज़ उतारना भूल गया होता तो ?"

अफीमची

एक अफीमची चारपाई से गिर पड़ा। चिल्लाकर नौकर से बोला— "अरे, देख तो यह धम्म से क्या गिरा ?"

नौकर ने उत्तर दिया, "हुजूर, आप ही चारपाई से नीचे गिर पड़े हैं।"

अफीमची बोला, "मैं! हाय रे! पसलियाँ चूर चूर हो गई।"

*

दो अफीमची चारपाई पर सो रहे थे। एक के हाथ में खुजली उठी तो वह दूसरे का हाथ खुजलाने लगा। दूसरा बोला, "यार, मेरा हाथ क्यों खुजला रहे हो ?"

पहले ने घबरा कर पूछा— "अरे, तो फिर मेरा हाथ क्या हुआ ?"

*

एक अफीमची इस से बहुत परेशान था कि उसका दूध रोज़ एक बिल्ली पी जाती थी। एक दिन उस अफीमची को बड़ा गुस्सा आआ। उसने निश्चय किया कि बिल्ली को पकड़ना चाहिए।

उस दिन से वह अफीमची बिल्ली की ताक में रहने लगा। वह रोज़ दूध के पास बैठ कर बिल्ली के आने का रास्ता देखता। लेकिन जैसे ही उसको नींद आने लगती, वैसे ही बिल्ली आ कर दूध पी जाती।

कुछ सोच समझ कर उसने अपने सिर के बाल एक रस्सी में बाँधे और रस्सी को खूंटी से बाँध दिया। उसने सोचा, जब मुझे नींद आने लगेगी और जैसे ही मैं झुकूँगा, वैसे ही मेरे बाल खिचेंगे तो मेरी नींद टूट जायगी।

अफीमची अपने बालों को खूंटी में बाँधे बैठा था। उसकी आँखें झूमने लगी। नींद आते ही उसे मालूम हुआ कि किसी चोर ने आ कर मेरे बाल पकड़े हैं। पास ही रखे हुए एक डण्डे को उठा कर बड़े ज़ोर से मारा तो वह उसी के घुटने में लगा। चोट खा कर वह कहने लगा, "अच्छा, चोर, तूने भी अपना वार कर दिया। लेकिन मैंने जो मारा है, तू भी उसको याद करेगा।"

*

दो अफीमची अफीम की पीनक में बातें कर रहे थे। पहला बोला— "मैं ने तय कर लिया है कि मैं सारी दुनिया की सोने चाँदी व हीरे जवाहरात की खानें ख़रीदूंगा।"

दूसरा अफीमची पीनक में झूम कर बोला— "हूँ, सौदा तो अच्छा रहेगा। लेकिन मेरा विचार अभी इन खानों को बेचने का नहीं है।"

*

एक बार एक बादशाह हाथी पर सवार हो शहर में घूम रहा था। उधर ही से एक अफीमची भी गुज़र रहा था। हाथी को देख कर अफीमची ने तुरन्त आवाज़ दे कर कहा— "ओ बे, हाथी वाले! हाथी बेचेगा?"

अफीमची की बात सुनकर बादशाह को बड़ा क्रोध आया, परन्तु उस वक्त कुछ न कहा।

दूसरे दिन बादशाह ने उस अफीमची को दरबार में बुला कर पूछा— "क्यों बे, हाथी ख़रीदेगा?"

अफीमची ने हाथ जोड़ कहा— "हजूर वह सौदागर तो कूच कर गया।

सेवक तो बीच का दलाल था।"

*

एक अफीमची अफीम के नशे में बैठा हुआ झूम रहा था। नशे के जोश में मालूम हुआ कि नदी का पानी बड़े ज़ोर से उमड़ता हुआ चला आ रहा है। अगर मैं यहाँ से भाग कर किसी ऊँची जगह पर न चला जाऊँगा तो डूब जाऊँगा।

यह सोच कर वह वहाँ से उठा और एक ऊँची जगह पर जाकर बैठ गया। थोड़ी देर में वहाँ से उठा और एक और ऊँची जगह पर जाकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद में वहाँ भी जो पीनक ने ज़ोर किया तो उसे मालूम हुआ कि पानी उमड़ कर यहाँ भी आ पहुँचा है। अब भाग कर कहाँ जाऊँगा।

उसने सोचा कि कहीं भाग जाने का मौक़ा नहीं है। पानी में कूद कर तैरना चाहिए। चट आप खड़े हो गए और बड़े ज़ोर से ऊँची ज़मीन से धम्म से कूद पड़े।

यह देख एक आदमी ने उसको आकर पकड़ा तो आप जवाब देते हैं—"अब मुझे क्या पकड़ते हो ? अब तो पैर ज़मीन पर आ लगे हैं।"

*

एक अफीमची का पाखाने जाने का लोटा टूटा हुआ था। वह जब पाखाने जाता तो जितनी देर पाखाना फिरता उतनी देर में सब पानी बह जाता था। इसलिये वह बिना आबदस्त लिए ही लौट आता।

एक दिन उसको बड़ा क्रोध आया। वह पाखाने में बैठे हुए कहने लगा—"अब मैं पाखाना होने के पहले ही से आबदस्त ले लिया करूँगा। फिर देखूं पानी कैसे बह जाएगा।"

शराबी

पुलिस के थाने में किसी ने टेलीफोन किया— "मैंने आज बहुत शराब पी रखी है। मुझे डर है कि कहीं मैं अपनी पत्नी को न मारने लगूं, इसलिये कृपया शीघ्र ही आकर मुझे गिरफ्तार कर लीजिये।"

*

सुबह के ९ बजे थे। मदिरालय का मालिक रात्रि को देर से वापिस आने के कारण अभी सो रहा था। तभी टेलीफोन की घण्टी बजी। उसने टेलीफोन उठाया। दूसरे सिरे से आवाज़ आई। "मैं तुम्हारा सबसे पुराना और अच्छा ग्राहक रणजीत बोल रहा हूँ। आज तुम मदिरालय किस समय खोलोगे ?"

मदिरालय के मालिक ने उत्तर दिया, "यह तो आप भी जानते हैं कि हम

११ बजे से पहले मदिरालय नहीं खोलते।"

"हाँ, यह तो मैं जानता हूँ," रणजीत बोला, "लेकिन आज कृपया ११ बजे से पहले ही खोल दीजिये।"

"जी नहीं," मदिरालय के मालिक ने कहा। "क़ानूनन हम ऐसा नहीं कर सकते। आप ११ बजे से पहले मदिरालय के भीतर दाखिल नहीं हो सकते।"

"अरे भाई, यही तो मैं भी कह रहा हूँ," रणजीत बोला। "मैं तो शराबखाने के अन्दर से बोल रहा हूँ। तुमने कल रात ग़लती से मुझे अन्दर बन्द कर दिया था। मैं तो बाहर जाना चाहता हूँ।"

*

एक बस ड्राइवर बड़ी असावधानी से बस चला रहा था। बैठे हुए यात्री बार बार भयभीत हो उठते। अन्त में जब कई टक्करें होती होती बचीं तो एक सज्जन तनिक उग्रता से बोले— "देखो, बस कैसे चला रहे हो? यदि तुम्हें अपने जीवन की आवश्यकता नहीं तो दूसरों के जीवन का ध्यान तो रखो। देखो, बस कैसे झूम रही है।"

ड्राइवर हँसता हुआ बोला— "अजी, अभी तो केवल बस ही झूम रही है, फिर सब कुछ झूमेगा। यह पृथ्वी, आकाश और सब सड़कें झूमती हुई दिखाई देंगी। आज मैंने खूब पी रखी है, बस अब नशा होने ही वाला है।"

*

एक व्यक्ति शराब पीने का बहुत आदी हो गया था। उसके मित्रों तथा सम्बन्धियों ने उसकी यह आदत छुड़ाने की कोशिश की किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। यह देखकर वहाँ के पादरी ने यह काम अपने सिर लिया। उसे प्रयत्न करते करते एक वर्ष व्यतीत हो गया। इसके बाद पादरी को आशा की एक झलक दिखाई दी। वह उस व्यक्ति के पास गया और खुश होकर बोला, "देखो, हमें सफलता मिल रही है। अवश्य सफलता मिल रही है। कल शाम को तुम्हें गिरजे में देखकर मुझे इतनी प्रसन्नता हुई कि मैं वर्णन नहीं कर सकता। तुम्हें बधाई देने आया हूँ।"

वह व्यक्ति भी पादरी की बात सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने पादरी को धन्यवाद देते हुए कहा, "मैं बहुत प्रसन्न हूँ पादरी साहब। मैं आज सारे दिन इसी चिन्ता में पड़ा रहा कि शराब के नशे में कल शाम कहाँ गया था। मुझे याद ही नहीं आ रहा था।"

*

दो शराबी एक 'बार' में शराब पी रहे थे। नशे में आकर वह ज़ोर-शोर से बहस करने लगे। उनकी बहस बढ़ती ही गई और ज्यों-ज्यों बहस बढ़ती गई, वह

और अधिक शराब पीने लगे। न उनकी बहस ही समाप्त हुई और न शराब पीना ही। अन्त में दोनों नशे में चूर हो गये।

जब एक शराबी की दलील दूसरे ने नहीं मानी, तो उसने शराब की बोतल हाथ में उठाते हुए दूसरे शराबी से कहा, "मुझे चारों ओर अब साँप दौड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। एक साँप तुम्हारे सिर पर भी दौड़ता दिखाई दे रहा है।" यह कहकर उसने वह बोतल उसके सिर पर दे मारी।

नशे में चूर दूसरा शराबी कुछ देर बाद बोला, "दोस्त, एक बार फिर मेरे सिर पर मारो। लगता है, इस साँप ने मुझे काट भी खाया है।"

*

एक दिन एक शराबी नशे में चूर होटल में बैठा था और दोनों हाथों की मुट्ठियाँ एक दूसरे से मिलाकर बन्द कर रखी थीं। इन मुट्ठियों के बीच में से वह कभी एक आँख से और कभी दूसरी आँख से झाँक रहा था। उसके मित्र ने पूछा, "क्यों भई, तुम्हारी मुट्ठियों में क्या है?"
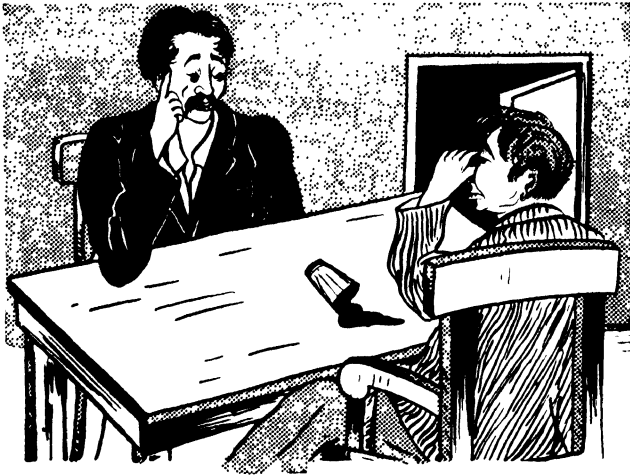
शराबी ने हँसते हुए कहा— "तुम बतलाओ।"

"तितली होगी।" मित्र ने कहा।

"नहीं," शराबी ने ग़ौर से मुट्ठी में झाँक कर कहा।

"अच्छा तो टिड्डी होगी।"

शराबी ने फिर मुट्ठियों में झाँक कर कहा, "नहीं।"

"भई, मुझे नहीं मालूम," मित्र ने कहा। "हो सकता है हाथी हो।"

शराबी मुट्ठियाँ उठाकर बहुत देर तक उनके भीतर देखता रहा और फिर बोला, "हाँ, अच्छा बताओ किस रंग का है ?"

*

एक संपादक ने अपने पत्र में शराब की बुराई पर एक लेख लिखा और शराब पीने वालों को खूब फटकारा। भाग्य से वह पत्र एक शराबखाने में पहुँच गया। उसे पढ़कर शराबी लोग बहुत बिगड़े। एक शराबी को तो यहाँ तक गुस्सा आया कि वह डण्डा लेकर सम्पादक जी को पीटने चला। उसने संपादक जी के दफ़्तर में जाकर उनसे पूछा— "संपादक जी कहाँ हैं ?"

दुबले पतले संपादक जी बिगड़ैल शराबी को देखते ही सिटपिटा गये। पर धीरज धर कर बोले-- "आप बैठिये, मैं अभी उन्हें बुलाता हूँ।"

इसके बाद संपादक जी झपट कर बाहर निकल आये। बाहर आते ही उन्होंने देखा कि एक और शराबी लट्ठ बांधे चला आ रहा है। उसने आते ही संपादक जी से पूछा— "संपादक जी कहाँ हैं ?"

संपादक जी ने उत्तर दिया-- "चले जाइये, दफ़्तर में बैठे हुए है।"

*

दो व्यक्ति शराब पी लौट कर आ रहे थे। रास्ते मे एक रेल की पटरी मिली। कोई गाड़ी आने वाली थी, इसलिए फाटक बन्द था। वे लोग वहीं बैठ कर फाटक खुलने की राह देखने लगे और थोड़ी देर में सो गये। अचानक एक्सप्रेस के एंजिन के शोर से उनकी नीद खुल गई।

एक आदमी आँख मलता हुआ बोला— "यार, अभी जिस शहर से हमारी गाडी गुज़री है, वह कितना जगमगा रहा था।"

"हाँ, और तुमने देखा नहीं कि उसके पहले ही घर में आग लगी हुई थी ?" दूसरा बोला।

*

एक महोदय एक बार अपने किसी मित्र के यहाँ दावत में गये। रात को लौटने में कहीं देर न हो जाय इस भय से उन्होंने अपने साथ एक पुरानी लालटेन भी ले ली। बहुत रात को वे नशे में चूर होकर घर लौटे।

दूसरे दिन सुबह उन्हें अपने मित्र का एक सन्देश मिला जिसमें लिखा था, "अभी-अभी मुझे अपने कमरे में आपकी लालटेन रखी मिली। उसे वापिस भेज रहा हूँ। कृपया मेरा तोते का पिंजरा वापिस भेज दें।"

*

एक व्यक्ति बहुत तेज़ी से शराबख़ाने में घुसा। शराबख़ाने का मालिक उसको तेज़ी में देखकर उसके निकट आया और पूछा, "क्या बात है ?"

वह व्यक्ति बोला, "इससे पहले कि झगड़ा आरम्भ हो मुझे जल्दी से एक गिलास शराब लाकर दो।"

मालिक ने उसको शराब का एक गिलास लाकर दिया जिसको वह जल्दी से पी गया और बोला, "मुझे एक गिलास और दो। झगड़ा अब शुरू हुआ ही चाहता है।"

दूसरा गिलास शराब से भर कर मेज़ पर रख दिया गया। उसको भी वह चट कर गया। फिर मालिक ने पूछा, "अच्छा यह तो बतलाइये, क्या बात है। कैसा झगड़ा है, और कब आरम्भ होगा?"

व्यक्ति बोला, "अजी बस शुरू हो ही गया समझिये। मेरे पास शराब के दाम देने को पैसे नहीं हैं।"

*

एक व्यक्ति का शराब पीते पीते ऐसा बुरा हाल हो गया था कि उसको हर समय अपने चारों ओर साँप, हाथी इत्यादि भाँति भाँति के जानवर दिखलाई देते रहते थे। पागलपन यहाँ तक चढ़ा कि उसे विश्वास हो गया कि वास्तव में यह सब जानवर उसके मकान पर उपस्थित रहते हैं। उसने अपने अस्तबल के बाहर "चिड़ियाघर" का बोर्ड लगा दिया और उस पर लिख दिया कि देखने का टिकट आठ आने। बहुत से आदमी इसको पढ़कर वहाँ चिड़ियाघर देखने आये। लेकिन अस्तबल में सिवाय घास फूस के और क्या था! कुछ लोगों ने यह देखकर पुलीस में रिपोर्ट लिखवाई। खबर पाकर पुलिस कप्तान खुद जाँच करने गये। वहां जाकर उस व्यक्ति से बातचीत की। उस व्यक्ति ने कप्तान की आवभगत की और उनको दो चार गिलास शराब के पिला दिये। इसके बाद चिड़ियाघर दिखाने ले गया। शराब पीने के बाद क्या कहना था! कप्तान साहब को चिड़िया-घर बहुत पसन्द आया। वह उसे देखकर बहुत खुश हुए और सौदा करके उस व्यक्ति से उसे उसी दम ख़रीद लिया।

*

कृष्ण मकान बदल रहा था। उसके यहाँ बहुत सी ऐसी वस्तुएँ थीं जो कई पीढ़ी से उनके यहाँ चली आती थीं। वह उन्हें टूटने के डर से ठेले में लाद कर दूसरे मकान पर नहीं ले जाना चाहता था। रात होने पर वह स्वयं ही वे वस्तुएं नये घर में पहुँचा रहा था। इन वस्तुओं में एक बहुत बड़ा पुराना घंटा भी था जिसे वह कठिनता से उठा कर दूसरे मकान में ले जा रहा था। रास्ते में उसे एक आदमी मिला जो होटल से नशे में चूर होकर निकला था। वह कृष्ण को देखकर ठिठका और आश्चर्य से बोला— "क्यों भई दोस्त, यदि

वक्त ही देखना पड़ता है तो हाथ की घड़ी क्यों नहीं इस्तेमाल करते ?"

*

बाप अपने बेटे को कलकत्ते के किसी बार में ले गया। वहाँ पीते हुए बाप ने शिक्षा देनी आरम्भ की— "कभी कभाक थोड़ी पीने में कोई हर्ज नहीं है। पर बेटा, अधिक कभी नहीं पीनी चाहिये। भला आदमी वही है जो समझ जाये कि और नहीं।"

"लेकिन पिता जी, यह कैसे पता लगे कि अब काफी हो चुकी ?"

बाप ने उंगली उठाई, "देखो, उस कोने में दो व्यक्ति बैठे हैं। यदि तुम्हें चार दिखाई देने लगें तो समझो नशा चढ़ गया है।"

लड़के ने बहुत देर तक उस ओर घूरा। फिर चिन्तित स्वर में बोला— "मैं समझ गया पिता जी, लेकिन .... पर .... उस कोने में तो एक व्यक्ति बैठा है।"

जैसे को तैसा

एक भाट दरबार में आया और राजा पर कविता बना कर सुनाने लगा। राजा ने उससे कहा— "मैं तुम्हारी कविता से बहुत खुश हूँ। कल आना, मैं तुम्हें बहुत सारा धन इनाम में दूंगा।"

अगले दिन भाट दरबार में पहुँचा। राजा ने पूछा— "कहो, कैसे आये ?"

भाट ने जवाब दिया, "महाराज, आप ही ने तो मुझसे आज आने को कहा था। आज आप मुझे इनाम देगें न ?"

"कैसा इनाम ?" राजा ने पूछा।

"कल मेरी कविता सुन कर आपने कहा था।" भाट ने जवाब दिया।

राजा ने कहा— "पंडितजी, आप भी कैसे मूर्ख हैं। आपने कुछ शब्द सुना कर मेरी तबियत खुश की, मैंने भी कुछ शब्द कह कर आप की तबियत खुश कर दी।"

*

एक बार एक व्यक्ति रेल में सफर करना चाहता था। वह डिब्बे में घुसा तो देखा कि उसमें नीचे ऊपर सारे में सामान भर रहा है और सिर्फ एक व्यक्ति उसमें बैठा है। क्योंकि कहीं बैठने को जगह नहीं थी, उसने एक सीट पर से एक बक्स उठा कर नीचे रख दिया और बैठ गया। यह देख कर डिब्बे में बैठा हुआ आदमी बोला, "जनाब, यह बक्स मेरे एक मित्र का है। वह इस सीट पर बैठा था। अभी अभी पानी पीने प्लेटफार्म पर गया है।"

यह सुन कर बेचारा यात्री सीट से खड़ा हो गया और बक्स वहीं उठाकर रख दिया। थोड़ी देर में रेल ने सीटी दी, और चल दी लेकिन उस आदमी का कोई भी मित्र वहाँ नहीं आया।

यह देख कर उस व्यक्ति ने कहा, "मुझे दुःख है कि आपके मित्र बाहर ही रह गये। जब वह ही रह गये तो फिर उनका बक्स ही रेल में क्यों जाय।" यह कहते हुए उसने बक्स उठाकर खिड़की से बाहर फेंक दिया और सीट पर बैठ गया।

*

दो मित्र टेनिस खेल कर आ रहे थे कि उन्हें दूर से दो स्त्रियाँ आती दिखाई दीं। उन्हें देखकर एक ने दूसरे से कहा— "अरे, एक तो मेरी पत्नी है। पर इसके साथ यह बुढ़िया भी कौन है?"

दूसरे ने कहा— "मेरी पत्नी भी न जाने किस बुढ़िया के साथ आ रही है।"

*

"मैं एक ऐसी कहानी सुना सकता हूँ जिसको सुनकर लोगों के सिर के बाल खड़े हो जाएं।"

"कृपया किसी गंजे व्यक्ति को सुनाइए।"

*

किसी रेलवे कम्पनी का एक डायरेक्टर अपनी रेल के एक फर्स्ट क्लास के डिब्बे में जा बैठा। कुछ देर बाद एक नया टिकट चैकर आया और उससे टिकट दिखलाने को कहा।

डायरेक्टर साहब बोले, "क्या तुम मुझे नहीं जानते? भले आदमी, मेरी तो

शक्ल ही मेरा टिकट है।"

"अच्छा, यह बात है," चैकर बोला। "अगर शक्ल का सवाल है तो मैं यह कहूँगा कि तुम थर्ड क्लास के टिकट से फर्स्ट क्लास के डिब्बे में सफर कर रहे हो।"

*

एक सज्जन ने एक महाशय को नमस्कार किया। उन महाशय ने उत्तर दिया— 'मैं मूर्खों से नमस्कार नहीं करता।'

दूसरे सज्जन ने तपाक से कहा— 'लेकिन मैं तो करता हूँ।'

*

मोटर में कुछ व्यक्ति जा रहे थे। एक आदमी अपने लड़के की किसी होशियारी पर प्रसन्न होकर प्यार से बोला— 'पूरा सुअर है।'

पास में बैठे उसके दोस्त ने फौरन कहा— 'अभी पूरा कहाँ है। अधिक से अधिक सूअर का बच्चा है।'

*

रेल स्टेशन पर रुकी। एक पण्डितजी, जो सवेरे से भूखे थे, डिब्बे में चढ़े। देखा कोई सेठ कटोरदान खोले खाना खा रहा था। बस बोल ही पड़े— क्यों जजमान, पूरियाँ अकेले अकेले ?

सेठ जी बोले— नहीं, पण्डित जी महाराज। आलू मटर के साथ।

*

वृद्ध उपदेशक— देखो, मेरी आयु ६४ वर्ष की है और एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं जिससे मेरी शत्रुता हो।

भीड़ में से आवाज़ आई— जी हाँ, उन सब को तो भगवान् ने अपने पास बुला लिया। केवल आप ही धरती का बोझ बढ़ाने को रह गये हैं।

*

एक सर्जन, एक कारीगर तथा एक राजनीतिज्ञ आपस में बहस कर रहे थे कि संसार का सबसे पुराना धंधा क्या है।

सर्जन ने कहा— पुरुष सूक्त में कहा गया है कि चीर फाड़ कर जातियाँ उत्पन्न की गई। इसलिये सर्जरी सबसे पुराना धन्धा है।

कारीगर ने कहा— पहले संसार में सब गड़बड़ थी। इसमें भगवान् ने निर्माण किया।

राजनीतिज्ञ मुस्कराकर बोला— बस मैं जीता। यह गड़बड़ फैलाई किसने थी ?

*

एक बार रेल में यात्रा करते समय एक आदमी की आँख में कोयला गिर गया। उसे बहुत कष्ट हुआ, किन्तु कोयला बाहर न निकला। वह स्टेशन मास्टर के पास गया और बोला, "तुम्हारे एंजिन से मेरी आँख में कोयला गिर गया है। इसके लिये मुझे डाक्टर के पास जाना पड़ा। दस रुपये उसकी फीस देनी पड़ी। बताइये इस सम्बन्ध में आप क्या करेंगे।"

"कुछ भी नहीं, श्रीमान जी," स्टेशन मास्टर ने कहा। "क़ानूनी रूप में कोयला आप का माल नहीं था। आप ग़लत तरीक़े से हमारा कोयला ले भागे और इस जुर्म में आप पर हम मुक़दमा चला सकते हैं। लेकिन फिर भी हम आप के विरुद्ध कोई क़ानूनी कार्रवाई नहीं करना चाहते, क्योंकि वह कोयला अब हमारे किसी काम का नहीं रह गया।"

*

'प्रियतम, तुम्हें पता है मैं तुम्हारे लिये क्या लाई हूँ ? एक कालीन जो मैं अपने ड्राइंग-रूम में गरदने के सामने बिछाउंगी। यह तुम्हारी वर्षगाँठ की भेंट है। ······ तुम मुझे क्या भेंट दे रहे हो ?'

'मैं !' उसने सोचते हुए उत्तर दिया, 'सोचता हूँ एक उस्तरा और कुछ टाई तुम्हें भेंट देना ठीक रहेगा।'

*

मोटर दुर्घटना के बाद जैसा होना चाहिये, स्त्री ड्राइवर शोर मचा रही थी— "············ और जिधर हाथ दिया था उसी ओर मुड़ी।"

पुरुष ड्राइवर ने केवल इतना कहा— "जी हाँ, इसी ने तो मुझे चकरा दिया।"

खेल

बात हो रही थी भारत के क्रिकेट के खिलाड़ियों की। किसी ने कहा— "पहली इनिंग यह लोग हमेशा ख़राब खेलते हैं। रन ही अच्छे नहीं बनते। हाँ, दूसरी इनिंग में अच्छा खेलते हैं।"

सरदार जी बोले— "तो भई, दूसरी इनिंग ही पहले क्यों नहीं खिला देते ?"

*

एक दयालु बूढ़ी स्त्री जब भी सड़क से गुज़रती थी तो उसे कोई निर्धन व्यक्ति एक दुकान के बाहर खड़ा मिलता था। एक दिन तरस खाकर उसने उसके हाथ में एक रुपया रख दिया और कहा, "परमात्मा पर भरोसा रखो।"

दूसरे दिन सुबह वह फिर उस रास्ते से गुजरी। वह व्यक्ति वहीं मौजूद था।

बूढ़ी स्त्री को रोक कर उसने पाँच रुपये उसके हाथ में रख दिये।
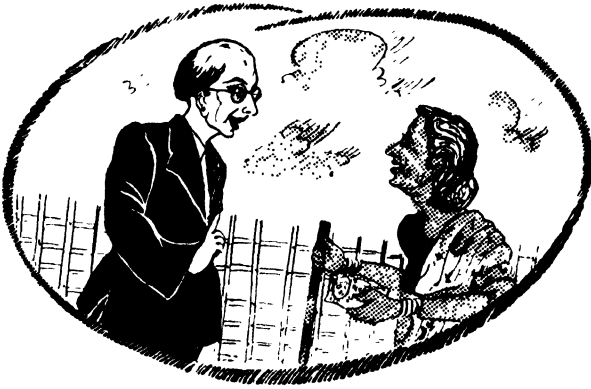
"इसका क्या मतलब ?" स्त्री ने पूछा।

उस व्यक्ति ने कहा— "इसका यह मतलब है, श्रीमती जी, कि कल शाम घुड़दौड़ में आपका बतलाया हुआ 'परमात्मा' घोड़ा जीता और एक के दस रुपये मिले। उसमें से आधे आपके हैं।"

*

एक व्यक्ति एक पुलिया पर बैठा मछली पकड़ रहा था। एक दूसरा आदमी वहाँ आया और उसने पूछा, "क्यों भई, कुछ मछलियाँ पकड़ीं ?"

"मछलियाँ ! अरे, कल यहाँ से पचास मछलियाँ पकड़ कर ले गया हूँ।"

"तुम जानते हो, मैं कौन हूँ ?" उस आदमी ने पूछा।

"नहीं।" मछली पकड़ने वाले ने उत्तर दिया।

"मैं मजिस्ट्रेट हूँ और यह तालाब भी मेरी सम्पत्ति है।"

मछली पकड़ने वाला जल्दी से बोला— "क्या आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ?"

"नहीं," मजिस्ट्रेट ने उत्तर दिया।

"मैं इस क़स्बे में सबसे बड़ा झूठ बोलने वाला हूँ।" मछली पकड़ने वाला बोला।

*

दौड़ सिखाने का नया तरीक़ा

*

*

क्रिकेट सिखाने वाले ने एक दिन स्वप्न देखा कि वह मर कर स्वर्ग पहुँच गया है। वहाँ उसने पूरे संसार के अमर खिलाड़ियों की एक इलेविन छाँटकर तैयार की और उन्हें विशेष ट्रेनिंग दी। पूरी तैयारी कर लेने पर उसे यह चिन्ता

लगीं कि इन्हें मैच किससे खिलाया जाये। तभी दूर से टेलीफोन आया। नरक का अधिकारी बोल रहा था— "क्या तुम मैच खेलोगे?"

"हाँ, हाँ, ज़रूर ! पर याद रखो मेरी टीम बहुत तकड़ी है। ऐसा हरायगी कि तुम्हारे खिलाड़ी पानी भी न माँगेंगे।"

"पागल न बनो। सारे अम्पायर तो हमारे यहाँ हैं।"

*

ब्रिज के तीन खिलाड़ी अपने चौथे साथी के खेल से बड़े निराश हुए। उन्हें यह पता लग गया कि वह बिल्कुल नया खिलाड़ी है। उनमें से एक ने उससे हँसकर पूछा, 'क्या मैं जान सकता हूँ कि आपने ब्रिज खेलना कब से आरम्भ किया ?'

'आपको सुनकर शायद आश्चर्य होगा कि आज से ही।'

'नहीं, मेरा मतलब था आज किस समय से ?' खिलाड़ी ने खिसियाकर कहा।

*

एक घुड़दौड़ी (दूसरे से)— "क्यों भई, कल घुड़दौड़ कैसी रही ? कुछ तक़दीर ने साथ दिया ?"

"हाँ भई, मैं तो यही कहूँगा। आख़िरी दौड़ के बाद नीचे पड़ा हुआ एक रुपये का नोट मिल गया, नहीं तो घर पैदल ही वापिस आना पड़ता।"

शिकारी

शिकारी अपने अनुभवों के बारे में बता रहा था— "उस बार मैंने कितने ही चीते देखे, लेकिन सब को छोड़ दिया।"

"क्यों ?"

"उन में से किसी की भी खाल फर्श पर सुन्दर नहीं लगती।"

*

मछली का शिकार करने वाले हमेशा यह डींग मारा करते हैं कि उन की पकड़ी हुई मछली कितनी बड़ी थी। एक ऐसे ही शिकारी महाशय बड़े गर्व से कह रहे थे— "जितनी बड़ी मछली मैंने कल पकड़ी, उतनी बड़ी तो मैंने अपने जीवन भर नहीं देखी। उसका वज़न पूरा दस सेर था।"

शिकारी का छोटा लड़का भी वहीं बैठा था, और पिता की बातों में मज़ा ले रहा था। मछली का वज़न सुनते ही बोल पड़ा— "हाँ, और पिताजी इतने दयालु हैं कि उन्होंने वह सारी-की-सारी मछली मेरी बिल्ली के नन्हें से बच्चे

को खिलादी। बेचारा बड़ा भूखा था।"

*

राजा शेर के शिकार के लिए अपनी रियासत के एक गाँव में गये। पार्टी को पीछे छोड़ दिया और बोले कि अकेले ही शिकार के लिए जायंगे। खैर, अकेले ही गये। गाँव की हद से बाहर जाने के बाद उन्होंने एक गाँव वाले से पूछा— "शेर किधर है ?"

गाँव वाले को मालूम न था कि मैं अपने महाराज से बातें कर रहा हूँ। सहज भाव से बोला— "यहाँ से सीधे उत्तर की ओर चले जाओ। बस, एक दो मील चलने के बाद शेर के दर्शन हो जायंगे।"

ठीक उसी समय शेर की दहाड़ सुनाई दी। उसे सुन महाराज बन्दूक ज़मीन पर फेंक बोले— "ए, दक्षिण की ओर का रास्ता कौन सा है ?"

*

एक बूढ़ा आदमी नदी किनारे बैठा मछली पकड़ रहा था। पहली बार उसके कांटे में एक दो फीट लम्बी मछली फंसी, लेकिन उसने उस मछली को वापिस नदी में डाल दिया। थोड़ी देर बाद एक उससे भी बड़ी मछली फंसी। उसे भी नदी में वापिस डाल दिया गया।

पाँच मिनट बाद एक छोटी मछली पकड़ी गई, जिसे उसने अपने थैले में डाल लिया। जब वह उठकर चला तो पास ही बैठे हुए एक मछुए ने उससे पूछा कि उसने पहली दो बड़ी और सुन्दर मछलियाँ पकड़ कर भी क्यों छोड़ दीं और अब छोटी सी मछली क्यों घर लिये जा रहा है।

"बात यह है," बूढ़ा आदमी बोला, "मेरी पतीली बहुत बड़ी नहीं है।"

*

एक शिकारी शेखी हाँकते हुए कहने लगा— "जनाब, मैं अपनी क्या तारीफ़ करूँ ? एक जंगल में शिकार खेलने गया था। वहाँ जैसे ही मेरी बन्दूक से आवाज़ हुई कि देखता क्या हूँ, सामने एक भेड़िया मरा पड़ा है।"

सुनने वाले ने उकताकर पूछा— "भला, वह कितनी देर पहले से मरा पड़ा था ?"

*

एक रईस ने अपने एक मित्र को शिकार खेलने को बुलाया। मित्र साहब ने कभी बन्दूक नहीं चलाई थी। मगर वह अपना अनाड़ीपन रईस पर ज़ाहिर करना नहीं चाहते थे, इसलिये बड़े शौक़ से दुनाली बन्दूक लेकर शिकार खेलने चले। रास्ते में एक पेड़ पर कुछ चिड़िया बैठी हुई दिखाई दीं। आपने अपनी बन्दूक के मुंह को आसमान की तरफ करके दोनों नाल दाग़ दीं। चिड़िया उड़ गई। जब बन्दूक का धुआँ साफ हो गया तो मित्र महाशय ज़मीन पर देखने लगे। उन्हें अपने सामने घास में कुछ हिलता हुआ दिखाई दिया। आपने झपटकर उस घास में से एक मेंढक को उठा लिया और मूंछों पर ताव देकर बोले-- "वाह, निशाना इसे कहते हैं। चिड़ियों को इस खूबी से मारा कि उसके सारे पंख झुलस गये।"

*

एक महाराजा शेर का शिकार खेलने गये। शेर तो खैर महाराज के सामने नहीं आया, पर एक खरगोश का शिकार करने की गर्ज़ से उन्होंने कारतूस का एक पूरा खोल खाली कर दिया। अन्तिम गोली चलाकर उन्होंने अपने नौकर से कहा— "बस, यह गोली तो शिकार को लग ही गई मालूम होती है।"

"हाँ सरकार ! तभी, देखिये न, वह पहले से भी ज्यादा तेज़ भागता दिखाई दे रहा है ?"

सिनेमा और नाटक

क्रोधित अभिनेत्री प्रोड्यूसर के पास पैर पटकती पहुँची— 'मैं आपकी नई फिल्म में काम नहीं कर सकती जब तक आप उसके सितारों को न बदल दें। उनमें से दो तो ऐसे हैं जिन्हें सौ साल सीखने पर भी अभिनय नहीं आ सकता।'

'अच्छा !' प्रोडयूसर ने कहा, 'दूसरा कौन है ?'

*

*
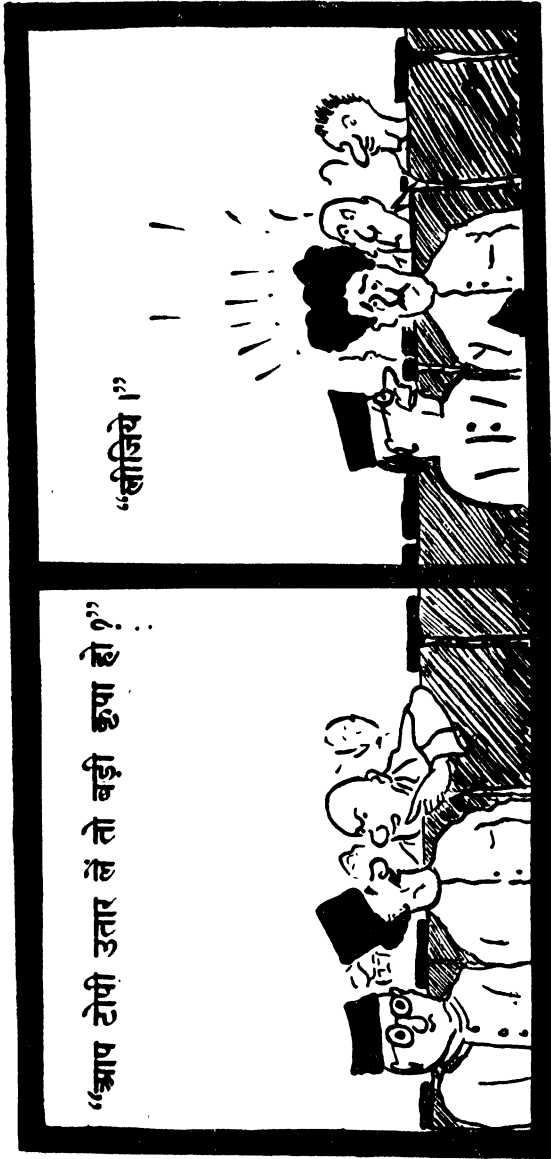
नाटक कम्पनी नाटक खेल रही थी। अभिनय बहुत गन्दा था। दर्शक गण सीटियाँ बजा रहे थे तथा शोर कर रहे थे।

अन्तिम दृश्य में हीरो ने हीरोइन को अपने अंक में भर लिया और कहा, "आखिरकार, प्रिये हम अकेले हैं।"

'नहीं बेटा, आज तो तुम अकेले नहीं हो,' हॉल से आवाज़ आई, 'लेकिन कल रात अवश्य तुम अकेले होगे।'

*

अभिनेत्री-- (मेकअप-मैन से) तुम पहले अच्छा मेकअप किया करते थे। अब तुम्हारे हाथों में वह जादू नहीं रहा जो मेरे सौन्दर्य को पहले के समान उभार सके। क्या हो गया तुम्हें ?

मेकअप-मैन— (बहुत नम्रता से) जी, अब मेरी आयु दस वर्ष अधिक हो गई है।

*

दर्शक— आपके नाटक का प्रेम-दृश्य इस साल पिछली बार से आधा भी स्वाभाविक नहीं है, हालांकि उन्हीं लोगों ने इसे इस बार भी खेला है।

मैनेजर— हाँ, लेकिन कुछ अरसा हुए उन प्रेमियों का विवाह हो गया है।

*

'कल की बात है, प्रसिद्ध अभिनेत्री ...... के ड्रैसिंग रूम में आग लग गई। आग दूर करने में दस मिनट लग गये परन्तु आग बुझाने वालों को दूर करने में पूरे बीस मिनट लगे।'

*

'तुम इस अभिनेत्री को जानती हो ?'

'अच्छी तरह से। बचपन में हम दोनों पड़ोसिन थीं। उस समय हम दोनों की आयु समान थी, मगर अब मैं ३४ वर्ष की हूँ और वह कुल २३ की है।'

*

हालीवुड की एक फिल्मस्टार विवाह के पश्चात् अपने पति के साथ उसके फ़्लैट में पहुँची। वहाँ जाकर बोली— "यह तो कुछ पहचाना सा लगता है, क्या आपको पक्का विश्वास है कि हमारी पहले कभी शादी नहीं हुई थी?"

*

एक बहुत प्रसिद्ध एक्टर जब थियेटर से बाहर निकल रहा था, तो एक मोटा ताज़ा आदमी उससे मिला और उसके एक्टिंग की तारीफ करता हुआ बोला— "वाह, क्या बात है आपकी! आज का एक्टिंग ग़ज़ब का था। मैं आप का दर्शन करके सफल हो गया।"

एक्टर प्रसन्नता के मारे फूला न समाया।

उसके दूसरे ही दिन संध्या को उसी आदमी का पत्र एक्टर को मिला, जिसमें लिखा था, "आज मेरी स्त्री और लड़की भी आपका एक्टिंग देख कर अपने नेत्र सफल करना चाहती हैं। मगर मैं टिकट ख़रीदने में असमर्थ हूँ। आप यदि कृपा कर दो कुरसियों का प्रबन्ध करा दें तो बड़ी कृपा होगी।"

ऐक्टर ने उस पत्र की पीठ पर जवाब लिख दिया, "मैं ख़ुशी से आपको दो कुरसियाँ भिजवा देता यदि वह ज़मीन से जड़ी न होतीं।"

*

अपने कॉलिज के पुराने विद्यार्थियों की एक सभा में फिल्म स्टार डेविड भाषण दे रहा था। इतने में उसका एक सहपाठी बोल उठा— "अरे यार डेविड, तुम ने मुझे पहचाना या नहीं?"

डेविड ने अपना सिर हिलाया और कहा— "मुझे तुम्हारा नाम याद नहीं आ रहा है, और मुझे बताना भी नहीं।" और वह फिर अपने भाषण में लग गया।

*

एक महान् लेखक और एक प्रसिद्ध अभिनेत्री कुछ सवाल जवाब कर रहे थे। लेखक ने पूछा— 'क्या तुम एक अजनबी के साथ रहने को तैयार हो जो तुम्हें पांच करोड़ डॉलर दे?'

उसने बिना हिचक के 'हाँ' कह दिया।

'लेकिन यदि वह तुम्हें पाँच डॉलर दे?'

अभिनेत्री लाल होकर गरजी— 'तुमने मुझे समझा क्या है?'

'वह तो तय हो चुका है। अब हम श्रेणी तय कर रहे हैं।'

*

'तुमने प्राचीन कन्नौज में मोटर दिखाई, फिर भी किसी ने नहीं टोका ?'

'नहीं। लेकिन कुछ फिल्म देखने वालों के पत्र आये कि कार में देहली की नम्बर प्लेट लगी है।'

*

रमेश और श्रीमती रमेश अपने छः महीने के बच्चे को लेकर एक नृत्य-कार्यक्रम देखने गये। द्वारपाल ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि शो में बच्चा रोया तो उन्हें शो से उठ जाना होगा और ऐसी हालत में उनके टिकटों के पैसे लौटा दिये जायेंगे।

लगभग आधा कार्यक्रम होने के बाद श्रीमती रमेश ने श्रीमान् रमेश से पूछा "कैसा लग रहा है नृत्य ?"
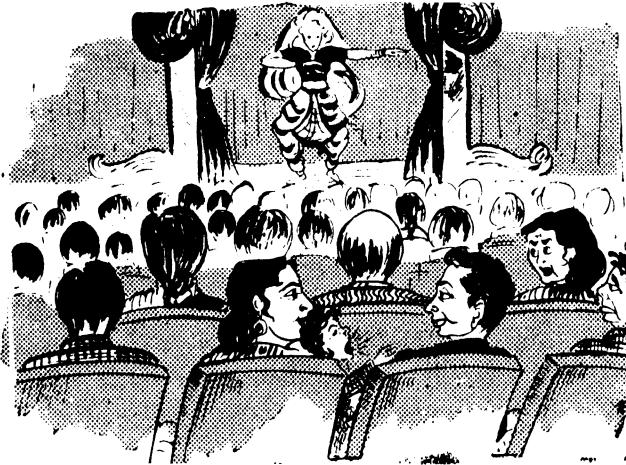
"बेकार।" रमेश ने जवाब दिया।

"तो काटो बेबी के चुटकी।"

*

सिनेमा देखते समय एक सज्जन बहुत परेशान हो गये। उनके आगे की सीट पर एक महाशय बैठे थे, जिनके सिर पर टोप था। पीछे बैठा हुआ व्यक्ति कभी एक ओर झुकता था कभी दूसरी ओर, परन्तु उसे कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था।

मजबूर हो कर, उसने आगे बैठे हुए महाशय के कंधे पर हाथ रखा और पूछा, "महाशय, आपका टोप बहुत सुन्दर है। इस का मूल्य क्या होगा ?"

आगे बैठे हुए व्यक्ति ने मुड़ कर कहा, "दस रुपये।"

पीछे बैठे हुए सज्जन ने अपनी जेब से दस रुपये का नोट निकाल कर आगे बैठे हुए सज्जन के हाथ में रख दिया और उन के सिर से टोप उतार कर अपने पास रख लिया।

*

मुक़दमे में हालीवुड के एक अभिनेता से उसका परिचय पूछा गया।

उसने बड़ी शान्ति के साथ न्यायालय से कहा— "मैं विश्व का महानतम अभिनेता हूँ।"

दूसरे दिन उसके एक मित्र ने उससे कहा— "कल न्यायालय में तुमने बड़ी दून की हांकी।"

अभिनेता ने उत्तर दिया— "बिल्कुल नहीं। वैसे मुझे आत्म-प्रशंसा करने की आदत नहीं है किन्तु न्यायालय ने तो मुझे केवल सत्य बोलने की क़सम दिला रखी थी।"

*

एक नई अभिनेत्री अपने पहले फ़िल्म पर पत्रों में छपी आलोचनाएं पढ़ रही थी। सभी ने उसके अभिनय की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की थी। केवल एक आलोचक ने ही उसकी कटु आलोचना लिखी थी। उक्त आलोचना को पढ़कर वह गरम हो उठी। कुछ देर बाद फ़िल्म के निर्देशक ने उसको फोन किया।

"तुमने वह भद्दी आलोचना पढ़ी, जो 'सिने जीवन' में छपी है? उसका आलोचक कौन है?" नई अभिनेत्री ने पूछा।

"ओह, तुम उस आलोचक की परवा न करो। वह तो पूरा तोता है। जो दुनिया कहती है वही वह लिख देता है। उसकी अपनी राय कुछ नहीं।" निर्देशक ने उत्तर दिया।

*

पहली अभिनेत्री— "आज तुम्हारे पति ने नया सूट पहना है शायद?"

दूसरी अभिनेत्री— "नहीं तो।"

पहली अभिनेत्री— "वह कुछ बदला सा लग रहा है।"

दूसरी अभिनेत्री— "सो तो है ही। वह मेरा नया पति है।"

*

एक थियेटर में नया तमाशा हो रहा था। तमाशा बहुत ही रद्दी था। मगर एक दर्शक उसकी बात बात पर तालियाँ पीट रहा था। यह देखकर दूसरे दर्शक को बहुत नागवार मालूम हुआ। इसलिये उसने पहले दर्शक से चिढ़कर पूछा— "क्या तुमने कभी पहले थियेटर नहीं देखा है, जो तुम्हें यह इतना अच्छा मालूम हो रहा है कि तुम इसकी हर बात पर तालियाँ पीट रहे हो?"

पहला दर्शक— "वाह, खूब समझे ! अजी हज़रत, मैं तालियाँ इसलिये पीट रहा हूँ जिससे मुझे नींद न आये ।"

*

दो दर्शक एक थियेटर हॉल से तमाशे पर आलोचना करते हुए बाहर निकले । एक ने दूसरे से पूछा— "इस खेल में कौन सा ऐक्टर पसन्द आया ?"

दूसरा— "वही जो नाटा और मोटा था और जिसकी नाक बहुत लम्बी थी ।"

पहला— "वाह ! वह कमबख़्त तो बिल्कुल गावदी था । न एक्टिंग कर पाता था, न गा सकता था और न ठीक नाचता ही था ।"

दूसरा— "तो इससे क्या ? उस बेचारे ने तमाशा देखने के लिये मुझे मुफ्त पास तो दिया था ।"

*

किसी नाटक के प्रदर्शन के समय एक महिला ने अपनी संगिनी से कहा— "इन्हें थियेटर की बत्तियां जलती रखनी चाहियें । मुझे अंधेरे में अच्छी तरह सुनाई नहीं देता ।"

"मैं समझती हूँ तुम्हारी कठिनाई को । जब तक मैं चश्मा न लगा लूं, मुझे टेलीफोन पर कुछ सुनाई ही नहीं देता ।"

*

कॉलिज के कुछ लड़कों ने ड्रामे का आयोजन किया । प्रथम शो के दिन नाटक के नायक ने डायरेक्टर साहब के पास आकर कहा, "देखिये डायरेक्टर साहब ! मैं ड्रामे में तनिक भी अस्वाभाविकता नहीं चाहता । इसलिये आप दूसरे दृश्य में शराब के स्थान पर पानी मुझे न पिलवायें । मैं चाहता हूँ उस दृश्य के लिये आप जानीवाकर की एक बोतल मंगा रखें ।"

"बिल्कुल, मैं भी यही चाहता हूँ," गम्भीर स्वर में डायरेक्टर बोला । "अन्तिम दृश्य को पूर्ण स्वाभाविक बनाने के लिये मैं सोचता हूँ संखिया अच्छा रहेगा ? तुम्हारा क्या विचार है ?"

*

एक अमेरिकन फिल्म अभिनेत्री ने पासपोर्ट के लिए दरख़ास्त दी । पूछ ताँछ के वक्त उससे पूछा गया— "क्या आप शादीशुदा हैं ?"

उसने चटपट जवाब दिया— "कभी कभी ।"

*

सरकस में एक स्त्री रिंगमास्टर ने अपने मुंह में चीनी का क्यूब रखा और उसके इशारे पर एक खूंखार शेर बग़ैर चूंचा किये वह क्यूब स्त्री के मुंह से

निकाल कर खा गया। दर्शकों को बहुत अचम्भा हुआ, पर एक आदमी चिल्ला कर बोला— "यह तो कोई भी कर सकता है।"

"क्या तुम इस प्रकार कर सकते हो ?" स्त्री ने माथे पर सलवट डाल कर पूछा।

"क्यों नहीं !" उस आदमी ने उत्तर दिया। "मैं भी इसे इतनी सफाई से कर सकता हूँ जितनी सफाई से शेर।"

*

सिनेमा धर का दरबान— "आप बहुत देर से आये। खेल शुरु हुए तो बहुत देर हो गई।"

लेट लतीफ़— "कोई बात नहीं। तुम दरवाज़ा खोल दो। मैं बिना शोर किये अन्दर चला जाऊँगा।"

दरबान— "नहीं, यह बात नहीं है। मेरे दरवाजा खोलते ही सब दर्शक बाहर भाग जायेंगे।"

*

हालीवुड के प्रसिद्ध हास्य अभिनेता कास्टेलो के पैर चारपाई से और रज़ाई

से बाहर निकले हुए थे। वह अपने साथी एबट से बोला— "पैर तो बर्फ हो गये हैं।"

एबट ने कहा— "मूर्ख, इन्हें रज़ाई के अन्दर कर ले।"

कास्टेलो— "ऐसी ठण्डी चीज़ को मैं अपने साथ सुलाऊँ? ऐसी मूर्खता तुम्हीं कर सकते हो।"

*

पाँच मिनट में जब एक आदमी सिनेमा हॉल के टिकटघर से तीसरी बार टिकट खरीदने आया, तो बुकिंग क्लर्क ने पूछा— "क्यों, क्या बात है?"

"वह जो दरवाज़े पर एक अजीब बेवकूफ खड़ा है, मेरा टिकट बार बार आधा फाड़ देता है।"

*

सेसिल बी. डिमिले, हालीवुड का विख्यात फिल्म डायरेक्टर, अपने फिल्मों पर पैसा पानी की तरह बहाने के लिये प्रसिद्ध है। एक बार उसने एक छोटे से दृश्य में नायिका के पहनने के लिये सात सौ रुपए फी गज़ की कमख़ाब मँगाकर इस्तेमाल की। स्टूडियो के मालिक ने कहा कि यहाँ दस रुपए गज़ की कमख़ाब से भी काम चल सकता था। दर्शकों को तो कभी मालूम ही न होगा कि कमख़ाब इतनी महँगी है।

डिमिले ने उत्तर दिया— "हाँ, यह तो ठीक है कि दर्शकों को कभी यह मालूम न होगा, लेकिन मेरी स्टार को तो अवश्य महसूस होगा। क्या आप का ख़्याल है कि दस हज़ार रुपये की लागत के कपड़े पहन कर भी वह स्त्री अभिनय में जान नहीं लड़ा देगी?"

दर्शनीय स्थान

एक अंग्रेज़ महिला एक हिन्दुस्तानी अजायबघर को देख रही थी। नाक भौं सिकोड़ते हुए वह बोली— "ऊँह! यह भी कोई अजायबघर है। इसमें क्रॉमवेल की खोपड़ी तक नहीं है, हमारे आक्सफोर्ड के अजायबघर में तो है।"

*

मास्को के चित्र संग्रहालय में एक विदेशी राजदूत को घुमाया जा रहा था। वह दो चित्रों के सामने रुक गया, और अपने गाइड से बोला— "यह कौन व्यक्ति है?"

गाइड— "अरे, आपको मालूम नहीं, यह मूछोतोव है, जिसने एंजिन, हवाई जहाज़, रेडियो, बिजली और टेलीफोन का आविष्कार किया था।"

राजदूत— "और यह दूसरे कौन महानुभाव हैं ?"
गाइड— "यह ऊलजलूलोस्की हैं।"
राजदूत-- "इन्होंने क्या काम किया था ?"
गाइड-- "इन्होंने मूछौतोव का आविष्कार किया था।"

*

संग्रहालय में घूमते हुए एक खोपड़ी दिखाई दी, तो दर्शक ने गाइड से पूछा— "यह किसकी खोपड़ी है, भाई ?"

दर्शक ज़रा भोला था और गाइड मसखरा। स्वर को गम्भीर बनाते हुए बोला— "यह अगस्त्य मुनि की खोपड़ी है, जो समुद्र को तीन चुल्लू में पी गये थे।"

दर्शक ने बहुत श्रद्धा से उसे सिर झुकाया और बाहर चला आया। पर बाहर उसे विचार आया कि गाइड ने मुझे बेवकूफ़ तो नहीं बनाया है।

वह लौट कर म्यूज़ियम में गया और भभकते हुए गाइड से बोला— "क्यों जी, तुम मुझे बेवकूफ़ समझते हो जो उस खोपड़ी को अगस्त्य मुनि की बता दिया ?"

"क्यों भाई, इसमें बेवकूफ समझने की क्या बात है ?" गाइड ने पूछा, तो दर्शक जी तड़क कर बोले— "कम से कम आदमी को देखकर तो झूठ बोला करो। भला इतने बड़े अगस्त्य मुनि की खोपड़ी इतनी छोटी कैसे हो सकती है ?"

गाइड ने सिर खुजलाते हुए कहा— "माफ कीजिये, मैं आपसे यह कहना भूल गया कि यह उनके बचपन की खोपड़ी है।"

दर्शक जी ज़रा झेंपते हुए बोले— "हाँ, ठीक है। अब बात समझ में आ गई।"

*

दो ड्राइवर एक बार अजायबघर देखने गये। वहाँ एक मिस्री ममी (मसाला लगा शव) रखा था, जिसके पास अंग्रेज़ी में एक पट्टी पर 'ई० पू० ११८७' (मृत्यु की तारीख़) लिखा था। दोनों ड्राइवरों की समझ में यह बात नहीं आई।

"गफ़ूर, इसका क्या मतलब है, भाई ?" दसौंधासिंह ने पूछा।

"कुछ समझ में नहीं आता। शायद यह उस मोटर क़ा नम्बर हो जिससे दब कर इस आदमी की मौत हुई।"

*

एक बहुत पुराना महल देखने के लिये कई दर्शक आये थे और बूढ़ा नौकर

उन्हें दर्शनीय चीज़ें दिखा रहा था ।

एक कमरे में पहुँच कर बूढ़े ने दर्शकों से कहा, "इसी कमरे में रानी भोजन कर रही थीं जब एक मधुमक्खी ने उन्हें काट लिया और वे मर गईं ।"

एक दर्शक बोला उठा, "मगर पिछले साल मैं जब आया था, तो तुमने इस घटना का स्थान वह बग़ल वाला कमरा बताया था ।"

बूढ़ा एकदम बोला, "जी हाँ, उस कमरे की आजकल मरम्मत हो रही है ।"

*

गाइड (दिल्ली में एक अमेरिकन यात्री से)— "देखिये, यह मन्दिर यहाँ से खोद कर निकाला गया है ।"

यात्री— "यही बात मैंने इटली और ग्रीस में भी देखी थी ।"

"क्या बात, साहब ?"

"यही कि पुराने आदमी अपने मन्दिर बना कर उन्हें गाड़ देते थे ।"

*

देहली की सैर करने आये अमेरिकन को एक गाइड देहली के प्रसिद्ध स्थान दिखा रहा था । मगर कुछ ही समय बाद उसे मालूम पड़ गया कि अमेरिकन के मुंह से किसी भी स्थान के लिये प्रशंसा के शब्द निकलवाना नामुमकिन था । वह जिस इमारत को देखता उसे अपने देश की किसी न किसी इमारत से तुलना करके हल्का कर देता था ।

जामा मस्जिद पर पहुँच कर अमेरिकन ने गाइड से पूछा— "यह कौन सी इमारत है ?"

'जामा मस्जिद ! दुनिया की सब से बड़ी मस्जिद ।"

अमेरिका में इतनी बड़ी मस्जिद न होने के कारण अमेरिकन को कुछ क्षण के लिये चुप रह जाना पड़ा। मगर कुछ सोच कर उसने पूछा— "कितने वर्ष लगे होंगे इसके बनने में ?"

गाइड ने कहा— "ठीक नहीं कह सकता हजूर, मगर दस पन्द्रह साल से कम क्या लगे होंगे ?"

अमेरिकन ने गर्व से कहा— "हम लोग अमेरिका में इससे बड़ी इमारत महीनों में तैयार करके खड़ी कर देते हैं।"

कुतुब मीनार पहुँचने पर फिर अमेरिकन को अमेरिका की किसी ऐसी इमारत की याद नहीं आई जिसे वह कुतुब मीनार के मुक़ाबिले में अच्छा बता सकता। लिहाज़ा उसने दुबारा गाइड से पूछा— "और इस इमारत के बनने में कितना समय लगा होगा ?"

"दस पन्द्रह साल तो इसमें भी लगे होंगे हजूर।"

"हम लोग अमेरिका में इससे दो तीन गुनी ऊँची इमारत अधिक से अधिक एक साल में तैयार कर लेते हैं।"

बिरला मन्दिर देख लेने के बाद फिर अमेरिकन ने पूछा— "इस इमारत को भी बनाने में तुम लोगों ने दस पन्द्रह साल से कम नहीं लगाये होंगे ?"

तंग आ चुका गाइड लापरवाही से बोला— "यह हमारी आजकल की बनी इमारतों में से है। कह नहीं सकता हजूर कि इस इमारत के बनाने में कितना समय लगा है। मगर मुझे अच्छी तरह ध्यान है जब मैं परसों शाम को इस तरफ घूमने आया था तब इस जगह पर यह इमारत नहीं थी।"

पार्टी

मिस्टर वर्मा एक पार्टी में बड़ा भड़कीला सूट पहन कर आए। एक दूसरे व्यक्ति ने उन से पूछा कि वह उन्होंने कहाँ सिलवाया। इस पर मिस्टर वर्मा बोले, "लन्दन में। और आपके विचार में मैंने इसके कितने दाम दिए होंगे ?"

वह व्यक्ति बोला, "इसकी असली क़ीमत से बहुत ज़्यादा।"

*

एक आदमी जो अपने आपको बहुत बातूनी और दार्शनिक समझता था, एक दिन अपने क्लब में कहने लगा, "आम आदमी के स्वभाव व आदतों में कोई न कोई विचित्रता अवश्य होती है, लेकिन मुझमें ऐसी कोई बात नहीं है। कम-से-कम मेरे ध्यान में तो अपनी कोई विचित्रता आई नहीं।"

इस पर क्लब के एक अन्य सदस्य ने पूछा— "आप शेव कैसे बनाते हैं ?"

"दाहिने हाथ से।"

"बस, बस, यही आपकी विचित्रता है। आम आदमी शेव उस्तरे से बनाते हैं।"

*

एक पार्टी में एक मेहमान ने अपने पास बैठे हुए मेहमान से ठण्डी सांस लेते हुए कहा— "इन औरतों के मन का भी कुछ पता नहीं। ये बड़े चंचल स्वभाव की होती हैं। देखिये, न उस कोने में बैठी हुई स्त्री आधे घण्टे से मेरी ओर देख रही थी। लेकिन अब ऐसी शान्त बैठी है जैसे उसे मुझ से कोई मतलब ही न हो।"

"यह तो मैंने देखा नहीं क्योंकि मैं यहाँ अभी आया हूँ। लेकिन वह स्त्री तो मेरी पत्नी है।"

*

क्लब में बातचीत चल रही थी। एक आदमी बड़ी शेखी मार रहा था। बोला, "मुझे कोई शराब दिखा दो, मैं फौरन बता दूंगा वह कौन सी है।"

इस पर एक दूसरे व्यक्ति ने अपनी जेब से एक शीशी निकाली और कहा— "बताइए, यह कौन सी शराब है?"

शेखीखोर ने बड़े उत्साह से एक घूंट भरा और एकदम मुँह बिचका कर थूक दिया। फिर बोला— "बाप रे, यह तो पैट्रोल है।"

दूसरे व्यक्ति ने कहा— "यह तो मैं जानता हूँ पर कौन सी कम्पनी का?"

*

प्रधान अपनी संस्था की रिपोर्ट पढ़ते हुए—"अक्सर संस्थाओं में यह होता है कि कुछ सदस्य काम करते हैं, और कुछ सदस्य काम नहीं करते। लेकिन मैं

बड़ी प्रसन्नता के साथ कह सकता हूँ कि हमारी संस्था में इस का बिलकुल उलटा है।"

*

एक पति पत्नी सैर करने के लिये बम्बई गये हुए थे। एक पार्टी में बात संगीत पर चल निकली। ख़ास तौर पर सहगल पर बात हो रही थी।

पत्नी बोल उठी, "मैं भी कितनी भाग्यवान हूँ। आज ही जब मैं पाँच नम्बर की बस में जूहू जा रही थी तो सहगल भी उसी बस में बैठा था।"

यह सुन कर चुप्पी छा गई और किसी ने भी उस बुद्धिमती स्त्री की बात काटने की हिम्मत नहीं की।

जब पति पत्नी वहाँ से चले, तो पति ने एकान्त में पहुँचते ही कहा, "मैंने तुम से कई बार कहा है कि जो बात तुम नहीं समझती, उसमें टाँग मत अड़ाया करो।"

"मैंने क्या ग़लत बात कह दी थी?"

"यहाँ आये तुम्हें इतने दिन हो गये, फिर भी यह नहीं मालूम कि पाँच नम्बर बस जूहू नहीं जाती।"

*

एक पार्टी में एक रानी साहिबा के हार के मूल्यवान मोतियों की बड़ी प्रशंसा हुई। रानी साहिबा ने लोगों के कहने से वह हार मेज़ पर रख दिया। मेज़ जगमगा उठी। इसके बाद सब लोग खाने पीने में लग गये। थोड़ी देर में रानी साहिबा ने देखा कि हार नदारद है।

सब लोगों में हलचल मच गई। घर के मालिक ने सब से कहा— "भाइयो, यह बड़े अफसोस और शर्म की बात है कि इस पार्टी में कोई चोर भी आ घुसा है। मै चाहता हूँ कि वह हार चुपचाप मेज़ पर रख दिया जाये जिससे किसी को व्यर्थ ही लज्जित न होना पड़े। आप लोगों में से जिस के पास वह हार हो, कृपा कर उसे इस चाँदी के कटोरे में चुपचाप रख दीजिये। रोशनी दो मिनट तक गुल रहेगी।" यह कह कर उसने रोशनी बुझा दी।

दो मिनट तक कमरे में सन्नाटा छाया रहा। उसके बाद जब रोशनी की गई, तब सब ने आश्चर्य से देखा कि चाँदी का कटोरा भी ग़ायब है।

*

दावत में देर से आने वाले एक मेहमान ने देखा कि उसकी सीट टेबिल के एक कोने में लगी हुई है जिसके बगल में एक मुर्ग़ी रखी है। वह मज़ाक़ करने के ढंग से बोला, "ओहो, मुझे मुर्ग़ी की बगल में बैठना है।"

तभी उसे ध्यान आया कि उसकी सीट की बाई ओर एक युवती बैठी हुई है। उसने अपनी ग़लती को सुधारना चाहा— "मेरा मतलब जली भुनी से है।"

*

एक पार्टी में एक स्त्री ने अपने साथ बैठे पुरुष से पूछा, 'क्यों जी, वह सुन्दर महिला जो भोजन परोस रही थी कहां गई ?'

'क्यों ? क्या आपको पानी चाहिये ?' पुरुष ने कहा, 'मैं अभी ला देता हूँ।'

'नहीं धन्यवाद ! मुझे पानी अभी नहीं चाहिये। मैं तो अपने पति की तलाश में हूँ।"

*

एक पार्टी में संगीत का कार्यक्रम चल रहा था। इस बीच में एक बहुत प्रमुख व्यक्ति उठकर चलने लगे। वह कुछ ही दूर गये थे कि पार्टी के आयोजक ने उन्हें धर पकड़ा और उनसे रुकने का अनुरोध करते हुए कहा— "अच्छा, यह तो बताइये, यह सितार कैसा बज रहा है ? आपको बहुत पसन्द आया होगा ?"

अतिथि ने उत्तर दिया— 'जी हाँ, इसे सुनकर मुझे बुन्दू ख़ाँ की याद आ रही है।"

"पर बुन्दू ख़ाँ तो सारंगी में प्रवीण हैं। उन्हें सितार बजाना कब आता है ?"

"तभी तो मैं कह रहा हूँ।"

*

एक पार्टी में अतिथियों के मनोरंजन के लिये एक स्त्री गाना गा रही थी। एक व्यक्ति को उस स्त्री का गाना इतना बुरा लगा कि वह झुंझला कर साथ बैठे

हुए व्यक्ति से बोला, 'क्या गला फाड़ रही है ? यह स्त्री कौन है ? क्या आप जानते हैं ?'

पास बैठे हुए व्यक्ति ने कहा, 'हां, वह मेरी पत्नी है ।'

यह उत्तर सुनकर पहला व्यक्ति घबरा गया और विनीत स्वर में बोला, 'ओह ! क्षमा कीजिये ग़लती हो गई। उनकी आवाज़ तो ठीक है परन्तु उन्हें बेढंगा गीत गाना पड़ रहा है। मुझे समझ नहीं आता किस नौसिखिये ने यह गीत लिखा है ।'

दूसरे व्यक्ति ने झेंपते हुए कहा, 'मैंने ।'

होटल और रेस्ट्राँ

एक आदमी दो बच्चों के साथ एक रेस्ट्राँ में गया। तीन ख़ाली प्लेटें और तीन गिलास पानी मँगाकर उन्होंने अपने परांठे खाने शुरू कर दिये। इतने में मैनेजर आया और कड़क कर बोला— "क्या कर रहे हो ?"

"आप हैं कौन ?" आदमी ने पूछा ।

"मैं मैनेजर हूँ ।"

"ओह, मैं आपको ही बुलाने की सोच रहा था। आज पानी में बरफ कम क्यों है ? और रेडियो क्यों नहीं बज रहा ?"

*

यात्री (होटल के क्लर्क से)— "जनाब, पत्र लिखने के पैड और लिफ़ाफे कहाँ हैं ?"

क्लर्क— "वह तो हम होटल के मेहमानों को देते हैं। क्या आप यहाँ ठहरे हुए मेहमान हैं ?"

यात्री— "जनाब, मैं मेहमान नहीं हूँ। मै तीस रुपये रोज़ देता हूँ ।"

*

एक ग्राहक ने ह्विसकी और सोडा लाने का आर्डर दिया। बैरा ने दोनों चीज़ें लाकर उसकी मेज़ पर रख दी और पैसे लेकर चला गया। उसी समय ग्राहक ने एक व्यक्ति को होटल में प्रवेश करते हुए देखा। इस पर ग्राहक उठकर चला गया।

यह व्यक्ति फौरन उस ग्राहक की मेज़ पर आया और वहाँ रखी ह्विस्की पीने लगा। बैरा ने कहा— "यह क्या करते हो ? अभी वह आदमी आता होगा।"

"नहीं," उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "अब वह नहीं लौटेगा। वह हमारी

मद्य विरोधी समिति का प्रधान है, मैं मन्त्री हूँ।"

*

ग्राहक— "इस धाबे का मालिक कहाँ है ?"

नौकर— "वह पास वाले धाबे में रोटी खाने गये हैं।"

*

ग्राहक— (बैरा से) "देखो, मेरे साग में यह पत्ती कहाँ से आ गई ?"

बैरा— "श्रीमान जी, अवश्य ही यह हमारी किसी शाखा से आई होगी।"

*

नाटे क़द के दुर्बल से व्यक्ति ने होटल में जा कर खाने का आदेश दिया। बहुत देर के बाद खाना आया, और वह चुपचाप खाने लगा।

उसने आधा ही खाना खाया था कि बैरा उसके पास आया, और चुपके से बोला— "महाशय, आप खाना खाने में जल्दी कीजिये।"

"आखिर क्यों ?" वह झल्ला कर बोला।

बैरा ने घबराहट से इधर उधर देख कर कहा— "देखिये महाशय, आप शहर के नामी पहलवान की टोपी पर बैठे हुए हैं। लेकिन उसे अभी तक इसका पता नहीं चला है।"

*

बैरा चाय बहुत देर से लाया था। ग्राहक को चाय देते देते वह बोला—

"यह चाय ब्राज़ील से मंगवाई गई है।"

"हूँ," चाय का प्याला होंठों से लगाते हुए ग्राहक ने कहा, "तभी तो यह ठंडी हो गई है।"

*

होटल का क्लर्क—"पहली मंज़िल के कमरों का किराया साढ़े अठारह रुपए है और दूसरी मंज़िल का साढ़े पन्द्रह रुपए और तीसरी मंज़िल का साढ़े बारह रुपए।"

यात्री—"अच्छा, नमस्ते। मेरा ख़्याल है कि यह होटल काफ़ी ऊंचा नहीं है।"

*

एक रेस्ट्राँ के बाहर "यहाँ सब भाषाएं बोली जाती हैं" लिखा देख कर एक विदेशी उसमें घुसा और मैनेजर से कहने लगा—"आपको तो काफी भाषाविज्ञ अपने यहाँ रखने पड़े होंगे?"

"एक भी नहीं।"

"तो सारी भाषाएं कौन बोलता है?"

"ग्राहक।"

*

एक धनी आदमी को किसी कारण एक बार शहर के एक गन्दे धाबे में रोटी खानी पड़ी। वहाँ उसे बचपन का एक दोस्त मिला, जो उस जगह नौकरी कर रहा था। उसे देखकर धनी बोल बठा, "दोस्त, तुम इस सड़ियल धाबे में नौकर हो?"

पुराने दोस्त ने जवाब दिया, "लेकिन मैं इस सड़ियल धाबे में खाता नहीं।"

*

यूरोप में एक बाबू साहब को होटल से चलते वक्त डेढ़ सौ रुपये का बिल मिला। इतना बड़ा बिल देख कर उसने क्लर्क से हिसाब मांगा। क्लर्क ने कहा कि इस बिल में भोजन के पैसे भी सम्मिलित हैं।

"लेकिन हमने तो यहाँ भोजन किया ही नहीं," बाबू साहब ने कहा।

"यह हमारी ग़लती नहीं है। आपके लिये यहाँ भोजन बना तो था।"

"अच्छा, यह बात है। तब तो तुम भी मेरी पत्नी को चूमने के लिये मुझे डेढ़ सौ रुपये के देनदार हो।"

"कैसे? मैंने तो तुम्हारी पत्नी से बात भी नहीं की।"

"यह मेरी ग़लती तो नहीं है। वह यहाँ थी तो।"

❀

होटल मालिक— महाशय, ये हैं हमारे होटल के सम्बन्ध में कुछ बड़े बड़े लोगों की सम्मतियां। आप जा रहे हैं, इन्हें साथ अवश्य ले जायें।

मेहमान— धन्यवाद ! मैं अपनी सम्मति जो साथ लिये जा रहा हूँ, वह पर्याप्त नहीं है क्या ?

*

होटल का मैनेजर (काम करने वाली लड़कियों से)— "आज तुम सब अच्छी से अच्छी पोशाक पहनो, रोज़ से अधिक खुश नज़र आओ, पाउडर ज्यादा लगाओ और बाल अच्छी तरह संवारो।"

लड़कियाँ (उत्सुकता दिखाते हुए)— "क्या आज कोई विशेष मेहमान आने वाला है ?"

मैनेजर— "नहीं, आज सब्ज़ी में नमक ज़्यादा पड़ गया है।"

*

एक होटल में कई बार आग लग चुकी थी। एक दिन एक लम्बा व्यक्ति उस होटल में ठहरने आया। उसको होटल की आख़िरी मंज़िल पर एक कमरा दे दिया गया। जब उस व्यक्ति का सामान ऊपर ले जाया जा रहा था तो मैनेजर ने एक मोटा रस्सा उसमें देखा। रस्सा देखकर वह उस व्यक्ति से बोला, "यह क्या है ?"

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया— "यह आग से बचने के लिये है। इसे मैं सदा अपने साथ रखता हूँ ताकि खिड़की से बग़ैर किसी को कष्ट दिये नीचे उतर जाऊँ।"

मैनेजर ने उस व्यक्ति की ओर घूरते हुए कहा, "अच्छी योजना है। परन्तु ऐसे ग्राहक जो आग से बचने का सामान साथ रखते हैं, किराया पेशगी देते हैं।"

❀

एक व्यक्ति, किसी रेस्ट्राँ में बहुत देर से बैठा हुआ बैरे का इन्तज़ार कर रहा था। उसकी ओर जब बहुत देर तक किसी ने ध्यान नहीं दिया तो उसने स्वयं ही उठकर एक लड़के को पकड़ लिया और बोला, "क्या मुझे रात तक यहीं भूखा मरना पड़ेगा ?"

बैरे ने नम्र स्वर में उत्तर दिया— "रात तक क्यों, रेस्ट्राँ हम सायंकाल ६ बजे ही बन्द कर देते हैं।"

*

रेस्ट्राँ में बैठे सब लोग उस व्यक्ति से परेशान नज़र आ रहे थे, जो चिल्ला चिल्ला कर वेटर को बुला रहा था।

'इस कूड़ाखाने में पानी के लिए क्या करना होता है ?' वह फिर चिल्लाया।

उसके बग़ल में बैठे व्यक्ति ने धीरे से जवाब दिया, 'अपने कपड़ों में आग लगानी होती है।'

*

सन्ध्या समय एक होटल में जब पार्टी समाप्त हुई, तो एक आदमी ने बैरे को बुलाकर पूछा— "क्या बारिश अभी तक हो रही है ?"

बैरे ने जवाब दिया— "साहब, यह मेरी मेज़ नहीं है।"

*

आगन्तुक अतिथि ने होटल के मालिक से पूछा— "क्यों साहब, आपके होटल में गरम और ठण्डे पानी का भी प्रबन्ध है ?"

मालिक बोला— "हाँ, हाँ, जाड़े में ठण्डे और गरमी में गरम पानी का प्रबन्ध रहता है।"

*

ग्राहक— हलुए में यह बटन कैसा ?

होटल का नौकर— ओहो ! आपका बहुत बहुत धन्यवाद ! इसे ही मैं कल सवेरे से खोज रहा था।

*

एक सज्जन होटल में ठहरे जो स्टेशन के बिल्कुल निकट था। एंजिनों का शोर, सीटियां, आती जाती ट्रेनों की गड़गड़ाहट। सज्जन ने रात को खिड़की से झाँक कर मैनेजर से पूछा— "क्यों साहब, यह होटल अगले स्टेशन कितने बजे पहुँचेगा ?"

*

* स्विट्ज़रलैंड के एक होटल ने यह विज्ञापन अखबारों में दिया—

"अगर आप एकान्त पसन्द करते हैं, तो हमारे होटल में ठहरिये। संसार के कोने कोने से हज़ारों लोग आकर इस होटल में ठहरते हैं।"

*

एक अभिनेत्री एक बहुत बड़े होटल में आकर ठहरी। चलते समय उसने होटल के मैनेजर को एक बहुत बड़ा ट्रंक भेंट किया। मैनेजर के पूछने पर, उसने उत्तर दिया, "इस ट्रंक में गुलदस्ते हैं। यह गुलदस्ते आपके होटल में काम करने वाली लड़कियों के लिए हैं।"

मैनेजर ने हँस कर कहा, "ओह! क्या ही सुन्दर भेंट है!"

"भेंट!" अभिनेत्री चिल्लाई। "आप इसे भेंट कहते हैं। यह गुलदस्ते तो मैंने उनकी क़ब्र पर चढ़ाने के लिए दिये हैं क्योंकि मैं समझती हूँ कि वे सब मर चुकी हैं।"

*

एक नये अमीर किसी रेस्ट्राँ में खाना खाने गये। वहाँ जल्दी में वेटर से भाजी की एक प्लेट गिर गई और भाजी उनके कपड़ों पर आ पड़ी। उन्होंने तैश में आकर कहा— "तुम एक गधे को परोसने लायक भी नहीं हो।"

"पर मैं कोशिश कर रहा था, जनाब।"

*

अपने पति के साथ एक रेस्ट्राँ में खाना खाने के बाद एक पत्नी बाहर निकलते समय अन्दर, हाल ही में ख़रीदे कपड़ों का एक पैकेट भूल आई। बाहर आने पर उसने पति को कुछ देर रुकने को कहा, और अन्दर अपनी पुरानी जगह पर जाकर मेज़-कुर्सियों आदि के नीचे पैकेट ढूंढने लगी।

कुछ मिनट बाद एक वेटर आकर उससे बोला— 'क्षमा कीजिये, श्रीमतीजी, लेकिन श्रीमानजी तो बाहर खड़े हैं।"

*

वेटर— और जाते समय वह मुझे ३०) रुपये टिप के दे गया। असल में उसने मुझसे पूछा था कि मेरे कितने बच्चे हैं? मैंने कहा छ। सो उसने तीस रुपये देकर कहा, पाँच-पाँच प्रत्येक को दे देना।

मित्र— अरे यार, तो बढ़ाकर दस बारह बच्चे क्यों नहीं बता दिये?

वेटर— भई, काफी तो बढ़ा कर कहे थे, वैसे बच्चा तो अपना एक भी नहीं।

सड़क पर

एक मोटर वाला अपनी मोटर को एक छोटे नगर की मुख्य सड़क पर बड़ी

तेज़ी से ले जा रहा था। अचानक ही एक कोयला मज़दूर ने अपना ठेला दायें हाथ को मोड़ा और एक गली में घुस गया। किसी तरह टक्कर को बचाकर मोटर वाले ने ठेले वाले से जवाब तलब किया कि वह बिना हाथ दिखाये ही क्यों मुड गया।

"क्यों ? अजीब अहमक़ हो," ठेलेवाले ने कहा। "मैं तो हमेशा से ही इस गली में जाता रहा हूँ।"

*

सड़क पर खड़ा एक बाज़ीगर चिल्ला रहा था— "भाइयो, अभी आपकी आँखों के सामने मैं आपको कोयले, पत्थर, कील, काँच खाकर दिखाऊँगा। इसके बाद फिर मैं एक साबुत तलवार निगल जाऊँगा। और भाइयो, इसके बाद मैं आपके सामने अपने हाथ फैलाऊँगा। दो आना, चार आना, धेला, दमड़ी, जिससे जो भी बने, मेरे झोले में डाल देना। मेरे पेट के लिये भी दो रोटी बन जायें।"

कोई बोल उठा— "क्या इतना खाने पर भी तेरे पेट में रोटी की जगह रहेगी ?"

*

*

ठेलेवाला परेशान था। वह चीख रहा था, पर सड़क की भीड़ टस-से-मस नहीं होती थी।

उसने चिल्लाकर कहा— "ज़रा रास्ता छोड़ दो, भले लोगो।" इसका भी कुछ असर नहीं हुआ।

उसने फिर चीखकर कहा— "हट जाओ, सड़क पर से ठेले को जाने दो।" एकदो आदमी इधर उधर हो गये।

"अपने कपड़ों को बचाना।" उसने ज़ोर से कहा और ठेला चलाना प्रारंभ किया। लोग कपड़े सँभालते हुए फौरन एक ओर हो गये।

*

"ए भाई, ज़रा मेरी छोटी बहन को घर पहुँचा दो। यह रास्ता भूल गई है।"

"हज़रत, आप ही क्यों नहीं पहुँचा आते ?"

"अरे यार, मैं भी तो भटका हुआ हूँ।"

*

"गोपाल बुरा फँसा।"

"क्यों ?"

"वह बाज़ार में केले के छिलके पर पैर पड़ जाने से फिसल कर गिर पड़ा। बस, सड़क पर बिना लाइसेन्स के तमाशा दिखाने के अपराध में पकड़ लिया गया।"

*

पत्नी— क्या तुमने इस औरत को देखा जो अभी पास से गुज़री है ?

पति – कौन सी ? जिसने रूज़ और लिपस्टिक लगा रखी थी और साटन का कसा हुआ ब्लाउज़ पहन रखा था।

पत्नी— हाँ।

पति— नहीं, ख़ास ध्यान नहीं दिया।

*

सामने आने वाली युवती को देखकर युवक मुस्कराते हुए ठहर गया और हाथ जोड़कर कहने लगा— "नमस्ते, सुशीलादेवी। लम्बे अरसे के बाद आपसे मुलाक़ात हो रही है।"

युवती ने सरोष कहा— "क्या आप हमारी पुरानी मित्रता इतनी जल्दी भूल गये ? मेरा नाम सुशीला नहीं ललिता है, क्या यह भी आपको याद नहीं, मिस्टर सुरेन्द्र ?"

ठिठक कर युवक एक निमिष ठहर गया और आहिस्ता से बोला— "माफ कीजियेगा। मेरा नाम सुरेन्द्र नहीं, माधव है।"

*

एक शौक़ीन आदमी को अपना बढ़िया रुमाल कोट की जेब में नहीं मिला।

उसने एक आइरिश पर रुमाल चुरा लेने का आरोप लगाया। कुछ गर्मागर्मी के बाद उसने अपनी पतलून की जेब में हाथ डाला तो रुमाल मिल गया। उसने आइरिश से क्षमा माँगी।

आइरिश बोला— "कोई बात नहीं। आपने मुझे चोर समझा था और मैंने आपको भला आदमी समझा था, और हम दोनों का ही अनुमान ग़लत था।"

मोटर, रेल, जहाज़

रेल के डिब्बे में, मुन्नी अपनी माँ से— "अम्माँ, पिछले स्टेशन का क्या नाम था ?"

माँ— "तंग मत कर। मुझे नहीं मालूम क्या था।"

मुन्नी— "तब तो बडा बुरा हुआ, अम्माँ। छोटा भैया तो वहीं उतर गया था।"

*

एक देहाती और एक शहरी रेल के एक ही डिब्बे में सफर कर रहे थे। समय बिताने के लिए शहरी ने सुझाया कि पहेलियाँ बूझी जाएँ।

"अगर तुम पहेली न बूझ सके, तो मुझे एक रुपया दोगे। और अगर मैं असफल रहा तो मैं एक रुपया दूगा।" शहरी ने कहा।

"आप अधिक पढ़े लिखे विद्वान् हैं, मैं ठहरा निपट गंवार," देहाती ने जवाब दिया, "मैं हारने पर आठ आने दूंगा।"

शहरी राज़ी हो गया और देहाती ने पहली पहेली पूछी— "ऐसा कौन जानवर है, चलते समय जिसके तीन पैर होते हैं और उड़ते समय दो।"

शहरी से जवाब देते न बना। अतः उसने देहाती को एक रुपया दे दिया और कहा— "तुम्ही बताओ।"

देहाती ने आठ आने लौटाते हुए कहा— "मुझे भी इसका जवाब नहीं आता।"

*

ज्योतिषी— "एक सुन्दर युवती बार-बार आपके मार्ग में आयेगी। पर आप उससे सावधान रहिये।"

एंजिन-ड्राइवर— मुझे सावधान रहने की क्या आवश्यकता है ? सावधान तो उसे रहना पड़ेगा।"

*

उसकी पहली सागर-यात्रा थी। उसकी तबियत बहुत ख़राब हो रही थी। वह केबिन में लेटा था।

'क्या मैं आपके लिये कुछ खाना भेजूं, श्रीमान् ?' स्टीवर्ड ने पूछा।

'नहीं,' उत्तर था, 'उसे वहीं फर्श पर डाल दो जिससे मै व्यर्थ के कष्ट से बच जाऊँ।'

*
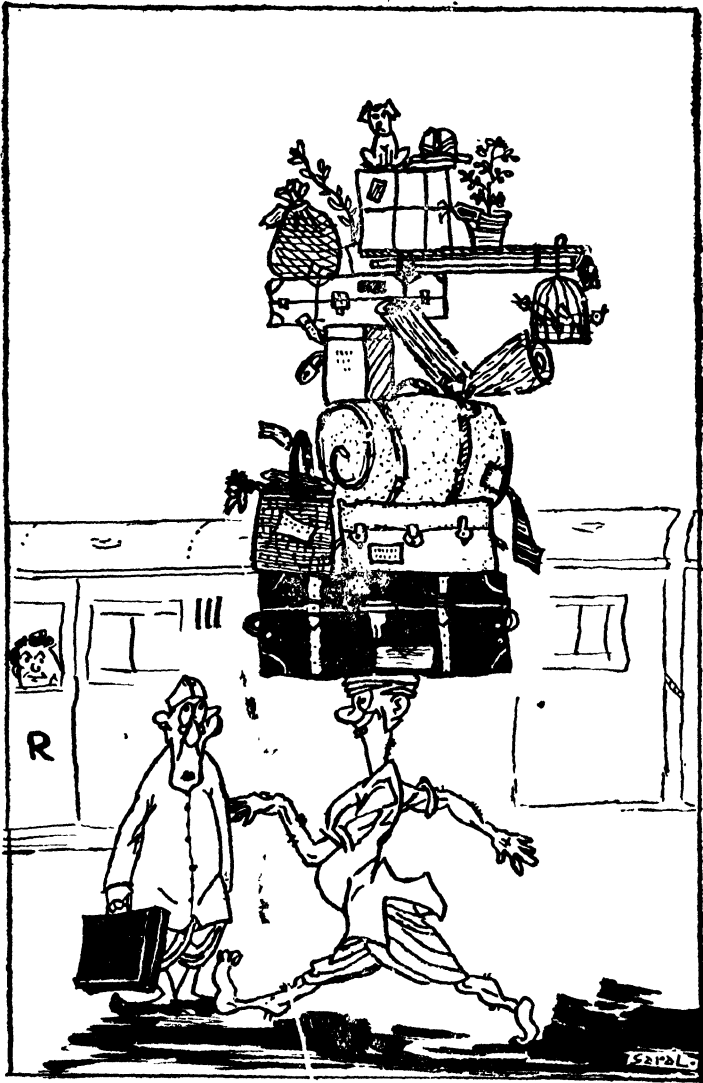
"........ जल्दी कर, अभी तो दूसरा फेरा भी करना है।"

*

बस में बैठा हुआ एक आदमी दूसरे को देर से घूर रहा था। दूसरा आदमी आख़िर उकता गया और उबल कर बोला, "आख़िर आप मुझे घूर क्यों रहे हैं?"

"माफ़ कीजिए, लेकिन .... हां .... बात यह है कि अगर मूंछों का फर्क़ न होता तो आपकी शक्ल मेरी पत्नी से बहुत मिलती।"

"लेकिन मेरे तो मूंछें नहीं हैं।"

"मेरी पत्नी के तो हैं।"

*

वह हवाई जहाज़ में पहली बार बैठी थी। 'रुकना ज़रा,' वह बोली, 'मुझे डर है हमें फिर नीचे उतरना पड़ेगा।'

'क्यों श्रीमती जी ?' एयर होस्टेस ने पूछा।

'मेरी जाकट का एक हीरे का बटन गिर गया है। मैं उसे नीचे धरती पर चमकता देख रही हूँ।'

'कृपया अपनी सीट पर बैठी रहें। यह तो डल झील है।'

*

एक मुसाफिर वक्त काटने के ख़्याल से दूसरे मुसाफिर से बातचीत करने की कोशिश करने लगा।

पहला मुसाफिर— "आपकी सूरत मुझे जानी पहचानी सी मालूम होती है। कहीं हमारा आपका साथ ज़रूर हुआ है ?"

दूसरा मुसाफिर— हुआ होगा। मैं बरेली के जेलख़ाने में दस वर्ष तक रह कर आज ही छूटा हूँ।"

बातचीत का सिलसिला एकदम बंद हो गया।

*

समुद्र में भयंकर तूफान आया हुआ था। जहाज़ बुरी तरह हिचकोले खा रहा था। एक यात्री ने घबराकर कप्तान से पूछा— "हम ख़तरे में तो नहीं हैं ?"

"हमारा भाग्य अब भगवान के ही हाथ में है," कप्तान ने गम्भीर होकर कहा।

"यह तो और भी बुरी बात है।" यात्री कह उठा।

*

बस में चढ़ती हुई एक स्त्री ने अपनी सहेली से विदा लेते हुए कहा— "नमस्ते मोहिनी! थोड़ी देर बाद हम फिर मिलेंगे।"

"बल्कि उससे भी पहले, श्रीमती जी," कंडक्टर ने कहा, "बस में जगह नहीं रही है।"

*

रात भर रेल के सफर के बाद सुबह ताँगे में उसने अपने पास एक आदमी

को एक कोट पहने हुए देखा। उस आदमी को हाथ लगाते हुए वह बोला— "क्या आप ही बड़नगर के मोहनलाल हैं ?"

"नहीं तो, क्या काम है ?" उस आदमी ने नाक चढ़ाते हुए कहा।

उसने जवाब दिया— "कुछ नहीं, यही कहना था कि आप जो कोट पहने हुए हैं, वह बड़नगर के मोहनलाल का है, और यह कोट उनसे रात रेल के सफर में खो गया था, और यह कि बड़नगर का मोहनलाल मैं ही हूँ।"

*

एक टूटे हुए जहाज़ के दो बचे हुए मल्लाह एक सप्ताह से किश्ती में बैठे समुद्र के थपेड़े खा रहे थे। उनमें से एक ने निराश होकर ईश्वर से प्रार्थना की, "हे भगवान, मैं पापी हूँ। मैं जानता हूँ मैंने मदिरापान बहुत किया है। अपनी पत्नी को भी मारा है। अगर किसी प्रकार यह नैया पार लगादे तो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज से ....

इतने में उसका दूसरा साथी बोल उठा, "अरे टहर जा, क्या कर रहा है ? उल्टी सीधी प्रतिज्ञा मत कर बैठियो, मुझे सामने किनारा नज़र आ रहा है।"

*

एक आदमी रेल से उतरा तो उसका सिर चकरा रहा था। उसे लेने के लिए आये हुए आदमी ने उससे पूछा— "क्या हुआ ? तबियत तो ठीक है ?"

"सिर चकरा रहा है। रेल में खिड़की की तरफ मुँह करके बैठने से मेरा सिर चकराने लगता है।"

"तो अपने सामने वाले आदमी से कहकर खिड़की बन्द कर लेते।"

"हाँ, यह तो मैंने भी सोचा था, लेकिन मेरे सामने कोई बैठा ही नहीं था जिससे पूछता।"

*

महिला ने टिकट बाबू से कहा—"एक पूरा और एक आधा टिकट दीजिये।"

टिकट बाबू ने बालक की ओर देखकर कहा— "इसकी उम्र बारह साल से अधिक जान पड़ती है।"

महिला— "यह कैसे हो सकता है? दस ही बरस तो मेरे विवाह को हुए हैं।"

टिकट बाबू ने कहा— "मैं यहाँ टिकट बेचने बैठा हूँ, किसी के चरित्र के बारे में जांच करने नहीं।"

*

रेल में एक साहब— "आज क्या तारीख़ है?"

दूसरे साहब— "मालूम नहीं।"

पहले साहब— "पर आपके हाथ में तो अख़बार है।"

दूसरे साहब— "जी, लेकिन यह कल का है।"

*

एक बड़ी मोटी औरत रेल के डिब्बे में सफर कर रही थी। चारों ओर के दृश्य उसे ऐसे पसन्द आये कि कभी वह एक ओर की खिड़की के पास जाती तो कभी दूसरी ओर की खिड़की के पास। उसके सामने की बैंच पर बैठा हुआ एक दुबला आदमी कुछ देर तक उसकी यह हरकत देखता रहा। अंत में वह बोला, "महाशया, मेहरबानी करके अपनी जगह पर बैठ जाइये। आपके इधर उधर आने जाने से गाड़ी का भार समतोल नहीं रहता। रेल के पटरी पर से उतर जाने का डर है।"

*

कुछ लोग रेल में सफर कर रहे थे। यकायक एक अंग्रेज घबराया हुआ आया और बोला— "किसी के पास ह्विसकी है, ह्विसकी? एक महिला उस डिब्बे में बेहोश हो गई हैं।"

एक यात्री ने बक्स खोलकर उसको बोतल दे दी। वह वहीं बोतल खोलकर पी गया और बोतल लौटाते हुए उसने कहा— "औरतों को बेहोश देख मैं बहुत घबरा जाता हूँ।"

*

उस दिन बोरीबन्दर से चलने वाली लोकल ट्रेन में काफी भीड़ थी। एक दक्षिणी महिला न जाने कैसे एक मद्रासी सज्जन की बाँहों में आ गई। अपने को अलग कर उन्होंने चप्पल खींचने को हाथ बढ़ाया ही था कि मद्रासी बोले— "माफ कीजिये, श्रीमती जी, भूल हो गई। आपकी शक्ल मेरी पत्नी की शक्ल से बहुत मिलती है। मैंने आपको अपनी पत्नी ही समझ लिया था।"

चप्पल तो ख़ैर आगे नहीं आई, पर गालियों की बौछार ने उन सज्जन को माटुंगा तक अच्छी तरह तरबतर कर दिया। उतरते समय सुना, वह बड़बड़ा

रहे थे— "शक्ल ही नहीं, गालियाँ भी बहुत मिलती हैं। भूल हो गई तो इसमें मेरा क्या दोष ?"

*

एक महिला गाड़ी के डिब्बे में घुसी। डिब्बे में केवल एक पुरुष बैठा था। कुछ समय पश्चात् उस पुरुष ने नम्रता से कहा— 'क्षमा करिये श्रीमती जी,........

'यदि आप मुझसे बातचीत करेंगे या मुझे तंग करेंगे तो मैं ख़तरे की ज़ंजीर खींच दूंगी," महिला ने कहा।

जब कभी पुरुष कुछ बोलने का प्रयत्न करता स्त्री ख़तरे की ज़ंजीर की ओर लपकती। अन्त में गाड़ी अगले स्टेशन पर रुकी। पुरुष अपने स्थान पर खड़ा हो गया और बोला, "चाहे आपको अच्छा लगे या बुरा, मुझे अपनी मछली ले लेने दीजिए जिस पर आप इतनी देर से बैठी हैं।"

*

रेलवे-कर्मचारी पर एक साहब बुरी तरह बिगड़ रहे थे, "आपकी गाड़ी इतनी देर से आती हैं। फिर इन टाइम टेबिलों का क्या फायदा है ?"

उस कर्मचारी ने नम्र स्वर में कहा— "महाशय, अगर गाड़ियाँ ठीक समय पर आने लगें तो कल मेरे पास आकर आप पूछेंगे कि ये वेटिंग रूम क्यों बनाये हैं।"

*

रेल एकदम रुक गई और यात्रियों को ज़ोर से धक्का लगा। "क्या हुआ ?" एक घबराई हुई स्त्री ने पूछा।

"कुछ नहीं," एक व्यक्ति बोला, "एक गाय रेल के नीचे आकर कट गई।"

स्त्री ने पूछा, "क्या गाय रेल की लाइन पर आ गई थी ?"

"नहीं श्रीमती जी, रेल ही खेत में उस पर जा पड़ी थी ?"

*

युद्ध के दिनों में ट्रेन बहुधा बहुत लेट आती थीं। विशेषकर मेल तो घण्टों लेट आता था। रामकृष्ण कहीं जा रहा था। उस दिन मेल समय पर आ गया। रामकृष्ण ने जाकर गार्ड को बधाई दी।

गार्ड बोला— पर यह तो कल आनी चाहिये थी।

गप्पें

शेर के शिकारियों को अजीब अनुभव होते हैं। एक ने यह घटना सुनाई।

"एक दिन जब मैं निहत्था था, सामने से एक शानदार शेर आ गया। उसने दोनों ओर पूँछ फटकारी, एक घोर गर्जना की और उछाल मारी। लेकिन वह मेरे ऊपर से निकल गया, क्योंकि उसकी उछाल बहुत ऊँची थी। वह शर्म के मारे जंगल में घुस गया।

"अगले दिन हम उस की खोज में निकले। एक घंटे में हमने उसे पा लिया।
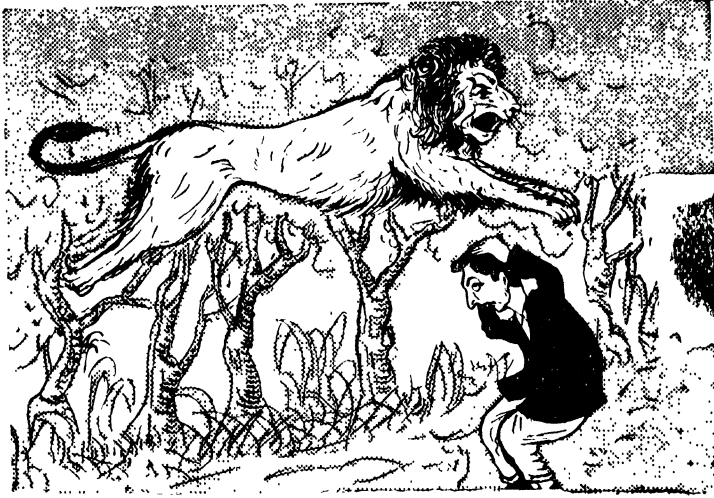
कुछ पेड़ों के नीचे जगह साफ करके वह नीची कुदानों का अभ्यास कर रहा था।"

*

एक बूढ़ा व्यक्ति अपने पोतों-पड़पोतों को कहानियाँ सुना रहा था और सब बच्चे बड़े ध्यान से सुन रहे थे। उसने कहा, "एक दिन बहुत बड़े भालू ने मेरा पीछा किया। मैं आगे आगे भाग रहा था और भालू मेरे पीछे पीछे। भालू इतनी तेज़ी से भाग रहा था कि उसकी साँसों की गरमी को मैं अपनी कमर पर अनुभव

कर रहा था। मैं क्या करता, आखिर रुका और मुड़कर भालू से बोला— "अब

ले बच्चा, अब सम्भल, अब तेरा बाप आ गया ।"

बच्चों ने एक आवाज़ में पूछा, "बताइये फिर आपने क्या किया ?"

"कुछ भी नहीं," बूढ़ा बोला, "बस, मैंने अपना हाथ रीछ के मुंह में दे दिया और अन्दर देता गया, यहाँ तक कि उसकी पूंछ मेरे हाथ में आ गई । तब मैंने अपना हाथ वापस खींचना शुरु किया और उसे इतना खींचा कि भालू का अन्दर का हिस्सा बाहर और बाहर का भीतर हो गया । अब उसकी पूँछ मेरे हाथ में थी और मुंह दूसरी ओर था । बस, जिधर मुंह था वह उसी ओर भाग खड़ा हुआ ।"

*

मेरे कुछ दोस्त दिल्ली जा रहे थे । लेकिन रास्ते में उनका पैट्रोल ख़त्म हो गया और उन्हें एक गाँव में रुकना पड़ा । उस गाँव में बिजली नहीं थी केवल दीये थे । सोने का कमरा भारत के मशहूर मच्छरों से इतना भरा हुआ था कि नींद आनी असम्भव थी ।

आख़िर एक आदमी को तरक़ीब सूझी । उसने एक दीपक बाल कर सब मच्छरों को जलाना शुरु किया । यह तरक़ीब ठीक काम कर रही थी कि एक बड़े

मच्छर ने गरमी से घबरा कर फूंक मार दीपक बुझा दिया ।

बीमा

"बड़ी अजीब बात है कि बीमा कराने के बाद इतनी जल्दी आपके पति की मृत्यु हो गई।"

"अजीब कुछ नहीं है, बीमे की क़िस्तें चुकाने के लिये उन्हें जितनी सख़्त मेहनत करनी पड़ती थी, उससे क्या कोई ज़्यादा दिन जी सकता था?"

*

"क्या कभी आपके साथ कोई मोटर दुर्घटना हुई है?" बीमा एजेण्ट ने मोटर बीमा के काग़ज़ भरते हुए अपने ग्राहक से पूछा।

"हाँ," झिझकते हुए ग्राहक ने उत्तर दिया, "अपनी पत्नी से मेरी पहली भेंट एक मोटर गैरेज में हुई थी।"

*

जीवन बीमा के लिये एक व्यक्ति का डाक्टरी मुआयना हुआ था। मुआयने की रिपोर्ट की सूचना बीमा कम्पनी के तार द्वारा उसे इस प्रकार मिली, "खेद है आपका बीमा नहीं हो सकता क्योंकि आपको निमोनिया, दमा और कैंसर हैं।"

इसके दो घण्टे बाद ही उसे दूसरा तार मिला— "क्षमा कीजिये, पहला तार आपको ग़लत चला गया। आप ठीक हैं। वह रिपोर्ट किसी और व्यक्ति की थी।"

इस आदमी ने जवाब में तार दिया— "खेद है कि आधा घंटा हुआ मैंने आत्महत्या कर ली है।"

*

ज्योतिषी— (दुकानदार का हाथ देखकर) "आपको दो महीने के भीतर ही बहुत बड़ी रक़म मिलेगी।"

दुकानदार— "तो इसके अर्थ हैं कि दूकान में, जिसका बीमा पचीस हज़ार रुपये में हुआ है, आग लग जायगी।"

*

रमेश की शादी होने पर एक बीमा एजेंट उसके पास आया और कहने लगा— "अब तो आपका विवाह हो गया। अब आप अपना जीवन बीमा अवश्य करायें।"

"नहीं, मेरी पत्नी इतनी ख़तरनाक नहीं है।"

*

एक अमीर ने अपने मकान का बीमा करवाया था। अचानक मकान में आग लग गई। बीमा कम्पनी का एजेन्ट घटनास्थल पर पहुंचा। स्थिति का अध्ययन करने के बाद वह अमीर से बोला— "बीमा कम्पनी आपको बिल्कुल वैसा ही नया मकान बनवा देगी।"

अमीर ने गरम होकर कहा— "अगर आप लोगों की नीति ऐसी ही है तो

मैं अपनी बीवी का बीमा ख़त्म कराता हूँ।"

*

नदी में नहाते हुए माँ ने अभय को डाटा-- आगे मत जा, डूब जायगा।

अभय पिताजी की ओर उंगली उठाकर बोला— पिताजी भी तो चले गये हैं ?

माँ ने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया— उनकी क्या चिन्ता ? उनका तो बीमा हो चुका है।

*

सेठ जी अपनी दुकान का बीमा करा रहे थे। उन्होंने एजेण्ट से पूछा— मान लीजिये, आज ही मेरी दुकान में आग लग जाये तो मुझे क्या मिलेगा ?

एजेण्ट ने सेठ जी को ध्यानपूर्वक घूरा-- केवल पाँच साल।

*

एक महापुरुष बहुत व्यस्त थे। उन्होंने नौकरानी से कह दिया कि मुझसे मिलने किसी को मत आने देना जब तक जीवन मृत्यु का ही सवाल न हो।

कुछ पल बाद एक इन्श्योरेन्स एजेण्ट उनके सामने उपस्थित थे।

*

पादरी साहब से जनाज़े के वक्त बेवा से पूछा — "क्या तुम्हारा पति मरने से पहिले मरने के लिये तैयार था?"

विधवा ने उत्तर दिया— "जी हाँ, बहुत पहिले से तैयार थे। उन्होंने तीन कम्पनियों में जीवन बीमा करा लिया था।"

*

सेठजी— (बीमा कम्पनी को टेलीफोन करते हुए) मैं अपने मकान का बीमा कराना चाहता हूँ।

बीमा मैनेजर— हाँ, हाँ, शौक से! पर पहिले हम मकान देखना चाहेंगे।

सेठजी— तो जल्दी देख लीजिये। मकान में आग लगी हुई है।

*

एक इन्श्योरेन्स एजेन्ट के जिम्मे यह काम सौंपा गया कि वह एक विधवा को उसके पति की दुर्घटना द्वारा मरने की ख़बर सुनाये।

उसने द्वार खटखटाया और बोला— श्रीमती जी, मुझे आपको सूचित करते हुए हर्ष होता है कि आपके पतिदेव ने रेलवे दुर्घटना में दस हज़ार रुपये जीते हैं।

*

शान्ति— तो तुमने नयी बनारसी साड़ी ख़रीद ही ली। पर तुम तो कहती थी कि तुम्हारे पास साड़ी ख़रीदने के पैसे ही नहीं हैं।

सुधा— बात तो ऐसी ही थी पर साड़ी मेरे भाग्य में थी। मुन्ना के पिता की टाँग टूटने से बीमा कम्पनी से चार सौ रुपये मिल गये।

*

एक व्यक्ति को पता लगा कि अपने जीवन के बीमे में जितने रुपये वह बीमा कंपनी में जमा कराता है, कम्पनी उनकी सीक्योरिटीज़ खरीद लेती है, पैसा अपने पास नहीं रखती। वह तुरन्त ही कम्पनी के अधिकारियों से भेंट करने पहुंचा। अनेक छोटे बड़े अधिकारियों ने उसे समझाया कि सुरक्षित कोष में से निकाले जाने वाले एक-एक पैसे के स्थान पर उसमें सीक्योरिटीज़ जमा कर दी गई हैं। परन्तु उसकी समझ में यह तर्क नहीं आया।

अन्त में एक अधिकारी उसे कुछ थोड़ी-बहुत बात समझाने में समर्थ हुआ और पूछने लगा, "अब तुम समझ रहे हो न कि यह सब किस प्रकार होता है?"

"हाँ कुछ-कुछ समझ रहा हूँ। जैसे कि मैं सन्ध्या को घर आकर खाना मांगूं और मेरी पत्नी राशन-कार्ड मेरे हाथों में थमा दे।"

पीढ़ियाँ

अस्पताल में बच्चा पैदा हुआ। उसके माँ-बाप दोनों शहर के प्रसिद्ध जेबकतरे थे। बच्चा बड़ा सुन्दर था लेकिन उसके दायें हाथ की मुट्ठी बन्द थी। माँ बाप बहुत घबराये कि बच्चे में ऐब रह गया। लेडी डाक्टर ने बहुत उपाय किये पर उसका हाथ खोलने में समर्थ नहीं हुई। आख़िर एक नर्स की दिमाग़ी उपज काम आई। उसने अपने गले का सोने का हार उतार कर बच्चे को दिखाया। बच्चे ने मुट्ठी खोलकर उस पर झपट्टा मारा। मुट्ठी से एक अगूंठी

गिर पड़ी जो उसको उत्पन्न करवाने वाली लेडी डाक्टर की थी।

*

एक मेजर से उसकी सेना से निकले किसी व्यक्ति के बारे में पूछा गया। उसने उत्तर दिया— केशव एक मेहनती युवक है। वह मेजर का लड़का और जनरल का पोता है। उसका चाचा सर है, उसका मामा सेक्रेट्री। वैसे अन्य सम्बन्धी भी ······

कम्पनी के प्रतिनिधि ने धन्यवाद देकर कहा— आपको अनेक धन्यवाद। पर हम उसे चौकीदारी को चाहते हैं, नगर की नस्ल ठीक करने के लिये नहीं।

*

बूढ़े व्यक्ति को अंधेरे रास्ते में रोककर लुटेरे ने कहा, 'रुपया दो या जान दो।'

'मेरी जान ले लो। रुपया तो मैं बुढ़ापे के लिये बचा रहा हूँ।'

*

अपने परिश्रम से महान् बने व्यक्ति को पीढ़ीदार मनुष्य छेड़ रहा था। महान् व्यक्ति बोला, 'हाँ, मेरे परिवार का इतिहास मुझसे आरम्भ होता है जब कि तुम्हारा तुम पर समाप्त होता है।'

*

दादी (सोचते हुए)— पहले वह कुछ सोचती है, फिर अपने आप मुस्कराने लगती है। ज़रूर वह प्रेम में है।

दादी का बेटा— सच अम्मा।

दादी— हाँ, तेरी बेटी को प्रेम हो गया है।

पिता— तुम्हारी याददाश्त कितनी अच्छी है।

*

एक लखपति ने अपने तीनों पुत्रों और उनकी पत्नियों को रविवार के दिन अपने साथ भोजन करने के लिये आमंत्रित किया। जब सब लोग भोजन करने बैठे तब उसने उन सबको एक साथ आमंत्रित करने का कारण बताया।

उसने कहा— "अब मैं जवान नहीं रहा हूँ, फिर भी मैंने अभी तक कोई वसीयतनामा नहीं लिखा है। जानते हो क्यों? इसलिये कि मुझे अब तक पितामह न बन पाने का गहरा दुःख है।"

उसने यह भी बताया कि वह अपने प्रथम पौत्र को बोनस के रूप में ५० हज़ार डालर प्रदान करेगा। फिर सिर झुका कर उसने प्रार्थना की।

जब उसकी दृष्टि ऊपर उठी तो उसने देखा कि मेज़ पर वह अकेला बैठा है।

❦